2016-17

ISBN : 978-93-83672-77-6

PROF :- V. M. CHAVAN
SUB :- HINDI



सत्यशोधक अण्णा भाऊ साठे : बहुजनांचे कैवारी

संपादक

डॉ. मनिषा पाटील
अमोल महापुरे
कृष्णा आगे

Research Articles
9 Publication Name
2016-17

ISBN: 978-93-83672-77-6

Index

१.	अण्णा भाऊ साठे : व्यक्ती आणि वाङ्मय. **प्रा. डॉ. जिरेवाड लक्ष्मीकांत मारोतीराव**	११
२.	साहित्यसम्राट अण्णा भाऊ साठे : व्यक्ती आणि वाङ्मय **प्रा.डॉ.विजयेंद्र विश्वनाथ पाटील**	१४
३.	अण्णाभाऊ साठे यांचे आर्थिक विचार **प्रा. डॉ. गितांजली मोटे**	१८
४.	अण्णाभाऊ साठे : व्यक्ती आणि वाङमय **प्रा.डॉ. रंदिल गजेंद्र साहेबराव**	२१
५.	लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्यातील लोकभक्ती व राष्ट्रभक्ती **प्रा. नवनाथ ज्ञानोबा पवळे**	२८
६.	वैजयंता' नर्तिकेची शोककथा **प्रा. डॉ. भारत हंडिबाग**	३२
७.	अण्णा भाऊंचे पोवाडा वाङ्.मय **प्रा.डॉ. एम.बी.धोंडगे, प्रा. उदार एन.एस.**	४३
८.	अण्णाभाउ साठे -मार्क्सवादी विचारवंत **डॉ. शेख हुसैन इमाम**	४६
९.	अण्णाभाऊ साठे : व्यक्ती आणि वाङ्मय **प्रा.डॉ. अनिता परभतराव खंडागळे**	४९
१०.	अणाभाऊ साठे यांचे शाहीरी वाङ्.मय आणि संगीत **रायबोले अर्चना रामरतन**	५४
११.	अण्णाभाऊ साठे यांच्या कादंबऱ्यातील स्त्री प्रतिमा **बेटकर वैशाली चनबस**	६२
१२.	अण्णाभाऊ साठे : परिवर्तनकारी व्यक्तित्व **प्रा. विवेकानंद हरिभाऊ चव्हाण**	६८
१३.	अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्यातील समाजशास्त्र **डॉ. हनुमंत मिसाळ**	७१
१४.	महाराष्ट्राच्या ग्रामीण जीवनाचे व संस्कृतीचे पहिले प्रमुख चित्रणकर्ते : आण्णाभाऊ साठे **प्रा. जायेवार जगदिश लच्छमन्ना**	८१

MAHAVIDYALAYA

ISBN: 978-93-83672-77-6

मातृभाषा मराठी के प्रति सर्मपण दिखाते हुए अलग मराठी महाराष्ट्र राज की समर्थन में अपनी कलम से प्रहार करना आदि बातें उन्हें अपनी दायरे से बाहर लेकर आती है | हमारी सबसे बड़ी विडम्बना यही है कि हम इन महान हस्तियों को एक मर्यादा में बाँधकर उन्हें और भी संकुचित कर देते है |

- **साहित्यिक प्रतिभा के धनी :**

वास्तव में साहित्य निर्माण की प्रक्रीया मानवी अंतरात्मा का सौन्दर्यपूर्ण अविष्कार है, विस्तृत अहसास, भावनाएँ, समाज के दुख दर्द से कराहते अण्णाभाऊ साठेजी की अंतरात्मा उच्च कोटी की साहित्यिक प्रतिभा से भरी हुई प्राप्त होती है | प्रचलित समाजव्यवस्था के विरुध्द विद्रोह करते समय साहित्य निर्माण प्रक्रिया प्रतिभा को समाजमन के चिंतन से नवबिज अंकुरति होते है और यही विचार सटिक और सकारात्मक पध्दतिसे साहित्य में चित्रित होते है, स्वंय के जीवन में जीन त्रासदियों का अनुभव था, उस अनुभव को समाज समक्ष सहानुभूति प्राप्त न करने की उनकी प्रकृति इसी बात का प्रमाण देती है की, समाज की ऐषणाओं से ग्रसित साहित्यिक सम्पूर्ण वैश्विक मानव जाति की त्रासदी की अभिव्यक्ती अपने रचनाओं में करता है ऐसी ही उनकी सहज प्रकृति थी |

- **त्रासदियों के वेदनाओं में नवनिर्माण तत्व :**

मनुष्य का यह स्वभाव रहा है की, अपने हिस्से में आए दुःखों का प्रदर्शन करता है, समाज का ध्यान अपनी तरफ अकर्षित करता है | किंतु अण्णाभाऊ साठेजी की यह प्रवृत्ति नहीं है, दर्द है इसलिए निर्माण प्रक्रिया संभव है यह वचन उन्होंने अपनाया है, उन्होंने अपना दर्द कभी प्रदर्शित नहीं किया | मनुष्य के जीवन में दुख ही एक ऐसा तत्व है जिससे नई आशा का संचार जन्म लेता है, उनके साहित्य से यही भाव निष्कासित होते है | और उनके भाव वैश्विक मानवतावादी लेखक के रुप में उन्हें प्रस्थापित कर देते है | अण्णाभाऊ के साहित्य में जो दर्द परिष्कृत हुआ है वह अखिल मानव सभ्यता की दुख भरी यातनाओं का परिष्कार है |

- **वर्ण और वर्ग भेद विद्रोह भाव :**

अण्णाभाऊ साठे जी की तुलना हम निश्चित रुप से मध्ययुगीन संत कबीरदास से कर सकते है -

मसि कागद छुयो नही, कलम गहयो नहीं हाथ |
चारों जुग का माहात्तम, मुखहि जनाई बात ||

बिल्कुल ऐसा ही उनका साहित्यिक व्यक्तित्व हमें प्रतित होता है | उनकी पाठशाला व्यापक आत्मानुभवों की पाठशाला है, आत्मानुभूतियों को उन्होंने अपना गुरु बनाया हुआ है | उनका साहित्य कपोल कल्पित नहीं है, वह वास्तवदर्शी है, आपके साहित्य में देहातों की सच्चाई, ग्राम व्यवस्था का यथार्थ दर्शन, पशु और मानव आदि के जीवन में निर्माण हुई त्रासदियों का चित्रण, गाँवो के बिच जहर की तरह व्याप्त जातियप्रथा, पददलित लोग, शोषित समाज, स्त्री आदि वर्णन हमे : मन मास्तिब्क को झुंझोड देता है | स्त्री जीवन ईन्सानियत से बहुत दूर है यह वर्णन हम जब

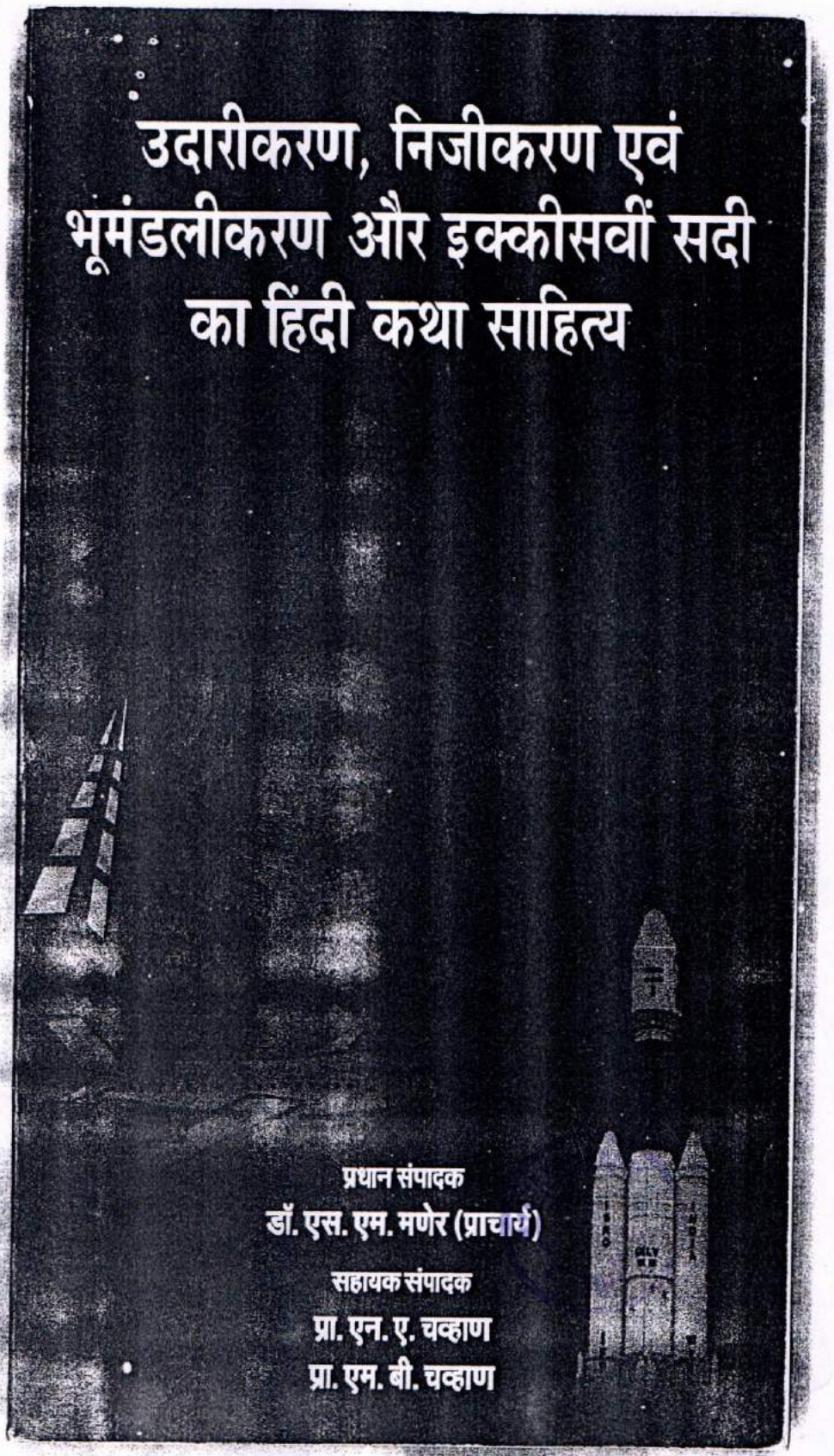
TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR EST

ISBN No - 81-86889-74-3

2016-17

2016-17
Nutan

उदारीकरण, निजीकरण एवं भूमंडलीकरण और इक्कीसवीं सदी का हिंदी कथा साहित्य



प्रधान संपादक
डॉ. एस. एम. मणेर (प्राचार्य)
सहायक संपादक
प्रा. एन. ए. चव्हाण
प्रा. एम. बी. चव्हाण

TULSHIRAM JAVAL MAHAVIDYALAYA

भूमंडलीकरण और नारी

नारी और समाज का एक-दूसरे से घनिष्ठ संबंध रहा है। अर्थात् नारी समाज का केंद्र बिन्दु है। समाज को नारी से प्रेम, प्रेरणा और शक्ति मिलती है। नारी सदैव एवं सर्वत्र मानवीय परिवार में मुख्य समझी जाती है। वैदिक साहित्य में नारी पुरुष की सहयोगिनी मैना, योषा, वामा, प्रमदा, रमयी जननी, जया, भामा के रूप में चित्रित हुई है। वह पुरुष के साथ धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक और समय आने पर राजनैतिक कार्यों में कार्य करती हुई दिखाई देती है। किंतु धीरे-धीरे समाज में उसका स्थान घटने लगा। कुछ समय के बाद तो वह केवल भोग का साधन मात्र बनकर चार दीवारों में बंद रहने लगी।

इस प्रकार से नारी के बदलते हुए रूप का एक मात्र जिम्मेदार पुरुष है। लेकिन यह तो सत्य है कि कहीं नारी के बिना पुरुष तथा समाज की कल्पना करना निरर्थक है। अर्थात संस्कृति के विकास का मूल नारी है। अलग-अलग युगों में नारी को अलग अलग दृष्टिकोण से देखा है। कभी नारी उसके लिए पहेली रही तो कभी पुस्तक का खुला हुआ पृष्ठ कभी विद्या का आदर्श सरस्वती में, धन का लक्ष्मी में, पराक्रम का महामाया में, अथवा दुर्गा में, सौंदर्य का रति में, पवित्रता का गंगा में यहाँ तक कि भारतवासियों ने सर्व शक्तिमान भगवान को भी जगत जननी के रूप में देखा गया है। तो कभी भोग विलास के साधन के रूप में देखा है। "यस्य नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।"

पूँजीवाद से पहले की कालावधियों में नारी घर के भीतर बिना किसी मुआवजे और छुट्टी के आजीवन और अहर्निश श्रम करने के लिए अभिशप्त थी। 'नारी कुंड नरक काध'[2] पुरुष ने उसे अपना वंश चलाने के लिये एक प्रजननकारी कोख में बदल दिया था। प्राचीन काल से वर्तमान तक उसकी स्थिति में अनेक परिवर्तन हुए है। नारी का सम्मान पुरुषों के सदृश ही था। भूमंडलीकरण ने औरत को 'पावर वुमेन' बना दिया है। यह सब करने के लिए उसे किसी नारीवादी अथवा सिद्धांतशास्त्र की जरूरत भी नहीं पड़ी केवल बाजार, पूँजी और संचार क्रांति की ताकत के दम पर औरत की दुनिया बदल गई है। उसकी यौनिकता को दबाने और सीमित करने के लिए तरह-तरह के सामाजिक, धार्मिक कायदे कानून बनाए थे ताकि वह एक पुरुष के साथ जुड़कर केवल इतर लिंगी सहवास को ही नैतिक और स्वाभाविक माने। शिक्षा और अधिकारों से वंचित करके उसे अपने बजाय दुसरे का खयाल रखने के लिए निरंतर प्रेरित किया गया। आधुनिक काल तक आते-आते नारी की स्थिति वैदिक काल के बिल्कुल विपरीत हो गई थी। अन्धविश्वास, निरक्षरता तथा अज्ञानता ने उसे इस स्थिति तक पहुँचाया।[3] पूँजीवाद के विभिन्न चरण में बाजार के फायदे के लिए महिला के श्रम को घर के दायरे से निकालने की शुरुआत हुई, लेकिन महिला मुक्ति अपनी संपूर्णता में कहीं भी उपलब्ध नहीं हो पाई। औरत की गुलामी एक बहुत बड़ा सवाल थी, जिसका उत्तर दिया जाना शेष था। नारी संघर्ष का आवाहन करते हुए डॉ. सुशीला टाकभौरे कहती हैं -

सीता-सावित्री की बात। मैं नहीं कहती
पर कह सकती हूँ। संघर्ष में जुझने की।
गर्व तब होना चाहिए। जब उसे शक्तिमयी करे
आक्रोश मयी करे। अपने लक्ष्य की ओर आवेगमयी करे।[4]

वैदिक काल में भी नारी की स्थिति उन्नत थी। नारी का सम्मान पुरुषों सदृश ही था नारी को 'रत्न' की संज्ञा से सुशोभित किया गया। उत्तर वैदिक काल में नारी की स्थिति दुर्बल होती चली गयी।[5] भूमंडलीकरण ऑटोमेशन,

AHAVIDYALAYA

2016-17

ग्रामीण लेखिकांचे साहित्य : स्वरुप, विकास आणि दिशा

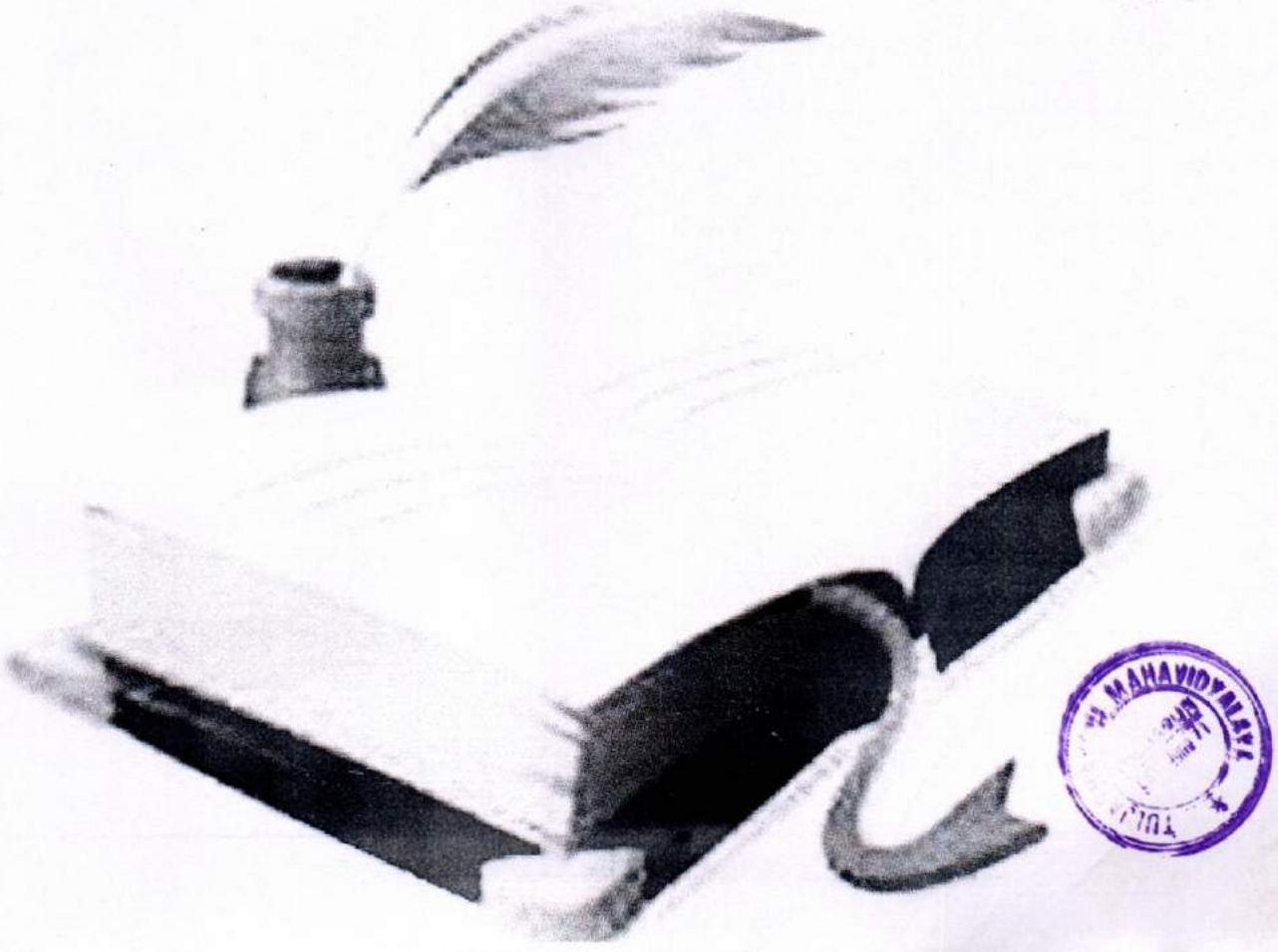
संपादक

प्रा. डॉ. जया कदम

सह-संपादक

प्रा. प्रवीण ताटे देशमुख

प्रा. राणी शेंडकर



MAHAVIDYALAYA

ISBN :978-94-84914-12-8

Gramin Lekhikanche Sahitay : Swarup, Vikas Ani Disha

ग्रामीण लेखिकांचे साहित्य : स्वरूप, विकास आणि दिशा

■ संपादक : डॉ. जया कदम
सहसंपादक : प्रा. प्रवीण ताटे देशमुख
प्रा. राणी शेंडकर
पत्ता : मु.सा. काकडे महाविद्यालय, सोमेश्वरनगर,
ता. बारामती, जि. पुणे.

■ प्रकाशन
शब्दवैभव प्रकाशन, पुणे
भ्रमणध्वनी : ८८५५८९०३०६/०७

■ प्रथमावृत्ती : २० जानेवारी २०१७

■ मुखपृष्ठ :
तुषार निवंडीकर

■ मुद्रक/अक्षरजुळणी :
सौ. ज्योत्स्ना इंगळे-नेरकर
शब्दवैभव प्रकाशन, पुणे-४११००२
भ्रमणध्वनी : ८८५५८९०३०६/०७

■ मूल्य : तीनशे रूपये

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR Est. June '11

अनुक्रमणिका

विभाग १ लेखिकांची साहित्य निर्मितीप्रक्रिया

१. स्त्रीवाद आणि ग्रामीण लेखिकांचे वऱ्हाडी साहित्य–डॉ. प्रतिमा इंगोले/०९

२. माझ्या कवितेची निर्मितीप्रक्रिया–कल्पना दुधाळ/१५

३. माझ्या कथेची निर्मितीप्रक्रिया – मथु सांवत/१८

४. ग्रामीण कथा/कवितेचे स्वरुप आणि निर्मिती प्रक्रिया –प्रा.डॉ. नलिनी महाडीक/२३

विभाग दुसरा कविता

१. ग्रामीण स्त्री जाणीवेचा प्रगल्भ आविष्कार: बहिणाबाईची कविता–डॉ. ताहेर पठाण/३२

२.'कल्पना दुधाळ : मातीवर प्रेम करणारी कवयित्री'– डॉ. प्रमोद पडवळ/३७

३. 'बहिणाबाई चौधरींची कविता : एक आकलन'– प्रा. डॉ. सुभाष आहेर /४४

४. 'मातीतल्या जगण्याची अस्सल कविता'– प्रा.डॉ.अरुण कोळेकर /४९

५. ग्रामीण साहित्याला बहिणाबाई चौधरी यांचे योगदान प्रा. डॉ. राजाराम गावडे/५४

६. ग्रामीण स्त्री साहित्याची जननी–बहिणाबाई चौधरी– प्रा. डॉ.अरूणा अर्जुन मोरे/५८

७. अनुराधा पाटील यांच्या कवितेतील ग्रामीण चित्रण– प्रा. डॉ. मल्हारी मसलखांब/६३

८. सिझर कर म्हणतेय माती: एक चिकित्सा–प्रा. डॉ. आनंदा गांगुर्डे/६६

९. बहिणाबाई चौधरी यांची कविता –प्रा.डॉ रंजना कदम/७१

१०. आद्य मराठी ग्रामीण कवयित्री – सावित्रीबाई फुले– प्रा.घनश्याम गिरी/७६

११. ग्रामीण कविता आणि प्रतिमा इंगोले यांचा 'भुलाई '– मारूती घुगे/८१

१२. ग्रामीण कवयित्री: निसर्गकन्या बहिणाबाई चौधरी– प्रा. डॉ. मंगल डोंगरे/८७

१३, जनाबाईची कविता: ग्रामीण स्त्री अभिव्यक्ती आद्य हुंकार– अशोक शिंदे/९३

१३. बहिणाबाईची गाणी– ग्रामीण संस्कृतीचा खळखळणारा झरा– शैला क्षीरसागर/९९

१४. बहिणाबाईंच्या कवितेतील ग्रामीणचित्रण– प्रा.श्रीमती मीरा देठे/१०६

१५. कवयित्री बहिणाबाई चौधरी बावनकशी सोनं –प्रा.जवाहर चौधरी/१०९

१६. स्त्री जीवनातील ताणेबाणे व्यक्त करणारा कवितासंग्रह : स्पर्श चांदण्यांचा
–प्रा. प्रवीण ताटे देशमुख/११३

विभाग तिसरा : कथा

१. इंदुमती जोंधळे यांच्या कथाविश्वातील ग्रामीणता: एक शोध–डॉ. सुधाकर शेलार/११९

२. आदिवासी जीवनाचे चित्रण करणाऱ्या ग्रामीण कथालेखिका रेखा बैजल
–प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर वाल्हेकर/१२४

३. डांगोरा : एक चिकीत्सक अभ्यास – प्रा.डॉ. निशा भंडारे/१२८

४. शिवारफेरी : एक चिंतन!– प्रा.डॉ.निगडे जगन्नाथराव/१३३

५. प्रतिमा इंगोले आणि सुगरणाचा खोपा– डॉ. प्रज्ञा लामतुरे /१३८

६. 'लके भुईची' : स्त्रीवादी आकलन– डॉ. रचना माने /१४३
७. लेखिकांची ग्रामीण कथा – प्रा. नाना झगडे /१५०
८. मानवी लेखिकांच्या कथांतील ग्रामीणतेचे स्वरुप– कल्पना गावडे/१५५
९. 'दु:ख आणि अश्रू'– ग्रामीण स्त्रीचा आकांत– रमा सूर्यवंशी/१६०
१०. हुंकार स्त्रीमनाचा– डॉ. मनिषा तावरे/१६५
११. मधु सावंत यांचे कथालेखन –प्रा. डॉ. शारदा कदम/१६९
१२. लेखिकांच्या कथांमधील ग्रामीण संवेदन–प्रा. डॉ. जया कदम/१७२
१३. राजकारणातील ग्रामीण 'स्त्री' चे स्थान– मृणालिनी यादव/मोहिते/१७९
१४. नलिनी महाडीक यांच्या 'रानवारा' कथासंग्रहाचे समालोचन– प्रा. कल्पना रोकडे/१८२
१५. स्त्रीवाद आणि प्रतिमा इंगोले यांच्या कथा – आरती भोसले/१८५
१७. लोकसाहित्याच्या अंगाने कथानिर्मिती–उषा ढोबळे/१९२

विभाग चौथा : कादंबरी व इतर लेखन

१. 'राहू केतु' या कादंबरीतील ग्रामीणता – प्रा. डॉ. सोमनाथ दडस /१९६
२. स्त्री ग्रामीण कादंबरी : एक आकलन –डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी/२०३
३. ग्रामीण लेखिकेंच्या कादंबरी लेखनाची मीमांसा– डॉ.शशीकला रणदिवे /२०९
४. ग्रामीण लेखिकांच्या साहित्याचे स्वरूप आणि प्रेरणा –डॉ.शिवाजीराव देशमुख/२१४
५. लेखकाचं घर पेलताना : एक डोळस आत्मशोध –प्रा.डॉ.प्रभाकर पवार/२२२
६. ग्रामीण स्त्री साहित्याची प्रवर्तक–डॉ.सरोजिनी बाबर – डॉ. रामदास रसाळ/२३०
७. लोकसाहित्याच्या आक्का : डॉ. सरोजिनी बाबर –प्रा. डॉ. लता महाजन/२३४
८. ताराबाई शिंदे या ग्रामीण लेखिकांची लेखन शैली–प्रा. प्रभंजन चव्हाण/२३८
९. खातूनबी मत्तिकोप लिखित 'खातून' मधील ग्रामीण जीवनचित्रण– प्रा. केतकी भोसले/२४२
१०. प्रतिमा इंगोले यांचे साहित्य : कृषी संस्कृतीचा आरसा– प्रा. डॉ.मृणालिनी गायकवाड/२४८
१२. आयदान मधील ग्रामीण जीवन –प्राजक्ता पवार/२५१
१३. 'जसं घडलं तसं' मधील स्त्रियांचा जीवनसंघर्ष – प्रा. राणी शेंडकर /२५५
१४. 'धाले' लोकप्रकाराचे मराठी साहित्याला योगदान –प्रा. डॉ. स्नेहा महांबरे /२६२
१५. स्त्रियांचे ग्रामीण नाटयलेखन–'सोरगत'– प्रा. शोभा तितर /२६७
१६. १८८५ ते १९२० या कालखंडातील ग्रामीण लेखिकांच्या कादंबऱ्यांचे स्वरूप आणि मर्यादा– श्री. नानासाहेब गव्हाणे/२७२

TULJARAM MAHAVIDYALAYA
Scanned by CamScanner

ग्रामीण लेखिकांच्या साहित्याचे स्वरूप आणि प्रेरणा

डॉ. शिवाजीराव देशमुख, तुळजापूर

प्रास्ताविक :

साठोत्तरी कालखंडात आपले वेगळे स्थान निर्माण करणाऱ्या ग्रामीण साहित्य प्रवाहाने वर्तमानात साहित्याच्या सर्वच प्रकारात मौलिक स्वरूपाची भर टाकली आहे. ग्रामीण साहित्याचा विकास आणि विस्तार मोठ्या प्रमाणात झाला आहे. आधुनिकीकरणाने ग्रामीण समाजजीवन ढवळून निघाले. ग्रामीण माणसाच्या जगण्याला नवे स्वरूप निर्माण झाले. परंपरा, रूढी आणि विचारांच्या गर्तेत सापडलेल्या ग्रामीण समाजाने कात टाकली. स्वातंत्र्योत्तर काळात प्रवाही झालेल्या विचार चळवळींनी प्रवाहांना बळकटी दिली. दलित, ग्रामीण, आदिवासी, मुस्लिम, स्त्रीवादी असे भिन्न भिन्न प्रवाह निर्माण झाले. शिक्षणाच्या सार्वत्रिककरणाने तळागाळातील ग्रामीण माणूस जागृत झाला. अज्ञान आणि अंध:कारात खितपत पडलेल्या ग्रामीण माणसांच्या जगण्यात ग्रामीण साहित्याच्या रूपाने तांबडी पहाट उजाडली.

या विचार प्रवाहाचे बळ अंगीकारून लिहित्या झालेल्या ग्रामीण साहित्यिकांच्या लेखनात १९७० नंतर ग्रामीण स्त्री लेखिकाही आपल्या परिने भर टाकू लागल्या. १९७० नंतर निर्माण झालेल्या स्त्रीवादी विचार प्रवाहाने ग्रामीण स्त्रियांच्या लेखनीला बळ मिळाले. परंपरेच्या जोखंडात अडकलेल्या अनेक ग्रामीण स्त्रियांनी आपल्या शतकानुशतकाचा हुंकार लेखणीद्वारे प्रकट केला. आपल्या अंतर्मनात कोंडून राहिलेल्या भावनांचा उत्स्फूर्त आविष्कार करणाऱ्या या ग्रामीण लेखिकांना 'कविता' हे अभिव्यक्तीचे माध्यम अत्यंत जवळचे वाटल्याने त्यांनी कवितेच्या माध्यमातून आपले विचार व्यक्त केले. पुढे काळानुरूप कथा, कादंबरी, आत्मकथा, ललित, वैचारिक आदि वाङ्मय प्रकारात स्त्रियांनी आपले भावविश्व अत्यंत प्रत्यकारीतेने साकार केले आहे. 'ग्रामीण लेखिकांच्या साहित्याचे स्वरूप आणि प्रेरणा' या उपविषयाला केंद्रस्थानी ठेवून मी माझे चिंतन मांडणार आहे. या विषयाची व्याप्ती खूप मोठी आहे ही जाणीव ठेवून व मर्यादा लक्षात घेऊन पुढील प्रमाणे विषय विवेचन करता येईल.

ग्रामीण लेखिकांच्या साहित्याची पार्श्वभूमी :

ग्रामीण लेखिकांच्या लेखनाला तसे पाहता मोठी परंपरा आहे. साहित्याच्या इतिहासात याची पाळेमुळे रोवली गेल्याचे दिसून येते. संत साहित्याच्या काळापासूनच ग्रामीण लेखकांची अभिव्यक्ती होत होती असे म्हटले तर वावगे ठरू नये. संत, पंत, तसे

सामान्य माणसाला किंमत प्राप्त झाली असली तरी ती फक्त मतदानापुरती आणि कागदावरतीच. दैनंदिन जीवनव्यवहारात या सामान्य माणसाची जी ससेहोलपट होते आहे जी कुचंबना होते आहे, त्याला तोड नाही. पराकोटीला पोहचलेली आर्थिक विषमता, जन्मत:च या माणसांच्या कपाळी कोरलेले दारिद्र्य आणि जन्माला येणारी उपासमार ; निदर्यपणे त्याचे होणारे शोषण, अज्ञान कर्मकांड आणि दहशत यांचा त्याच्या गळ्याला बसलेला फास आणि तत्वभ्रष्ट राजकारणाने त्याच्या बांधलेल्या मुसक्या यामुळे या स्वतंत्र देशात 'गुलाम' म्हणून वावरणाऱ्या सामान्य माणसाला, आपले जीवन म्हणजे परमेश्वराने केलेली कठोर शिक्षा वाटते. संपत्तीचे विषम वाटप, ज्ञान विज्ञानाचा मानवी संहारासाठी होणारा वापर व मानवी हक्कांना पायदळी तुडविण्याची हितसंबंधी गटाची ताकत, साऱ्या समाजाला आतून पोखरून टाकणारा भ्रष्टाचार ही या शतकाची आपणाला मिळालेली देणगी आहे.''[२] वर्तमान ग्रामीण समाजजीवनातील भेदक वास्तव कशा पद्धतीचे होते याचा नेमका परामर्श डॉ.भोसले यांनी घेतला आहे. अशा वास्तवाला सामोरे जाणाऱ्या ग्रामीण समाजातील अनेक स्त्रियांना या वास्तवाने लिहिते केले. साहित्य हे परिस्थितीचे आपत्य असते. या विधानाची यथार्थता या काळात निर्माण झालेल्या साहित्यावरून पटते. 'नजर खिळवून टाकणाऱ्या स्वपुष्पांचा विलास म्हणजे साहित्य नव्हे' या कुसुमावती देशपांडे यांच्या विधानाची यथार्थता घडवून आणणाऱ्या साहित्याची निर्मिती या कालखंडात झाली.

या काळाला अनुभवणाऱ्या, पहाणाऱ्या आणि परिस्थितीने लादलेले भोग स्विकारणाऱ्या अनेक स्त्रियांच्या अंतर्मनातील भावनांचा उद्रेक होण्यास हा कालखंड पोषक ठरला. यातच १९७० नंतर उद्भवलेल्या स्त्रीवादाने या स्त्री लेखिकांच्या मनगटाला बळ पुरविले. या लेखिकांनी कथा, कबिता, कादंबरी आदि साहित्य प्रकारातून आपल्या जगण्याला शब्दरूप दिले. शतकानुशतके अनुत्तरीत राहिलेल्या आणि दबल्या गेलेल्या प्रश्नाला वाचा फुटली. लोकशाही व्यक्तिस्वातंत्र्य मूल्य जसजसे समाज मनात रूजत गेले. तसतशा ग्रामीण स्त्री लेखिकांच्या अभिव्यक्ती कक्षा विस्तारीत गेल्या. याच काळात ग्रामीण साहित्याच्या चळवळीनेही जोर धरला. या चळवळीमुळेच आतापर्यंत सतत दुय्यम भूमिकेत असणाऱ्या स्त्रीला प्रमुख भूमिकेत आणले. १९७५ हे वर्ष आंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष म्हणून घोषित झाले होते. स्त्रियांच्या वेगवेगळ्या प्रश्नांना या काळात अधोरेखित केले गेले. या काळात निर्माण झालेल्या स्त्रियांच्या स्वयंसंघटना, अत्याचार विरोधी संघटना, स्त्रीमुक्ती आंदोलन अशा एक ना अनेक घटनांमुळे स्त्रीयांच्या अभिव्यक्ती स्वातंत्र्याला चालना मिळाली. या सामाजिक बदलातून स्त्रियांनी आपली लेखन प्रक्रिया चालू ठेवली. साहित्य आणि सामाजिक बदल यांचा सहसंबंध स्पष्ट करताना डॉ.अंजली सोमण यांनी केलेले विवेचन लक्षात घेतले म्हणजे वरील विवेचन अधिक स्पष्ट होईल. त्या लिहितात, ''सामाजिक व सांस्कृतिक बदलांचा

जाणीव झाली. पारंपारिक जीवन सरणीला अनुसरणारे ग्रामीण लोक नव्या विचारांना आचरणात आणू लागले. रूढी, परंपरा आणि संस्कृतीच्या बेगडी झुलीत अस्वस्थ होणारी ग्रामीण स्त्री आपल्या अंतर्मनातील घुसमट शब्दांच्या आधारे साकार करू लागली. शिक्षणाने विचार जागृती झालेली ग्रामीण स्त्री आपल्या जगण्याकडे, आपल्या व्यथा, वेदनांकडे पुरूषसत्ताक कुटूंब पद्धतीमुळे तिला घरात आणि घराबाहेर मिळणाऱ्या गौण स्थानाकडे ती नव्या विचार व्युवहातून पाहू लागली. तिला आलेले हे आत्मभान तिच्या लेखनाला बळ पुरविणारे ठरले. ग्रामीण स्त्रियांना आलेले आत्मभान हे तिच्या लेखनाची प्रेरणा ठरते.

'नव्या उर्मी नवी क्षितिजे' :

१९८० पूर्वीच्या साहित्यात अनेक स्त्रियांनी ग्रामीण जीवन चित्रण करण्याचा प्रयत्न केला परंतू तो प्रयत्न मात्र अल्पसाच होता. १९८० नंतर मात्र ग्रामीण जीवनाचे चित्रण करणाऱ्या लेखिकांत वाढ झालेली दिसते. वेगवेगळ्या सामाजिक जीवन मूल्यांना सांभाळता सांभाळता हतबल होत गेलेल्या ग्रामीण स्त्रियांच्या जगण्याचे चित्रण मुख्यत्वेकरून या काळातील साहित्यातून साकार झाल्याचे दिसून येते. ग्रामीण साहित्याला ग्रामीणत्वाचा खरा स्पर्श झाला तो याच काळात. तळागळातील ग्रामीण माणूस लिहिता झाला. नवी उर्मी प्राप्त झालेल्या ग्रामीण स्त्रियांच्या सभोवतालचे बदलते वास्तव त्यांच्या चिंतनाचा आणि लेखनाचे विषय झाले. या काळात लिहित्या झालेल्या स्त्रियांनी आपल्या अभिव्यक्ती स्वातंत्र्याच्या बळावर ग्रामीण साहित्याला नाविन्यतेच्या क्षितिजावर नेऊन ठेवले. या बदलत्या जीवन तपशीलातून प्रेरणा घेत ग्रामीण साहित्य अधिकाधिक समाजाभिरूप कसे होत गेले. या संदर्भाने अनुराधा गुरव यांनी केलेले विवेचन महत्त्वाचे ठरते. त्या लिहितात, ''मराठी साहित्यामध्ये ग्रामीण साहित्याचा मनोरंजनासाठी होणारा उपयोग थांबला. ग्रामीण जीवनाच्या पृष्ठीय पातळीवर होत असलेले लेखन ग्रामीण साहित्याचा कस लावून तपासले जाऊ लागले. लेखकाला ग्राम जीवनाच्या आत खोल तळापर्यंत पोहचणे आवश्यक ठरले. ग्रामीण भागातील व्यक्ती व घटनांचे सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक, मूल्यविषयक, व्यावसायिक, कौंटुबिक संदर्भ आणि मानसशास्त्रीय विश्लेषण करण्याची निकड लेखकाला भासली, नव्हे या तपशीलाशिवाय लेखनाला अर्थच उरला नाही. विनोद, अश्लिलता, विसंगती, विकृती दर्शन हे ग्रामीण साहित्याचे निर्मिती, उद्दिष्ट राहिले नाही. मराठी साहित्याचा व्यापक भाग अधिक गंभीरतेने, चिकित्सकपणे, सहजतेने हाताळणे आवश्यक ठरते.'' गुरव यांनी केलेल्या विवेचनावरून ग्रामीण साहित्य निर्मितीच्या प्रेरणांची क्षितिजे कशी विस्तारत गेली ते स्पष्ट होते.

MAHAVIDYALAYA TULJAPUR

मानसिकतेची कुचंबना ही परंपरेपासून होत आली आहे. काळाच्या ओघात शिक्षणाच्या सार्वत्रिकीकरणाने अंतर्मनातील संघर्षांना शब्दरूप देण्यासाठी ती उद्युक्त खेड्याच्या बदलत्या जीवन संस्कृतीने ग्रामीण स्त्रियांच्या मनोव्यापारावर मोठा आघात झाला. या बदलत्या जीवन पद्धतीत ग्रामीण स्त्री स्वत:चा शोध घेऊ लागली. त्यातून तिच्या वाट्याला आलेली वैफल्यग्रस्ततात, अमानुषता, हीन वागणूक, तिच्यावर होणारे अन्याय, अत्याचार अशा एक ना अनेक प्रश्नांतून तिच्या मन:पटलावर उमटलेल्या संघर्षातून तिच्या साहित्य निर्मिती झाली आहे. एखाद्या व्यक्तीच्या मनासिक पातळीवर होणारी वैचारीक वा बौद्धिक उलथापालथ त्याच्या अभिव्यक्तीत कशी कारक ठरते ते सांगताना डॉ.नानासाहेब सुर्यवंशी यांनी मांडलेले विचार महत्त्वाचे वाटतात. ते म्हणतात, ''साहित्यकलाकश्ती समाजजीवनाचे वास्तव चित्रण करीत असते. म्हणून साहित्यकलाकश्तीत व्यक्तिमनाचा आविष्कार झालेला असतो. म्हणूनच यातील व्यक्तिरेखा कधीही एकसुरी एकसाची नसतात. कारण मनुष्य कधीच असे जीवन जगत नाही. मनुष्याच्या ठिकाणी सुख–दु:ख, दयाळू–क्रूर, शुर–भित्रा, सहिष्णू–असहिष्णू, नैतिक–अनैतिक, चारित्र्य–चारित्र्यविहीन अशी विविध रूपे आढळतात. कलावंत साहित्यकलाकश्तीत अशा जीवंत मानवी मनाच्या व्यक्तिरेखांच्या आधारे घटना, प्रसंगांची जुळणी करीत, कलात्मक विश्व साकार करीत असतो.''[६] डॉ.सुर्यवंशी यांनी अभिव्यक्तीच्या संदर्भाने मांडलेले विचार ग्रामीण लेखकांच्या वरील प्रेरणेचे नेमके स्वरूप विशद करणारे असे आहे.

ग्रामीण लेखिकांच्या लेखनाला खऱ्या अर्थाने १९८० नंतरच्या काळात बहर आल्याचे दिसून येते. पूर्वीच्या काळातील ग्रामीण स्त्रियांच्या लेखन अभिव्यक्तीत असलेल्या मर्यादा या लेखिकांच्या अभिव्यक्तीला संकुचित करणाऱ्या होत्या. आधुनिकीकरणाने झपाटून गेलेली खेडी सर्वच पातळ्यांवर मोठ्या प्रमाणात बदललेली दिसतात. या बदलत्या जीवनशैलीमुळे निर्माण झालेली भयग्रस्तता व विफलग्रस्तता यातून ग्रामीण लेखिका मोठ्या प्रमाणात लिहित्या झाल्याचे दिसून येते. बदलत्या सामाजिक व्यवस्थेने स्त्रियांकडे पाहण्यांचा दश्ष्टीकोन बदलत गेला. या समाजव्यवस्थेने स्त्रियांकडे आपल्या अनुभवांना अभिव्यक्त करण्याची प्रेरणा स्त्रियांच्या मनात जागृत केली. एखाद्या घटनेकडे एखादी स्त्री किती वेगवेगळ्या दृष्टिकोनातून पाहू शकते ते या काळात लिहिल्या गेलेल्या ग्रामीण स्त्रियांच्या साहित्यावरून प्रत्ययास येते.

सरतेशेवटी सारांशरूपाने असे सांगता येते की, ग्रामीण स्त्रियांच्या साहित्याला खऱ्या अर्थाने उजाळा मिळाला तो १९८० नंतरच्या काळातच. ग्रामीण साहित्याच्या प्रवाहाची सुरूवात साठोत्तरी काळात झाली असली तरी स्त्रियांच्या लेखनाला गती येण्याठी १९८०

ISBN 978-81-926341-7-3

ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार
–शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे



Shri Swami Vivekananda Shikshan Sanstha, Kolhapur's

ARTS AND COMMERCE COLLEGE,

NAGTHANE, SATARA (M. S.)



Accredited at 'B' level by NAAC

SOUVENIR

ONE-DAY MULTI DISCIPLINARY NATIONAL CONFERENCE ON

HUMAN RIGHTS

Friday, 30th December 2016

National conference Souvenir & Research paper published 2016-17

Prof. Dr. Subhash Shelake
Editor & Organizing Secretary

Principal Dr. Ashok Karande
President of Editorial Board & Convener

Prof. Vijay Kulkarni
Treasurer

Prof. Dr. Mrs. Shailaja Mane
Member

Prof. Amol Sonawale
Member

MAHAVIDYALAYA KOLHAPUR

INDEX

Sr. No.	Title of the Research Paper	Name of the Author	Page No.
	From Principal's Desk		
	Editorial		
1	International and National Measures to Protect the Rights of Women	Adv. Dr. Sheetal Babar	8
2	Human rights of Sex Workers	Dr. Smt. S. R. Sarode	14
3	Human Rights and Women's Legal Empowerment	Prof. Dr. Shailaja K. Mane	17
4	Violation of Women's Rights: An Assessment of Rama Mehata's *Inside the Haveli*	Prof. V. B. Kulkarni	21
5	Human Rights: A Tool for Social Security	Prof. Amol Sonawale	24
6	Violence of Women's Human Rights and Struggle for Justice in Mahesh Dattani's Play *Bravely Fought the Queen*	Prof. Dr. Mrs. Sunanda S. Shelake	26
7	Concept of Human Rights with Special Reference to Women and Girls	Prof. Suryakant Shamrao Adate	30
8	Human Right and Children	Dr. Amol Ashokkumar Patil	33
9	Human Rights Of Women Sex Workers"	Adv. Ankeetaa R Shah	36
10	A Study of Human Rights and Economic Development	Prof. Gadave Bhanudas R.	42
11	Role Of Uno In Protection Of Human Rights Of Older Persons In India	Miss. Bhakti S. Bhosale	45
12	Role of Judiciary in Implementation of Food Adulteration Laws and Protecting Human Rights	Chandrani Shashikant Bagadi	49
13	Historical Review of human right and child labour	Dr. Bhimashankar M. Dahalake	51
14	Declaration of the Human Rights of Woman	Kamble C.N.	54
15	Analytical Study of Evolution and Protection of Human Rights through Social Reformers	Deepa D. Karambalkar (Yadav)	55
16	भारतीय राज्यघटना आणि मानवी हक्क	प्रा.आवाळे डी.एस.	58
17	मानवी हक्क आणि धरणगस्त (अभ्यासक्षेत्र: सातारा जिल्हयातील कोयना धरण)	प्रा. डॉ. अजितकुमार दादासो जाधव	61
18	मानव अधिकाराचे मराठी साहित्यातील प्रतिबिंब	डॉ.शिवाजीराव देशमुख	64
19	मानव अधिकार प्र संकल्पना एवं स्वरुप	प्रा. गणो गभाले प्रा. एस.के. आतार	70
20	मानव अधिकार आणि भारतीय राज्यघटना	प्रा. चंद्रसेन यशवंत मानेपाटील	73
21	Human Rights and Business: A Study	Mr. Arage Laxman T.	75
22	Gender Justice In India: A Human Right Perspective	Prof. Mrs. Manisha Y. Kale	80

१८ मानव अधिकाराचे मराठी साहित्यातील प्रतिबिंब

डॉ.शिवाजीराव देशमुख ;मराठी विभागद्ध
तुळजाभवानी महाविद्यालय, तुळजापूरद्द जि.
उस्मानाबाद

प्रास्ताविक :

स्वातंत्र्यपूर्व काळात मानव अधिकारासाठी उभ्या राहिलेल्या चळवळीला स्वातंत्र्योत्तर काळात मोठ्या प्रमाणात यश आले. समता, स्वातंत्र्य आणि न्याय या मूल्यांची खरी ओळख याच काळात झाली. मानवी हक्क म्हणजे प्रत्येक मानवाला असलेले जन्मापासूनचे अधिकार ! जन्म घेण्याचा अधिकार समानतेचा अधिकार, जीवन सन्मानपूर्वक जगण्याचा अधिकार, व्यक्तिस्वातंत्र्याचा अधिकार होय. भारताच्या दृ टीने विचार करता जनसामान्यापर्यंत मानवी हक्काबि ाची जागरूकतेचा अभाव होता याची जाणीव झालेल्या नवशिक्षितांनी साहित्य आणि मानवाधिकार यांची उत्तम सांगड घालण्याचा प्रयत्न केला.

मनवी जीवनात हक्कांना फार महत्त्वाचे स्थान आहे. व्यक्तिला आपल्या व्यक्तिमत्वाचा विकास करण्यासाठी तसेच समाजात स्थिरता प्रस्थापित होण्यासाठी हक्क आवश्यक असतात. मानवी जीवनाच्या सर्वच अंगाचा अंतर्भाव मानव अधिकारात होतो. त्यामुळेच समाजात या अधिकाराबि ाची जागृती / प्रबोधन होणे गरजेचे होते. ते काम स्वातंत्र्योत्तर काळात निर्माण झालेल्या साहित्याने समर्थपणे पेलले आहे. स्वातंत्र्योत्तर विशे ात: साठोत्तरी काळ हा सर्वच अंगाने महत्त्वाचा काळ म्हणावा लागेल. समाजाच्या तळागळातला माणूस लिहिता झाला. तो त्याला मिळालेल्या या मानव अधिकारामुळेच. साठोत्तरी काळात लिहिल्या गेलेल्या मराठी साहित्यात मानव अधिकाराचे प्रतिबिंब अगदी ठळकपणे पडल्याचे दिसून येते. ''मानव अधिकाराचे मराठी साहित्यातील प्रतिबिंब'' या ोधनिबंधाच्या निमित्तने विचार मांडताना या वि ायाची व्याप्ती मोठी असल्याने मराठी साहित्यातील कादंबरी या वाङ्मयप्रकाराचे अनु ंगाने मते मांडणार आहे.

मानव अधिकार संकल्पना आणि स्वरूप :

मानव अधिकार आणि मराठी साहित्य यांचा सहसंबंध विचारात घेताना प्रथमत: मानव अधिकार ही संकल्पना आणि तिचे स्वरूप लक्षात घेणे महत्त्वाचे ठरते.

माणूस म्हणून जन्माला आल्यावर माणसाला जे नैसर्गिक अधिकार प्राप्त होतात. त्याला मानव अधिकार असे म्हणता येईल. संयुक्त रा ट्राच्या आमसभेत १० डिसेंबर १९४८ रोजी स्वीकारलेल्या मानवअधिकाराच्या १९६६ मध्ये संयुक्त रा ट्रसंघाच्या आमसभेत ''मानवी हक्काचे आंतररा ट्रीय विधेयके म्हणून मान्यता मिळाली. या घो ाणापत्रात एकूण ३० कलमे आहेत. या कलमामध्ये दिलेले सर्व हक्क म्हणजेच मानव अधिकार होय. या अधिकारांनीच खऱ्या अर्थाने मानवी समाजजीवनात मोठ्या प्रमाणात स्थैर्य निर्माण झाले. माणसाला माणूस म्हणून जगण्याला आणि आपल्या अस्तित्वाला सिध्द करण्याला मोठा आधार मिळाला. मानव अधिकाराला काही तरतूदी विचारात घेता येतील. त्या अशा आहेत.

1 प्रत्येक मनु य जन्म: स्वतंत्र आहे आणि हक्काच्या आणि दर्जाच्या बाबतीत समान आहे.
2 हक्कापासून कोणालाही जात, धर्म, भा ा, लिंग, वंश, वर्ण इत्यादीच्या आधारे वंचित केले जाउफ ाकत नाही.
3 प्रत्येक व्यक्तीस जीवन जगण्याचे स्वातंत्र्य आणि सुरक्षितेतचा अधिकार आहे.
4 कोणालाही गुलामगिरीमध्ये ठेवता येणार नाही.
5 कोणत्याही व्यक्तीला अमानवीय दंड देता येणार नाही.
6 कायद्याने सर्व समान आहेत.
7 कोणत्याही व्यक्तीला अकारण अटक करता येणार नाही.
8 प्रत्येक व्यक्तीला कायद्याच्या अधिन राहण्याचे हक्क असावेत.

कादंबरीकार लिहिते झाले. कादंबरी समाजातील वेगवेगळ्या घटकातील माणसांच्या जगण्याचे वास्तव तसेच अनेकांगी चित्र साकारू लागली. कादंबरी आणि समाज यांचा अनोन्य संबंध प्रस्थापित झाला. माणसाच्या जीवनविश्वाचे भिन्न भिन्न पैलू कादंबरीतून कारण परिणामासकट ाब्दबध्द होऊ लागले. कादंबरीतून साकारणाऱ्या या अनुभवविश्वाच्या अनु ंगाने हरिश्चंद्र थोरात यांनी मांडलेले मत विचारात घेतले म्हणजे मानव अधिकाराचे कादंबरीत कसे ठळक प्रतिबिंब उमटते ते प्रत्ययास येते. ते लिहितात, ''कादंबरीमधून मानवी अनुभवाचे जे विश्व साकार होताना दिसते. ते सामाजिक संस्थासापेक्ष असते. कुटुंब, शिक्षण, राज्यव्यवस्था इ. सामाजिक संस्थांच्या संदर्भात मानवी आयु याला जाणारे विविध छेद कादंबरीमधून साकार होत असतात. खऱ्याखुऱ्या माणसांप्रमाणेच या पात्रांना मुल्यव्यवस्थेने एकत्र बांधलेले असते. अनुनय, विवाह पध्दती, कौटुंबिक आयु य, परस्परसंबंधांना आणि नात्यांना समाजाकडून दिले गेलेले विशि ट अर्थ, समाजाप्रमाणेच कादंबरमध्येही आढळतात. समाजावर होणारे नव्या विचारांचे आघात, या विचारांना होणारा विरोध, त्यांच्या अनु ंगाने समाजात निर्माण होणारी वादळे, या गो टींचा परामर्श कादंबरी घेत असते''[२] थोरात यांचा वरील परिच्छेद विचारात घेतला म्हणजे कादंबरी मानवी जीवनातील विविधागांनी कशी साकारते ते स्प ट होते. तसेच कादंबरीतून साकार झालेल्या या जीवनचित्रणाच्या मुळाशी मानव अधिकारात समावि ट असलेल्या तरतुदीचीही जाणीव होते. लेखकाला मानव अधिकाराने दिलेल्या या बळामुळेच तो मानवी जगण्याचे असे भावविश्व प्रकट करू ाकतो हे सत्य आहे.

साठोत्तरी काळात लिहित्या झालेल्या कादंबरीकारांसमोर खऱ्या अर्थाने खूप मोठी आव्हाने उभी होती. शिक्षणाने ाहाणा झालेला समाज एकेकडे तर रूढी, परंपरा आणि संस्कृतीच्या जोखंडात अडकलेला समाज दुसरीकडे अशी समाजाची स्थिती होती. अशा वास्तवात ग्रामीण आणि नागरी या दोन्ही स्तरांवरचे चित्रण लेखकांनी आपल्या कादंबरी लेखनातून उभे केले आहे. लोकशाही मूल्यव्यवस्था स्विकारलेल्या या देशात अजूनही लोकांना मूलभूत हक्कांपासून कसे वंचित रहावे लागत आहे ते या कादंबरीकारांच्या आकलनातून प्रतिबिंबित होते. मानव अधिकार या संकल्पनेची पुसटशीही जाणीव नसणारा मोठा वर्ग त्या काळात कशा पध्दतीने वावरत होता. जाती व्यवस्था समाजात टिकून होती याचे चित्रण या काळातील कादंबरीकारांच्या लेखनातून प्रखरतेने दिसून येते.

या काळात उध्दव ोळके, भाऊ पाध्ये, भालचंद्र नेमाडे, मनोहर ाहाणे, पु.शि.रेगे, मनोहर तल्हार, जयवंत दळवी, चि.त्र्यं.खानोलकर, रणजित देसाई, ंकर पाटील, हमीद दलवाई, ारदचंद्र मुक्तीबोध अशी एक पिढीच लिहिती झाली. या कादंबरीकारांनी विविधांगी जीवनवास्तवाचा वेध घेतला. या कादंबऱ्यातून साकारलेल्या जीवन चित्रणाचे स्वरूप विशद करताना नागनाथ कोत्तापल्ले लिहितात, ''१९५० नंतर (आणि विशे ात: १९६० नंतर) मराठी कादंबरी झपाट्याने बदलत आणि विकसित होत गेली. वेगवेगळ्या जीवनक्षेत्रातील अनुभवांचे आकलन करण्याचा प्रयत्न ती करू लागली. ग्रामीण प्रादेशिक, दलित, राजकीय, ऐतिहासिक, पौराणिक अशा अनेक दिशांनी ती प्रयोगशील झाली. वेगळी संवेदनशीलता, वेगळी ैली जाणवू लागली. कादंबरीच्या घाटाच्या संदर्भातही वेगळ्या जाणीवाही कादंबरी प्रकट करू लागली. एकूण १९५० नंतर मराठी कादंबरी फुलून आली.''[3] कोत्तापल्ले यांनी कादंबरीच्या आशया संदर्भात मांडलेले मत विचारात घेतले म्हणजे कादंबरीकार जीवनाच्या भिन्न भिन्न स्तरातील जगण्याचे चित्रण करताना समाजातील बदलत्या मानसिकतेचाही वेध कशा प्रकारे घेत होते ते दिसून येते. मानवी अधिकाराची जाणीव समाजात होणे कसे होते ते पटते.

कादंबरीतील राजकीय जाणीवा :

राजकीय जीवनाच्या जाणीवा प्रकट करणाऱ्या कादंबऱ्याही या काळात मोठ्या प्रमाणात लिहिल्या गेल्या. महानगरीय जाणीवा प्रकट करणाऱ्या कादंबरीकारांनी राजकीय जीवन जाणीवांचा घेतलेला वेधही अत्यंत परिणामकारक आहे. मानव अधिकाराचे सार्वत्रिकरण झाल्याने राजकीय हक्कासाठी लोक पुढाकार घेऊ लागले. यातून सर्वसामान्यांना मध्यवर्ती राजकीय जीवनात सहभागी

YASHWANTRAO CHAVAN MAHAVIDYALAYA

मूल्यव्यवस्था संविधान विचार अशा मूल्यात्मक बाबींना सामान्य माणसांना अधिकार दिले. परंतू ते फक्त कागदोपत्रीच. त्यामुळे समाजातील अनेक प्रश्न आजही अनुत्तरीतच कसे राहिले आहेत. समस्यांचा विळखा ग्रामीण दलित माणसांना आजही कसा बंदिस्त करत आहे. ते डॉ.द.ता.भोसले यांनी केलेल्या विवेचनावरून अधिक स्प ट होईल ते लिहितात, ''लोकशाही जीवनमूल्ये स्वीकारलेल्या आपल्या देशात सामान्य माणसाला किंमत प्राप्त झाली असली तरी ती फक्त मतदानापुरती आणि कागदावरतीच. रोजच्या दैनंदिन जीवन व्यवहारात या सामान्य माणसांची जे ससेहोलपट होत आहे, जी कुंचबणा होते आहे, त्याला तोड नाही. पराकोटीला पोचलेली आर्थिक वि मता, जन्मताच या माणसाच्या कपाळी कोरलेले दारिद्र्य आणि जन्माला येणारी उपासमार, निर्दयपणे होणारे त्याचे ो ण ; अज्ञान, कर्मकांड आणि दहशत यांचा त्याच्या गळ्याला बसलेला फास आणि तत्वभ्र ट, राजकारणाने त्याच्या बांधलेल्या मुसक्या, यामुळे या 'स्वतंत्र' देशात 'गुलाम' म्हणून वावरणाऱ्या सामान्य माणसाला आपले जीवन म्हणजे परमेश्वराने केलेली कठोर शिक्षा वाटते.''[६] भोसले यांनी वर्तमान ग्रामीण समाजजीवनाचा घेतलेला वेध विचारप्रवृत्त करायला लावणारा आहे. मानव अधिकार स्वीकारलेल्या या देशात आजही सामान्य माणसांची होणारी परवड प्रश्नांकीत करून सोडणारी आहे. या ग्रामीण समाजजीवन वास्तवाला आपल्या प्रतिभासामर्थ्याने त्या त्या दशकातील ग्रामीण कादंबरीकारांनी प्रतिबिंबीत केले आहे. या ग्रामीण समाजवास्तवाची वेगवेगळी क्षेत्रे धुंडाळून अनेक ग्रामीण कादंबरीकारांनी वास्तव जीवन साकारले आहे. धग, माझा गाव, देव चालले, रथचक्र, माणूस, कोसला, वैतांगवाडी, टारफुला, इंधन चक, अजगर आणि स्वामी आदि कादंबऱ्यातून सामाजिक राजकीय, दलित, ग्रामीण जीवनाचे वास्तव चित्रण या कादंबऱ्यातून प्रतिबिंबीत झालेले आहे. या कादंबरीकारांनी बदलत्या ग्रामीण वास्तवाचा वेध घेतानाच आजही आपला हक्क, आपले स्वातंत्र्य आणि न्यायापासून परावलंबी असणाऱ्या ग्रामीण जीवनावि ायीचे चिंतन मांडले आहे. रा.रं.बोराडे, आनंद यादव, ना.धों.महानोर, चंद्रकुमार नलगे, महादेव मोरे, ंकर पाटील, द.ता.भोसले, लक्ष्मीकांत तांबोळी, वासुदेव मुलाटे,या कादंबरीकारांनी १९७०–७५ पर्यंतच्या काळातील ग्रामीण वास्तवाचे वेगवेगळे कांगारे अधोरेखित केले आहेत. या कादंबरीकारांच्या कांदबऱ्याचा आशय, या कादंबऱ्यातून उभी केलेली पात्र विचारात घेता वेगवेगळ्या प्रादेशिक ग्रामीण जीवनाचे वास्तव चित्र सामोरे येते. रा.रं.बोराडे यांनी 'पाचोळा','चारापाणी' यासारख्या ग्रामीण कादंबऱ्यातून शिक्षण आणि आधुनिक विचारसरणी आत्मसात केलेल्या ग्रामीण माणसांपुढे उभे राहिलेल्या प्रश्नांचा वेध घेऊन समाजातील असमानता आणि पारतंत्र्यांची तसेच मुलभूत हक्कापासून वंचित ग्रामीण माणसांचे प्रश्न अधोरेखित करून मुल्यव्यवस्थेचे काय? मानव अधिकार या माणसासाठी नाही, का? असे प्रश्न उपस्थित केले आहेत तर 'आमदार' सौभाग्यवतीसारखी कादंबरी लिहून राजकीय जीवनात ग्रामीण स्त्रीयांना स्थान मिळाले पण त्यांच्या विचार स्वातंत्र्याचे कसे वाभाडे निघत आहेत हेही अधोरेखित केले आहे. आनंद यादवांना 'गोतावळा', 'नटरंग', 'झोंबी', 'नागरंगी', 'घरभिंती','काचवेल' अशा वैविध्यपूर्ण कादंबऱ्या लिहून ग्रामीण समाज जीवनाचा विविधांगी धांडोळा घेतला आहे. आधुनिकीकरणाच्या रेट्यात सर्वसामान्य माणसाची होणारी परवड ते अत्यंत प्रत्ययकारितेने चित्रित करतात. ना.धों. महानोर यांची 'गांधारी' ग्रामीण स्त्रीजीवनाचे विविध भावतरंग साकारते. चंद्रकुमार नलगे यांच्या 'आगीनफुल', 'गस्त', 'देवाची साक्ष' या कादंबऱ्याही आदर्शपूजन, परंपरागत मूल्यांचा स्वीकार व पुरस्कार अशा वेगवेगळ्या विशे ांना घेऊन साकारतात. द.ता.भोसले यांची 'मी आणि माझा बाप' दोन पिढीतील बदलता वैचारिक संघ ि चित्रित करते. तसेच आधुनिक विचारांचा नव्या पिढीवर होणारा परिणामही साकारते. या कादंबरीकारांच्या कादंबऱ्याचा असा धावता आढावा घेऊन मानव अधिकार आणि ग्रामीण समाजजीवन या वि ायाला असा स्पर्श करता येतो.

१९७५ ते २००० या काळात व पुढील काळात ग्रामीण कादंबरी आणखीही वेगवेगळ्या अंगाने बदलत गेल्याचे दिसून येते. या काळात लिहिणारे ग्रामीण कादंबरीकार जुन्या विचारसरणीतून आलेल्या आणि नव्या विचारसरणीत वावरणाऱ्या ग्रामीण समाज जीवनातील सामाजिक, ैक्षणिक, सांस्कृतिक, राजकीय, धार्मिक जीवनाचे प्रभावी चित्रण करतात. आनंद

कालगर्भ ही ९० च्या दशकातील दलित माणसांच्या जीवनविश्वावर नेमका प्रकाश टाकणारी कादंबरी आहे. दलित समाजासाठी आणि त्याच्या मूलभूत हक्कासाठी संघ f करणाऱ्या तरूणांची मनोवृत्ती या कालखंडातील कांदबऱ्यातून चित्रित होते. शिक्षणाने आत्मभान आलेला दलित तरूणाला मानव अधिकाराने दिलेले बळ तो आपल्या समाजउध्दारासाठी कसा सिध्द करू पाहतो ते अनिल सहस्त्रबुध्दे यांच्या 'मातंगी' या कादंबरीतून प्रत्ययास येते. तर वैजनाथ कळसे यांनी लिहिलेली 'तीन भिंती' ही दलित कादंबरी आधुनिक जीवन विचाराच्या गर्तेतील दलितांच्या ैक्षणिक, जातीयवादी, राजकारण आणि भ्र टाचार या विविध अंगांना अधोरेखित करणारी आहे. या काही प्रातिनिधीक दलित कादंबरीच्या कादंबरी लेखनाचा परामर्श घेता दलित कादंबरीकारांनी आपल्या सभोवतालच्या वास्तवाला साकारताना बदलत्या मनोवृत्तीचाही नेमकेपणाने वेध घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. मानव अधिकार, संविधान मूल्यव्यवस्था, लोकशाही अशा मानवमुक्तीच्या संकल्पना भारतीय समाजात मान्य झाल्या. तत्त्वापेक्षा तपशीलाचेच प्रश्न दलित समाजाच्या बाबतीत अधिक उग्र बनले आहेत. बहुसंख्य समाजाच्या दुरप्पी, दुहेरी, दांभिक आणि बेजबाबदार वृत्तीमुळे, दलित समाज मुक्त झाला असला तरी दलित व्यक्ती मुक्त झालेली नाहीए''[५] या दाहक वास्तवावर उभ्या असलेल्या दलितांच्या जगण्यावि ायीचे चिंतन दलित कादंबरीचा वि ाय होणे अपरिहार्य बनते. अशा वास्तवातून उद्भवलेला प्रश्नांना दलित कादंबरीकारांनी परिणामासकट कादंबऱ्यातून मांडले आहे.

सारांश :

सरतेशेवटी सारांशरूपाने असे सांगता येते की, मानव अधिकार हे माणसांना जगण्यासाठी निर्माण झाले. त्याला त्याच्या स्वत्वाचे अधि ठान प्राप्त होण्यासाठी मानव अधिकाराची निर्मिती करण्यात आले. या अधिकाराने माणसांना आत्मबळ निर्माण झाले. परंतू त्याचा प्रसाद मात्र अत्यंत अल्प आहे. स्वातंत्र्योत्तर काळात निर्माण झालेल्या सामाजिक, ैक्षणिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजकीय परिस्थितीच्या प्रतिबिंबातून साकारलेली भिन्न भिन्न प्रवाहातील आणि प्रकारातील मराठी कादंबरी मानव अधिकाराचे समाजातील नेमके प्रतिबिंब दर्शविणारी आहे. या कादंबरीकारांनी या मूल्यव्यवस्थेचा समाज जीवनावर व व्यक्तिमनावर होणारा बरावाईट परिणाम अत्यंत प्रत्यकारिकतेने चित्रित केला आहे. या कादंबरीकारांनी कादंबरीतून साकारलेले जीवनविश्व मानवी समाजातील बदलाबरोबरच मानव अधिकार लोकशाही सांविधानिक मूल्य यावि ायी अनेक प्रश्न उपस्थित करणारे आहे.

मानव अधिकाराचे साहित्यातील प्रतिबिंब या वि ायाच्या अनु ंगाने विशे तः मराठी कादंबरीच्या संदर्भाने विचार मंथन करताना माझ्या चिंतनाला मर्यादा असल्याची मला जाणीव आहे. मी मांडलेले हे विचार कदाचित एकांगी व अपुरे वाटण्याचीही ाक्यता नाकारता येणार नाही. तरीही या वि ायांच्या संदर्भाने छोटीशी दाखविण्यासाठी या विचाराचा चिंतनाचा उपयोग होईल असा मला विश्वास वाटतो.

संदर्भ:

१. प्रशांत बुकणे, भ्नउंद त्पहीजे ब्वदबमचजे दक ेपमे म्कपजवत पद बेपमि डंदहमी क्हहव्रंतण ैपअदमतप च्नइसपेीमतेए ।उतंअंजपएए म्कपजपवदे.२०१२ए च्हम.३२९ण

२. हरिश्चंद्र थोरात, कादंबरी : एक साहित्यप्रकार, ाब्द पब्लिकेशन्स, मुंबई, प्र.आ.२०१०, पृ. १२०

३. नागनाथ कोत्तापल्ले, प्रति ठाण, जानेवारी १९८१ संपादकीय.

४. विनायक येवले, साक्षात जानेवारी ते जून २०१६, पृ.३९

५. मधु सावंत, प्रति ठान, मार्च–एप्रिल–मे–जून २००८, पृ.६६

६. डॉ.द.ता.भोसले, साहित्य : अस्वाद आणि अनुभव, ग्रंथाली प्रकाशन, मुंबई, प्र.आ.२०१२, पृ. ४

७. डॉ.रविंद्र ठाकूर–मराठी ग्रामीण कादंबरी, स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे, प्र.आ.१९९३, पृ.१८९

८. रा.ग.जाधव, साहित्य व सामाजिक संदर्भ, कॉन्टीनेन्टल प्रकाशन, पुणे, तृ.आ.२००३, पृ.५५

NAVANI MAHAVIDYALAYA

ISBN 978-81-926341-7-3

ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार
-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे



Shri Swami Vivekananda Shikshan Sanstha, Kolhapur's

ARTS AND COMMERCE COLLEGE,

NAGTHANE, SATARA (M. S.)



Accredited at 'B' level by NAAC

SOUVENIR

ONE-DAY MULTI DISCIPLINARY NATIONAL CONFERENCE ON

HUMAN RIGHTS

Friday, 30th December 2016

2016-17
National Level

Prof. Dr. Subhash Shelake
Editor & Organizing Secretary

Principal Dr. Ashok Karande
President of Editorial Board & Convener

Prof. Vijay Kulkarni
Treasurer

Prof. Dr. Mrs. Shailaja Mane
Member

Prof. Amol Sonawale
Member

TUKARAM SHIVANI MAHAVIDYALAYA

 ISBN 978-81-926341-7-3

28. Human rights and corporate social responsibility

Principal Dr. J. S. Deshmukh
Asst. Prof. Kale N. B.
Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur

Introduction

Today, most of the companies obey the human rights standard. Especially in India after the 1984 Bhopal chemical gas leak that killed thousands in India. In the 1990s, non-governmental organizations (NGOs) campaign against child labour and other abuses in the supply chains of important apparel and footwear companies. They also denounced assumed abuses by mining, oil and gas companies including complicity in violence by government security forces and pollution that damaged the health of people in nearby communities.

Now, the most of the companies tended to approach social issues through their corporate social responsibility programmes.. On the other hand, many corporate social responsibility initiative are undertaken selectively, based on what the company happily chooses to address. A human rights approach are most necessary on the point of view of the companies to deference the entire human rights; they do not have the option of picking and choosing to deal with only those issues with which they feel comfortable. A human rights framework provides a universally recognized, people-centered approach to companies' social & environmental impacts.

For protection, respect and remedy of human rights, The United Nations Human Rights Council endorsed the "Guiding Principles on Business and Human Rights in 2011. This help to the state duty to protect against human rights abuse; the corporate responsibility to respect human rights; and greater access by sufferers to effective remedies. Furthermore in 2011, the Council established a Working Group on business & human rights, and an annual Forum on business & human rights, organized by the Working Group. Previously, the UN had launched the voluntary Global Compact in 2000; and appointed a Special Representative on business & human rights in 2005, who drafted the Guiding Principles.

Most of the Companies have joined simultaneously, in some cases with governments, international organizations and/or NGOs, in voluntary initiatives to address some human rights issues. The numbers of companies are taking positive steps to promote human rights. It is a most important thing to human rights.

- **Objective of the research paper**

1. To know about corporate social responsibility
2. To know the guiding principles on business and human rights
3. To know corporate responsibility impact on Human rights

- **The State duty to protect human rights**

A. Foundational principles

1. States must protect against human rights attacks on within their territory and/or jurisdiction by third parties, including business enterprises. This has need of taking right steps to prevent, investigate, punish and redress such abuse through effective policies, legislation, regulations and adjudication.

States' international human rights law obligations have need of that they the state duty to protect is a standard of conduct i.e. respect, protect and fulfill the human rights of individuals within their territory and/ or jurisdiction. This includes the duty to protect against human rights abuse by third parties, including business enterprises.

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA

2. States should set out clearly the anticipation that all business enterprises domiciled in their territory and/or jurisdiction respect human rights all over their operations.

At current States are not usually necessary under global human rights law to control the extraterritorial activities of businesses domiciled in their territory and/or jurisdiction.

B. Operational principles

General State regulatory and policy functions

3. In meeting their duty to protect, States have a need to:

(a) Enforce laws that are directed at, or have the effect of, having need of business enterprises to respect human rights, and periodically to assess the adequacy of such laws and address any gaps; (b) Ensure that other laws and policies making necessary the creation and on-going operation of business enterprises, such as corporate law, do not limit by force but making able business respect for human rights;

(c) Provide effective guidance to business enterprises on how to respect human rights throughout their operations;

(d) Support, and where appropriate require, business enterprises to exchange how they address their human rights impacts.

4. States should take additional steps to protect against human rights abuses by business enterprises that are owned or controlled by the State, or that get important support and services from State agencies such as export credit agencies and official investment insurance or give support to offices, including, where appropriate, by having need of human rights due diligence.

5. States should exercise adequate oversight in order to meet their international human rights obligations when they contract with, or legislate for, business enterprises to make ready services that may impact upon the enjoyment of human rights.

6. States should give help to respect for human rights by business enterprises with which they control of business transactions.

- **The corporate responsibility to respect human rights**

A. Foundational principles

1. Business enterprises should respect human rights. This means that they should avoid infringing on the human rights of others and should address adverse human rights impacts with which they are involved.

2. The responsibility of business enterprises to respect human rights refers to internationally recognized human rights – understood, at a minimum, as those expressed in the International Bill of Human Rights and the principles concerning fundamental rights set out in the International Labour Organization's Declaration on Fundamental Principles and Rights at Work.

3. The responsibility to respect human rights has need of those business enterprises:

(a) Avoid causing or contributing to going against to do with human rights impacts through their own operation, and address such impacts when they come to mind;

(b) Try to find to avoid or mitigate adverse human rights impacts that are directly connected to their operations, products or services by their business relations, even if they have not contributed to those impacts.

4. The responsibility of business enterprises to respect human rights puts to use to all enterprises whatever the facts may be of their size, sector, operational context, ownership and structure. However, the scale and being complex of the means through which enterprises meet that responsibility may different according to these factors and with the severity of the enterprise's adverse human rights impacts.

MAHAVIDYALAYA

5. In order to meet their responsibility to respect human rights, business enterprises should have in place policies and processes right to their size and circumstances, including:
(a) A policy commitment to meet their responsibility to respect human rights;
(b) A human rights due diligence process to identify, prevent, mitigate and account for how they address their impacts on human rights;
(c) Processes to enable the remediation of any adverse human rights impacts they cause or to which they contribute.

B. Operational principles

6. As the basis for embedding their responsibility to respect human rights, business enterprises should express their commitment to meet this responsibility through a statement of policy that: (a) Is approved at the most senior level of the business enterprise;
(b) Is informed by relevant internal and/or external expertise;
(c) Stipulates the enterprise's human rights expectations of personnel, business partners and other parties directly linked to its operations, products or services;
(d) Is publicly available and communicated internally and externally to all personnel, business partners and other relevant parties;
(e) Is reflected in operational policies and procedures necessary to embed it throughout the business enterprise. Informed will vary according to the complexity of the business enterprise's

7. In order to identify, prevent, mitigate and account for how they address their adverse human rights impacts, business enterprises should carry out human rights due diligence. The process should include assessing actual and potential human rights impacts, integrating and acting upon the findings, tracking responses, and communicating how impacts are addressed. Human rights due diligence:
(a) Should cover adverse human rights impacts that the business enterprise may cause or contribute to through its own activities, or which may be directly linked to its operations, products or services by its business relationships;
(b) Will vary in complexity with the size of the business enterprise, the risk of severe human rights impacts, and the nature and context of its operations;
(c) Should be ongoing, recognizing that the human rights risks may change over time as the business enterprise's operations and operating context evolve.

8. In order to gauge human rights risks, business enterprises should identify and assess any actual or potential adverse human rights impacts with which they may be involved either through their own activities or as a result of their business relationships. This process should:
(a) Draw on internal and/or independent external human rights expertise;
(b) Involve meaningful consultation with potentially affected groups and other relevant stakeholders, as appropriate to the size of the business enterprise and the nature and context of the operation.

9. In order to prevent and mitigate adverse human rights impacts, business enterprises should integrate the findings from their impact assessments across relevant internal functions and processes, and take appropriate action.
(a) Effective integration requires that:
(i) Responsibility for addressing such impacts is assigned to the appropriate level and function within the business enterprise;
(ii) Internal decision-making, budget allocations and oversight processes enable effective responses to such impacts.



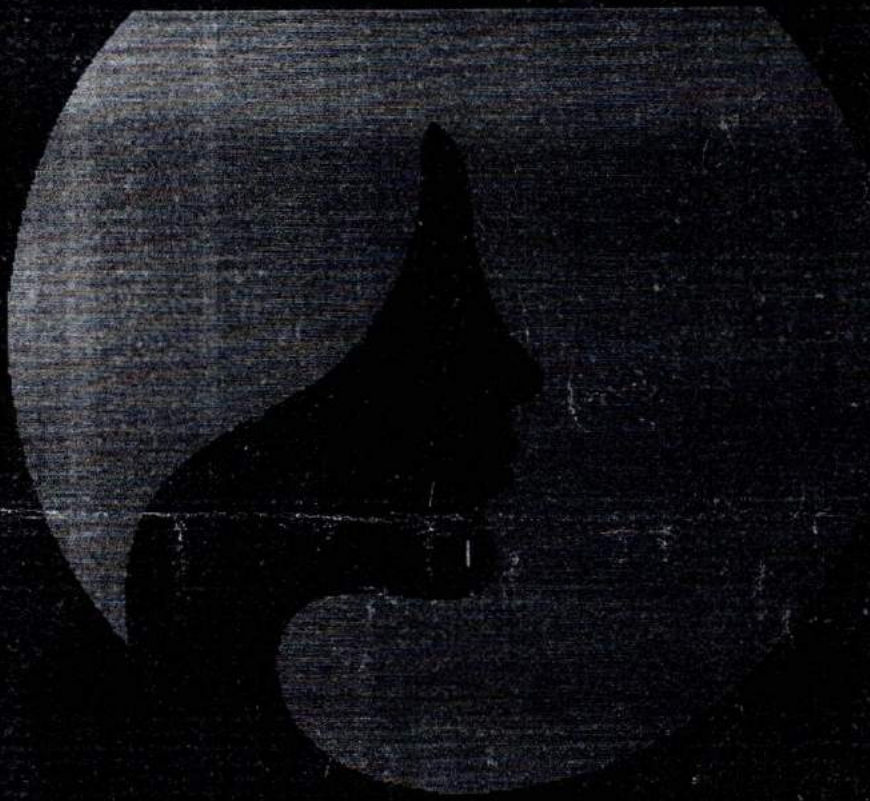
(b) Appropriate action will vary according to:
(i) Whether the business enterprise causes or contributes to an adverse impact, or whether it is involved solely because the impact is directly linked to its operations, products or services by a business relationship;
(ii) The extent of its leverage in addressing the adverse impact.
10. In order to verify whether adverse human rights impacts are being addressed, business enterprises should track the effectiveness of their response. Tracking should:
(a) Be based on appropriate qualitative and quantitative indicators;
(b) Draw on feedback from both internal and external sources, including affected stakeholders.
11. In order to account for how they address their human rights impacts, business enterprises should be prepared to communicate this externally, particularly when concerns are raised by or on behalf of affected stakeholders. Business enterprises whose operations or operating contexts pose risks of severe human rights impacts should report formally on how they address them. In all instances, communications should:
(a) Be of a form and frequency that reflect an enterprise's human rights impacts and that are accessible to its intended audiences;
(b) Provide information that is sufficient to evaluate the adequacy of an enterprise's response to the particular human rights impact involved;
(c) In turn not pose risks to affected stakeholders, personnel or to legitimate requirements of commercial confidentiality.

Bibliography:

1. *Human rights and social justice- Amarthay sen*
2. *Human Right -joun belay*
3. *Human rights and business – oxford university press*
4. *Human rights and corporate responsibility- world politics journals*
5. https://www.humanrights.gov.au/.../corporate-social-responsibility-huma...
6. https://en.wikipedia.org/wiki/Human_rights
7. www.un.org/en/universal-declaration-human-rights/
8. *nhrc.nic.in/*
9. www.humanrights.com/

The Role of Women in the Development of India after Independence

Editor
Prin. Dr. S. M. Maner



The Role of Women in the Development of India after Independence

Chief - Editor
Prin. Dr. S. M. Maner

Co-Editor
Mr. S. S. Sutar

Publisher
Dr. S. M. Maner
Principal
Kakasaheb Chavan College, Talmavale
Tal - Patan, Dist - Satara
&
Sanwad Pro. Pvt. Ltd.
873, C/2, Siddhishri Plaza,
Rajaram Road, Kolhapur - 416002
Mob. 9890554340
E-mail. nirmitisanwad@gamil.com

Typesetting : Bharatbhushan P. Narandekar
Cover : Gangadhar S. Mhamane
Printer : Miroor Offset, Kolhapur
First Edition : 6, June 2017
Publishing No. 6

ISBN : 978-93-82028-57-4

Price : 200 /-

Disclaimer:
The views expressed in research papers by the authors are their own and the editors do not accept any legal responsibility regarding plagiarism or inaccuracy for the views of authors.

©Copyright Reserved (2016)
No part of this proceeding should be reproduced or translated in any form or by any ways, without the prior permission of the publisher.

2017-18
National





Media in Sports
- Prof. Patil N.D. / 85
Women Entrepreneurship's Problems and solutions
- Asso. Prof. Sheetal Mahadik / Prin. Dr. Sanjeev Late / 87
Women Self Help Groups (SHG) and Micro Finance
- Prof. Heddure B.R. / 90
स्वातंत्र्योत्तर भारतातील महिलांचा राजकीय सहभाग
श्री. ए.बी. गायकवाड / प्रा. श्री. डी. आर. निकाळजे / प्रा. बी. के. नगरे / 93
Self-Help Groups and Women Empowerment: A Study
- Prof. Arage Laxman Tavanappa / 96
Human Rights - Book Review
- Dr. Bharat Patil / 99
Participation of Women in Industrial and Agricultural Development in India
- Mr. Gurav Santosh Arun/ 103
Women Empowerment
- Mr. Sudhir Narayan Sawant / 106
Women's socio-economic condition in India: A Review
- Uthale Jayamala Arjun / 109
Women Empowerment in India
- Dr. Anjuman I. Momin / Mr. Vaibhav J. Mali / 112
Women Empowerment in India
- Prof. M.R.Mangutkar / Prof. K.K. Chawan / 114
[illegible] आरक्षण आणि भारतीय राज्यघटना
– प्रा. ए.बी. जाधव / 117
[illegible] इतिहास लेखनात स्त्रियांचे योगदान
– प्रा. डॉ. संभाजी आनंदा मोरे / 119
[illegible] काळातील स्त्रीचा विकास
– प्रा. सौ. स्मिता तानाजी पाटील / 121
[illegible] सबलीकरण – काळाची गरज
– प्रा. डॉ. दादासाहेब बापूराव जाधव / 124
[illegible] स्वातंत्र्योत्तर स्त्रीसुधारणा चळवळीची वाटचाल
– प्रा. डॉ. नितेश प्रेमनाथ सुरवसे / 127

स्वातंत्र्योत्तर भारतातील महिलांचा राजकीय सहभाग

श्री. ए.बी. गायकवाड / प्रा. श्री. डी. आर. निकाळजे / प्रा. बी. के. नगरे
(संशोधक विद्यार्थी)(ग्रंथपाल) (सहा. प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग)
तुळजाभवानी महाविद्यालय, तुळजापूर

प्रस्तावना :

लालबहादूर शास्त्रीच्या मृत्यूनंतर २४ जानेवारी १९६६ साली इंदिरा गांधीनी भारताच्या पहिल्या महिला पंतप्रधान म्हणून सूत्रे स्वीकारली २४ मार्च १९७७ पर्यंत देशाच्या महिला पंतप्रधान म्हणून महत्त्वाची भूमिका बजावली त्यांनी गरिबी हटविण्यासाठी प्रथम दहा कलमी कार्यक्रम राबविला. इंदिराजींची अलौकिक व असामान्य कामगिरी लक्षात घेवून त्यांना १९७१ मध्ये भारतरत्न हा किताब देवून सन्मानित केले. यावरून हे स्पष्ट होते की महिलांना जर राजकीय सहभाग दिला तर त्या देखील असामान्य कर्तव्य सिध्द करू शकताता आणि प्रतिगामी वाांना चपराक देवू शकतात. त्याचबरोबर दुसऱ्या बाजूला पाहिल्यास प्रतिगामीवाांचे दळील म्हणणे सत्यात उतरताना दिसून येतात व त्याचे भारतीय राजकारणाच्या दळील ते थोड्या फार प्रमाणात लागू होतात. ज्यामध्ये अनेक महिला राजकारणी या आपल्या कौटुंबिक जाबाबदारी पासून मुकत असताना दिसून येतात. त्यामध्ये त्यांना कौटुंबिक जबाबदारी नसणाऱ्या अनेक महिला राजकारन्यांनी उदाहरणे देता येतील. त्यामध्ये उत्तरप्रदेशच्या माजी मुख्यमंत्री मायावती, तामिळनाडूच्या मुख्मंत्री ज्यांचे आत्ताच काही दिवसापूर्वी निधन झाले त्या जयललिता असतील किंवा उमा भारती असलीत अशा प्रकारच्या महिला या राजकारणात सक्रिय असल्याच्या दिवसात परंतु त्या कौटंबिकदृष्ट्या च्या उदासिन असल्याच्या दिसतात. अशा प्रकारे दोन्ही विचारसरणीचा मिलाफ हा भारतीय राजकाणामध्ये दिसून येतो. अशा प्रकारे स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजकारणामध्ये महिलांचा सहभाग हा अत्यल्प असा दिसून येतो.

उद्देष्ट्ये : - १. स्वातंत्र्योत्तर भारताच्या राजकाणामध्ये महिलांचा सहभागाचा आढावा घेणे. २. महिलांचे राजकीय सहभाग आहे किंवा नाही याचा शोध घेणे. ३. महिला आणि राजकीय सहभाग याचा परस्पर संबंध शोधणे. ४. सध्यस्थितीत महिलांची राजकाणारतील स्थितीचा आढावा घेणे.

स्वातंत्र्योत्तर भारताच्या राजकारणातील महिलांचा सहभाग :- राजकीय सहभाग हि एक व्यापक अर्थ असणारी संकल्पना आहे. ती फक्त मतदानाचा हक्क एवढ्या पर्यंतच मर्यादित नसून त्यामध्ये महिलांना निर्णय निर्धारणामध्ये सहभाग, राजकीय

सक्रियता राजकीय जागृती इ. अर्थाने ती वापरली जाते. भारतामध्
मतदानचे प्रमाण तसेच सरकारी पदे आणि राजकीय पक्षामधील महि
याबाबत पुरूषांचया तुलनेत अगदीच नगण्य स्वरूपाचे आहे यामध्
लिंगभेदभाव दिसून येतो. भारतामध्ये महिलांना राजकीय आरक्षण लागू
आले आहे ते पण फक्त स्थानिक स्वराज्य संस्थापुरतेच मर्यादित आहे.

आधुनिक राज्यव्यवस्थेत लोकांचा सहभाग असणे आवश्यक आहे
आता राज्याच्या कार्याची व्याप्ती वाढली आहे. सुरक्षा, कायदा व व्यवस्था व
अनेक लोककल्याणाची कामे राज्याकडून केली जातात. ही सर्व कामे लो
सहभागाविाय आणि किमान पाठिंब्याशिवाय अशक्य आहेत. तसेच आ
काळातील राज्य भौगोलिक दृष्टिने देखील मोठे आहे. राज्याच्या अशा विस्त
प्रत्यक्ष लोकशाही अशक्य आहे. म्हणून प्रतिनिधिक लोकशाही अस्तित्वात
प्रतिनिधिक लोकशाहीत जनतेने निवउलेले प्रतिनिधी अण्णि शासन यांचा
बसविण्यासाठी लोकांच्या राजकीय सहभागाला खूपच महत्व आहे. त
महिलांच्या राजकीय सहभागाला देखील महत्व प्राप्तझाले आहे.

राजकीय सहभाग म्हणजे प्रत्येक राजकीय व्यवर्सेत त्यातील व्यक्ती
नागरिक व्यक्तीगतरित्या किवा संघटनेच्या माध्यमातून त्यांच्या कार्यात सह
होताना दिसतात. अगदी पारंपारिक व्यवस्थेतही असा सहभाग पाहायला मिळ
राष्ट्रराज्य संकल्पना प्रत्यक्षात आल्यावर आधुनिक काळात लोकांच्या राजकी
सहभागाचे महत्व अधिक वाढलेले आहे. आधुनिक काळात लोकांनी राष्ट्रात सामा
जावे त्यांच्या हितात आपले हित सामावलेले आहे असे मानावे ही कल्पना आह
म्हणून आधुनिक राज्यात राज्यकर्ते लोकांना राज्यव्यवस्थेत सहभागी होण्यासाठी
प्रोत्साहन देत असतात यातून ते राष्ट्राचे सामर्थ्य सिध्द करू पाहतात तसेच स्वत:च
अधिमान्यता स्पष्ट करू इच्छितात. राजकीय व्यवसाी कोणत्याही प्रकारची असली
तरी लोक अनेक पध्दतीने राजकीय व्यवसथेत सहभागी होताना दिसतात. उदा.
राजकीय मेळावे, मोर्चे निदर्शने मतदान इ. अर्थात राजकीय व्यवस्थेच्या स्वरूपानुसार
सहभागचे प्रकार आणि त्यात लोकांचया सहभागाची तिव्रता यात फरक पडतो
म्हणजे जिंक्या प्रमताणात आणि जेवढ्या प्रकाराने लोकशाहीमध्ये लाके राजकारणात
भाग घेतील त्यामानाने हुकुमशाही किंवा सर्वकश राज्यात त्यात फरक आढळेल.
परंतु राजकीय व्यवस्था कोणत्याही प्रकारची असली तरी त्यात लोकांचा सहभाग
ही महत्त्वाची गोष्ट आहे हे आपण लक्षात घेतले पाहिजे.

घटनात्मक व कायदेविषयक तरतुदी :- भारतीय घटनेमध्ये महिलांसाठी

The

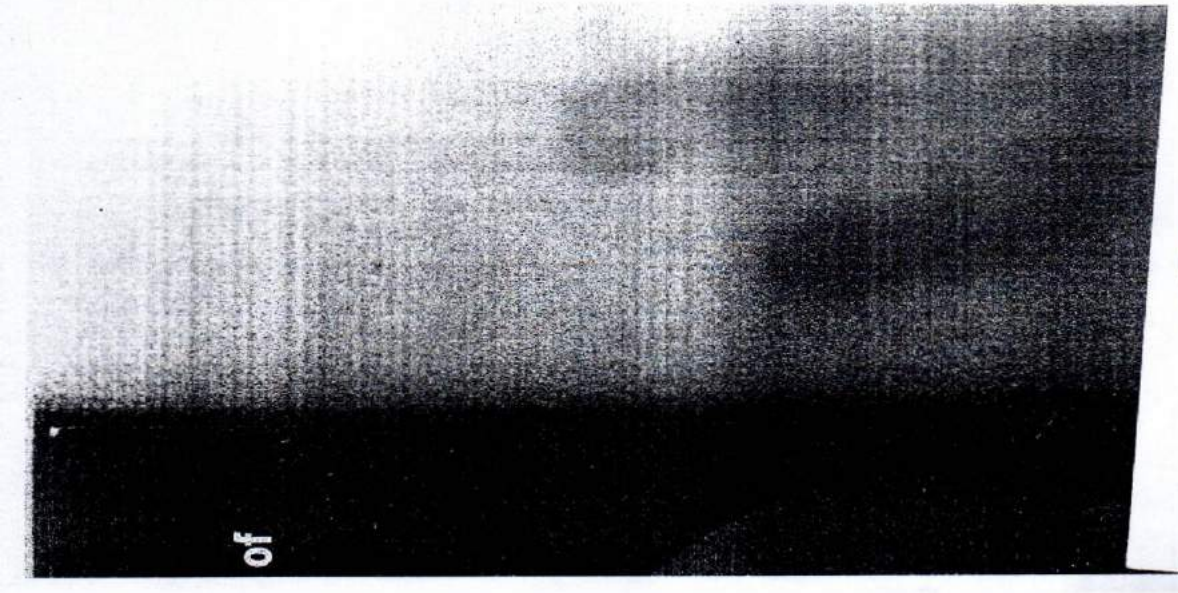
SHAHU CHHATRAPATI MAHAVIDYALAYA

...ई खास तरतुदी करण्यात आल्या आहेत. त्यामध्ये कलम १४,१५ आणि १६ हे ...नतेचे तत्व अंतर्भूत करण्यात आले आहे. तसेच कलम ४५ मध्ये सक्तीचे ... मोफत शिक्षणाची तरतुद करण्यात आली आहे. राज्याच्या मार्गदर्शक ...मध्ये कलम ३९ (इ) मध्ये बालमजूरीसंबंधी तरतूद करण्यात आली हआहे. ...च कादेवषयक तरतुदीमध्ये बाबविवाह प्रतिबंधक कायदे, बालमजूरी प्रतिबंधक ...दा, लिंगनिदान प्रतिबंधक कायदा इ.

संसदेमधील महिला प्रतिनिधीचा सहभाग : - जक्षाच्या तुलनेमध्ये भारतीय ...हिलांचा राजकीय सहभाग हा अतिशय नगण्य स्वरूपाचा आहे. रशियामध्ये ...५ टक्के, नार्वे व रूमानियामध्ये ३४.४ टक्के भारतामध्ये ७.५ टक्के महिला या ...संदेमध्ये प्रतिनिधीत्व करताना दिसून येतात तसेच आर्थिकदृष्ट्या विकसित देशामध्ये ...मेरिका ५.३ टक्के इंग्लंडमध्ये ३.३ टक्के फ्रान्स ६.४ टक्के याला अपवाद भारत ...आहे कारण भारतामध्ये स्थानिक स्वराज्यसंस्थामध्ये महिलांना ५० टक्के आरक्षणाची ...रतुदर करण्यात आली आहे. परंतु सर्वोच्य स्तरावरील संसदीय निवडणुकामध्ये ...हिलांना अशा प्रकारच्या आरक्षणाची तरतुद करण्यात आलेली नाही. संयुक्त ...ष्ट्रसंघाने २००५ मध्ये जगातील महिलांचे प्रतिनिधित्व हे ३० टक्के असेल अशा ...प्रकारचे उद्दिष्टये ठेवले होते परंतु ते काही साध्य झाल्याचे दिसून आले नाही.

सारणी : - समारोप /सारांश :- स्वातंत्र्योत्तर कालखंडामध्ये महिलांचा राजकीय सहभाग हा अतिशय नगण्य स्वरूपाचा दिसून येतो. आपल्या महिलांची स्थिती सुधारण्यासाठी खूनप मोठ्या प्रयत्नांची अजून गरज असल्याचे जाणवतले तसेच त्याचे नेतृत्वाचा वाटा त्याचे सामाजिक, आर्थिक स्थिती तसेच साक्षरतेचा अीााव, व्यवसायविकास कौशल्याचा अभाव, पारंपारिक दृष्टिकोन समाजाची मानसिकता, आत्मविश्वासाचा अभाव, आत्मनिर्धरतेचा अभाव राजकारणाविषयीची उदासिनता राजकीय व प्रशासकीय भ्रष्टाचार, राजकारणाचे गुन्हेगारीकरण इ. महिलांच्या राजकीय सहभाग व१ध्दीसाठी अडथळे आहे. ते दूर करून त्याचा सहभाग वाढीसाठी प्रयत्न करावे लागणार आहेत.

संदर्भग्रंथसूची :- १. Empowerment of Women Emerging Eimensions - S. Chand & Co. LTD New Delhi-
2. Womens Participation in politics and Decision Making Problems & Perspectives - P.P. 110.123.
३. भारतीय इतिहासातील स्त्रिया - फडके प्रकाशन, कोल्हापूर
४. भारतातील सामाजिक चळवळी - सेज प्रकाशन भारत



...NAVANI MAHAVIDYALAYA

RECENT TRENDS IN ENGLISH STUDIES

Editor
Dr. N.B. Pawar

2016-17

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE

in association with

THEMATICS PUBLICATIONS PVT. LTD.

INDOTECH PUBLICATIONS PVT LTD

A Psychosocial Study of *Richard Cory*
Dr. Chanabasappa Sidramappa Mulage
94-100

The Methods of Teaching Communication Skills in English at Collegiate Level
Chandrakant J. Raskar
101-108

Chinua Achebe's *Things Fall Apart*: A Postcolonial Perspective
Rajesh Mahesh Kale
109-116

Diasporic Consciousness in the Selected Novels of Amitav Ghosh
Dr. Y.A. Doke
117-127

Status of Woman in Indian English Literature: An Epigram
Pandurang Rupnar & Dr. Sagar Waghmare
128-139

Magic Realism: A Concise Review
Sanjaykumar Shrirang Shivsharan
140-154

Male Characters in the Fictional World of Shobha De
K.K. Ladda & Dr. S.S. Kanade
155-161

Shashi Tharoor's *Riot*: A Socio-Cultural Perspective
Dr. Farjana Tamboli
162-169

Male Characters in the Fictional World of Shashi Deshpande
Farhath Naazneen
170-179

18

DIASPORIC CONSCIOUSNESS IN THE SELECTED NOVELS OF AMITAV GHOSH

Dr. Y.A. Doke

Abstract:

Diaspora is a journey towards self-realization, self-recognition, and self-knowledge and self-definition. "Diasporic Consciousness" is chosen with special reference to novels of an independent writer, Amitav Ghosh, who won a prestigious place in Diasporic literature. Ghosh looks at Diasporic literature in a new perspective. Ghosh is one of the Trinity after V.S. Naipaul and Salman Rushdie who popularized the Diaspora in Indian writing in English. He is an anthropologist, sociologist, journalist, novelist, essayist, travel-writer and teacher. Both his fictional and non-fictional narratives, move restlessly across countries, continents and oceans. Amitav Ghosh never writes the same type of novel but his novels are linked together by a number of common concerns. His novels are linked together by number of common concerns like history sociology, travelling, anthropology, ethnography, society and historicity.

Dr. Y.A. Doke: Associate Professor & Head, Dept of English, Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur, Osmanabad, Maharashtra.

human values. Perhaps, Ghosh is only writer, who throws light on the different cultures against the backdrop of global village. He confronts with eventually. He unveils varied themes in his narrative that revolve around two major factors, the inner feelings of personal world, and the turbulent period of socio-political world two layers around his themes. He makes known the inner world of human life. He invites tenders personal life with unbearable agony, severe trauma and mounting frustration. He depicts in a broad manner. His fictional world projects various characters: politicians, bureaucrats, lovers, beloved, husbands, wives, divorcees and artists.

Diasporic literature and diasporic studies focus attention on the displaced person, the migrants and the stranger and people separated from their identity and their history. It puts forth diasporic experience in the context of a new global cultural economy characterize by complex, interacting and disjunctive transnational flows.

Diasporic literature flourished as a post-colonial discourse which concentrates on the issues like otherness, hybridity, multiculturalism, race and ethnic community. It further concentrates on the cultural alienation and loss of home land and identity. A sense of uprootedness and homelessness prevails migrant life, which leads to search of belongingness. It focuses on migrant sense ang alienation in alien land and state of marginalization humiliates their socio-cultural life. Diasporic writing provides the live picture of real world of migrants, it does characterize the world of fairies, romance story, and it further put forward hard realities of diasporic life. It emerges as a distinctive and independent voice of immigrants. As Shubha Tiwari writes:

> A writer gives himself/herself to the world. A secretive person cannot be a writer. The innermost processes of an individual's psyche fill the pages and then only the writing becomes valuable. What is the appeal of a piece of writing? The attraction comes exactly in proportion as to how much the author has unravelled her/himself. To what extent the author has been successful in sharing her/his self with the reader-thisdecides the charm of

journey of Alu explores his search for identity and permanent settlement life. Alu's journey from Calcutta to Lalakpur and Lalakpur to Culcutta then to the viva Kerala, he joins the ship *Mariamma* to join a group of illegal migrants to the middle –east countries to get rid from ACP Jyoti Das. He reached the fictitious town, *Alghazira*. Ghosh depicts the diasporic journey of his protagonist, Alu who roam all over the world. Ghosh in *The Circle of Reason* depicts the predicament of illegal migrants and their exploitation in alien country. Ghosh concentrate on the immigrant's trend in 1970 where South Asian people fascinated to Middle East Country for prosperous life. He portrays the character or such as Professor Samuel, Rakesh Zindi, Karthamma and Kulfi who crosses the border to get rid from poverty in home land. Ghosh delineates the culture encounter in Indian diasporic community and the residents of *El Oued Old* town, where Dr. Mishra and Mrs Uma Verma struggle for the preparation of last rites of Kulfi. Ghosh explore the theme of displacement, cultural crisis and restless diasporic journey of Alu throughout the novel. G. J. V. Prasad, rightly comments:

> Amitav Ghosh finds his mission as a writer. With an anthropologists' sense of detail, and a historian's grasp of facts and chronology and with a creative writer's curiosity about causation and effects, and great narrative skill and imagination, Ghosh weaves together a pluralistic and self-reflexive view of the world- one that challenges the smugness of a accepted narratives and points of views and the certainties of post-colonial borders as well as generic boundaries(55-56).

Ghosh's fifth novel, *The Glass Palace*, in 2000, is a tale of three generations of a family. It is a historical novel. This novel won the international e-book award at the Frankfurt Book Fair in 2001. It is a story about Rajkumar, who lands in Burma in rags but later becomes one of the richest timber traders in Burma. This novel also has many Diasporic themes such as self-identity, alienation, migration, quest for home.

Diasporic theory is an account of physical and psychological

timber merchant. Migration becomes an important theme of his novel as each journey serves to impact the identity of the traveller or the migrant.

Amitav Ghosh's fictional world has a unique narrative motion. His central figures are travellers and Diasporic exiles. In his novel *The Circle of Reason* Ghosh, truly touches upon the various themes he would experiment with in his subsequent novels. Ghosh tries to probe deep into the psyche of his protagonists to lay bare the impact of this displacement, on the minds of the characters. He traces the journey of Alu, his protagonist and later makes him share space with a group of migrants belonging to the lower economic strata in the society. Here he combines the themes of feminism with the migrant subaltern as a number of occupants in Zindi's house are women. This novel is about patterning, the various personal efforts at imposition of order on a chaotic world in order to come to terms with it, in order just to live. It is also about the aesthetic quest necessary for the motivation and survival of the artist in every soul in an inherently deadening, hostile, and uncertain environment.

In his novel *The Glass Palace*, Ghosh records the experiences of first such races living in British occupied colonies. Here the characters range from members of the Burmese royal family to commoners like Dolly, Rajkumar, Saya John and Uma. All the characters are united by the rough winds of historical displacement, and it is the commoners who play a more vital and significant role in the attempts at bridging borders. Through the experiences of the widely travelling Rajkumar, Ghosh describes the suffering and tribulations of the exiled victims of the breaking of nations and consequent displacement.

Through the reading of these two selected novels one can understand that the Diasporic community gets both positive and negative images from the settled society. In the initial stages of their settlement almost everything seems to be problematic and the Diasporic individuals only get a negative view of the society. But later they derive enough experience to face the sufferings in a

ed. Bose Brinda. Delhi: Pencraft International, 2003, pp. 55-56. Print

Shukla, Sheobhushan and Anu Shukla. *Multiple Contexts and Insights: Studies in Contemporary Literature.* New Delhi: Sarup and Sons, 2003. Print.

Tiwari, Shubha. Amitav Ghosh: *A Cirtical Study* New Delhi: Atlantic Publishers, 2003. Print.

Walker, Keith. *Counter Modernism and Franchophone Literary Culture: The Game of Slipknot.* Durham: Duke Uniersity Press, 1999.

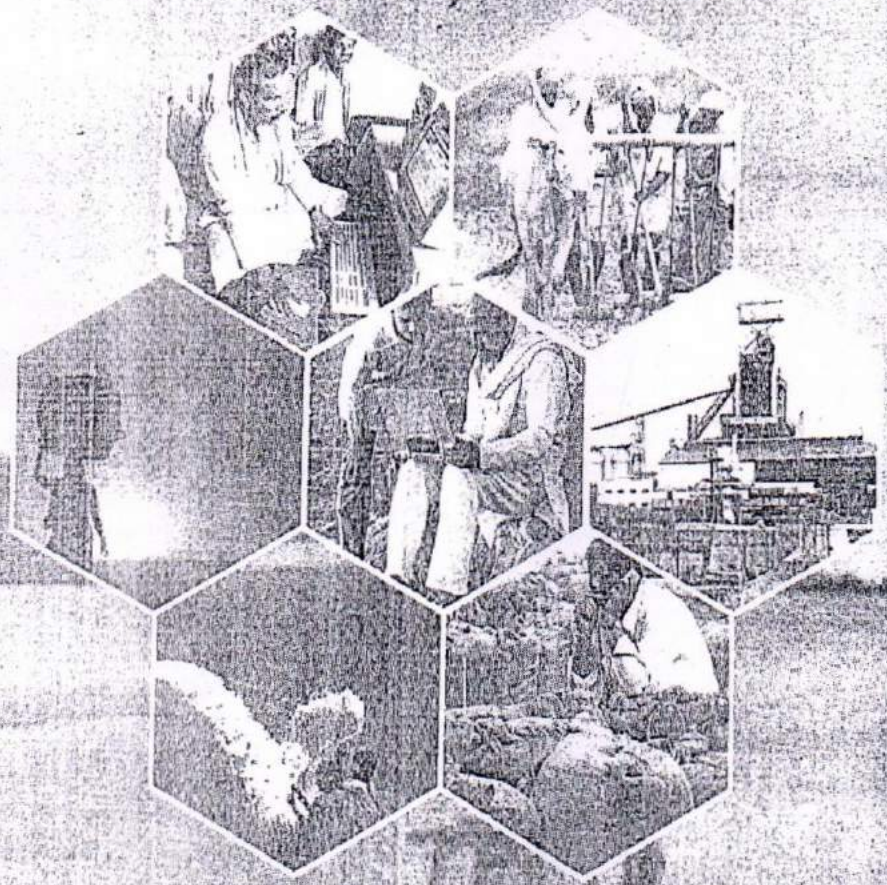


2016-17
100



ON

"IMPACT OF COMMERCE EDUCATION IN RURAL DEVELOPMENT IN INDIA"



BHUSHAN

2016-17

ISBN : 978-93-5158-380-6

Scanned by CamScanner

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार"

- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur

SAMAJBHUSHAN GANPATRAO KALBHOR COLLEGE,

LONI KALBHOR, PUNE 412 201





University Grants Commission, New Delhi

Sponsored

NATIONAL CONFERENCE

2nd & 3rd September 2016

ON

"Impact of Commerce Education in Rural Development in India"



- Chief Editor-

Prin. Dr. Jaysingrao Deshmukh

- Editorial Board -

Dr. G. S. Botre

Dr. R. J. Sabale

Miss. S.G. Burgul

ISBN: 978-93-5158-380-6



Scanned by CamScanner

INDEX

Sr. No.	Title of the Paper	Name of Author	Page No.
1	Financial Inclusion of Underprivileged – A Study of Solapur District	*Dr. S. V. Shinde*	1-13
2	Impact of Commerce Education In Rural Development of India	Dr. Sampatrao. S. Jadhav Dr. Paul D. Madhale	14-21
3	Impact of Commerce Education In Rural Development of India	Prin. Dr. J.S. Deshmukh	22-25
4	A Study of Impact of FDI On Indian Entrepreneurs	DR. K.P. BAIRAGI	26-28
5	Impact of Commerce Education In Rural Development In India	Prof. Archana Aher	29-33
6	Activity Based Learning In Commerce Education: Issues & Challenges	Dr. R. J. Sabale	34-37
7	Training And Development Is A Tool For Corporate Development	Prof. Dr. Sadashiv Laxman Shiragave	38-41
8	Best Practices of Talent Management In The Banking Industry	Dr. E.J.Jagtap	42-45
9	A Study Of Recent Trends In Commerce Education	Dr. Botre G.S.	46-49
10	A Study of Impact of Online Retailing On Cloth Retailers In Rural Area With Special Reference To Haveli Taluka, Pune District	Miss Sneha Ganesh Burgul Dr. Ashok V. Giri	50-60
11	A Study of Perspectives And Challenges of Tourism Industry With Special Reference To Marathwada Region	*Babasaheb Dattatraya Chatte* *Dr. S.G Khawas Patil*	61-65
12	Feminization of Agriculture Due To Migration	Darekar B. P.	66-67
13	Rural Development Challenges and Prospects in India	Prof. Ghule Padmakar Tukaram Prof. Landge Balwant Bhimrao	68-75
14	Entrepreneurship In India	Prof. Balwant Landge Nagnnath Mane	76-82
15	Marketing Concept - Cause Related Marketing (Crm) And Corporate Social Responsibility (Csr): A Review	Mr. N. A. Sakate	83-86
16	Role of National Service Scheme (Nss) In Rural Development	Prof. Shekhar Jayant Paranjape Prof. Nagnnath Adinath Mane	87-94
17	A Study On Emerging Trends In Indian Banking Sector	Aarti K. Kale Manashri M.Kasralikar	95-97
18	A Study of Rural Marketing: An Overview	Radhika Rajkumar Lohiya	98-102
19	Important of E-Banking In India	Asst. Prof. Kale N.B. Asst. Prof. Nagare B.K.	103-107

Scanned by CamScanner

IMPORTANT OF E-BANKING IN INDIA

Asst. Prof. Kale N.B.
Tuljabhavani Mahavidylaya, Tuljapur
Email-kalenetaji123@gmail.com

Asst. Prof. Nagare B.K.
Tuljabhavani Mahavidylaya, Tuljapur
Mob. no. 9096418721

Introduction:

Electronic banking, is known as internet banking, online-banking or virtual banking. Electronic banking is an electronic payment system that enables customers of a bank or other financial institution to conduct a collection of financial transactions through the internet. In other words all the banking activities are done through internet and networking is known as online banking or electronic banking.

Its includes, online payment of bills, ATM, online transfers of money to one account to another, online information to customers related to bank account balance, lone procedure, online bank account opening etc. this types of banking activates are done throughout internet and networking in online banking. The electronic banking system will typically connect to or be part of the core banking system operated by a bank and is in contrast to branch banking which was the traditional way customers accessed banking services.

History of e-banking

In 1980s first introduced online banking in New York, United states. Citibank, Chase Manhattan, Chemical Bank and Manufactures Hanover, these four banks firstly offered home banking services to customers. Nearly at the same time with the United States, online banking arrived in the United Kingdom. The UK's first home online banking services known as Homelink was established by Bank of Scotland for customers of the Nottingham Building Society (NBS) in 1983.

In India, from the early on 1990's, electronic banking is fast in popularity as an important distribution channel to offer banking services. This direction is being taken by the batiks to differentiate their services to the consumers to gain their loyalty. The strategies adopted by the Indian banks to survive the increased competition are the focus of this study. The credit of launching internet banking in India goes to ICICI Bank. Citibank and HDFC Bank followed with internet banking services in 1999. Several initiatives have been taken by the Government of India as well as the Reserve Bank to facilitate the development of e-banking in India. The Government of India enacted the IT Act, 2000 with effect from October 17, 2000 which provided legal recognition to electronic transactions and other means of electronic commerce. The Reserve Bank is monitoring and reviewing the legal and other requirements of e-banking on a continuous basis to ensure that e-banking would develop on sound lines and e-banking related challenges would not pose a threat to financial stability. A high level Committee under chairmanship of Dr. K.C. Chakrabarty and members from IIT, IIM, IDRBT, Banks and the Reserve Bank prepared the „IT Vision Document-2011-17" , for the Reserve Bank and banks which provides an indicative road map for enhanced usage of IT in the banking sector.

Scanned by CamScanner

Objectives of the study

The objectives of the conserve study are mention as follows.

1. To know the how electronic bank drive in India.
2. To know the services provides through electronic banking in India.
3. To know the facility adoption of Indian electronic banking.
4. To suggest the Indian electronic banking for growing the business performance.

Research methodology

In this study, Secondary Data are collected from various Published previous research, internet, books, newspapers, magazine, Government Reports etc.

This study will be conducted on only secondary data. For that various statistical tools will be used for the interpretation and presentation of the numerical data i.e. graphical presentation, percentage etc.

➢ **Services provides through electronic banking in India**

Electronic banking provides lot of services though internet and their websites. They are as follows.

1. Non-transactional tasks offered to customer through online banking, including–
   A. Viewing account balances
   B. Viewing recent transactions
   C. Downloading bank statements, for example in PDF format
   D. Viewing images of paid cheques
   E. Ordering cheque books
   F. Download periodic account statements
   G. Downloading applications for M-banking, E-banking etc.
2. Bank customers can transact banking tasks through online banking, including–
   A. Funds transfers between the customer's linked accounts
   B. Paying third parties, including bill payments (see, e.g., BPAY) and third party fund transfers (see, e.g., FAST)
   C. Investment purchase or sale
   D. Loan applications and transactions, such as repayments of enrollments
   E. Credit card applications
   F. Register utility billers and make bill payments
3. Financial institution administration
4. Management of multiple users having varying levels of authority
5. Transaction approval process

➢ **The adoption of e-banking**

Indian banks offer to their customers following e-banking products and services:

1. Automated Teller Machines(ATMs)
2. Internet Banking
3. Mobile Banking

Scanned by CamScanner

4. Phone Banking
5. Telebanking
6. Electronic Clearing Services
7. Electronic Clearing Cards
8. Smart Cards
9. Door Step Banking
10. Electronic Fund Transfer

The three broad facilities that e-banking offers are:

1. Convenience-Complete your banking at your convenience in the comfort of your home.
2. No more Qs-There are no queues at an online bank.
3. 24x7 service-Bank online services is provided 24 hours a day, 7 days a week and weeks a year

➢ **Technology used in e-banking**

1. **The Electronic Fund Transfer (EFT):**

This facility offers you to make payments to account holders of other banks in an efficient and fast manner. As against the physical clearing, where the cheques are cleared on presentment of the physical instrument at the clearing house, in EFT the transactions are settled electronically. EFT also provides you with an opportunity to move your collections to an electronic platform, whereby you can instruct your Dealers to pay through EFT, thus reducing the time for realization of funds. At present the electronic fund transfer facility is available in two modes and you can avail either of the following modes to transfer your funds:

1. National Electronic Fund Transfer (NEFT): This is the faster mode of fund transfer in which the funds are credited to the beneficiary's account on the same day. It is offered by computerized branches of certain banks.
2. EFT: This is the normal electronic fund transfer facility offered by the banks. It is similar to NEFT in all respects with the exception of the transaction cycle time – an EFT transaction takes a minimum of 3 working days to be credited to the beneficiary's account whereas in NEFT, the amount is credited on the same day of the transaction. The end to end transaction can be done through our Corporate Electronic banking wherein the request can be submitted online, either as a single transaction or through a file uploads. The key features that are common to both EFT and NEFT are:
   - EFT/NEFT clearing is conducted by Reserve Bank of India (RBI) and it takes place thrice a day during Monday to Friday and twice on Saturdays.
   - The payment instruction can be given through the Corporate Electronic banking. Alternatively the instructions can also be sent to the designated branches.
   - Presently offered at more than 125 locations, which covers all the major cities of the country

Scanned by CamScanner

2. **Automated Teller Machines:**

The Automated Teller Machines are installed, now-a-days, at every nook and corner in most of the towns & cities. These are meant for balance enquiries, cash withdrawals and many other facilities depending upon the policies of the bank. This requires a valid Customer Id and password to log in and is therefore safe to be used. Despite of using ATM cards, Debit cards can also be used in the ATMs.

3. **Debit Cards:**

Debit Cards is another advanced technology of the electronic banking, now-a-days. These cards are the multi-purpose cards and can be used in ATMs for balance enquiry and cash withdrawal or can be used for easy shopping at various counters. Debit Cards ensure the automatic deduction of amount from the account just by scratching it on the machine. It makes it easier for the consumers to go for shopping with and even carrying cash with them.

4. **Credit Cards:**

Credit Cards, unlike debit cards, provide credit to the consumers. A credit card system is a type of retail transaction settlement and credit system, named after the small plastic card issued to users of the system. A credit card is different from a debit card in that it does not remove money from the user's account after every transaction. In the case of credit cards, the issuer lends money to the consumer (or the user). It is also different from a charge card (though this name is sometimes used by the public to describe credit cards), which requires the balance to be paid in full each month. In contrast, a credit card allows the consumer to 'revolve' their balance, at the cost of having interest charged. Most credit cards are the same shape and size, as specified by the ISO 7810 standard.

5. **Charge Cards:**

A charge card is a means of obtaining a very short term (usually around 1 month) loan for a purchase. It is similar to a credit card, except that the contract with the card issuer requires that the cardholder must each month pay charges made to it in full -- there is no "minimum payment" other than the full balance. Since there is no loan, there is no official interest. A partial payment (or no payment) results in a severe late fee (as much as 5% of the balance) and the possible restriction of future transactions or even cancellation of the card.

6. **Smart Cards:**

A card that is used for storing and retrieving personal information, normally the size of a credit card and contains contains electronic memory and possibly an embedded integrated circuit. The card can be used to do many tasks:

- Will verify the carrier of that card in order to access systems.
- Storing a patient's medical records
- Storing digital cash
  - To use a smart card, either to pull information from it or add data to it, you need a smart card reader, a small device into which you insert the smart card.

MANI MAHAVIDYALAYA

Scanned by CamScanner

Therefore, service, technology and adoption of various facilities show the importance of electronic banking in India. Day today electronic banking becomes a more popular in India.

- **Suggestion**

The researcher has made some suggestion for growth of business of electronic banking in India. They are as follows.

1. There is need to provides every customers ATM service.
2. Organize the special campaign for motivate the customers for use electronic banking facility
3. Established the customer's electronic banking training center.
4. Gives commission to customers for using online facilities through electronic banking.\

Those suggestions are helpful to growth of electronic banking business in India.

References

1. Indian Banking system – Dr. S.B. Gupta
2. Reserve bank reports (monthly)
3. E-banking in india- Mr. V.S. Vilaiamson
4. www. rbi.gov.in
5. Encyclopedia britanica
6. www.Shodhganga.com
7. www.sbigov.in
8. www.bankinfo.in



Scanned by CamScanner

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार"
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur

SAMAJBHUSHAN GANPATRAO KALBHOR MAHAVIDYALAYA, LONI KALBHOR, PUNE - 412201

University Grants Commission, Sponsored



"Impact of Commerce Education in Rural Development in India"

2nd & 3rd Sept. 2016



Certificate

This is to certify that Dr. / Mr. / Mrs. Prof. Kale Netaji Balaji

of Tulajabhavani College, Tulajapur participated as a ~~Resource person~~ / ~~Chairperson~~ / presented a paper on Importance of E-Banking in India at the National Level Conference on **"Impact of Commerce Education in Rural Development in India"** organized by Department of Commerce of **Samajbhushan Ganpatrao Kalbhor Mahavidyalaya, Loni Kalbhor,** on **2nd & 3rd Sept. 2016.**

His / Her contribution to the Conference is highly appreciated.

Dr. G. S. [illegible]tre
Co-ordinator

S.G.R. COLLEGE LONI KALBHOR NATIONAL CONFERENCE

Dr. Saysingrao Deshmukh
Principal

Scanned by CamScanner

2016 – 17

अंधारी वाङ्मय

An unending passion

जानेवारी ते सप्टेंबर-२०१६





प्रा. सतीश बहादूर विशेषांक

(चित्रपटभाषा अंक)



संपादक

डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

Scanned by CamScanner

आर. एन. आय. फॉर इंडिया
नवी दिल्ली
र. नं. - 37218 / 2010

ISSN - 2229 - 4929

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : सातवे

जानेवारी ते सप्टेंबर २०१६

प्रा. सतीश बहादूर विशेषांक

(चित्रपटभाषा अंक)

संपादक :
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक
डॉ. शिवाजीराव देशमुख

संपादक मंडळ
डॉ. विजय वारकड डॉ. दीपक चिद्दरवार डॉ. महादेव वाळुंज

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी,
प्रतीक प्रकाशन, 'प्रणव', रुक्मे नगर, धोडगा रोड,
अहमदपूर, जि. लातूर - ४१३५१५.
मुद्रक : आनंद चि. लाटकर, कॉम्प-प्रिन्ट कल्पना प्रा.लि.
४६१/४, सदाशिव पेठ, पुणे ३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता :
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, धोडगा रोड, अहमदपूर
जि. लातूर - ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
इ. मेल : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/ द्विवार्षिक रु.९००/ पंचवार्षिक वर्गणी रु. २०००
या अंकाचे मूल्य : रु. ३७५

महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचाराशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मताशी संपादक, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA
New Delhi
R. No. - 37218 / 2010

ISSN - 2229 - 4929

AKSHAR WANGMAY

Year : 7

January to September 2016

Prof. Satish Bahadur Special Issue
(Cinema Language Issue)

Editor in Chief :
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor :
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Editorial Board

Dr. Vijay Warkad Dr. Deepak Chiddarwar Dr. Mahadeo Walunj

Publisher :
Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi,
Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukme Nagar,
Thodga Road, Ahmedpur 413515
Printer : Comp- Print Kalpana Private Ltd.,
461/4 Sadashiv Peth, Pune - 30

Address for sending articles and fees :
Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road,
Ahmedpur 413515 District : Latur,
Cell phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/ Two Years Rs. 900/ Five Years Rs. 2000
Current Volume Rs. 375

* Maharashtra State Literary and Culutural Board has granted funds for the publication of this Journal. But Maharashtra State literature and cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's editorial board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

2016-17

अक्षर वाङ्मय



Scanned by CamScanner

आर. एन. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : आठवे अंक : दुसरा
ऑक्टोबर-नोव्हेंबर-डिसेंबर २०१७

संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक
डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक
डॉ. अरुण प्रभुणे

हितैशी
श्री. संतोष कडोळे

संपादक मंडळ

डॉ. सतीश कदम
डॉ. दीपक चिद्दरवार
डॉ. विजय वाघमारे
डॉ. महादेव वाळुंज

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.
मुद्रक : कॉम्पप्रिन्ट कल्पना प्रा. लि. ४६१/४ सदाशिव पेठ, पुणे ३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/-
द्विवार्षिक वर्गणी : रु. ९००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु. २०००/-
अंकाचे मूल्य : रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मताशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. - MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929

AKSHAR WANGMAY

Year : 8 Volume : 2

October-November-December 2017

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Well-wisher
Mr. Santosh Kadole

Editorial Board

Dr. Vijay Warkad
Dr. Satish Kadam
Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Mahadeo Walunj

Publisher : Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
Printer : Comp- Print Kalpana Private Ltd., 461/4 Sadashiv Peth, Pune - 30

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/-
Two years : Rs. 900/-
Five Years : Rs. 2000/-
Current Volume : Rs. 125/-

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

2017-18

अक्षर वाङ्मय

जानेवारी - फेब्रुवारी - मार्च २०१८
वर्ष : आठवे अंक : तिसरा



Scanned by CamScanner

आर. एन्. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : आठवे अंक : तिसरा

जानेवारी-फेब्रुवारी-मार्च २०१८

संपादक

डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक

डॉ. अरुण प्रभुणे

हितैशी

श्री. संतोष कडोळे

संपादक मंडळ

डॉ. सतीश कदम

डॉ. दीपक चिद्दरवार

डॉ. विजय वारकड

डॉ. महादेव वाळुंज

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.

मुद्रक : कॉम्पप्रिन्ट कल्पना प्रा. लि. ४६१/४ सदाशिव पेठ, पुणे ३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१

E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/- द्विवार्षिक वर्गणी : रु. ९००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु. २०००/- अंकाचे मूल्य : रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

ISSN – 2229-4929

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2010

AKSHAR WANGMAY

Year : 8 Volume : 3

January-February-March 2018

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Well-wisher
Mr. Santosh Kadole

Editorial Board

Dr. Vijay Warkad
Dr. Satish Kadam
Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Mahadeo Walunj

Publisher : Smt. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515

Printer : Comp- Print Kalpana Private Ltd., 461/4 Sadashiv Peth, Pune - 30

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/- **Five Years :** Rs. 2000/-
Two years : Rs. 900/- **Current Volume :** Rs. 125/-

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

TULSHIBHAVANI MAHAVIDYALAYA

Scanned by CamScanner

ISSN: 2249-894X

Impact Fators : 5.2337

नॅक मानांकन: ' सी'

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार"

शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे





श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचलित,

तुळजाभवानी महाविद्यालय, तुळजापूर,

जि.उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद, संलग्नित,

विद्यापीठ अनुदान आयोग नवी दिल्ली पुरस्कृत

व

मराठी विभाग आयोजित

राष्ट्रीय चर्चासत्र

दि. 22 व 23 सप्टेंबर 2017

माध्यमांतर

' संपादकीय अध्यक्ष '

प्राचार्य डॉ.जयसिंगराव देशमुख

' संपादक '

प्रा. डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मराठी विभाग प्रमुख

' सहसंपादक '

प्रा. सुंदर कांबळे



Scanned by CamScanner

प्रकाशक व संपादकीय अध्यक्ष :
प्राचार्य डॉ.जगन्नाथ देशमुख
तुळजाभवानी महाविद्यालय,तुळजापूर
निवेदनगर नगर पापनाश गेट,
तुळजापूर,जि.उस्मानाबाद
भ्रमणध्वनी ९४२३२६९८३२,कार्यालय संपर्क :०२४७१/२४२०२९
Email – interism@gmail.com

प्रमुख संपादक :
प्रा. डॉ. शिवाजीराव देशमुख
मराठी विभाग प्रमुख,
तुळजाभवानी महाविद्यालय,तुळजापूर
भ्रमणध्वनी ९४२३०६७२८०
email –drprofsmdeshmukh@gmail.com ?

ISSN: 2249-894X Impact Fators : 5.2337

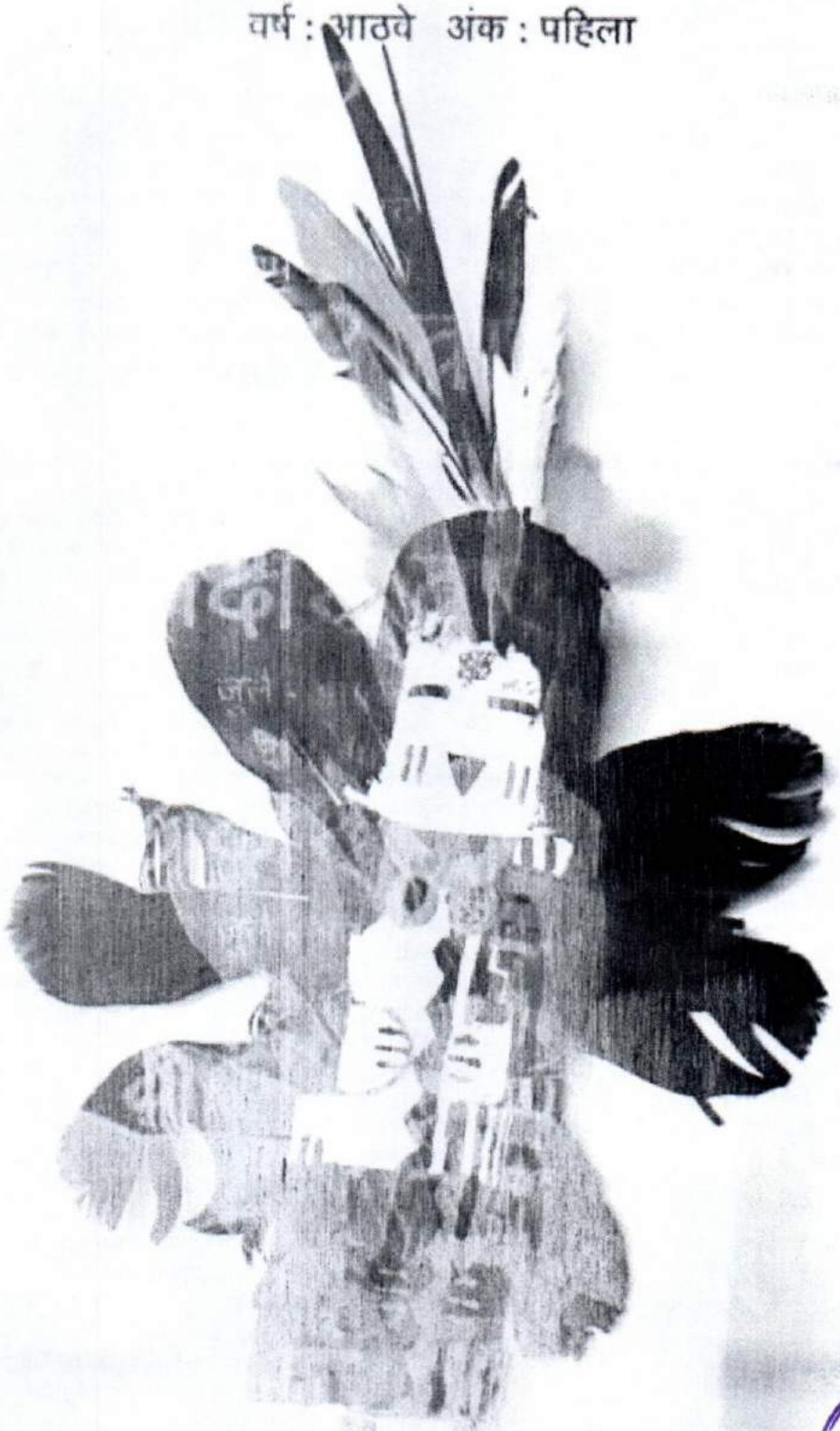
प्रथम आवृत्ती:
दिनांक : २७ सप्टेंबर २०१७
मुद्रक : लक्ष्मी बुक पब्लिकेशन्स,
पंचवटी पेठ, सोलापूर
संपर्क क्र. ०२१७–२३७२०१०
टाईपसेटर्स : अक्षरजुळणी, मांडणी
लक्ष्मी बुक पब्लिकेशन्स,
मुखपृष्ठ व आतील आर्थानित्रे
लक्ष्मी बुक पब्लिकेशन्स,
या अंकातील संशोधनीय लेखातून व्यक्त झालेल्या विचारांशी, लेखकाच्या मतांशी प्रकाशक,संपादक आणि संपादन समिती सहमत असेलच असे नाही.
अंकाचे मूल्यमापूल्य – रु.३००/

Scanned by CamScanner

2017-18

अक्षर वाङ्मय

जुलै - ऑगस्ट - सप्टेंबर २०१७
वर्ष : आठवे अंक : पहिला



संपा[illegible] डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

JUNNAVANI MAHAVIDYALAYA

Scanned by CamScanner

आर. एन्. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : आठवे - अंक : पहिला
जुलै-ऑगस्ट-सप्टेंबर २०१७

संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक
डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक
डॉ. अरुणा प्रभुणे

हितैशी
श्री. संतोष कडोळे

संपादक मंडळ

डॉ. सतीश कदम
डॉ. दीपक चिद्दरवार
डॉ. विजय वारकड
डॉ. महादेव वाळुंज

प्रकाशक : सौ. रेणुकाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.
मुद्रक : कॉम्पप्रिन्ट कल्पना प्रा. लि. ४६१/४ सदाशिव पेठ, पुणे ३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
E-mail : suryavanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु.२०००/-
द्विवार्षिक वर्गणी : रु. ९००/-
अंकाचे मूल्य : रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाचे वा नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2018

ISSN – 2229-4929

AKSHAR WANGMAY

Year : 8 - Volume : 1

July-August-September 2017

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Well-wisher
Mr. Santosh Kadole

Editorial Board

Dr. Vijay Warkad
Dr. Satish Kadam
Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Mahadeo Walunj

Publisher : Smt. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukmc Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
Printer : Comp- Print Kalpana Private Ltd., 461/4 Sadashiv Peth, Pune - 30

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukmc Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/- **Five Years : Rs. 2000/-**
Two years : Rs. 900/- **Current Volume : Rs. 125/-**

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

Books 2017-18

MAHAVIDYALAYA TULJAPUR



Maj. Dr. Yashwant A. Doke is an Associate Professor and Head, Department of English working in Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur, Dist. Osmanabad (Maharashtra) since 1987. He has also been working as Associate NCC Officer since 1990. He did PhD in 2008 from Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad under the scholastic guidance of Prin. Dr. Shaikh Samad. He is a recognized Research Guide in English of Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad. He is actively engaged in research activities.



VISHWABHARATI आदित्य

ISBN 978-93-83109-67-8

GENDER AND CLASS IN THE FICTIONAL WORLD OF SUNITI NAMJOSHI

SUNITI NAMJOSHI

Maj. Dr. Yashwant A. Doke

GENDER AND CLASS IN THE FICTIONAL WORLD OF SUNITI NAMJOSHI

SUNITI NAMJOSHI

Maj. Dr. Yashwant A. Doke

GENDER AND CLASS IN THE FICTIONAL WORLD OF SUNITI NAMJOSHI

SUNITI NAMJOSHI

Maj. Dr. Yashwant A. Doke



THE THEMES OF GENDER AND CLASS IN THE FICTION OF SUNITI NAMJOSHI

Maj. Dr. Yashwant A. Doke

Published by:

In Association with

VISHWABHARATI

Registered Office:
Sunil Terrace, Block No.14, Near Central S.T. Bus Stand,
Latur-413512 (MS) India. Cell: 91-9422467462
e-mail: info@vishwabharati.in
www.vishwabharati.in

ISBN: 978-93-883109-67-8

Price: ₹ 799 | $ 35

Copyright ©All Rights Reserved
First Edition 2017

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the Publisher and the Author, except in the case of brief quotations embodied in critical reviews and certain other non-commercial uses permitted by copyright law. All legal matters concerning the Publication/Publisher shall be settled under the jurisdiction of Latur (MS) Court only.

Cover Design Source: Images from Google and Internet
Printed, Typesetting, Cover Design by:
SAHITYANAND

MAHAVIDYALAYA

DEDICATED TO

Hon. Prin. Shri. Abhaykumarji Salunkhe
Chairman,
Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha,
Kolhapur (MS) India.

Books
2017-18

2017-18.

75

"Dissemination of Education for Knowledge, Science and Culture."
- Shikshanmaharshi Dr. Bapuji Salunkhe



कोल्हापूर
NAAC Reaccredited 'A'
with CGPA -3.24 (in 3rd cycle)

VIVEK
RESEARCH JOURNAL

A Biannual Peer Reviewed National Journal of Multi-Disciplinary Research Articles

JUNE 2017

Vivek Research Journal Vol. I, Issue I

URMILA PAWAR'S *THE WEAVE OF MY LIFE*: THE SAGA OF SUFFERING

Dr. Chhaya R. Dapke.
S B S Collgeg Karad.
chhayadapke7@yahoo.com

Abstract: Dalit literature is known as a literature of minority. It is the protest against cultural and social categories. As a protest literature, it voices out against the existing system and tries to find an alternative. The mainstream literature has a long history while minority literature is a recent. The voices of minority religions rose since Indian Independence. It is the literature which talks about the minority experience. It is the literature raises voices against the social inequalities of cultural categories like caste, creed, gender, sex and so on. The minority writers and their literature documents and chronicles their personal community experiences. Dalit Literature is primarily a social and human document, which deals with the people who had been socially and economically exploited in India for hundreds of years. Dalit literature is creative and intellectual literary expression which transforms the social realities into various literary genres. It is a recent offshoot of Indian literature and represents an emerging trend in the Indian literary scene. Autobiography has been a favorite genre of Dalit writers. Since autobiography is an asset and is matter of life study for other human beings, Dalits themselves merge with the autobiographies. The main purpose of the Dalit autobiographies is to record the suffering and humiliation of the Dalits as a whole. Dalit autobiographies differ from other types in expression and purpose. They portray Dalits' devaluations, and serve as an "intellectual propaganda" for creating socio-economic and political awareness. Dalit autobiographers are concerned with the pathetic condition of the Dalits. They help fellow Dalits to be alert and struggle for their rights, which are denied to them by the so-called upper castes. As memories, Dalit autobiographies are sources of Dalits' social reality in contemporary India and deal with the socio-economic and political status of Dalits. These autobiographers picture contemporary authentic conditions of the



family and community. The plight of Dalit women and their depiction through autobiography reveals their experience of double exploitation than Dalit male. The Weave of My life' written in a realistic fictional mode, it is characterized by an honest, frank, and bold articulation of a Dalit woman's experiences

Keywords: Autobiography, Literature of Minority, Dalit autobiography, Caste, gender, pains and sufferings of life.

Introduction: An Autobiography as a genre is rarely practiced by Indians as compared to that of poetry and fiction. It problematized the major issues of class, caste, and gender in the Indian context. Apart from recording a woman's discovery of selfhood and assertion of identity, it also offers a background picture of the Indian culture. The Dalit women are placed at the absolute bottom of the social caste hierarchy. Their suffering is triple fold – society discriminates against them because they are women, then they are discriminated against because they belong to the Dalit community, and within their own community they suffer all over again for being women. Dalit woman often suffered from verbal and physical abuse at the hands of their fathers and forcefully subjugated to fulfill the pleasures of their husbands, domestic and sexual violence. They simultaneously dishonoured outside in public realm forced, and often compounded by sexual harassment. Dalit women are at the bottom of the caste and gender hierarchy. The issues relating to Dalit women most of the time remain voiceless and unheard but the narratives provided by the educated Dalit writers give us the glimpse of the subjugation inflicted upon them.

Urmila Pawar's *The Weave Of My Life*: The Saga Of Suffering: As a dalit writer, Urmila Pawar has established herself as the prominent voice of Dalit literature. She is a literary personality, known for her short story writings in Marathi literature. She was born and brought up in Kokan region of Maharashtra state. She was born in the year May 1945 at Adgaon village of Ratnagiri District. Urmila Pawar's an autobiography AAYADAN was published in the year

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR EST.

indicate their low caste as well as their dire economic poverty "My mother used to weave aaydans, the Marathi generic term for all things made from bamboo. Pawar writes,

> 'My mother used to weave Aaydan and I was writing this book, both were activities of creation of thought and practical reality of life.' I find that her act of weaving and my act of writing are organically linked. The weave is similar. It is the weave of pain, suffering, and agony that links us." 1(TWML p.1)

UrmilaPawar grew up on the rugged Konkan coast, near Mumbai, where the Mahar Dalits were housed in the center of the village so the upper castes could summon them at any time for their sanitation related works. They were forbidden from performing anything but the most undesirable and unsanitary duties for years. Their community grew up with a sense of perpetual insecurity, fearing that they could be attacked from all four sides in times of conflict. The Mahar community was always under the fear of atrocity by upper class society.

Therefore she thinks that there has always been a tendency in our people to shrink within ourselves like a tortoise and proceed at a snail's pace. She was much sensitive about her caste as well as her poverty so during school period onwards her conscious mind was aware of the limitations of person of lower caste and meaning of poverty in reality. Pawar refers to her school life and sharing of lunch boxes experience, She writes,

> "The upper caste girls always used words like 'Ladu','Modak','karanjya','Puranpolya'.They brought such novel items in their tiffin boxes as well as at times we went on excursions. However, I never asked myself the stupid question, why we do not prepare such dishes at home? We were aware, without anybody telling us, that we were born in a particular caste and in poverty, and that we had to live accordingly.''2(Ibid p.93)

She has specifically mentioned the items prepared by the upper class students and the variety of items attracted her but considering her economic condition at home, she never imagined even to

BHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR EST. June 71

her elder sister after her marriage; she died with her own agony and pain. She was living a hopeless life. She has narrated her experiences of sexual exploitation at her early adulthood and about her schoolmates. This narration and incidents of sexual exploitation are evident in her memoir, "My maternal uncle plays dolls with me and pretends to be my husband drags me into an alcove and presses me hard.''3(Ibid p.125) It's the harsh reality of being woman exploited both the ways from upper class people as well as the **male counterparts of their own community.**

Urmila Pawar has given very minute details of oppression and exploitations of girl child and women. Pawar describes in this following quotation both the insult and hunger of the girl child. Whenever they get good dish or complete food, it is difficult for them to control. She narrates this incident,

> "Once, I went to attend wedding at my sister-in-law's place, along with two of my nieces. However, when we three spout girls set down to eat and begun asking rice repeatedly, the cook got angry, 'Whose daughters are these anyway? 'He burst out. 'They are eating like monsters' then someone answered 'they are from our'' Sushi's family! Daughters of Arjun master!' On hearing this, the host came forward. 'Oh! Are they? All right, all right let them eat as much as they want! Serve them well!' The cook returned with more rice but being called monster was not easy to digest and we politely declined.''4 (Ibid p.117)

Dalits were barred from community activities. The higher castes don't eat the food touched by members of the Dalit community or even use the same community that Dalits use for water. And women are the worst affected. Pawar recollects the school days memory. One day her classmates at school had decided to cook a meal at girl's house called Tarlatan Savant as her parents were away. They had discussed what everyone should bring; rice, lentils, and so on. Pawar remembers the incident, "What should I bring? Nothing, they said.' You must bring some money "5(Ibid p.107)

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR EST. June 71

> the hottest topic for juicy gossip. Girls were whispering in groups about 'how much I had eaten.''**6** (Ibid p.110)

It was very humiliating for Urmila that even children show signs of caste distinctions and Untouchability as well as, poor people is humiliated for their hunger. This incident shows how caste is imbibed in the minds of school going children of our upper class society. Urmila remembers her first salary she has received after her marriage and it indicates her happiness at one point but at the same time, she was aware that she has to give it to Harishchandra her husband. Therefore, the characters are only changed but the dependence has remained the same. Urmila notes,

> "When I got my first salary, I could not believe that all that money was mine; that I could spend it the way I liked. Before my marriage, I used to hand over my salary to my mother; now I started handling it over to my husband. If this is not like deliberately offering head for the butcher's knife, what else is it?''7. (Ibid p.208)

Being a earning woman also she is not able to enjoy her rights. She remembers the incident of her admission to M.A., course where her husband Harishchandra took strong objections. He was a traditional husband and was expecting that she should spare more time in household things like the other community women. She should nurture children's health, their education and to look after the house keeping business as a typical wife. Pawar realizes that her husband's ego is hurt and he could not seem to tolerate higher qualified wife than him. His traditional patriarchal dictate started peeping in and straight away, he denied her and instructed not to go ahead for M.A. course. There was not encouragement from the home front also. The family conflict also increased due to her higher education.She has narrated an incident of daughter's property rights. With natural expectations when all sisters were fighting with their brother. her mother scolded the daughters as 'Why should they expect something from the brother since they are well versed

VIJAYANAND MAHAVIDYALAYA ULJANAGAR Estd. June 71

her attempts to weave the basket. Urmila looked upon her writing as an escape to forget the pain of lost son and so there was no connectivity of analysis of her writing but to forget the sad incident and involve her in write-ups. Urmila Pawar's Aaydan describes her. The weave of memories thus documents a detailed narrative of her long journey from Kokan to Mumbai. She has mentioned conflicting situation of her life being a Dalit woman

References:

Ahuja, R. Violence Against Women, Rawat Publication, New Delhi.1998.

Chatterjee, Devi. Dalit Women and Human Rights Concerns, "Dalit Rights/Human Rights". Rawat, Jaipur.2011.

Jogdand, P."Dalit women, Issues and perspectives", Gyan Publication, New Delhi.1995

Pawar Urmila Aaydan tran. by Dr. Maya Pandit as *The weave of my life: a Dalit Woman's Memoir*, pub. Katha, 2007.

JIJABHAVANI MAHAVIDYALAYA ULJAPUR EST. June 71

"Education through self-help is our motto"- Karmaveer



Rayat Shikshan Sanstha's,

D. P. Bhosale College, Ko

(NAAC Accredited with 'B' Grade)

A TWO DAY INTERDISCILINARY INTERNATIONAL S

"Literature of the Underprivileged in the Global Persp

13th and 14th February, 2017

Certificate

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Mrs./Miss/Shri....Dr. Chhaya Ram
....S.B.S. College Karad.....

participated in a Two Day Interdisciplinary International Conference on **"Literc the Global Perspective"** organized by Departments of English, Hindi and Mc University English, Hindi and Marathi Teachers Association held at Rayat S College Koregaon, Dist - Satara State- Maharashtra(India) on 13th and 14th Feb

Chair Person/ Paper Presenter/ Participant. Umila Pawar

He/She has presented a research paper entitled .....The Saga o

Dr. Chavan B. S.
Organizing Secretary

Dr Bhosale G. S.

Dr. Saykar S. G.
Coordinator

2018-19

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University

Aurangabad - 431004 (MS) INDIA
(NAAC Re-accredited 'A' Grade)

2nd Annual
International Conference on

Inclusive Growth and Sustainable Development - Emerging Trends and Challenges

Proceeding

15 - 16th

March 2019



Chief Editor
Professor Farah Naaz Gauri

Scanned by CamScanner

Paper Track 1

Sr.	Title of the Research Paper	Name of the Author	Page No.
1	"Progress of Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA) in Maharashtra"	**Dr.Jitendra Ahirrao,** Associate Professor **Ram Tanajirao Kachare** Research Scholar in Commerce,	1-10
2	"A Study of Women Empowerment through SHG and Bank-Linkage Programme."	**Kshirsagar Sunita Kashinath** Research Scholar in Commerce, **Dr.Jitendra Ahirrao,** Associate Professor, Department of Commerce,	11-16
3	Rural Entrepreneurship And Its Needs For Rural Development	**Vaishnavi Vilas Epper** Research Scholar	17- 21
4	The impact of Human Resources Management Practices on Employees'Performance.A case study ofHajjah Governorate Banking sector, Yemen	**Mr. Yahya Saleh Al Abdali** Ph.D Researcher	22-26
5	Women Empowerment – Need For Nation's Sustainable Development	**Jayashree Nagorao Kolhe,** Assistant Professor, Commerce Department	27-30
6	A Study Of Problem And Prospect Of Agriculture Marketin	***Deshmukh Gopal Baliram** Research Student ** **Prof.Veena R. Humbe** Research guide	31-38
7	Are Young Women Ready For Retirement? The Financial Perspective	**Aparna Saraf** Associate Professor,	39-46
9	"A Socio Economic Study of Jaggery industries in the Development of Agricultural Sector in Marathwada Region, Special Reference to Osmanabad District"	**Mitkar S.G.** **Research Scholar,** Research guide **Prof. J. R. Suryawanshi** Research guide	47-59
10	A Systemic Analysis of Tourism Industries with Special Reference to Employment Opportunities in Aurangabad District	**Dr. H. G. Sapkal** (Research Guide) **Pratiksha Rajesh Kamble** Research Student	60-66

Scanned by CamScanner

A Systemic Analysis of Tourism Industries with Special Reference to Employment Opportunities in Aurangabad District

Dr. H. G. Sapkal
(Research Guide)
Associate Professor and Head of Department
R. P. College, Osmanabad

Pratiksha Rajesh Kamble
(Research Scholar)
Department of Commerce
Dr.Babasaheb Ambedkar Marathwada
University, Aurangabad (M.S.) India.

Abstract:-Tourism is an important industry in the development of country. It not only provides foreign currency to India but also significantly contribute in the economic development of country. In Aurangabad there are various tourist places which creates employment opportunities in government as well as private sector also help poverty activation of here by villages.

Keywords: -*Tourism, Employment Opportunities, Hotels, Government etc.*

Introduction:-Aurangabad is a historic city in Maharashtra state of India. The city is a tourist hub, surrounded with many historical monuments, including the Ajanta Caves and Ellora Caves, which are UNESCO World Heritage Sites, as well as Bibi KaMaqbara and Panchakki. The administrative headquarters of the Aurangabad Division or Marathwada region, Aurangabad is said to be a City of Gates and the strong presence of these can be felt as one drives through the city. Recently Aurangabad has been declared as Tourism Capital of Maharashtra. The city is also one of the fastest growing cities in the world.

Aurangabad is known for its medieval monuments and cultural heritage. It was also the seat of the Mughal Empire for a short span. The city boasts of the Bibi-Ka-Maqbara, tomb that has some resemblance to the Taj Mahal. The importance of Aurangabad is great, owing it its proximity to the world heritage sites of Ajanta and Ellora. These sites have Buddhist, Jain and Hindu temples. Aurangabad is also famous for Its Silk and cotton textiles.

Fifteen industries from Aurangabad is one of Maharashtra's many impressive forts, Daulatabad. This is the same place where Mohammad Bin Tughlak built his capital only to return back to Delhi after same time.

Aurangabad District:-Aurangabad District is located mainly in Godavari Basin and its some part towards North West of Tapi River Basin. This District's general down level is towards South and East and North West part comes in Purna-Godavari river basin. The Aurangabad district's North Longitude (Degree) is 19 and 20 and East Longitude (Degree) is 74 to 76.

In Aurangabad district, total Forest Area is 135.75 Sq.Km. as compare to Maharashtra the forest area of Aurangabad is 9.03%.

There are four mountains in Aurangabad District namely

1) Antur – its height is 826 Meter 2) Satonda – 552 Meter 3) Abbasgad – 671 Meter and 4) Ajanta 578 Meter, Average Height of Southern portion is 600 to 670 Meter.The main rivers in Aurangabad district are Godavari and Tapi and also Purna, Shivna, Kham. Dudhna, Galhati and Girja rivers are the Sub Rivers of Godavari. The Aurangabad District's total area is 10,100 Square Kilo Meter out of which 141.1 Square Kilo Meter is urban area and 99,587 Square Kilo Meter is Rural Area. In Aurangabad rainy season starts from the month of June to September-and October to February-Winter Season and March to May Summer Season. The Average rain fall of Aurangabad District is 734 mm and the Minimum Temperature is 5.6 D.C. Maximum Temperature is 45.9 D.C.In Aurangabad district as per the Census 2018 total population is 43,01,282 and peoples mainly speaks Marathi, Hindi, English and Urdu language.

ISBN No. 978-93-83741-29-8

Scanned by CamScanner

Definition of Tourism:-The tourism society in Britain also attempted to clarify the concept of tourism 1976 as "Tourism is temporary, short movement of people to destinations outside the places where they normally live and work and their activities during the stay at these destination it includes movement for all purpose as well as day visits or excursions."

The above stated definition highlights and nature of tourism. It is generally a short term visit to the destinations which are away from their places of residence. The motive behind travel will be different for different tourists the travel may be different duration also.

World tourism organization defined tourism 1994 as "tourism comprises the activities of persons travelling to and staying in places outside their usual environment for not more than one consecutive year for leisure business and other purpose."

McIntosh and Goeldner 1986 defined tourism as " the sum total phenomenon and relationships arising from the interaction of tourists business, suppliers, host government, host communities in the process of attracting and hosting these tourist and other visitors."

Tourism in Aurangabad:-The present status of accommodation in Aurangabad which is the base for visiting Ellora and Ajanta is not as per demands and needs of the tourists. Therefore state should encourage private sector for participation in the form of development of holiday's resorts and YatriNiwas with modern amenities.

Aurangabad lies on central railway track and is a major junction in Marathwada region. It is recommended that this important junction should be connected to the various cities of tourist interest like Jaipur in the west Indore in the central and Goa in the western, Chennai and Bangore in the south and Kolkata in the east. This is required to get more tourists to Ellora and Ajanta. Tourists from these places will get direct access to Aurangabad. There is need to increase in the number of trains to Hyderabad (Secundrabad, Delhi and Mumbai which will result in increase in number of tourists to Ellora and Ajanta.

The local transport also plays, important role in success of tourism destination. As Ellora – Ajanta is concerned it is observed that local transport means to reach tourism product are inadequate not up to the mark and lack in international standards.

In connections with the local transport it recommended that there is great need of proper bus stand at Ellora and Ajanta. It is observed in the survey that the tourists waste their time at Ellora waiting for public transport. Though there are other modes, of transport they too are in inadequate and carry more passengers than their capacity. All these impressions and experiences the visitors carry home and it is communicates to the potential tourists through word of month publicity. Which adversely affect the image of tourism product.

It is recommended that there should be a Centrally Sponsored Transport Authority through Maharashtra State Tourism Development Corporation to operate and control local transport specially to speed and comfort.

The State Tourism Development Corporation should have their own efficient transport mode in the form of fleets of cars, A/C and Non A/C. coaches along with varied package tours of different duration. There are should be departments like MTDC, Indians Tourism and ASI to ensure seamless promotion of tourism in the city and the region.

It is observed that there is unauthorized transport operator at the site of Ellora caves meet for tabbing the tourists to join group of caves which are located at distant place. The tourists who are visiting Ellora by public transport find in difficult to visit these places as the rickshaw charge anything for the distance of mere 1.5 km so it is recommended that there should be a uniform rate quated for it or a mini bus should be operated at regular intervals. It should also include services at Grishneshwer temple.

ISBN No. 978-93-83741-29-8

MAHAVIDYALAYA

Scanned by CamScanner

Concept of Employment Opportunities in Tourism:- Tourism and tourism industry create many employment opportunities in different areas like accommodations, transportation, attractions sites. However, the constraints of employment in tourism industry are unstable employment, low job status, long antisocial working hours and low pay as well tourism provides both direct and indirect employment. Firms such as hotels, restaurants, airlines, cruise lines and resorts provide direct employment because their employees are in contact with tourist and provide the tourist experience. Tourism and creates expanded employment opportunities in different sectors like accommodation, food and juice establishments, transportation facilities, travel agencies, tour operation companies, natural and cultural attractions sites.

Objective:-

1) To study the concept of tourism.
2) To analyses the employment opportunities in different sectors due to tourism.
3) To find out the contribution of tourism sector in the development of Aurangabad district.

Research Methodology:-

To undertake this research study researcher hasfollowed the following research methodology:

1) **Primary Data:** Primary data is collected through survey with a pre-tested questionnaire. Primary Data is collected from the following Stakeholders in the Tourism Setup:

- **Service providers at tourist places:** Shopkeeper, Tourist guide, sweeper, Gardener, Photographers, Hotel & Juice centre, security gard and Travel agency
- **Department of Tourism:** MTDC and ASI Department.
- **Owner of Hotels and Restaurants at tourist places.**
- **Guides** working at tourist places.

2) **Secondary Data:** Secondary data is collected from Journals', **Bulletins, Books, Newspapers,** Editing Articles from Magazines and Annual Reports etc.

Literature Review:-

JagmohanNegi (2004) in his study on "Grading and Classification of Hotels, Tourism Resorts and Restaurants Principles and Practices", tells that the accommodation sector is fundamental to tourism. Therefore, the study deals with the needs, requirements, and existence of tourist accommodation units. It is a basic work to understand the importance of hotel industry.

JagmohanNegi and Gaurav Manohar (2004) in their study on, "Tourist Guide and Tour Operation Planning and Organizing" deals with and tourist attractions the role of the tourist guides and tour operators and their expert status. It is a beneficial work for the researchers to know the duties and responsibilities of tourist guides and tour operators.

Settu, T. Raveendran K, and Raja Narayanan, S. (2005) in their study on "Tourism Industry in India" revealed that tourism is the largest sector in the worldwide export of goods and services and accounts for 12 percent of global income. The associated topics contain the tourism policy, the role of the tourist transporter in the tourism policy, the co-ordination instrument between the centre, states, benefits protracted to the tourist transporter and steps against waste of benefits by non-tourist transporters.

Data Analysis and Interpretation:

Employment by tourism industry:-Tourism and creates expanded employment opportunities in different sectors like accommodation, food and juice establishments, transportation facilities, travel agencies, tour operation companies, natural and cultural attractions sites.

Classification of job in different area:-

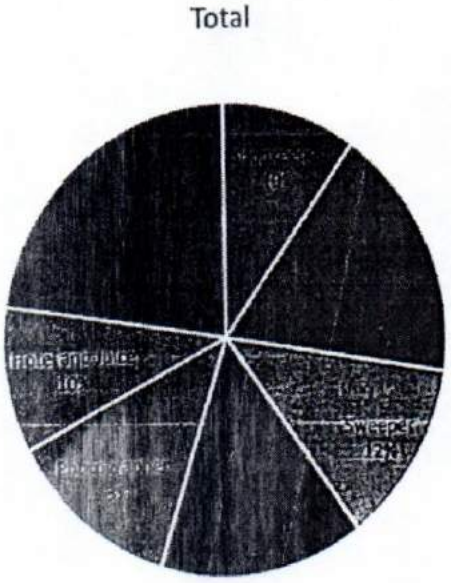
Table 1: Particulars showing creation of job in different area

ISBN No. 978-93-83741-29-8

Scanned by CamScanner

Sr.No.	Name of Job	Respondents	Percentage of Respondents (%)
1	Shopkeeper	20	10
2	Tourist Guide	35	17.5
3	Sweeper	25	12.5
4	Gardener	30	15
5	Photographer	25	12.5
6	Hotel and Juice	20	10
7	Travel Agency	45	22.5
Total		200	100

Source:-Field Survey



The figures in brackets shows percentage to total figures

The above table shows job wise classification of employees working at tourist places. 22.5 percent employees are working as travel agency. 17.5 percent employees are working as tourist guide, 12.5 percent employees are working as sweeper and photographer, 15 percent employees are working as gardener and rest 10 percent employees are working as shopkeeper and Hotel and juice maker.

Classification of type's job:-

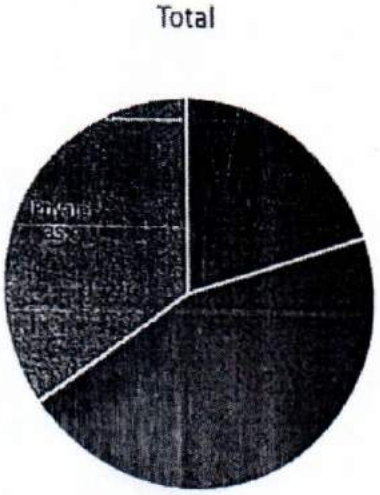
ISBN No. 978-93-83741-29-8

Scanned by CamScanner

Table 2: Particulars showing the types of job

Sr. No.	Types of Job	Respondents	Percentage of Respondents (%)
1	Government employee	40	20
2	Own Business	90	45
3	Private	70	35
Total		200	100

Source:- Field Survey



The figures in brackets shows percentage to total figures

The above table shows that 45 percent employees are engaged working in own business job, 35 percent employees are Private and reaming 20 percent employees are Government employee.

Classification of types of job:-

Table 3: Particulars showing the Post in Job

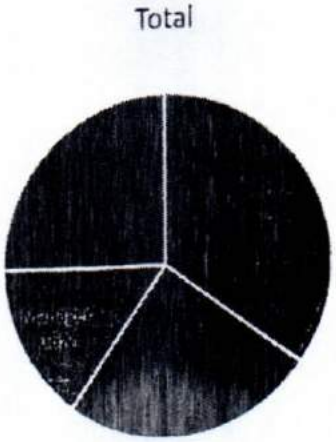
Sr.No.	Types of Post	Respondents	Percentage of Respondents (%)
1	Officer	70	35
2	Security Gard	50	25

ISBN No. 978-93-83741-29-8

Scanned by CamScanner

3	Manager	30	15
4	Travel agency	50	25
Total		200	100

.Source:- Field Survey



The figures in brackets shows percentage to total figures

The above table shows that 35 percent employees are officers50 percent of the employees are engaged in security gard as well as travel agency, and reaming 15 percent employees are Managers.

CONCLUSION:-

The research study revealed that tourism has made significant contribution in the development of Aurangabad district. Tourism industry is one the largest industries in the world. Tourism industry has created employment opportunism in the district. The employment is provided by the tourism industry in the area of hotel industries, some peoples got employment as guide, sweeper, gardener, travel agency. Tourism industry has created the employment opportunities in government as well as private sector. Tourism is also the fastest growing industry.

Reference:-

1. Jagmohan Negi, "Grading and Classification of Hotels, Tourism Resorts and Restaurants Principles and Practices", Kanishka Publishers, New Delhi, 2004.
2. Jagmohan Negi, Gaurav Manohar, "Tourist Guide and Tour Operation Planning and Organising", Kanishka Publishers and Distributors, New Delhi, 2004, pp. 1-11.
3. Settu, T. Raveendran K, and Raja Narayanan, S. "Tourism Industry in India", Kisan world, Vol. 32, No. 12, 2005, p.22.
4. http.//www.aurangabadtourism.gov.in
5. http.//www.maharashtratourism.gov.in
6. www.indiatourismstatistic.com
7. Clair selltiz and others. Research Methods in social sciences. (1962)

ISBN No. 978-93-83741-29-8

Scanned by CamScanner

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University

Aurangabad - 431004 (MS) INDIA
(NAAC Re-accredited 'A' Grade)



nd Annual
ternational Conference on
nclusive Growth and Sustainable
evelopment - Emerging
rends and Challenges

15 - 16th March 2019

ganized by
partment of Commerce
Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad - 431004 (MS) INDIA.

Certificate

is is to certify that Mr. / Ms. Dr. H. G. Sapkal Research Guide Head of Depaetment

om Department of R.P. College, Osmanabad

rticipated / presented and paper entitled A Systemic Analysis of Tousism Industries with Special Reference to Employment Opportunities in Aurangabad District

he International Conference held on 15th & 16th MARCH 2019

Prof. Veena Humbe
Convenor

Prof. Jayashree Suryawanshi
Convenor

Prof. M.A. Lokhande
Convenor

Prof. Farah Naaz Guari
Conference Secretary

Scanned by CamScanner

Impact Factor (SJIF) – 5.522 | *Peer Reviewed* | eISSN NO. 2394-2479

KNOWLEDGE LIBRARIAN

An International Peer Reviewed Bi-Monthly E-Journal of Library & Information Science

Frequency: Bi- Monthly (06 issues per year)

Nature: Online

Special Issue— January 2019

GUEST EXECUTIVE EDITOR

Dr. Pradip Jabde

Principal,

S. B. E. S. College of Science,

Aurangabad

GUEST EDITOR IN CHIEF

Dr. Daya T. Patil (Dalve)

Librarian,

S. B. E. S. College of Science,

Aurangabad

National Seminar on "Library as a Knowledge and Skill Development Center"

Organized by
Department of Library, S.B.E.S. College of Science, Aurangabad

Date - 24th - 25th January 2019

Sponsored by
Dr.Babasaheb Amedkarkar Marathwada University, Aurangabad

Published & Printed By

Knowledge Publishing Printing & Distribution House,

Address :- H. No. 1-27-15, Manzoor Pura, Collector Office Road,
Aurangabad (M.S.) India.
Mobile: 09881520380, 08237348416, 09766337888
Email:- knowledgepublishinghouse@gmail.com

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR Est. Jan 71

USE OF SOCIAL MEDIA NETWORK IN LIBRARY

Deepak R. Nikalje *

* **Librarian,**
Tuljabhavnai Mahavidylaya, Tuljapur
Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad
Maharashtra, India.

** **Jr. Library Assistant**
Knowledge Resource Center
Dr. BAMU, Aurangabad,
Maharashtra, India.

QR Code

Abstract: - *Social Media plays the most import role in information interchanging one to other. Social media are interactive and communication technologies that provides facilitate to interchange information from one person to another. It is helpful to interchange information, ideas, career interests and other forms of expression via internet or computer networking or virtual communities. Most of the observers have interpreted about use of social media drawbacks and benefits. Social media can helpful to individual interaction with real and online communicate and can be effective communication tools for corporate, government parties, social organizations, entrepreneurs, political parties and other human related organizations. uses of social media tools in library sciences as Displaying new books arrivals, Creating feedbacks Mechanism, Introduction notices, & programe announcing., Send brief updates to users of library., Providing basic search tools, creating library blogs to readers, Social links with library websites, Creation of accounts for all students on social media platform, Providing reference assistants, library tours and promote services .*

Keywords: Social media, information, Library services, Communication

Introduction:

Social Media plays the most import role in information interchanging one to other. Social media are interactive and communication technologies that provides facilitate to interchange information from one person to another. It is helpful to interchange information, ideas, career interests and other forms of expression via internet or computer networking or virtual communities. The varieties of social media services are available at present to provide worldwide information. the common features of social media are interactive web 2.0 internet-based application, user generated contents lick that digital photos or videos, text posts or comments and data generated through all online interactions etc and another most important uses of social media are create service specific profiles for the website and online social networks

MAHAVIDYALAYA TULJAPUR

create. So, social media become lifebloodfor users.

Social media users typically access services via computer or laptop or tabs or mobiles. Therefore, day today social media users are growing rapidly because of all over the access of communication networking specially. With the help of these services people can crate individual groups, social groups, official groups, company groups or think tank groups for information generation and information exchange to one another. Today, social media totally changing the communication and interact channels in the society. They provide alternative facility to communication with society, organization, intermediates and individual. These changes are focused on human and technological relation phenomena. Social media are different from paper based media such as newspapers, magazines, journals and traditional electronic media such as television broadcasting and radio broadcasting because of one way interaction. So, users of social media are increasing rapidly. There are huge number user's registers near about 100 millions. The most popular social media sites includes facebook, whatsApp, Pinterest, twitter, youtube,Instagram, Tumblr,Google+, Myspace, LinkedIn, Wikia,Snapchat, Viber, VK, WeChat, Baidu Tieba, Weibo etc.

Most of the observers have interpreted about use of social media drawbacks and benefits. Social media can helpful to individual interaction with real and online communicate and can be effective communication tools for corporate, government parties, social organizations, entrepreneurs, political parties and other human related organizations.

Background

Social media may have been influenced by the 1840s with connected telegraphy in us country i.e ARPANET, which first came online in 1967 and after 1970s developed a prosperous cultural exchange of non-government and business ideas and communication. In 1982, handbook on computing at MITs AI lab clearly given the definition of 'Social media' found in this article. The PLATO System offered social media communication in 1973 era such as, PLATOs message-forum application, Team- talk etc. after that in 1980, Tom Truscott and Jim Ellis convert the idea of UseNet as a social networking. In mid-1980s and the mid-1990s, BBS companies and IBM companies introducing the telecommunication and computer technology, which helpful to build the massaging interchange. Table 01 give brief history of Social Networking sites/ tools with Introducing Year.

Social Networking sites/ tools	**Introducing Year**	**Social Networking sites/ tools**	**Introducing Year**
GeoCities	Dec. 1995	MySpace	Aug. 2003
Six Degrees	May 1997	Orkut	Jan. 2004
Open Diary	Oct. 1998	Facebook	Feb. 2004

LiveJournal	Apr. 1999	Youtube	Feb. 2005
Ryze	Oct. 2001	Yahoo! 360°	Mar. 2005
Friendster	Mar. 2002	Bebo	July 2005
Linkedin	May 2003	Twitter	July 2006
MySpace	Aug. 2003	Tumbir	Feb. 2007
Hi5	Jun. 2003	WhatApp	Feb. 2009

Objectives of the research paper

The objectives of the research paper as following.

1. To Study about Social media tools
2. To identify popular social media tools in India.
3. To know the how to use of social media in Library sciences.

Research methodology

- **Research methodology**

This research paper is focused on only Social Media tools in India and how to use of Social Media tools in Library Sciences. For this purpose necessary and accurate data are collected through secondary sources.

There are main two methods of data collection i.e. primary as well as secondary methods.

a) Primary methods of data collection.

There are various methods we can use to collect primary data. It involves direct investigation, indirect investigation; data collection through questioners etc. in this research researcher cannot collect primary data so far so limitations.

b) Secondary methods of data collection.

For the research purpose researcher collect the secondary data through secondary methods. It involves e-books, magazines, newspapers, internet and articles.

There are various methods available to data analysis and interpretation. But in this research paper, researcher used percentage, tabulation and graphical methods for data analysis.

➢ **Concept of Social Media**

Day today, Social Media are becoming so popular and lifeblood of users. There are various observers examine Social Media as a one of the powerful tools for communication worldwide. With the help of Social Media, we can communicate two way interactionwith all over the world via Social Networking sides. For more understanding the concept of social media need to know the meaning and definition of Social Media.

❖ **Meaning of Social Media**

Social Media is a forms of media that allow people to communicate and share information using the internet or mobile phones like that blogs, podcasts and other forms of social media are twitter, Facebook, WhatsApp etc. there are most popular Social Media Networking sites

in India are facebook, Youtube, Pinterst, twitter, Instagram, google +, stambleupan etc.

❖ **Definition of Social Media**

1. **According to – Wikipedia**

   "Social media are primarily Internet-based tools for sharing and discussing information among human beings."

2. **According to tvb.org**

   "Online technologies and practices that people use to share opinions, insights, experiences, and perspectives with each other."

3. **According to Bottel PR**

   "Software tools that allow groups to generate content and engage in peer-to-peer conversations and exchange of content (examples are YouTube, Flickr, Facebook, MySpace etc)."

4. **According to Axel Schultze**

   "Social Media is the collection of tools and online spaces available to help individuals and businesses to accelerate their information and communication needs."

In simple words, Social media is a form of communication with individuals, organization and other social organization via computer networking or telecommunication or internet.

➢ **Social Media Tools in India**

The most popular social media tools in India are explanted as follows.

1. **Facebook**

Facebook is a most popular social networking service launched on February 4, 2004. The founder member of this sites is Mark Zuckerberg with his college roommate and fellow Harvard University student Eduardo Saverin. This social networking sites was limited by the founders to Harvard students, but was extended to other colleges in the Boston area, the Ivy League, and gradually most universities in the United States and Canada, corporations, and after September 2006, it was open to all over the world with a valid email address along with an age requirement of being 13 and older. Its official websites are WWW. Facebook.com. The logo of Facebook are shows as bellow.



2. **YouTube**

YouTube is anothermost popular social networking tools in India launched in Feb. 14, 2005. That social networking sites was founded by Chad Hurley, Steve Chen, and Jawed Karim, when they worked for PayPal. Its official websites are www. Youtube.com. today, YouTube has over 1.8 billion users on an every month, within spitting distance of Facebook 2 billion.



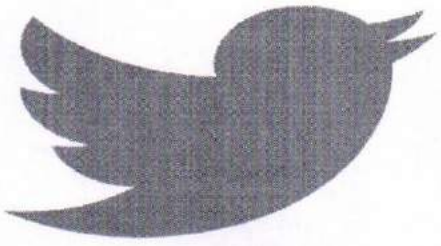
3. Pinterest

According to social media stats India report 2018, Pinterest, Inc. is a third most popular social networking tools which is designed to discover information on the World Wide Web. Mainly using images and on a smaller scale, GIFs and videos. This site was founded by Ben Silbermann, Paul Sciarra and Evan Sharp in Dec. 2009. Its logo are as follows.



4. Twitter

Twitter is a most popular American social Networking and online news services which users post and interact with massages known as "tweets". This social networking sites full version was introduced publically on in July 15, 2016. Its official websites are www.twitter.com. Its logo is shown as bellow.



- **Number of Social Network users in India**

According to social media stats India reports 2018, show that in 2015, 142.23 million users are register on social networking sites. They are tremendously rising in 2018 i.e. 226.06 million. Table 2, indicates the number of social network users in India.

Table 02: **Number of Social Network users in India**

Year	No. of users (in million)
2015	142.23
2016	168.10
2017	196.20
2018	226.06
2019	258.27

(Source: - social media stats India report 2018)

Chart 01: **Number of Social Network users in India**

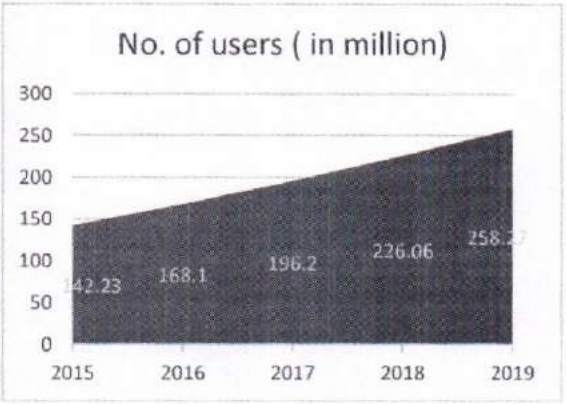


Chart 01 indicates that, in 2015 the number of users on social media networking was 142.23 million, 168.1 million, 196.2 million, 226.06 million and 258.27 million respectably in 2016, 2017, 2018 and 2019.

- **Most Popular Social Networking Sites in India**

According to Social Media stats India report, most popular Social Networking sites are facebook, Youtube, Pinterst, twitter, Instagram, google +, stambleupan etc. table 2, show the most popular Social Media sites in India.

Table 03: **Most Popular Social Networking Sites in India**

Social Media Network	Number of users percentage
Facebook	91.85%
Youtube	2.57%
Pinterest	1.55%
twitter	1.45%
Instagram	1.41%
Google +	0.26%
StambleUpon	0.26%
Other	0.66%

(Source:- social media stats India report 2018)

Table 3, shows that most popular social networking sites in India. It indicates that, the most popular social networking sites are facebook in a first rank and Youtube on second rank and later camePinterest, twitter, Instagram, google+, stambleUpon and other social networks respectively ranked.

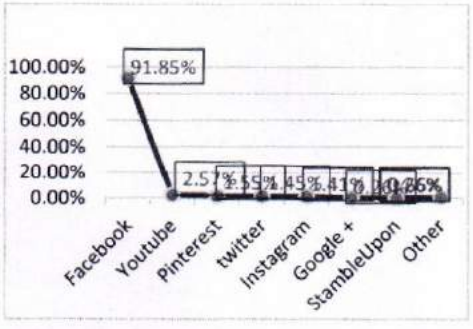


Chart 02: **Most Popular Social Networking Sites in India**

Chart 02, indicates that, most popular social networking sites in India. It shows that, Facebook is most popular social networking sites in India.

- **Number of users of Facebook, Twitter and WhatsApp in India**

Table 3, shows the total number of users of Facebook, Twitter and WhatsApp in India which is the most popular social networking tools.

Year	Facebook (in mil.)	Twitter (in mil.)	WhatsApp(in mil.)
2015	135.6	19.7	70
2016	165.57	23.2	160
2017	194.11	26.7	200
2018	219.94	30.4	216.74

(Source:- social media stats India report 2018)

Table 03, shows that the most popular social networking sites in India are Facebook, WhatsApp and twitter respectably.

Use of Social Media tools in Library Sciences

Following are the recent uses of social media tools in library sciences.

1 Displaying new books arrivals

Social media networking are helpful to displaying new Books arrivals in library. With the help of social media tools, we can attractive readers with the new books arrivals displaying. We can use, Facebook, Twitter, creating WhatsApp Groups or other social networking tools to displaying new Books, Magazine and journals etc.

1. Creating feedbacks Mechanism

   Social media tools are helpful to creating feedbacks mechanism for library progress and to know the most popular books in the library which are helpful to providing the best facility to readers.

2. Instruction, notices and programs announcing

   Facebook, twitter as well as WhatsApp are the most popular and used social networking tools in the college students. It can be helpful to announcing or notify Instructions, notices and programs of library.

3. Send brief updates to users of Library

With the help of social media tools we can provide brief update about library services. Such as research strategies, innovative practices, social affected issues etc.

4. Providing basic search tools
5. Creating Social media cataloging tools
6. Proving electronic library services with social media
7. Creating library blogs to readers
8. Social links with library websites
9. Creation of accounts for all students on social media platform
10. Providing reference assistants, library tours and promote services

Conclusion

Social Media plays the most import role in information interchanging one to other. Social media are interactive and communication technologies that provides facilitate to interchange information from one person to another. It is helpful to interchange information, ideas, career interests and other forms of expression via internet or computer networking or virtual communities. The most popular social media sites includes facebook, whatsApp, Pinterest, twitter, Youtube,Instagram, Tumblr,Google+, Myspace, LinkedIn, Wikia,Snapchat, Viber, VK, WeCha t, Baidu Tieba, Weibo etc. from that facebook are the most popular social networking sites in India. Near about 219.94 million registered users are having.

With the help of Social media tools we can provide various services to readers such as Displaying new books arrivals, Creating feedbacks Mechanism, Instruction, notices and programs announcing, Send brief updates to users of Library, Providing basic search tools, Creating Social media cataloging tools, Proving electronic library services with social media, Creating library blogs to readers, Social links with library websites, Creation of accounts for all students on social media platform And Providing reference assistants, library tours and promote services.

Bibliography

1. Koli, L. N., (2006)-Research methodology,Y.K.Publisher
2. Cassell,Kay ann. (2012)- Reference and information services in 21st century: An introduction., Neal Schuman Pub.

3. Eveance, Edward. (2005) Developing Library and information center collectors. ,Libraries unlimited pub.

4. Sahoo, Deepti Ranjan , March 2015- Social Networking tools for library services, IJISET, Vol 02, issue 03.

5. www. Facebok.com

6. www. Socialmediastats.com

7. Harmon,Charles & messina, Michael (2013), Using Social media in Libraries.,Scarecrow press.



2018-19

22, 23, 24

ISSN 2349-638x
Impact Factor 5.707

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL

Email id : aiirjpramod@gmail.com

www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 45

Executive Editor
Dr. S.M. Maner
Principal
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor
Maj. Dr. Y. A. Doke
Head, Dept. of English
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor
Prof. Pramod Tandale

Impact Factor-5.707

ISSN-2349-638x

Aayushi

International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

February- 2019

Executive Editor

Dr. S. M. Maner

Principal

Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur,

Dist. Osmanabad (M. S.) India

Chief Editor

Pramod P. Tandale

Co-Editor

Prof. V. H. Chavan
Dept. of Hindi

Maj. Dr. Y. A. Doke
Head, Dept. of English

Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.) India

Impact Factor

SJIF 5.707

For details Visit to:
www.aiirjournal.com



Sr.No.	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
1.	Dr. N. B. Pawar	Globalization and Indian Society	1
2.	Dr. Uttam Ambhore Ratnamala R. Pagare	Struggles of Minority: A Study of Carlos Bulosan"s America Is In The Heart: A Personal History	4
3.	Dr. Uttam Ambhore Priyanka R. Nikam	Maxine Hong Kingston's the Woman Warrior: An Attempt of Constructing Ethnic Identity	8
4.	Dr. Umakanth S. Patil Shashikant U. Patil	Issues & Concerns of Farmers In Indian Politics	11
5.	Dr. Kalpana Girish Gangatirkar	The Reflections of Patriarchal Predomination in Shashi Deshpande"s *The Dark Holds No Terrors*	13
6.	Dr. Swaleha M. Attar	Mother-Daughter Relationship in Select Novels of Young Adult Fiction	17
7.	Dr. Anupama Prakash Pol	Effects Of Globalization On Indian Women And Indian Literature	20
8.	Dr.F.A.Siddiqui Mr. Ibrahim Abdu Mohammed Maslamani	Problem of Minority in Mulk Raj Anand`s Untouchable	22
9.	Dr. Sunil V. Pawar	The Shepherd"s Hut: A Teenager"s Tale	24
10.	Dr. Yashwant A. Doke Arun Govindrao Mitrgotri	Parent-Children Relationship in the Present Scenario	26
11.	Dr. Anita Mudkanna	Complexity of Human Relationship in Anita Desai"s Novel "Cry*the Peacock*"	28
12.	Deepak G. Todkari	A Tragic Trauma: Reflection of Womanhood as a Minority in the work of Kamala Das	30
13.	Dr. Urmila. G. Dharashive	The Frontier In American Literature And Culture	32
14.	Mr. Madhav D. Shrimangale	Chitra Banerjee Divakaruni"s Arranged Marriage: A Global Perspective	35
15.	Dr. Prashant Subhash Mothe	Communication Gap And Cultural Crash In Jhumpa Lahiri's Interpreter Of Maladies	38
16.	Dr. Abul Hasib Siddiqui	Struggle for Identity in Githa Hariharan"s The Thousand Faces of Night	42
17.	Dr.Panchappa Ramchandra Waghmare	Impact Of Globalisation In Arvind Adiga"s *The White Tiger*	44
18.	Dr. Vaibhav Ramdas Zakde	Dalit Autobiographies: Quest for Identity	47
19.	Miss. VidyaVasant Bhosale	Rise of Transgender and Gender Discrimination Hijras :One of India"s Most Misunderstood Community	50
20.	Dr. Prashant Janardhanrao Gaikwad	Impact of Freudian Psychology on D. H. Lawrence"s Sons and Lovers	53

Parent-Children Relationship in the Present Scenario

Dr. Yashwant A. Doke M.A. Ph. D.
Head, Dept of Eng. Tuljabhavani Mahavidyalay, Tuljapur

Arun Govindrao Mitrgotri Co-Presenter
A Ph. D. Candidate

Introduction:

Since time immemorial parents have been attributed a place just next to Godliness. Parents especially a Mother is the first teacher of a child. This place has never been replaced by anyone. The writers of the present research paper know it well that the relationship between parents and children is not easy to define in a single phrase or a sentence. The psychologists may have classified types of parents and children in their own way. But there is not scale in the world that would measure the total amount of love, affection amongst children and parents.

India is a land of glorious tradition. The history of parent-children Relationship cannot be traced back to any remote ancient time. There never was nor be in the coming future any mercantile relationship between the two.

Life on earth is full of excitement and many uncertainties. When a child is born, it then, has to pass through many stages of life. A childhood, boyhood, manhood, and old age are the natural stages through which each all of us have to pass. There is a physical journey of the human body through many stages. He grows physically and psychologically into a wise and matured one.

Everyone has to discharge certain duties in life. The Theory of *Karma* (action) as propounded by Lord Shri Krishna in the 'Geeta' is known to the world. Here a mother or father has prime duties such as to rear children with tender love. A mother is a nurse, mentor and lifelong well- wisher of them. A father is always a protective figure for children. Both father and mother are the two sides of the same coin. Their object is to ensure a bright future for their children. The relationship between parents and children is always holy. It cannot be expressed even by any research article. It is complex and beyond the limits of human science.

Whatever love, knowledge, experience, affection children get from their parents, has a considerable value in the making of their personality. Children cannot pay back the amount of love and affection received from parents. It is nothing but an invisible foundation for their future course of life.

There are uncountable examples of ideal parents and children in the history all over the world. If literature is a reflection of society, then the first image to appear is that of a mother and her child. The story of *Shravan Bal* in the Ramayana is often cited in the Children's Literature. Mother is a symbol of love and sacrifice. 'The Harry Potter' series of novels by J. K Rowling clearly throw a vast flood light on the importance of love of mother for her child Harry. Parents of Harry Potter are mercilessly killed by the Dark Lord Voldemort. Actually, he wanted to kill Harry but his father John Potter and mother Lily protected and saved from the brutal attack but sacrificed their own .[1] The love and sacrifice are the two most precious gems parents have for their wards.



(Image 2)

What pains and efforts parents take to rear up their children can only be experienced after they become a mother or a father.

Parents do all that is best possible for their children. When their children become doctors, engineers or officers of high rank, parents become very happy. Behind the success, there is that long served affection of parents. It has been observed that if parents are responsible, they can gift responsible wards for the nation. When parents grow old naturally, they become physically weak. They need love, compassion and love from their grown up children. Because sunset is beautiful than the sunrise.

Despite this golden picture, there is a shocking and negative tension between parents and children in the present scenario. Modern life is full of stress and strain. Stress is a gift of 21st Century to mankind.

The values taught by parents , it seems, diminishing now these days. Modern life presents challenges and the younger generation has to run behind the dreams. The rise of job opportunities in IT Industries have opened new vistas for the IT-ians.

An Analysis of Fading Parent-Child Relationship in the Essay *TV as Babysitter* by Jerzy kosinski

Adel Saleh Naji Muthanna
Research Scholar
Aden university Dhalea college of education
Yemen

Maj.Dr.Yashwant A.Doke
Research Guide
Convener &HOD .Dept. of English
Tuljapur Dist. Osmanabad

Abstract:

Parent-child relationship has been one of the biggest concerns in modern era where all sorts of relationship seem to be losing its significance. This research article is limited to the study of the parent-child relationship in one of the famous short essays in literature. This essay highlights one of growing familial issues of nursing the children. The parents consider TV as surrogate mother and let their babies at the mercy of television as a babysitter, without knowing its harmful effects. Jerzy Kosinski touches one of the grimmest concerns of the parents to keep them away from unwanted technology or rather make best use of them in his path breaking essay. In this digital world, no one can afford to escape from technology but if not used properly, can bring havoc also in one's life.

Today, due to technological innovations life is full of pressure. It is needed for the child to have inner strength and face the life at its most real at an early age. Because, life certainly is more subtle than seen on TV. Thus in this unpredictable world, child tries to find solutions and expects it all the time. But life offers him very few. So he is disillusioned, impatient, and depressed etc. he feels defective and hence a failure.

Television has become society's babysitter, while parents are off doing other things. The main stream of children watches three to four hours a day seven days a week. That ends up being just about twenty-eight hours of television a week or more. Jerzy Kosinski mentions that,

"Television, a unique, claiming to be neither a reality nor art,
Has become reality for many of us, particularly for our
children who are growing up in front of it."(Board of editors, 2013:19)

According to him, it has become a reality for our children. They have learnt to be dependent on it. They have started thinking that TV can offer them more wisdom and entertainment than their old parents. Sometimes the parents allow them to do so to escape from burdensome duty of handing them. Parent–child relationships are central to psychological development and several studies have shown that suboptimal parenting is an important risk factor for psychological disorder in clinical and representative community samples (Blatt & Hofmann, 1992 Blatt, S.J.,& Homann , E. (1992). In the essay, the essayist states that,

"Parents leave their children in front of the TV as babysitter,
because many feel it is infinitely safer to watch the Sesame world
of television than to walk in the world outside of their homes.
But is it?" (Board of Editors, 2013:19)

When we think of what a good parent-child relationship should have what are the first few things that come to mind? Some type of bond to hold the relationship together? Good communication? Caring? Whatever those things are, imagine a child growing up without them. What effects would it have on the child then? Some may argue that there is significant between the more attachment kids have with their parents and less likelihood they are committing violent acts. However, according to Centre of Disease Control (2015), "{youth violence} is the third leading cause of death for young people between the ages of 15-24."

We can relate this to this essay where the writer believes that,

"a child who has been trained to control the little world, by
changing the channels when he didn't like it, and was
accustomed to maintaining the same distance between
himself and the world televised for his amusement,
is naturally threatened by the presence of people he
cannot control. Others push him around, make faces at him, encroach.
(Board of Editors, 2013:19)

he writer means that these children become violent and starts believing in taking revenge like movie

l control, on the other hand, has been linked to lower risk of psychological symptoms
Chen, 2007).

gine a child watching this little world within which Presidents and
gners walk; mice and lions, kissing lovers and dying soldiers,
- and dog houses, flowers and detergents, all are reduced
mixed together, given the same rank, and set in the
ooked at. The child watches this crowded world
s, while eating, yawning, and playing.
xpect of the world? What can it expect? (Board of Editors,2013:19)

What is www.aiirjournal.com

2018 – 19

(20)

ISSN 2349-638x
Impact Factor 5.707

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 45

Executive Editor
Dr. S.M. Maner
Principal
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor
Prof. V. H. Chavan
Dept. of Hindi
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor
Prof. Pramod Tandale

Sr.No.	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
42.	डॉ उत्तम राजाराम आळतेकर	संवेदना का सरोकार कराती इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता	108
43.	प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण	बाज़ारवाद की चुनौतियों पर चिंतन करती हिंदी लघुकथा	112
44.	डॉ.विट्ठल शंकर नाईक प्रा.सुषमा प्रफुल्ल नामे	हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श	116
45.	प्रा.डॉ.प्रवीण कांबळे	लघुकथाओं में चित्रित नेताओं की चरित्र-हीनता	119
46.	डॉ. सुनिता रामभाऊ हजारे	शिवानी की कहानी 'करिए छिमा' के सन्दर्भ में	120
47.	प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार	आदिवासीयों की करुण गाथा – 'अल्मा कबूतरी'	121
48.	अभिनव कुमार	हुल पहड़िया: पहाड़िया आदिवासियों के चिरकालीन स्वाधीन चेतना की साहित्यिक अभिव्यक्ति	123
49.	प्रा. जे. बी. जाधव	मोहनदास नैमिशराय का उपन्यास,'ज़ख़्म हमारे में' दलित विमर्श	125
50.	प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे	21 वे सदी के हिंदी गद्य साहित्य में बाजारवाद विमर्श	128
51.	लक्ष्मी किसनराव मनशेट्टी	दलित जीवन की दर्दनाक दास्तान – मुक्तिपर्व	130
52.	प्रा.प्रतापसिंग राजपूत	21 वीं सदी के उपन्यास में चित्रित किसान जीवन	133
53.	डॉ. मंत्री रामधन आडे	21 वीं सदी का हिन्दी गदय साहित्य और स्त्री विमर्श	135
54.	डॉ. विनय सु.चौधरी	21 वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में दलित विमर्श	138
55.	प्रा. संतोष तुकारारम बंडगर	'डबल इनकम नो किड्स': महानगरीय नारी की बदलती पारिवारिक प्रवृत्तियाँ	140
56.	प्रा. सुधाकर इंडी	रमणिका गुप्ता के उपन्यासों में आदिवासी स्त्री विमर्श	142
57.	प्रा. विश्वनाथ भालचंद्र सुतार	हिंदी कविता में नारी लेखन के विविध स्वर	145
58.	प्रा.डॉ.संभाजी रामू निकम	आधुनिक परिवेश में नौकरीपेशा स्त्री के प्रति देहवादी दृष्टिकोण :'कुत्ते' नाटक के संदर्भ में	147
59.	किरण सोपान सोनवलकर	स्त्री विमर्श का नया कोण : कस्बाई सिमोन	149
60.	संगिता तुकाराम सरवदे	नारी अंतर्मन को झकझोरती रचनाकार- कृष्णा अग्निहोत्री 'मैं अपराधी हूँ' के विशेष संदर्भमें	151
61.	सचिन मधूकर गुंड	'स्त्री जीवन का यथार्थ' :- 'मुन्नी मोबाईल'	153

21 वीं सदी का हिन्दी गदय साहित्य और स्त्री विमर्श

डॉ. मंत्री रामधन आडे
हिन्दी विभाग
तुलजाभवानी महाविद्यालय, तुलजापूर

सामाजिक सरोकरों से लैस बुध्दिजीवियों और कार्यकर्ताओं के बीच लंबे समय से यह लगातार चर्चा और चिन्ता का विषय रहा है कि हिन्दी में स्त्री प्रश्न पर मौलिक लेखन आज भी काफी कम मात्रा में मौजूद है। स्त्री विमर्श की सैध्दांतिक अवधारणों एवं साहित्य में प्रचलित स्त्री विमर्श की प्रस्थापनाओं की भिन्नता या एकांगीपन के संदर्भ में पहला प्रश्न यह उठता है कि हिन्दी साहित्य जगत में स्त्री विमर्श के मायने क्या है? वैदिक काल में नारी की स्थिति अत्यन्त उच्च थी। वाल्मिकी रामायण में लिखा है: यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता- जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता का वास होता है। वैश्वीकरण से आए तमाम बदलावों के बाद आज भी स्त्री अंधकार युग की बर्बरता के बीच जाने को अभिशप्त है । आये दिन नारियों पर अत्याचार बढता हुआ दिखाई देता है । पुरुष जीतना हिंसक होता जा रहा है, स्त्री उतनी ही उग्रता से प्रतिरोध करने लगी है।

भारतीय संस्कृति में नारी को समर्पणमयी, वात्सल्यमयी, माता और ममताप्रयीन बहन के रुप में चित्रित किया गया है। नारी त्याग की मूर्ति है। धरती माँ के रुप में, जननी-जन्मभूमी के रुप में आकाश की उँचाईयों से लेकर समुद्र की गहराइयों से अपार-संभावनाओं की शुभकानाएँ उसके लिए समेट कर ले आई। जहाँ नारी की पूजा होती है वही देवताओं का निवास होता है। भारतीय नारी की यह महानता रही है वह पति की उपेक्षा और प्रताडना पाकर भी उसके प्रति मन-वचन कर्म से समर्पित रहती है। कभी-कभी नारी का त्याग पती की दृष्टी को बदलने में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दुध, और आँखों में पानी'' स्त्री के मानसिक, दैहिक शोषण की भयानक स्थिति को रचनाकारोंने अभिहित किया है। आज वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने वीडिओं, इंटरनेट के जाल बिछाकर दृश्य-श्रव्य माध्यमों से हमे पूरी दुनियाँ से जोड दिया है। वही पर उपभोक्तावादी संस्कृति को भी बढावा दिया। मूल्यों और रिश्तों पर बाजार हावी हो गया। देश में जहाँ बदलाव का दौर पूरे वेग से आरंभ हो गया वही स्त्री-अस्मित और स्त्री स्वातंत्र्य को लेकर गलत फहमियाँ भी चारों ओर दिखाई देती है। मीडियाने स्त्री को मंथ देने के नाम पर स्त्री के छबिका दुरुपयोग किया है। हिन्दी पत्रकारिता एवं साहित्य में स्त्री विमर्श को लेकर खूब बहस बाजियाँ हुई। स्त्री विमर्श एक निरन्तर गतिशील परिवर्तन की प्रक्रिया के रुप में दिखाई देती है। दुर्भाग्य से बहुसंख्या स्त्री-समाज तो आज भी उससे वंचित है। आज समय की बढती गति के साथ एक ओर जहाँ तेजी आयी है, वही दुनियाँ के समिट जाने के कारण ही लगता है जैसे स्त्री विमर्श ने एक आन्दोलन का रुप ले लिया है। समाज में अनेक वर्ग और स्थितिओं के अनुसार स्त्री को प्रगति की अपनी सीढियाँ तय करे और आगे उन्नती करती रहे। ऐसी स्थिति में स्त्री विमर्श को एक विचारधारा के रुप में ही स्वीकार किया जा सकता है। भारत की सभ्यता और संस्कृति में नारी को देवी माना जाता है। वाल्मीकि ने रामायण में लिखा है। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता''[1]

यह सच है कि स्वातंत्र्य भारत के संविधान ने कई अधिकार स्त्रीयों के आँचल में डाल दिए है। यह सच है कि वह घर, परिवार, समाज में आज भी शोषण-मुक्त नही पाई है। ज्ञान के प्रसार के कारण स्वाधिकार स्वचेतना के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी, सामाजिक शोषण के खिलाफ आवाजें उडने लगी इसी आवाजो की गुंज सुनाई पड़ने लगी। ''जगदंबा देहरी दियरा बार अइली है, जगतारण देहरी दियरा बार अइली है।''[2] पहचान पर्व के उद्घाटन पर जलाया गया दीपक एवं उसकी ज्योत नारी शक्ति उजाले-युक्त पहचान का प्रतीक है। स्त्री-विमर्श को घृहत्तर अर्थो में परिभाषित करना चाहे तो वह घर-परिवार, समाज-नीति और राष्ट्रनीति में नारी की अस्मिता, अधिकार और उन अधिकारों के लिए संघर्ष चेतना से जूडे संवाद की संकल्पना है। फेमिनिज्म का प्रभाव हमारे साहित्य के उपर पडा हुआ दिखाई देता है। विशेषकर स्त्री रचनाकारों द्वारा लिखित साहित्यपर फेमिनिज्म का प्रभाव दिखाई देता है। किन्तु यह कहना भी सही नही होगा। स्त्री जीवन की कितनी बडी विडंबना है कि स्त्री उसके अनुभवों की बजाय पुरूष के अनुभवों की अभिव्यक्ति की मांग की जाती है। आज जब स्त्री मुक्ति के प्रसंग पर बहस होती है तब परंपरा के पक्ष हार यह कहकर भारतीय परंपरा में स्त्री स्वाधीनता और अधिकार की पक्षधरता की बाते करते है। स्त्री की यातना सिर्फ उसकी नीजि यातना नही रहती वह सर्वहारा की यातना में तब्दीले हो जाती है। ''अधिकत्तर स्त्रियाँ अपनी अस्मिता की तलाश दुसरी स्त्री में करती है और एक स्त्री दुसरी स्त्री के प्रति लगाव का अनुभव बडी तेजी से करती है।''[3]

स्त्री शक्तिहीन कैसे हो सकती है। उसी के कोख से महात्मा गौतम बुध्द, ईसा मसीहा, पैगम्बर मोहम्मद साहब, गुरुनानक देव, महाराणा प्रताप, कार्ल मार्क्स, महात्मा गांधी, दयानंद सरस्वती, जैसे महापुरूष पैदा हुए। यह स्त्री की सहनशीलता व धैर्य की शक्ति है। स्त्री-समाज में आज दोहरी मार झेल रही है। एक और स्त्री होने का अभिशाप दूसरी ओर भयंकर गरीबी की मार उसका सारा संघर्ष अपने अस्तित्व के लिए है। भारत देश में फैले स्त्री समाज की जितनी परते और जितनी प्रकार है उन्हे किसी समाज में सामान्य गज में नापा जा सकता है। केवल विमर्श शब्द के प्रचलित होने के बाद स्त्री विमर्श के नाम से

21 वीं सदी का हिन्दी गदय साहित्य और स्त्री विमर्श

डॉ. मंत्री रामधन आडे
हिन्दी विभाग
तुलजाभवानी महाविद्यालय, तुलजापूर

सामाजिक सरोकारों से लैस बुध्दिजीवियों और कार्यकर्ताओं के बीच लंबे समय से यह लगातार चर्चा और चिन्ता का विषय रहा है कि हिन्दी में स्त्री प्रश्न पर मौलिक लेखन आज भी काफी कम मात्रा में मौजूद है। स्त्री विमर्श की सैध्दांतिक अवधारणों एवं साहित्य में प्रचलित स्त्री विमर्श की प्रस्थापनाओं की भिन्नता या एकांगीपन के संदर्भ में पहला प्रश्न यह उठता है कि हिन्दी साहित्य जगत में स्त्री विमर्श के मायने क्या है? वैदिक काल में नारी की स्थिति अत्यन्त उच्च थी। वाल्मिकी रामायण में लिखा है: यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता- जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता का वास होता है। वैश्वीकरण से आए तमाम बदलावों के बाद आज भी स्त्री अंधकार युग की बर्बरता के बीच जाने को अभिशप्त है । आये दिन नारियों पर अत्याचार बढता हुआ दिखाई देता है । पुरुष जीतना हिंसक होता जा रहा है, स्त्री उतनी ही उग्रता से प्रतिरोध करने लगी है।

भारतीय संस्कृति में नारी को समर्पणमयी, वात्सल्यमयी, माता और ममताप्रयीन बहन के रुप में चित्रित किया गया है। नारी त्याग की मूर्ति है। धरती माँ के रुप में, जननी-जन्मभूमी के रुप में आकाश की उँचाईयों से लेकर समुद्र की गहराइयों से अपार-संभावनाओं की शुभकानाएँ उसके लिए समेट कर ले आई। जहाँ नारी की पूजा होती है वही देवताओं का निवास होता है। भारतीय नारी की यह महानता रही है वह पति की उपेक्षा और प्रताडना पाकर भी उसके प्रति मन-वचन कर्म से समर्पित रहती है। कभी-कभी नारी का त्याग पती की दृष्टी को बदलने में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दुध, और आँखों में पानी'' स्त्री के मानसिक, दैहिक शोषण की भयानक स्थिति को रचनाकारोंने अभिहित किया है। आज वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने वीडिओं, इंटरनेट के जाल बिछाकर दृश्य-श्रव्य माध्यमों से हमे पूरी दुनियाँ से जोड दिया है। वही पर उपभोक्तावादी संस्कृति को भी बढावा दिया। मूल्यों और रिश्तों पर बाजार हावी हो गया। देश में जहाँ बदलाव का दौर पूरे वेग से आरंभ हो गया वही स्त्री-अस्मित और स्त्री स्वातंत्र्य को लेकर गलत फहमियाँ भी चारों ओर दिखाई देती है। मीडियाने स्त्री को मंथ देने के नाम पर स्त्री के छबिका दुरुपयोग किया है। हिन्दी पत्रकारिता एवं साहित्य में स्त्री विमर्श को लेकर खूब बहस बाजियाँ हुई। स्त्री विमर्श एक निरन्तर गतिशील परिवर्तन की प्रक्रिया के रुप में दिखाई देती है। दुर्भाग्य से बहुसंख्या स्त्री-समाज तो आज भी उससे वंचित है। आज समय की बढती गति के साथ एक ओर जहाँ तेजी आयी है, वही दुनियाँ के समिट जाने के कारण ही लगता है जैसे स्त्री विमर्श ने एक आन्दोलन का रुप ले लिया है। समाज में अनेक वर्ग और स्थितिओं के अनुसार स्त्री को प्रगति की अपनी सीढियाँ तय करे और आगे उन्नती करती रहे। ऐसी स्थिति में स्त्री विमर्श को एक विचारधारा के रुप में ही स्वीकार किया जा सकता है। भारत की सभ्यता और संस्कृति में नारी को देवी माना जाता है। वाल्मीकि ने रामायण में लिखा है। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता''[1]

यह सच है कि स्वातंत्र्य भारत के संविधान ने कई अधिकार स्त्रीयों के आँचल में डाल दिए है। यह सच है कि वह घर, परिवार, समाज में आज भी शोषण-मुक्त नही पाई है। ज्ञान के प्रसार के कारण स्वाधिकार स्वचेतना के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी, सामाजिक शोषण के खिलाफ आवाजें उडने लगी इसी आवाजो की गुंज सुनाई पड़ने लगी। ''जगदंबा देहरी दियरा बार अइली है, जगतारण देहरी दियरा बार अइली है।''[2] पहचान पर्व के उद्घाटन पर जलाया गया दीपक एवं उसकी ज्योत नारी शक्ति उजाले-युक्त पहचान का प्रतीक है। स्त्री-विमर्श को घृहत्तर अर्थो में परिभाषित करना चाहे तो वह घर-परिवार, समाज-नीति और राष्ट्रनीति में नारी की अस्मिता, अधिकार और उन अधिकारों के लिए संघर्ष चेतना से जूडे संवाद की संकल्पना है। फेमिनिज्म का प्रभाव हमारे साहित्य के उपर पडा हुआ दिखाई देता है। विशेषकर स्त्री रचनाकारों द्वारा लिखित साहित्यपर फेमिनिज्म का प्रभाव दिखाई देता है। किन्तु यह कहना भी सही नही होगा। स्त्री जीवन की कितनी बडी विडंबना है कि स्त्री उसके अनुभवों की बजाय पुरूष के अनुभवों को अभिव्यक्ति की मांग की जाती है। आज जब स्त्री मुक्ति के प्रसंग पर बहस होती है तब परंपरा के पक्ष हार यह कहकर भारतीय परंपरा में स्त्री स्वाधीनता और अधिकार की पक्षधरता की बाते करते है। स्त्री की यातना सिर्फ उसकी नीजि यातना नही रहती वह सर्वहारा की यातना में तब्दीले हो जाती है। ''अधिकत्तर स्त्रियाँ अपनी अस्मिता की तलाश दुसरी स्त्री में करती है और एक स्त्री दुसरी स्त्री के प्रति लगाव का अनुभव बडी तेजी से करती है।''[3]

स्त्री शक्तिहीन कैसे हो सकती है। उसी के कोख से महात्मा गौतम बुध्द, ईसा मसीहा, पैगम्बर मोहम्मद साहब, गुरुनानक देव, महाराणा प्रताप, कार्ल मार्क्स, महात्मा गांधी, दयानंद सरस्वती, जैसे महापुरूष पैदा हुए। यह स्त्री की सहनशीलता व धैर्य की शक्ति है। स्त्री-समाज में आज दोहरी मार झेल रही है। एक और स्त्री होने का अभिशाप दूसरी ओर भयंकर गरीबी की मार उसका सारा संघर्ष अपने अस्तित्व के लिए है। भारत देश में फैले स्त्री समाज की जितनी परते और जितनी प्रकार है उन्हे किसी समाज में सामान्य गज में नापा जा सकता है। केवल विमर्श शब्द के प्रचलित होने के बाद स्त्री विमर्श के नाम से

2018 - 19

(21)

ISSN 2349-638x
Impact Factor 5.707

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL

Email id : aiirjpramod@gmail.com

www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 45

Executive Editor
Dr. S.M. Maner
Principal
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor
Prof. V. H. Chavan
Dept. of Hindi
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor
Prof. Pramod Tandale

Impact Factor-5.707 ISSN-2349-638x

Aayushi
International Interdisciplinary
Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL
February- 2019

Executive Editor

Dr. S. M. Maner

Principal

Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur,

Dist. Osmanabad (M. S.) India

Chief Editor

Pramod P. Tandale

Co-Editor

Prof. V. H. Chavan — Dept. of Hindi

Maj. Dr. Y. A. Doke — Head, Dept. of English

Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.) India

Impact Factor

SJIF 5.707

For details Visit to:
www.aiirjournal.com



62.	डॉ. रामकृष्ण बदनें	प्रभा खेतान के आत्मकथा में व्यक्त नारी संवेदना	156
63.	संतोष अशोक निरगुडे	मार्कण्डेय के कहानियों में 'स्त्री विमर्श'	158
64.	प्रा. मुजावर जैनु हमिद	'रेहन पर रग्घू' उपन्यास और वैश्विकरण	160
65.	डॉ. राजकुमार पंडितराव जाधव	हिन्दी साहित्य : दलित विमर्श एवं चेतना	162
66.	प्रा. विश्वनाथ चंद्रकांतपटेकर	इक्कीसवीं सदी की हिंदी आत्मकथाओं मेंदलित विमर्श	164
67.	डॉ. माधुरी सोनटक्के	उषा प्रियंवदा का उपन्यास 'भया कबीर उदास' में स्त्री विमर्श	166
68.	डॉ. आरिफ शौकत महात	भूमंडलीकरण और बदलते मानवीय मूल्य	169
69.	डॉ. काकासाहेब गंगणे डॉ. मंत्री रामधन आडे	21 वीं सदी का हिन्दी गदय साहित्य और स्त्री विमर्श	171
70.	डॉ.एस जे पवार	'अपना मन उपवन' उपन्यास में व्यक्त पर्यावरण विमर्श	174
71.	डॉ.साहेबहुसैन जे. जहागीरदार	अल्पसंख्यक विमर्श को व्यक्त करता इक्कीसवीं सदी का उपन्यास 'अपवित्र आख्यान'	177
72.	प्रा. विवेकानंद हरिभाऊ चव्हाण	कब्र का मुनफा – 21 वीं शताब्दी का बाजारवाद	181

ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

कब्र का मुनफा – 21 वीं शताब्दी का बाजारवाद

प्रा. विवेकानंद हरिभाऊ चव्हाण
हिंदी विभाग प्रमुख
तुलजाभवानी महाविद्यालय, तुलजापुर

प्रस्ताविक :-

जहाँ औद्योगिक क्रांति ने सामाजिक अस्तित्व के धार्मिक आधार को प्रभावित कर मनुष्यों के बीच सम्बन्ध को पूरी तरह बदल दिया, वही वैश्विकरण की प्रक्रिया ने विश्व की परिवारों की बुनियाद हिला दी। मनुष्य संसार के जिस राहपर खड़ा है वह यह अंतिम राह है, आज विज्ञान अपनी भूमिका में एडीचोटी का जोर लगाकर इन्सान को भौतिक ज्ञान, सुविधाएँ प्रदान करने में जुट गया है, किंतु इन्सान है कि अपनी अहम में ही है, मुलत : दो वर्णों में ही विभाजित हुआ आज का ईन्सान ने व्यक्तिगत तौरपर उन सभी तौर – तरिकों का, परपंराओं को प्राप्त करने की लालसा बढ़ा रखी है, और समाज अब इस गलतफहमी में जी रहा है की पैसा, धन ही सबकुछ है। लोग पैसा कमाने देशाटन कर परदेश जार रहे है, अपने मेहनत के बलबूते पर ईमानदारी से धन कमा भी रहा है किंतु वह मन की शांति खो चुका है।

कब्रकार तेजेंद्र शर्मा का परिचय :-

कहानीपर तेजेंद्र शर्मा का जन्म पंजाब के जगराँव में 21 अक्टूबर 1952 को हुआ। घर में बचपन से साहित्यिक परिवेश था, प्रभाव होना सहज था, दसवीं कक्षा से लेखन कार्य शुरू हुआ । अंग्रेजी भाषा में शिक्षा पूर्ण होने से शुरूवाती दौर में विचारों की भाषा अंग्रजी रही और लेखन की भाषा हिंदी । तेजेंद्र शर्मा प्रवासी साहित्यकार के रुप में ख्यात लेखक है । इंतजाम, एक बार फिर होनी, एक ही रंग, कैंसर, काला-सागर, कोख का किराया और 2011 में लिखी कब्र का मुनाफा आदि उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ है। ढिबरी टाइट नाम से पंजाबी (2004), पासपोर्ट का रंगहरू नाम से नेपाली (2000) ईंटो का जंगल नाम से उर्दू (2007) आदि अनूदित साहित्य भी प्रकाशित है । ढिवरी टाइट के लिये महाराष्ट्र राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार 1995 प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के हाथों आपको प्राप्त हुआ । तेजेंद्र शर्मा यथार्थवादी रचनाकार इसलिए है कि, ओ कपोल कल्पित घटनाएँ अपनी रचनाओं में नहीं लेते ।[1]

बाजारवाद और कब्र का मुनाफा कहानी का संबध :-

समाज की आर्थिक संरचना के बाद सबसे अधिक महत्व हर देश में उसकी संस्कृति का होता है। इक्किसवीं सदी का साम्राज्यवाद इर बात को समझता है कि केवल राजनैतिक या आर्थिक रूप से किसी भी देश को अधिक समय तक अपना उपनिवेश नही बनाया जा सकता। कहानी के पात्र खलील और नजम अवसरवादी पात्र प्रतीत होते है, यह अवसरवाद उनमें स्वयं परिवेश के कारण निर्माण हुआ है ।[2] अकसर यह देखा गया है, आम आदमी पहले निर्धन होता है, तब उसका स्वभाव चरित्र एक समांतर रेखा की तरह होता है । वही आदमी परेशान होकर धन कमाने हेतू गाँव छोड देता है, देश छोड़ देता है विदेश जाता है, किसी स्वायत्त संस्था में काम करता है, अपनी मेहनत के बलपर वह संस्था सभी आर्थिक संस्थाओं मे से उच्चतर स्थान प्राप्त कर लेती है । किंतु इस प्रक्रिया के बीच उस संस्था के परिवर्तन के साथ-साथ उसमें कार्यरत कर्मचारी भी भरे पेट से परिवर्तनीय बन जाते है, खलील और नजम इसके लिए अपवाद नहीं ।

बाजारवादी परिवेश में सामाजिक चेहरा :-

आदमी की हैसीयत जब बढ़ जाती है, तब वह स्वयंकेंद्रित बन जाता है, वह स्वयंकेंद्रित बनते ही उसे अपने धर्म का, तथा कौम का स्मरण करता है। जब विपरित परिस्थितियाँ होती है तो दैष्टीभेद निर्माण नहीं होता।[3] खलील नाम का पात्र मैत्युपश्चात किसी अन्य धर्म के व्यक्ति के साथ तथा समीप अपनी कब्र नहीं चाहता। वह अपनी ही बिरादरी अपने आसा पड़ोस में चाहता है। मौत के आगोश में जाने के पश्चात भी मनुष्य धर्मांधता को त्याग नहीं सकता है, क्योंकि उसका अपना मूल धर्म भ्रष्ट हो सकता है, ऐसी खलील की मान्यता है । आदमी की यह सोच एक-प्रकारसे बाजारीकरण का ही प्रभाव है, क्योंकि बाजार माँगपर निर्भर करता है, पैसों की माँग करता है, और पैसा खलील ने बहुत कमाया है, इसिलिए वह अपना अंत अपने ही कौम में चाहता है ।

मर कर चैन की जिंदगी जिने की संकल्पना :-

दर असल आदमी परेशान है, वह उद्विग्न है, उत्पीडीत है । क्योंकि जब शोषित और शोषिकों का संदर्भ लेते है, वह उद्विग्न है, उत्पीडीत है। क्योंकि जब शोषित और शोषीकों का संदर्भ लेते है बत यहाँ एक विषय गौरतलब किया जाता है कि शोषक ही भविष्य के शोषित बनकर सामने आते है । जिंदगी भर खलील मेहनत तो करता है किंतु खलील को भी कभी शांती, अमन नहीं मिला है ।संसार में व्यक्ति व्यवहार अगर पूर्णत्व की ओर जाता है तो संसार के व्यवहार से उब जाते है । ईन्सान उम्र भर अमन की तलाश करता है, चैन की तलाश करता है, किंतु शांती की निंद खरीद नहीं सकता इसिलिए खलील और नजम मरने के बाद भी चैन की जिंदगी जिना चाहते है।[4] और कार्पेडर्स पार्क के कब्रिस्तान में अपनी पत्नीयों समेत कब्र की बुकिंग कर लेते है, जो शहर से दूर है, वहाँ शांती है और अमिर लोंगो के लिए ही वह कब्रस्तान बना हुआ है ।

संदर्भ :-

1) संदर्भ –हिंदी समाय महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी वि. वि. का - अभिक्रम संपादक – प्रो. आनंद वर्धन शर्मा
2) वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भाषा और साहित्य डॉ. माधव सोनटक्के / डॉ. अंबादास देशमुख प. सं. 11
3) भारतीय लोकतंत्र की खंडित होती गरिमा और उठते सवाल : डॉ. सर्वेस्वर उपाध्याय, प. सं. 133, अमन प्रकाशन (म. प्र.), प्रथम संस्करण -2007
4) कहानी कब्र का मुनाफा – तेतेंद्र शर्मा, प. सं. 2
5) कहानी कब्र का मुनाफा – तेतेंद्र शर्मा, प. सं. 3

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ) | Special Issue No. 46 | ISSN 2349-638x

जागतिकीकरणानंतर भारतीय अर्थव्यवस्था : एक दृष्टीक्षेप

डॉ. ए. बी. मुळीक,
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग,
सदगुरू गाडगे महाराज कॉलेज, कराड, जि. सातारा

डॉ. टी. एल. बारबोले,
सहयोगी प्राध्यापक व अर्थशास्त्र विभागप्रमुख
तुळजाभवानी महाविद्यालय, तुळजापुर जि. उस्मानाबाद

प्रस्तावना :

भारताला ब्रिटिश्यांच्या पारतंत्र्यातून 1947 ला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर भारतदेशाचा विकास करण्यासाठी देशात सामाजिक, राजकीय व आर्थिक व्यवस्था बदलण्यात आल्या त्यापैकीच एक मिश्र अर्थव्यवस्थेचा स्विकार हा एक बदल होता. मिश्र अर्थव्यवस्थेचा स्विकार करून भारतात नियोजनबध्द विकास करण्यासाठी नियोजन आयोगाची 1950 मध्ये स्थापना करून नियोजबध्द कृषी, उद्योग व सेवाक्षेत्राचा विकास करण्यावरती भर दिला गेला. परंतु 1970 ते 1980 च्या दशकात संपूर्ण जगात उदारीकरण खाजगीकरण जागतिकीकरणाचा स्वीकार करून आपल्या देशाचा आर्थिक विकास घडवून आणला आहेयाच दरम्यान भारताची अर्थव्यवस्था – आर्थिक अस्थिरता, प्रतिकूल व्यापार धोरण, विदेशी विनिमय साठ्यात घट, वाढते कर्ज, अकार्यक्षम औद्योगिक क्षेत्र, वृध्दीदरात घट, भाववाढ. इत्यादी समस्यांना सामोरी जात होती. यातून बाहेर पडण्यासाठीचा अंतिम उपाय म्हणून आंतराष्ट्रीय नाणेनिधीची (IMF) व जागतिक बँकेची मदत (WB) मागितली असता उदारीकरण, खाजगिकरण व जागतिकीकरणाचा स्वीकार करण्याच्या अटीवर मदत देवू केली त्याचाच एक भाग भारताने 1991 मध्ये नवीन आर्थिक धोरणाचा म्हणजेच उदारीकरण, खाजगीकरण व जागतिकीकरणाचा स्वीकार केला गेला त्यातील जागतिकीरणाचा स्विकार हा भारतीय अर्थव्यवस्थेतील एक खुपमोठा बदल होता. या बदलातून भारतीय अर्थव्यवस्थेत अनेक बदल झाल्याचे दिसून येतात ते बदल अभ्यासण्याच्या दृष्टीकोनातून "जागतिकीरणानंतर भारतीय अर्थव्यवस्था : एक दृष्टीक्षेप" हा विषय प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी निवडलेला आहे.

उद्दिष्ट्ये :

1) जागतिकीरणाचा व अर्थव्यवस्थेचा संकल्पणात्मक अभ्यास करणे.
2) जागतिकीरणानंतर भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या प्रवृत्तीचे अध्ययन करणे
3) भारतीय अर्थव्यवस्थेतील आव्हाणांचा अभ्यास करणे.

गृहीते :

1) जागतिकीकरणानंतर भारतीय अर्थव्यवस्थेची प्रवृत्ती बदलत आहे
2) जागतिकीकरणानंतर भारतीय अर्थव्यवस्थेतील अव्हाणे वाढत आहेत.

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत विषयावरील संशोधनासाठी वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक संशोधन पध्दतीचा उपयोग करण्यात आला असून माहिती संकलणासाठी व्दितीय स्त्रोताचा वापर करण्यात आलेला आहे. यामध्ये प्रामुख्याने संदर्भग्रंथ ग्रंथ, अहवाल, शोध निबंध, आर्थिक पाहणी, नियतकालीके, मासिके, वर्तमान पत्र व इंटरनेटचा उपयोग करण्यात आला.

जागतिकीरणाची संकल्पना :

जागतिकीरण म्हणजे एका देशाची अर्थव्यवस्था अन्यदेशांच्या अर्थव्यवस्थेसी संलग्नीत करण्याची प्रक्रिया होय प्रो.सी.टी. कुरियन यांच्या मते, " जागतिकीरण म्हणजे विविधता असलेल्या अर्थव्यवस्थांचा समूह होय" जागतिक बँकेनुसार, "जागतिकीकरण म्हणजे – उपभोग्य वस्तूंच्या समावेशासह सर्व वस्तूंवरील आयात नियंत्रणे हळूहळू रद्द करणे आयात जकातीचे दर कमी करणे व सार्वजनिक क्षेत्रातील उपक्रमाचे खाजगीकरण करणे होय."

अर्थव्यवस्थेची संकल्पना :

कोणतीही व्यक्ती, कुटुंब राज्य व राष्ट्राचे उत्पन्न, खर्च, बचत व गुंतवणूक इत्यादी विषयी नियोजन करून अंमलबजावणी करणारी एक आर्थिक व्यवस्था म्हणजे अर्थव्यवस्था होय. वेबस्टर शब्दकोषानुसार, "संपत्तीचे उत्पादन वितरण व उपभोग यांचे नियमन करणारी व्यवस्था म्हणजे अर्थव्यवस्था होय." तसेच ऑक्सफर्ड शब्दकोशानुसार, "विशिष्ट देश अथवा प्रदेशातील उत्पादन, व्यापार आणि पैशाचा पुरवठा यांमधील परस्पर संबंध म्हणजे अर्थव्यवस्था होय'

जगातील अर्थव्यवस्थेचे समाजवादी, अर्थव्यवस्था भांडवलशाही अर्थव्यवस्था, मिश्र अर्थव्यवस्था असे प्रमुख तीन प्रकार पडतात, तसेच विकासाच्या पातळीवरून अर्थव्यवस्थेचे वर्गीकरण विकसित अर्थव्यवस्था, विकसनशिल अर्थव्यवस्था व अल्पविकसित

व्यापार :

भारतीय अर्थव्यवस्थेत सन 1975 ते 2018 या कालावधीचा विचार केला असता एकूण व्यापारात वाढ झाल्याचे दिसते.ही वाढ जागतिकीकरणानंतर अधिक झाली असून या वाढीचे प्रमाण निर्यातीपेक्षा आयात अधिक आहे त्यामुळे देशाचा व्यापारतोल सातत्याने प्रतिकूल राहिलेला आहे.

रोखता :

अंतरराष्ट्रीय व्यवहार करण्यासाठी आंतरराष्ट्रीय रोखतेची गरज असते विशेषत परकीय गंगाजळीच्या कमतरतेमुळेच नवीन आर्थिक धोरणाचा स्वीकार केला. जागतिकीकरणाचा स्विकार केल्यानंतर परकीय गंगाजळी बरोबरच सोने SQR व RTP याच्या एकूण प्रमाणात सातत्याने वाढ झाली.परिणामी भारताची आंतरराष्ट्रीय रोखता वाढली ही वाढ सन 1995 मध्ये सर्वाधिक 331.58 टक्के म्हणजे जागतिकीरणानंतर झाल्याचे दिसून येते

आर्थिक नियोजन :

कोणतेही कार्य करण्यापूर्वी ते कसे करावयाचे या संबंधीचा आराखडा तयार करणे म्हणजे नियोजन होय आजचे युग हे नियोजनाचे युग म्हणून ओळखले जाते भारतातील आर्थिक नियोजनामध्ये स्वातंत्र्यपूर्व काळातील आर्थिकनियोजन यामध्ये सर विश्वेश्वरैया योजना, बॉम्बे योजना, जन योजना, गांधीवादी योजना, यांचा समावेश होतो. स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतरच्या काळातील आर्थिक नियोजनात सर्वेदय योजना, कोलंबो योजना व 1951 पासून 2014 पर्यंत सुरू असलेला योजना आयोग आणि जागतिकीकरणानंतर 2015 पासून नव्याने अस्तित्वात आलेल्या 'नॅशनलइन्स्टीट्यूशन फॉर ट्रान्सफॉरमिंग इंडिया(NITI) चा समावेश होतो. निती आयोग भारत सरकारचे (थिंक टॅक) म्हणून कार्य करतो.

कर व्यवस्था :

कोणत्याही राष्ट्राच्या आर्थिक विकासाच्या प्रक्रियेत महसुल प्राप्तीला अनन्यसाधारण असे महत्व असते.सरकारला महसुल प्राप्तीचे कर Tax हे एक महत्वाचे साधन आहे.'कर (Tax) म्हणजे सरकारला देण्यात येणारे सकतीचे देणे होय.' भारतात कराचे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष असे दोन प्रकार होते.अप्रत्यक्ष करात अनेक करांचा समावेश होता.ते जमाकरण्यासाठी अनेक अडचणी येत होत्या. त्यावर मात करण्यासाठी सर्वप्रकारचे अप्रत्यक्ष कर रद्द करून त्याजागेवर 'एक राष्ट्र एक कर' व्यवस्था या तत्वावर आधारित वस्तू व सेवावर एकच कर लावला त्याचे नाव Goods and Services Tax (GST) हा कर भारतात 1 जुलै 2017 पासून लागू झाला म्हणजेच जागतिकरणानंतर लागू झाला

भारतीय अर्थव्यवस्थेतील जागतिकीकरणानंतरची आव्हाने:

भारतीय अर्थव्यवस्थेत पूर्वीपासूनच आवासून बसलेल्या वाढती लोकसंख्या दारिद्र्य, बेरोजगारी, विषमता, भाववाढ, काळापैसा, बँकव्यवसायातील अस्थिरता इत्यादीसह अनेक समस्यांनी जागतिकरणानंतर गंभीर रूप धारण करून भारतीय अर्थव्यवस्थेला प्रभावित करत आहेत. त्यामुळे या समस्या भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोरील आव्हाने ठरत आहेत

1) वाढती लोकसंख्या:

वाढती लोकसंख्या हे एक भारतीय अर्थव्यवस्थेतील खुप मोठे आव्हान आहे 2011 च्या जनगणनेनुसार 121.02 कोटी लोकसंख्या भारतात असून जागतीक लोकसंख्केया 17.5 टक्के लोकसंख्या भारतात वास्तव करते जगाच्या क्षेत्रफाळाच्या तुलनेत केवळ 2.4 टक्के भूभाग भारताजवळ आहे त्यामुळे लोकसंख्या वाढ हे भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोरील अव्हान ठरत आहे

2) दारिद्र्य:

भारतीय अर्थव्यवस्थेत सापेक्ष दारिद्रय व निरपेक्ष दारिद्र्य या दोन संकल्पना आढळून येतात भारतातील दारिद्र्य मोजण्यासाठी वेळोवेळी दारिद्र्य मापन समित्या गठित केल्या. 1973–74 च्या कृतिदलाच्या मोजणीनुसार 54.9 टक्के लोक दारिद्र्यास जीवन जगत होते.1989 च्या लकडवाला समितीच्या रिपोर्टनुसार 1993–94 मध्ये 36 टक्के दारिद्र्याचे प्रमाण होते.राष्ट्रीय नमुना सर्वेक्षण संघटन (NSSO) नुसार 2004–05 मध्ये हे प्रमाण 27.5 टक्के होते.2009 च्या सुरेश तेंडुलकर समितीच्या रिपोर्टनुसार 2004–05 मध्ये 37.2 टक्के व 2011–12 च्या रिपोर्टनुसार 21.9 टक्के असल्याचे आढळून आले.2012 च्या रंगराजन समितीनुसार2001 ते 10 मध्ये 38.2 टक्के व 2011–12 मध्ये 29.5 टक्के असल्याचे दिसून येते.

3) बेरोजगारी :

भारतात ग्रामीण बेरोजगारी व शहरी बेरोजगारी असे दोन प्रकार पडतात. ग्रामीण बेरोजगारीत – हंगामी बेरोजगारी, छुपी बेरोजगारी व शहरी बेरोजगारीत – घर्षणात्मक बेरोजगारी, शैक्षणिक बेरोजगारी, संरचनात्मक बेरोजगारी, अर्ध बेरोजगारी, चक्रिय

6) भारत देशाच्या आंतरराष्ट्रीय रोखतेत जागतिकीरणानंतर वेगाने वाढ झाली.
7) भारतीय अर्थव्यवस्थेत जागतिकीकरणापूर्वीच असलेल्या समस्यांची तिव्रता वाढून जागतिकीरणानंतर त्या समस्या भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोरील आव्हान ठरत आहेत.

शिफारशी :

1) भारत देशाने नव्याने विकसीत होण्याच्या ग्रीन इकॉनॉमी व ब्लू इकॉनॉमीच्या माध्यमातून आर्थिक विकास साध्य करण्यासाठी जलद व व्यापक प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.
2) भारत देशात खाजगी क्षेत्राबरोबरच सार्वजनिक क्षेत्रात बचत व भांडवल निर्मीतीचे प्रमाणे वाढण्यासाठी प्रोत्साहन दिले पाहिजे.
3) भारतात जागतिकीकरणानंतर आयातीत वाढ झाल्यामळे व्यापारतोल प्रतिकूल होत आहे. तो अनुकुल करण्यासाठी निर्यातीस प्रोस्ताहन देणे गरजेचे आहे.
4) भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोरील आव्हाने कमी करण्यासाठी लोकसंख्या कमी करणे, लोकांना कौशल्य अधारीत शिक्षण देणे, लोकांचे नैतिक अधिष्ठान वाढवणे, राष्ट्रप्रेमाची भावना जागृत करणे कर बुडव्यांनादंड व शिक्षा करणे, इत्यादी उपययोजना करणे गरजेचे आहे.

संदर्भ:

1) Gaurav Datt & Ashwini Mahajan (2018)'Indian Economy', S. Chand and Company Limited, New Delhi.
2) Economic Survey opf India : 2016-17, 2017-18
3) Handbook of Indian Statistics : 2015
4) Misra S. K. & V. K. Puri (2017) 'Indian Economy'Himalaya Publishing House, Delhi.
5) www.rbi.in

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

TULJAPUR EST Jun 71

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ) | Special Issue No. 46 | ISSN 2349-638x

जागतिकीकरण व विपणन

प्रा. बालाजी कांतीलाल नगरे
(सहाय्यक प्राध्यापक)
रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय,उस्मानाबाद

प्रा. नेताजी बालाजी काळे
(सहाय्यक प्राध्यापक)
तुळजाभवानी महाविद्यालय, तुळजापूर

सारांश:—

आज जागतिकीकरणाचा मुद्दा एक व्यापक चर्चेचा विषय बनलेला आहे. ही संकल्पना मोठी विस्तारित आहे, याची कागदपत्रे जागतिकीकरणाच्या आर्थिक दृष्टिकोनावर केंद्रित आहेत. जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेने विपणनाच्या मिश्रणाशी संबंधित धोरणे आणि विपणन संशोधनाच्या विशिष्ट साधनांचा डिझाइन आणि वापर कसा प्रभावित केला आहे हे स्पष्ट केल आहे, शिवाय व्यावहारिक उदाहरणांच्या मालिकेचे यामध्ये विश्लेषण केले आहे.

प्रस्तावना:—

जागतिकीकरण हे ५००० वर्षापेक्षा जुने आहे. परंतु विशेषत: युएसएसआरच्या पतनानंतर ते जास्त गतीने वाढले होते. जागतिकीकरणाचा शब्द ६० व्या शतकात कुठेतरी दिसला, जेव्हा तो कॅनेडियन तज्ज्ञाने मास मिडिया मध्ये सुरू केला होता आणि १९६१ मध्ये प्रथम शब्दकोशात सादर केला गेला, तरी जागतिकीकरण करणे ही किया पहिल्यांदाच उल्लेख करण्यात आली आहे.१९४४ मध्ये मेरियम वेबस्टर डिक्शनरी पारित झाला असे मानले जाते. व्यवसायात जागतिकीकरणाच्या संदर्भात नवीन संधी वाढत्या बाजारपेठेतील संभाव्यतेचा संदर्भ घेत असतात, संभाव्य ग्राहकांची वाढती संख्या, गुंतवणीकीची संभाव्यता आणि संसाधनांची उपलब्धता वाढविते तर प्रतिस्पर्धी तीव्रतेच्या वाढीवर लक्ष केंद्रित करणे आणि व्यवसायाच्या वातावरणाचे अंदाज घ्यायला अडथळा वाढविणे ज्यामुळे त्यांची गुंतागुंत आणि गतिशिलता वाढते. विपणन अत्यंत गतिशील असल्याकारणाने ते जोरदार आहे.

विपणनामध्ये जागतिकीकरणाची संकल्पना एक दृष्टिकोन:—

व्याख्या:—

१. आर्थिक जागतिकीकरण म्हणजे जागतिक व्यापार आणि आर्थिक बाजारपेठ यांचे एकत्रीकरण होय.
२. जागतिकीकरणामुळे बाजार, राष्ट्र आणि सदस्य राज्यांचा अविभाज्य तंत्रज्ञानाचे एकत्रीकरण झाले आहे, आंतरराष्ट्रीय / प्रत्यक्ष परकीय गुंतवणीची संस्था जे राष्ट्रीय सीमा ओलांडून त्यांचे कार्य समायोजित करतात.
३. विपणनाच्या दृष्टीने जागतिकीकरणाचाय अर्थ म्हणजे ग्राहकोपयोगी वस्तूंसाठी आंतरराष्ट्रीय बाजारांचा उदय अशा प्रकारे त्यात उत्पादनांची विक्री समान प्रचार मोहिमांव्दारे पूर्णपणे भिन्न संस्कृतींच्या लोकांसाठी केली जाते.

जागतिकीकरण विरूध्द आंतरराष्ट्रीयकरण:—

विपणन किया कलांवर जागतिकीकरण प्रक्रियेचे परिणाम विश्लेषण करण्यापूर्वी जागतिकीकरणाची संकल्पना आणि आंतरराष्ट्रीयकरणाची संकल्पना यामधील फरक विशद केला पाहिजे. विग्रालीच्या मते जागतिकीकरणाचा अर्थ असा आहे की विपणन ही रणनिती विकसित करणारा एकच शब्द असला तरी विपणन हे सर्व उत्पादनांना सर्वत्र एकाच प्रकारे विपणन करणारे आहे. तसेच आंतरराष्ट्रीयकरणास एक प्रक्रिया म्हणून पारिभाषित केले आहे. ज्यामध्ये सांस्कृतिक, प्रादेशिक आणि राष्ट्रीय मतभेदांनुसार शब्दाच्या विविध भागासाठी विपणन धोरणांचा अवलंब करणे आवश्यक आहे. ज्याप्रमाणे विशिष्ट लक्ष्य बाजार आंतरराष्ट्रीयीकरण ही उत्पादने आणि सेवांचे नियोजन आणि अंमलबजावणी करण्याची प्रक्रिया आहे. जेणेकरून त्यांना विशिष्ट स्थानिक भाषा आणि संस्कृतींकडे सहजपणे स्विकारता येईल ज्याला स्थानिकीकरण असे म्हटले जाते. आंतरराष्ट्रीयकरण प्रक्रियेला कधीकधी अनुवाद किंवा स्थानिकीकरण सक्षमता देखील म्हणतात. याचाच अर्थ उत्पादनाच्या डिझाइनिंगचा अर्थ असा आहे की ते बऱ्याच देशांमध्ये वापरकर्त्याची आवश्यकता पूर्ण करेल किंवा असे करण्यास सहजतेने अनुकूल केले जावू शकते. आंतरराष्ट्रीयीकरण म्हणजे उदा. वेबसाइट डिझाइन करणे जेणेकरून जेव्हा ते इंग्रजीमधून स्पॅनिशमधून भाषांतरित केले जाते तेव्हा ते लेआउट अदयापही कार्य करते तरी स्पॅनिशमधील बऱ्याच शब्दांमध्ये अधिक वर्ण असतात आणि म्हणूनच इंग्रजीमध्ये पृष्ठावरील स्पॅनिशमध्ये अधिक जागा घेतात. आंतरराष्ट्रीय स्तरावर उत्पादित केलेली उत्पादने त्या देशाच्या वापरकर्त्यांच्या गरजा पूर्ण करण्यासाठी स्थानिकीकृत केलेली असणे आवश्यक आहे. उदा. अमेरिकेत वापरल्या जाणाऱ्या १४ नोव्हेंबरच्या तारखेपर्यंत आणि नोव्हेंबर १४ मध्ये इंग्लडमध्ये वारण्यासाठी आंतरराष्ट्रीय पातळीवरील सॉफ्टवेअर प्रोग्रामला स्थानिकीकरण करणे आवश्यक आहे. आंतरराष्ट्रीयकरणाने शैक्षणिक अभ्यासक्रमाचे डिझाइन देखील संदर्भित केले आहे. जे विद्यार्थ्यांना परदेशी देशांमध्ये आणि इतर संस्कृतीसह परस्परसंवादांमध्ये सक्षम करण्यास मदत करेल. विपणन किया कल्पनांच्या संदर्भात जागतिकीकरणाच्या तर्कानुसार कंपन्या जागतिक बाजारपेठेत एक बाजारपेठ म्हणून पाहतात कारण या बाजारपेठेच्या गरजा पूर्ण करण्यासाठी विपणन मिश्रच्या अनुकूलतेस मदत करते. भिन्न बाजार किंवा बाजार खंडातील फरक इतके मोठे नाहीत

जागतिकीकरणामध्ये विपणनाचे तोटे:—

१. केंद्रीकरणाच्या नकारात्मक प्रभावामुळे काही विपणन निर्णय मंद होवू शकतात.
२. स्थानिक बाजारपेठेतील संवेदनशीलता आणि कमी प्रतिसाद क्षमता कंपणीच्या मुख्यालयातील विपणन व्यवस्थापकांकडे असल्यामुळे स्थानिक बाजारपेठेत संपर्क कमी आहे.
३. काही मानकीकृत उत्पादनांचा विकास झाला तरी काही ग्राहकांच्या गरजा पूर्ण करीत नाहीत.
४. जागतिकीकरणाचे सर्वात मोठे नुकसान मानकीकरणाने झाले जे ग्राहकांच्या समाधानाची पातळी नकारात्मक पध्दतीने प्रभावीत करू शकते.

जागतिकीकरणाचा विपणनावर झालेला प्रभाव:—

१. **उत्पादन धोरण:**—जागतिक कंपन्यांच्या उत्पादन धोरणाच्या संदर्भात दोन मूलभूत प्रश्नांची उत्तरे दिली पाहिजेत बऱ्याच बाजारपेठत विकल्या जाणाऱ्या उत्पादनांच्या बाबतीत हे सुरवातीला ठरवले पाहिजे की जेथे उत्पादन केले जाईल तेथे ते निर्दिष्ट केले जावे. धोरणात्मक पर्याय म्हणून कंपणी अनेक उत्पादनांची उत्पादने करीत असते त्यामध्ये आपले कोणते उत्पादन कोणत्या बाजारपेठेत विकले जाईल याचा शोध घेवून कंपणी अशी बाजारपेठ निवडू शकते.
२. **किंमत धोरण:**—वर सांगितल्यानुसार प्रमाणीकरणामुळे खर्चाच्या दृष्टीने महत्त्वपूर्ण बचत होवू शकते. परंतु जागतिक बाजारपेठेच्या संदर्भात काम करणाऱ्या बहुतेक कंपन्यांना हे समजले आहे की विशिष्ट वातावरणाच्या गरजा पूर्ण करण्याच्या क्षमतेस यश मिळते. त्यामुळे बहुतेक कंपन्या वेगवेगळया देशांसाठी वेगवेगळी किंमत धोरणे राबविताना दिसून येतात.
३. **वितरण धोरण:**—भारतासारख्या देशाचा विचार करावयाचा झाल्यास वेगवेगळया ठिकाणी वेगवेगळी वितरण धोरण राबवावी लागतात. ही धोरणे ठरविताना ग्राहकांची मागणी आणि बाजारपेठेची विविधता याच्याआधारे ती ठरावावी लागतात. ग्रामीण भागासाठी वितरण व्यवस्था वेगळया पध्दतीची व शहरी भागासाठी वितरण व्यवस्था वेगळया प्रकारची निश्चित करावी लागते.
४. **विकयवृध्दी धोरण:**—स्थानिक ग्राहकांना आकर्षित करण्यासाठी व राष्ट्रीय ओळख आणि प्रतिबिंबित करण्यासाठी त्यांना प्रोत्साहन देण्यासाठी प्रचारात्मक धोरणे विकसित केली जाणे आवश्यक आहे. जसे की ग्राहकांना आकर्षित करण्यासाठी सचिन तेंडूलकर, अमिताभ बच्चन, आमिर खान यासारख्या भारतातील प्रसिध्द व्यक्तींनी वेगवेगळया प्रकारच्या जाहिराती करताना दिसून येतात उदा. ब्राझीलमधील कोटुंबिक मूल्ये आणि चीनमधील वैयक्तिक मूल्यांच्या तुलनेत समूह इच्छित असू शकेल. ज्यावेळी व्यवहार्य असेल त्यावेळी कमीत कमी समायोजनासह जागतिक जाहिराती आणि जाहिरात धोरणे विकसित केली जावू शकतात. जागतिक प्रचारात्मक तंत्रज्ञानातील बदल आणि नविन माध्यमांचा उदय (इंटरनेट, मोबाईल फोन आणि सोशल नेटवर्कींग साईटस) वाढल्या तंत्रज्ञानामुळे मोठया प्रमाणात ग्राहकांपर्यत पोचण्यास मदत होते. त्यामुळे विक्री जास्त वाढविण्यासाठी मोठया प्रमाणावर जाहिराती,प्रसिध्दी, एका वस्तूवर दुसरी वस्तू फ्री देणे,रोख रक्कमेवर सूट जाहिर करणे, ग्राहकांना घरपोच वस्तू देणे,वस्तूमध्ये जर काही बिघाड झाला असेल तर वस्तू बदलून किंवा दुरूस्त करूण देणे अशा वेगवेगळे प्रयत्न विक्री वाढविण्यासाठी सर्वच उत्पादक संघटना करताना दिसून येतात.

विपणन संशोधन प्रक्रियेवर जागतिकीकरणाचा प्रभाव:—

बाजारपेठेतील कामकाज आणखी वाढले असल्याने विपणन व्यवस्थापकांसाठी संशोधन अधिक उपयुक्त ठरते. याचे कारण असे आहे की, एक देशात किंवा प्रदेशात अनुभव आणि अंतदृष्टी असलेल्या व्यवस्थापकांना या कौशल्यांकडून वंचित केले जाते. अपरिचित आणि परकीय संदर्भात स्वत:ला शाधावे लागते. अभ्यासातून असे दिसून आले आहे की विपणन संशोधन अभाव किंवा अयशस्वी ही जागतिक विपणन कियाकलापांच्या अयशस्वी ठरविण्याचे एक महत्त्वपूर्ण घटक आहे त्यामुळे या कारणामुळे आम्ही अशा प्रकारच्या व्यवस्थापंकांची शिफारस करतो जे आंतरराष्ट्रीय ऑपरेशमध्ये गुंतले पाहिजेत. पारंपारिक विपणन संशोधन भूमिकेकडे दुर्लक्ष न करण्यामध्ये संभाव्य महाग अयशस्वी होण्यापासून ते टाळतात. पारंपारिक विपणन संशोधन परिपक्व बाजारांवर केंद्रित आहे (उदा.उत्तर अमेरिका, युरोप) आणि बऱ्याच अडथळयांमुळे (उदा.सांस्कृतिक, कायदेशिर, परिचालित) म्हणून विकसनशिल अर्थव्यवस्थेवर केंद्रित आहे. परंतु जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेने अर्थव्यवस्थेतील विपणन संशोधनाचा प्रसार वाढविला आहे. व्यवसाय जागतिकीकरणाच्या प्रकियेमुळे मार्केटिंग संशोधन प्रक्रियेच्या परिणामस्वरूप अनेक परिणाम झाले आहेत. अशा प्रकारे परदेशातील व्यावसायिक व्यावसायिक कंपन्यांच्या विस्तारामुळे नविन बाजारपेठ उघडून त्यामध्ये विपणन अभ्यास करणे आवश्यक आहे. विपणन संशोधनावर आणखी एक प्रभाव असल्याचे दिसून येते की त्या विपणनावर केलेल्या विविध प्रकारच्या अभ्यासांच्या बाबतीत विविध बाजारपेठेतील महत्त्वपूर्ण फरक आहे. वेगवेगळया बाजारपेठेतील किंवा बाजारातील विभागांवरील अभ्यासांच्या संदर्भात गट मूलाखत ही सर्वसाधारणपणे वापरल्या जाणाऱ्या गुणात्मक संशोधन तंत्रापैकी एक आहे. जागतिक दृष्टिकोनातून फोकस ग्रुपचा संघटना विशिष्ट गटाकडे लागू करणे आणि विशिष्ट लक्ष्याव्दारे निश्चित केलेल्या विशिष्ट बाबींचा विचार करते ज्यामध्ये हे लक्ष समूह वेगवेगळया ठिकाणी होतील. प्रत्येक देशात फोकस ग्रुपच्या वास्तविक संघटनेने दोन मूलभूत

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ) | Special Issue No. 46 | ISSN 2349-638x

जागतिकीकरण व भारतापुढील आव्हाने

प्रा. ए.एन. भोसले
राज्यशास्त्र विभाग
तुळजा भवानी महाविद्यालय,
तुळजापूर.जि. उस्मानाबाद

प्रस्तावना :-

स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतर भारताने समाजवादी, कल्याणकारी व तसेच भांडवलशाही व्यवस्थेचा पुरस्कार करुन सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रात व्यापक बदल घडवून आणण्याचा पंचवार्षिक योजनेच्या माध्यमातून प्रयत्न केला. थोडक्यात मिश्र अर्थव्यवस्थेचा पुरस्कार करुन सार्वजनिक व खाजगी उद्योग क्षेत्राला चालना दिली होती. परंतु १९९० च्या काळात जागतिक स्तरावर दोन महासत्ता अमेरिका व रशिया यांच्यातील शीतयुध्द संपले व तसेच रशियाने आर्थिक क्षेत्रात 'नविन आर्थिक धोरण' व जागतिकीकरणाच्या संकल्पनेचा पुरस्कार केला. या कालखंडात आंतरराष्ट्रीय पातळीवर जागतिकीकरण व त्याला जोडून उदारिकरण व खाजगीकरणाच्या संकल्पनेचीही चर्चा होऊ लागली व संकल्पनेचा विचाराचा परिणाम जगातील बहुतांश राष्ट्रांवर झाला. विशेषत:, विकसित, अविकसित, विकसनशिल, गरिब हे राष्ट्रेही या संकल्पनेच्या प्रक्रियेत आली.

भारतही याला अपवाद राहिलेला नाही. १९९१ ला तत्कालीन पंतप्रधान पी.व्ही. नरसिंहराव सत्तेवर होते, 'नविन आर्थिक धोरण' चा पुरस्कार करुन जागतिकीकरणाची संकल्पना मान्य केली व देशाची अर्थव्यवस्था जागतिक अर्थव्यस्थेशी जोडली. प्रामुख्याने जागतिकीकरणाची संकल्पना ही राष्ट्रा-राष्ट्राची अर्थव्यवस्था परस्परांशी जोडण्याचे कार्य करते. यामुळे गरिब व श्रीमंत राष्ट्राची अर्थव्यवस्था परस्परांशी जोडली गेली. जागतिकरणाची संकल्पना राष्ट्राच्या विकासासाठी महत्वपुर्ण असली तरी या संकल्पनेमुळे काही सामाजिक प्रश्न ही निर्माण झालेले आहेत. प्रस्तुत शोध निबंधात जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेत भारतात सामाजिक क्षेत्रात विषमता, बेरोजगारी, आरोग्य शिक्षण व पायाभूत क्षेत्रातील विकासाबाबत जे प्रश्न किंवा आव्हाने निर्माण झालेली आहेत, त्यावर प्रकाश टाकण्याचा प्रयत्न केलेला आहे. तत्पुर्वी जागतिकीकरणाचा अर्थ त्याचे स्वरुप व भारतापुढील आव्हाने या अनुषंगाने त्याचे विवेचन करण्यात आलेले आहे.

जागतिकीकरणाचा अर्थ :-

जागतिकीकरणाच्या संकल्पनेचा अर्थ स्पष्ट करण्यासाठी अनेक विचारवंतांनी जागतिकीकरणाच्या व्याख्या केलेल्या आहेत त्यातील काही विचारवंतांच्या व्याख्या पुढीलप्रमाणे पाहता येतील.

१) रॉबर्टसनच्या मते 'जे स्थानिक आहे ते जागतिक आहे आणि जे जागतिक आहे ते स्थानिक आहे. याला विशिष्टतेचे सार्वत्रिकरण आणि सार्वत्रिकतेचे विशिष्टीकरण म्हणूनही ओळखले जाते'.

२) एडवर्ड हार्मनच्या 'मते जागतिकीकरण ही सीमापार उत्पादने, भांडवल, सेवा, आर्थिक क्रिया – प्रक्रियांच्या वाढत्या प्रभावाला लक्ष करणारी प्रक्रिया आहे'.

३) स्मिथ या विचारवंतांच्या मते ' जागतिकीकरण हा आंतरराष्ट्रीवाद आणि सर्वांसाठी स्वातंत्र्य या मुल्याचा समावेश असणारी मुक्त व्यापार आणि अर्थव्यवस्थेचे फायदे सर्वांना मिळवून देणारी सर्व समावेशक प्रक्रिया आहे.

वरील विचारवंतानी जागतिकीकरणाच्या केलेल्या व्याख्येवरून असे स्पष्ट होते कि, ही संकल्पना जागतिक स्तरावर मुक्त अर्थव्यवस्था मुक्तबाजार व मुक्त व्यापार या क्षेत्रात स्वातंत्र्याला महत्व देणारी आहे.

जागतिकीकरणाचे स्वरुप :-

१) जागतिकीकरणाची संकल्पना ही आंतरराष्ट्रीय पातळीवर क्रिया प्रक्रियाना महत्व देते :-

शीतयुध्द संपल्यावर आंतरराष्ट्रीय पातळीवर राष्ट्रा-राष्ट्रांत परस्पर सहकार्य वाढल्याचे दिसते. माहिती तंत्रज्ञानातील वाढ, विश्व व्यापार, संघटनाची निर्मिती यामुळे जागतिकीकरणाला चालना मिळाली. या संकल्पनेचा प्रवास हा राजकीय, आर्थिक व सांस्कृतिक विश्वरचना निर्माण करण्याचा आहे. त्यामुळे जग परस्पराच्या जवळ येताना दिसते.

२) मुक्त व्यापाराचा पुरस्कार :-

मुक्त विश्वरचना, मुक्त बाजारपेठ व मुक्त व्यापार क्षेत्र याला महत्व देणारी लोकातील वाढत्या सामाजिक, आर्थिक, राजकीय व सांस्कृतिक संबंधातून ही व्यवस्था भक्कम होईल, यात स्वातंत्र्याला महत्व दिलेले आहे.

३) बिगर शासकिय संघटना :-

या बिगर शासकिय संघटना ह्या मानवी अधिकारांचे रक्षण, निःशस्त्रीकरण, बालकामगार, महिलाचे प्रश्न, युध्द कैदयाचे प्रश्न इत्यादी क्षेत्रात कार्यरत झाल्या. साधरणत: पाच हजाराहून अधिक संघटना आंतरराष्ट्रीय पातळीवर कार्य करताना दिसतात उदा. आंतरराष्ट्रीय रेड क्रॉस संघटना, ॲम्नेस्टी इंटरनॅशनल इ.

४) बहुराष्ट्रीय कंपन्याची भूमिका :-

जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेत बहुराष्ट्रीय कंपन्याची कामगिरी मोलाची ठरली आहे. ह्या संघटना आर्थिक व राजकीय क्षेत्रावर प्रभाव टाकू शकतात, या कंपन्याची व्याप्ती मोठी आहे. भांडवलशाहीचा विकास व प्रसार या कंपन्यामुळेच शक्य झाला.

५) भ्रष्टाचार :-

जागतिकीकरण उदारिकरण व खाजगी करणाच्या प्रक्रियेत भ्रष्टाचाराची समस्या सार्वजनिक व खाजगी क्षेत्रात फोफावल्याचे दिसते, प्रशासन व्यवस्थेला लागलेली ही किड अत्यंत गंभीर आहे, यात सर्वसामान्य माणूस आज भरडला जात आहे.

६) बहुराष्ट्रीय कंपन्याचा वाढता प्रभाव :-

रोजगार निर्मिती, वस्तू व जागतिकिकरणाच्या प्रवाहात आंतरराष्ट्रीय पातळीवर बहूराष्ट्रीय कंपन्याचा प्रभाव वाढलेला दिसतो. आंतरराष्ट्रीय सेवा देण्याचे कार्य बहूराष्ट्रीय कंपन्या करतात. आज ५००० हजाराहून जास्त बहूराष्ट्रीय कंपन्या विविध रांष्ट्रात कार्यरत असलेल्या दिसतात. या कंपन्या व्यापार, उद्योगावरोवरच राज्याच्या सार्वभौमत्त्वावर व तसेच अंतर्गत व बाह्य धोरणांवर आपला प्रभाव टाकून आपणास हवे असणारे धोरणे राबविण्यास शासनाला भाग पाडतात. त्यामुळे सार्वभौमसत्त्येवर या कंपन्याचे नियंत्रण येते.

७) पायाभूत सुविधाचा अभाव :-

बहुराष्ट्रीय कंपन्या ह्या राष्ट्रांना पायाभूत क्षेत्रात विविध सेवा व सुविधा देण्याचे मान्य करतात. उदा : वीज, पिण्याचे शुध्द पाणी, रस्ते, दळणवळण, रोजगार इत्यादी पण वास्तविक या कंपन्या पायाभूत सेवा यावर गुंतवणूक करताना दिसत नाहीत. फक्त उत्पादन व नफा प्राप्त करण्याला महत्त्व देतात. परिणामी पायाभूत सुविधीच्या बाबत देशाचा विकास झालेला दिसत नाही.

निष्कर्ष :-

१) आपल्या देशात विविध उपेक्षित समाजघटकांचा अजूनही म्हणावा तसा विकास झालेला नाही. समाजात अजूनही विषमता, दारिद्र्य, गरिबी आहे, त्यामुळे सामाजिक समता व न्याय प्रस्तावित करण्यासाठी शासनाने या समुह घटकाकडे जागतिकीकरणाच्या वातावरणातही विशेष लक्ष देण्याची नितांत गरज आहे.

२) उपेक्षित व मागास घटकांचा विकास व्हावा म्हणन शासनाने आरक्षणाचे धोरण मान्य केले पण खाजगीकरणामुळे आरक्षणाला अर्थ राहत नाही त्यासाठी शासनाने खाजगी क्षेत्रातही आरक्षाचे धोरण राबविले पाहीजे.

३) संविधानात मुलभूत अधिकार व मार्गदर्शक तत्वात, शिक्षणाला व नागरिकांच्या आरोग्याला महत्त्व दिले आहे, म्हणून शासनाने जागतिकीकरणाच्यया प्रक्रियेत ही नागरिकांच्या आरोग्याकडे लक्ष देण्याची आवश्यकता आहे.

संदर्भ सुची :-

१) पंडित नलिनी (२००९) जागतिकीकरण आणि भारत – लोकवाड़मय
२) सी.प.खेर, जागतिकीकरण : समस्या, आशय आणि अनुभव, दिलीपराज प्रकाशन, पुणे.
३) मधुसुदन दत्तात्रय साठे, जागतिक अर्थव्यवस्था - मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे.
४) डॉ. पद्माकर दुभासी, जागतिकीकरण, उदारीकरण आणि अर्थव्यवस्था, पुणे विद्याप्रकाशन, २००६.
५) शैलद्र देवळाणकर, आंतरराष्ट्रीय संबंध, विद्या बुक्स पब्लिशर्स, औरंगपुरा औरंगाबाद.

ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

जागतिकीकरणानंतर भारतातील सामाजिक समस्या

श्री दिपक रामराव निकाळजे
ग्रंथपाल
तुळजाभवानी महाविद्यालय,तुळजापूर
जि. उस्मानाबाद

प्रस्तावना :

जागतिकीकरण हि एक प्रक्रिया आहे.एक आर्थिक प्रक्रिया म्हणून जागतिकीकरणाची जरी सुरुवात झाली असली तरी सामाजिक राजकीय सांस्कृतिकक्षेत्रामध्ये हस्तक्षेप करणारी हि प्रक्रिया आहे असे आतासिध्द झाले आहे. जीवघेणी स्पर्धा मुक्त बाजारपेठ, पराकोटीचा व्यक्ती, स्वातत्र्यावाद, उपभोगवादी संस्कृती बाजार प्रेरित व्यवहार वस्तू व माहितीची देवाणघेवाण हि जागतिकीकरणाची वैशिष्टये आहेत आणि यासंस्थानी जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेलागती प्राप्त करुन दिली आहे 1991 पासून भारतात नवीन आर्थिक धोरण स्वीकारले . वास्तवात देशातील गरीब माणसाचा चेहरा समोर ठेवून नवीन आर्थिक धोरणाचा स्वीकार केला आणि मूलभूत पैलू म्हणजे जागतिकीकरण होय. जागतिकीकरणाने भारतामध्ये मोठय प्रमाणात आमूलाग्र बदलघडवून आणले आहेत जागतिकीकरणाने भारतातील सामाजिक, सांस्कृतिक, राजकी, आर्थिक व व्यावसायिक अशा सर्व घटकावर परिणाम केला आहे. त्यामूळे भारतीय समाजव्यवस्थेत संस्थेत बदल झाल्याचे समोर आले आहेज जागतिकीरणामुळे भारतामध्ये काही सामाजिक समस्या हि निर्माण झाल्या आहेत. जगातिकीकरणानंतर उदारीकरण खाजगीगरणाला आधिक चालना मिहाली याचाही परिणाम म्हणजे समाजात अनेक सामाजिक समस्या निमार्ण झाल्या.

उद्दिष्टे :-

1. जागतिकीकरणानंतरच्या भारतातील सामाजिक समस्याचा शोध घेणे
2. भारतातील सामाजिक समस्या निर्माण होण्यामागील कारणाचा शोध घेणे

संशोधन पध्दती :-

प्रस्तूत शोधनिबंध तयारकरण्यासाठी दुय्यम साधनसामग्रीचा उपयोग करण्यात आला आहे. त्यात संदर्भग्रंथ मासिके, दैनिक पत्रातील अग्रलेख व इंटरनेट इ साधनांचा वापर करण्यात आला आहे.

जागतिकीकरण म्हणजे काय?

जगातील सर्व देशासाठी एक बाजारपेठ उपलब्धकरुनदेणारी व वस्तू व सेवांची देवाणघेवाण करुन घेणारी प्रक्रिया म्हणजे जागतिकीकरण होय.

सामाजिक समस्या :-

1. **दुर्बल घटकावर परिणाम :-**

जागतिकीकरणाचे अनेक परिणाम समाजाला दिसून येत आहेत.लोकामध्ये एक प्रकारची अनिश्चितता व असुरक्षितता निर्माण झाली आहे.याचा परिणाम म्हणून समाजात धर्माधता, कट्टरजातीवाद प्रातवद वाढीस लागाला आहे. समाजात जेव्हा मुलतत्ववाद, जातीवाद, प्रांतवाद वाढीस लागाला आहे. तेव्हा त्याचा परिणाम समाजातील दुर्बल घटकावर होतो. बहुराष्ट्रीय कंपन्यांनी जनक अभियांत्रिकी पध्दतीने तयार केलेल्या बी-बीयाण्याची कीटकनाशकांनी बाजारपेठा ओसंडत आहेत. शेतक-यांनी कष्टाने विकासित केलेली तंत्रं पद्धती चुकीची ठरवली जात आहेत. खेडयातील लहान शरातील बाजरपेठा उद्वस्त होत आहेत.

2. **बेरोजगार :-**

जागतिकीकरणामुळे अनेक रोजगार उपलब्ध होतील असा सकारात्मक दृष्टीकोन होता. पणत्या उलट जागकीकरणामुळे जास्त प्रमाणात भारतात बेरोजगाराचे प्रमाण वाढले आहे. कारण जागतिकरणामुळे औद्योगिकक्षेत्रात माणसाऐवजी आधिक उत्पादन कमी वेळेत मिळवण्यासाठी यंत्राचा उपयोग केला जात आहे. म्हणजेच मानवी श्रमाची जागा आज यंत्राणी घेतली आहे. जगातिकीकरणामुळे संघटीत क्षेत्रातील रोजगार संधी वाढल्या तर नाहीतच उलट कामगार कपात वाढीस लागली आहे.

3. **घटस्फोटाचे वाढते प्रमाण.**

भारतात विवाह हा सोळा धार्मिक संस्कारपैकी एक धार्मिक संस्कार मानला जातो आहे.जागातिकरणामुळे भारतीय संस्कृतीवर पाश्चिमात्य संस्कृतीचा प्रभाव पडलेला दिसून येत आहे. आज भारतीय समाजात व्यक्तीवाद, भैतिकवाद, स्वार्थीवृत्ती जास्त प्रमाणात आढळून येत आहे. तसेच जातिकीकरणामुळे पाश्चिमात्य स्त्रियांच्या राहणीमानाचा, स्वांतंत्र्याचा, विचारांचा भारतीय

I

2018 -19

ISSN 2349-638x
Impact Factor 5.707

14

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL

Email id : aiirjpramod@gmail.com

www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 46

Executive Editor
Dr. S.M. Maner
Principal
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor

Dr. T. L. Barbole
Head, Dept. of Economics

Dr. B. W. Gund
Head, Dept. of Pol. Science

Prof. N. B. Kale
Head, Dept. of Commerce

Prof. B. J. Kukade
Head, Dept. of Sociology

Chief Editor
Prof. Pramod Tandale

Impact Factor-5.707 ISSN-2349-638x

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

February- 2019

Executive Editor

Dr. S. M. Maner

Principal

Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur,

Dist. Osmanabad (M. S.) India

Chief Editor

Pramod P. Tandale

Co-Editor

Dr. T. L. Barbole Head, Dept. of Economics

Prof. N. B.Kale Head, Dept. of Commerce

Dr. B. W.Gund Head, Dept. of Pol-Sci.

Prof. B. J. Kukade Head, Dept. of Sociology.

Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.) India

Impact Factor

SJIF 5.707

For details Visit to:

www.aiirjournal.com

Sr.No.	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
	COMMERCE		
1.	Bhagyashree Sanjay Bhave	Housing Finance in India	1
2.	Dr. S.G. Birajdar Dr. R. V. Varshetti	Indian Banking Sector After Globalization	5
3.	Chetan Prabhakar Khandeakar	Life insurance Sector in India Post Globalisation: A Journey from Restriction to Regulation	8
4.	Dr. Nagnath M. Adate	Recent Trends in Electronic Banking After Globalisation	14
5.	Dr.Deepak Khati Noorullah Abbas Jari ShuaibAzeem Ansari	Globalisation And Industrial Devlopment: Implications For Developing Countries And International Corporation	16
6.	Dr. Jyoti Popat Magar	Globalization And Its Effects On Business Strategies	18
7.	Dr.SudhirVaijanathrao Panchagalle Dr. Ravindra Dadarao Gaikwad	Micro and Small Enterprises in India after Globalization	22
8.	Miss. Priti R. Ghate Shital B. Aadekar	The Role Of Agro-Entrepreneurs in Employment Generation After Globalization (With a special reference to Latur district)	25
9.	Dr. S. K. Khillare Prof. N.B.Kale	The Impact of Globalization on banking service Quality in India	27
10.	Prof. N. B. Kale	Growth of Invested Capital in Industry Sectors in India	30
11.	Miss. Poojangi G. Londhe Miss. Supriya V. Hatkar	Benefits Of E-Commerce After Globalization	33
12.	Dr. Sudhir V. Mane Mr. Santosh Abasaheb Johari	Entrepreneurship Development After Globalization In India	36
13.	Mr. Santosh Maruti Arjunwade	A Study of Changes in Banking Sector after Globalisation	40
14.	Mr. Meghraj B Barbole Dr. Rupesh Ajinath Pawar	Growth Of Most Preferred Ict Based Banking Services in Scheduled Commercial Banks In India	43
15.	Mrs. Minakshee Subhas Andhre	E-Banking Service And Profitability Of Indian Scheduled Commercial Banks	48
16.	Mr. Chandrankant K. Nikwadi Mr. Nadim P. Shaikh	Important Of E-Banking in India After Globalization	52
17.	Mr. Narayan A. Sakate	E-Commerce Past And Post Globalization	54
18.	Neha Bhushan Tambe	Telecome Industry after Globalization	57

Sr.No.	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
		COMMERCE	
34.	प्रा. आशपाक शमशोद्दीन आतार	जागतिकीकरणानंतर वाणिज्याचे बदलते प्रभाव	98
35.	प्रा.डॉ.शिवांगी संजयराव दहिटणकर	जागतीकीकरण आणि भारतीय शेती व्यवसाय	101
36.	प्रा.डॉ. बालाजी शिवाजी राजोळ	जागतिकरणाचे भारतीय उद्योगावरील परिणाम	103
37.	प्रा. डॉ. साळुंके डी. जी. श्री. प्रा. मुळे पी. के	भारताच्या परकीय धोरणावर जागतिकीकरणाचा प्रभाव	106
		ECONOMICS	
38.	प्रा. डॉ.अनंत नरवडे	जागतिकीकरण आणि भारतीय अर्थव्यवस्था	110
39.	डॉ.नरसिंग भानुदास देशमुख	जागतीक पातळीवर भारतीय वस्त्रोद्योगाची सद्यस्थिती	114
40.	डॉ. प्रमोद बालाजीराव बेरळीकर प्रा. प्रमोद केशवराव मुळे	जागतिकीकरणाचे भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम	116
41.	श्रीमंत तुकाराम कावळे प्रा. डॉ. बी.ए. पाटील	भारतीय अर्थव्यवस्थेत सार्वजनिक क्षेत्रातील उद्योगांची भुमिका	119
42.	प्रा. भैरवनाथ बब्रुवान मोटे	भारतीय अर्थव्यवस्थेवर जागतिकरणाचे परिणाम	124
43.	श्री दत्ता बलभिमराव पवार डॉ. टी. एल. बारबोले	जागतिकीकरणानंतर कृषीक्षेत्र	127
44.	जगदीश अनंतराव करंडे	जागतिकीकरणानंतर कृषी क्षेत्र : एक चिंतन	129
45.	डॉ. प्रकाश मांगीलाल राठोड	जागतिकीकरणाच्या महाप्रलयात भरकटल्या जाणाऱ्या नौकर वर्गाची व्यथा	134
46.	श्रीमती मीनाक्षी प्रल्हादराव शिंदे	जागतिकीकरणाचा कृषी क्षेत्रावरील परिणाम	136
47.	डॉ. प्रमोद बालाजीराव बेरळीकर डॉ. तुकाराम लिंबाजी बारबोले	जागतिकीकरणापूर्वीचे व जागतिकीकरणानंतरचे भारतीय अर्थव्यवस्थेचे विविध विकास दर	141
48.	प्रा. डॉ. शेळके	जागतिकीकरणानंतर औदयोगिक क्षेत्र.	144
49.	प्रा. डॉ. अनिल दि. वाडकर	जागतिकीकरणानंतरची भारतीय अर्थव्यवस्था:एक आर्थिक अभ्यास	146
50.	प्रा.डॉ. ए.बी. माळशिखरे	जागतिकीकरणाची भारतीय कृषी क्षेत्रासमोरील आव्हाने	149
51.	प्रा.डॉ. बी के बांगर	जागतिकीकरण आणि सध्याची भारतीय अर्थव्यवस्था	151
52.	डॉ. कार्तिक पोळ	जागतिकीकरणाचा भारतीय शेतीवर झालेला परिणाम	153

SOCIOLOGY

74.	प्रा.सौ.एस.एस.कोरेकर	जागतिकीकरणानंतर माहिला चळवळ	215
75.	प्रा शितल लहू बोडके	जागतिकीकरणानंतर लिंगभेदाची समस्या	217
76.	प्रा.सुंदर एम.कांबळे(बल्लाळ)	जागतिकीकरणानंतर महिलांची चळवळ	220
77.	प्रा. माधव उत्तमराव उगीले	जागतिकीकरणानंतर कुटुंब व विवाहसंस्थेतील परिवर्तन	223
78.	प्रा. अशोक रामचंद्र गोरे	जागतिकीकरण आणि स्त्रिया	225
79.	प्रा. शरद शंकर गायवाड	जागतिकीकरणानंतर भारतीय समाजजीवनावर झालेलेले परिणाम	227
80.	डॉ. विठ्ठल कांबळे	जागतिकीकरणानंतरच्या भारतातील सामाजिक समस्या	229
81.	प्रा.बळीराम पवार	लिंगविषमता आणि भारतीय समाजातील स्त्री	231
82.	प्रा. अनिता एस. गायकवाड	जागतिकीकरणानंतर लिंगभेदाची समस्या	233
83.	प्रा.सौ.माधुरी गोविंद गिरी	जागतिकीकरणानंतर भारतातील सामाजिक समस्या	235
84.	राजेश जोंधळे	जागतीकिकरणानंतरभारतातील सामाजिक समस्या	237
85.	प्रा.सौ.संगिता पाटील	जागतिकीकरणानंतर लिंग भेदाची समस्या	239
86.	प्रा.डी.एम.शिंदे	जागतिकीकरणानंतर सामाजिक संस्थातील बदल-विशेष संदर्भ जातिसंस्था	241
87.	प्रा. डॉ. श्रीकांत गायकवाड	जागतिकीकरणानंतर विवाह संस्थेतील बदल : समलैंगिकता	243
88.	प्रा.डी. डी. गायकवाड	जागतिकीकरणानंतर सामाजिक संस्थातील बदल 'विशेष संदर्भ कुटूंब संस्था'	246
89.	आंकुर रावसाहेब देशमुख	जागतिकीकरणानंतर सामाजिक संस्थातील बदल 'विशेष संदर्भ कुटूंब संस्था'	248

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR EST. 1971

The Impact of Globalization on banking service Quality in India

Dr. S. K. Khillare
Principal,
Swami Ramanand Tirth Mahavidyalaya, Ambejogai

Prof. N.B.Kale
Asst. Prof & HOD of Dept of Commerce,
Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur

Introduction

Globalization refers to the process in which people, ideas and goods spread all over the worldwide, spurring more interaction and integration between the world's cultures, governments and economy. The primary aims of the globalization are homogenization of political and socio-economy across boundaries. Globalization as a term came to importance in the 1980s. But many consider this process pretty new phenomenon; globalization has been occurrence for millennia. Now, in 21st century, globalization are incising faster due to information technology, telecommunication and technology.

Now due to the globalization, banking sectors services are becoming a globalized. The primary aim of banking services is to provide better services to ultimate customers because of privatization in banking sectors. According to RBI study report 2018, in private sector banks in India are 21 banks which have 28805 branches in Rural, Semi-Urban, Urban and Metro-Politan area. As a same manner, 21 Public sector banks are working in banking business with 90821 branches and foreign banks are 45 banks with 286 branches. This report shows that, today's banking service quality enhanced with global.

Most of the banks are converting his business into electronic banking which is helpful to time saving and fastest money transferring his final users. There are various type of services provided through Electronic banks. Its includes, Telephone banking, mobile banking, electronic funds transfer, ATM and debit card services, SMS banking, Point of sales banking, internet banking, electronic alert and e-statements etc. it is happened due to global technological advancements which is changing the nature of the quality of products in banking sector.

Research Questions

This research paper, gives answers of following questions:

1. Did the globalization create opportunity to foreign banks as well as private banks in India?
2. Did the globalization change the nature of the quality of services in the banking sector in India?
3. What is the effect of globalization on banking sectors in India?

Research Methodology

Research Area:-

The present study deals with the impact of globalization of banking service quality in India. The principal objective of the present study is to study the impact of globalization on banking service quality in Osmanabad district.

Sample selection:-

For the sampling of research the multistage and convenient sampling methods were used. The samples for study were selected from Banks and Account Holders.

1. Samples Selected from Banks

From Osmanabad district, 50 banks/ branches were selected among public and private sectors banks.

2. Samples Selected from Account holders/bank customers

For the study purpose 100 samples of Account holders/bank customers were selected from multistage and convenient sampling method in Osmanabad district.

Collection of Data

In this study, the researcher collects the primary data as well as secondary data. The primary data were collected through questionnaires and Interview method. Primary data was collected through questionnaires from 100 bank customers and 50 personal interviews were taken from experts working in banking sectors in Osmanabad district. The secondary data were collected though books, magazines, previous research, RBI Reports, internet etc.

Foreign banks operation in India

Foreign banks have moved to developing countries lick that India, due to push factors like low cost, low profits and online services all over the world. According to Grubels theory of internationalization suggested that the main advantages of foreign bank entry is the information and personal contacts between banks at low cost vie internet and telecommunication. In 2000, Buch also suggested that, foreign banks are moved due to globalization which removal of trade barriers.

Results

A total of 50 banking institutions including 30 private sector banks, 18 public sector banks and 5 foreign banks And out of 100 account holders/customers of banks, 40 private sector banks, 40 public sector banks and 20 foreign banks were use to obtain data. The banks were sampled on the basis that they have at least on form of global IT innovation delivery channel like that online banking, mobile banking, internet banking and other telecommunication technology were used. 50 interviews of banks and 100 questionnaires were used as research result obtain.

An analysis of the types of electronic delivery channels are utilized by banks in India in presented in table 02 & 03 above. The data was basically from personal interviews with bank executives, bank customers and IT executives in the respective banks. The most of the bank customer used ATMs and Branch networks for withdrawing money, cash transfer from one to another accounts, checking account balance and printing mini statements.

The 100 percent of bank customers agreed that, they used ATM as most popular services of banks. It was resulted that most of the customers frequently used the ATMs for bank transactions such as printing mini statements, checking account balance, cash transfers etc. They were visit ATMs center more than four times in a month. This indicates the significance of globalization of the banking sector.

Table 02; Responses of bank customers about Banking services

Bank Services	Private sectors banks	Public sectors banks	Foreign banks
ATMs Services	100%	100%	100%
Online Banking	49%	36%	57%
Banking Networking	89%	99%	100%
Mobile banking	47%	39%	54

Table 02, indicates that, most of the foreign banks provides IT based services to his end customers as follows Private sectors and public sectors banks respectably. It shows that, most of the banks provide IT based services to his customers because of Globalization.

Banks services after and before globalization

The research indicates that, the bank services after and before globalization in India. It was indicates that, before globalization most of the banks were providing traditional services on the dour stop of the banks. It was not more qualitative services as camper to today's services. Now, most of the banks provide qualitative services to his end customers.

Above 75% of the banks experts and IT innovations agreed that, today's banks services quality are enhanced as camper to traditional banking. It was found that IT technology was helpful to improving the quality of products and services of banks in India. It is helpful to reducing cost transaction and time saving. The most of the respondent agreed that IT innovation has made due to globalization and it positively impact on the growth of banks sectors.

Conclusion

Globalization refers to the process in which people, ideas and goods spread all over the worldwide, spurring more interaction and integration between the world's cultures, governments and economy. Now due to the globalization, banking sectors services are becoming a globalized. According to RBI study report 2018, in private sector banks in India are 21 banks which have 28805 branches in Rural, Semi-Urban, Urban and Metro-Politan area. As a same manner, 21 Public sector banks are working in banking business with 90821 branches and foreign banks are 45 banks with 286 branches. This report shows that, today's banking service quality enhanced with global. Research indicates that, the service quality of banks sectors are affected due to globalizations.

Bibliography

1. Banking sectors in India- Dr. S. R. Gupta
2. Indian Globalization- S. R. DAS
3. Innovation in banking sectors- Dr. K. T. Khurdip
4. Research methodology- Dr. P. R. Prasad
5. Impact of globalization of banking services quality- Kosmas Njanike
6. Globalization and Indian banking sectors- T. V. Shrivvasta
7. www.rbi.in.ac.
8. www.mahagovn.in.ac.
9. RBI Reports june 2018

Table one shows that, the top five states in number of factories. It shows that Tamil Nada, Maharashtra and Punjab are the first, second and third places respectively.

Chart 01: State wise no. of Factories Unit

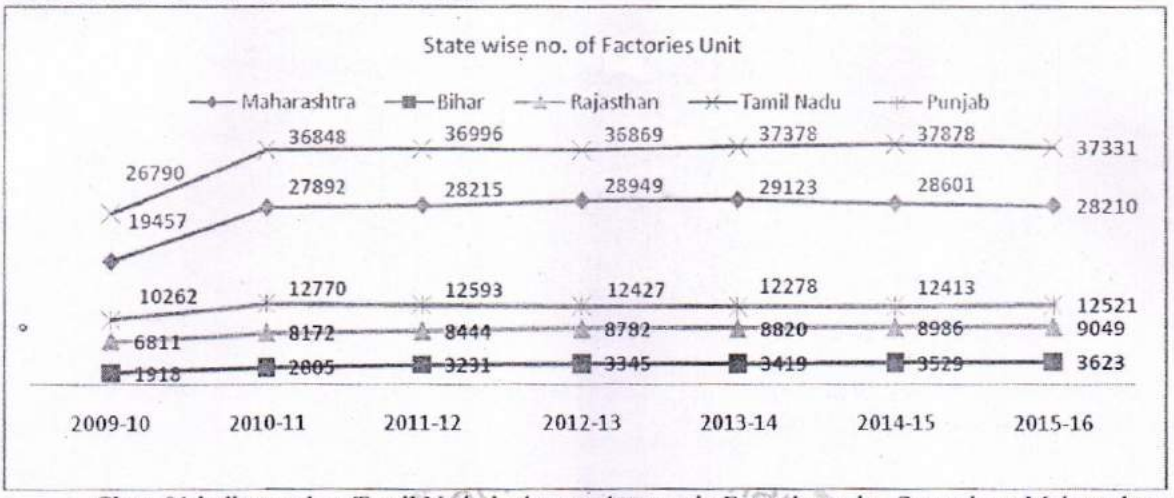
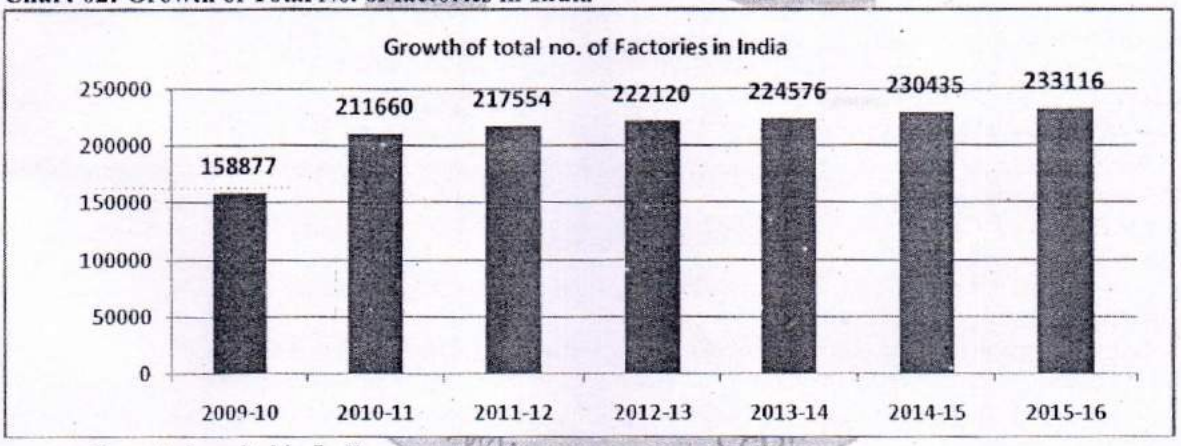


Chart 01 indicates that, Tamil Nadu is the number one in Factories units. Second are Maharashtra and third place of Punjab.

- **Growth of Total Number of Factories in India**

Chart 02 indicates that, the total number of factories in India is 1498338 from 2009 to 2016. In 2009-10, total number of factories was 158877 and 233116 in 2015-16. It shows that, from last five years total number of factories in India growing rapidly.

Chart 02: Growth of Total No. of factories in India



- **Invested capital in India**

India is the 8th numbers in capital invested in industrial sectors. It includes, Manufacturing, Engineering, agricultural industry, petroleum product and chemicals, Pharmaceuticals, Gems and jewellary and textile etc. table 02 indicates that, Tamil Nadu is the first place in Capital Invested, followed that Maharashtra, Rajasthan, Punjab and Bihar respectively.

Table 02: State wise Invested Capital in India

Year	Maharashtra	Bihar	Rajasthan	Tamil Nadu	Punjab	All state total
2009-10	2930990.9	75574.4	548477.1	1975193.4	484294.9	19330539.5
2010-11	3547372.5	88218.4	734146.8	2325644.2	639673.5	23935800.2
2011-12	4123780.2	121966.2	791188.5	2596795.2	678449.7	28411473.3
2012-13	4972327.2	118728.4	883524.7	2922600.6	706184.9	31441121.5
2013-14	4871666.3	139174.6	1028781.6	3805336.7	767882.9	33845553.5
2014-15	4979801.9	158966.0	1082385.1	3291681.4	834877.9	35139643.1
2015-16	5925044.7	150784.7	1187914.1	3500178.4	829047.2	39256930.0

(Source: RBI Survey Report 2018)

Chart 03 indicates that, Tamil Nadu and Maharashtra are the frist and second place in capital investment in India.

A Study Of Globalization And And Export Of India

Mrs. Aruna Gangaram Pote
Department of Commerce
Tuljabhavani Mahavidyalaya Tuljapur

Introduction-

Globaliztion is the process of integrating various economies of the world without creating any hindrances.in the free flow goods and services, thechnology, capital and even labour or human capital. ``claims of globalization supporters have been tested by many researchers in different countries .strong criticism o globalization was awaeded by Nobel laureate in 2001 in economics and the chief economist of the World Bank Jiggler has published his book Globalization and its subject.The world commission mentioned in clear word The current path of globalization has to be changed, this will benefit a lot of people.

Attempts have been made to study globalization and trade in the research paper presented.

Hypothesis

2.1 Globalization has adversely affected Indian trade.

2.2During the time of globalization , Indias trade is less than any other nations.

Objective of the study-

2.1 To understanding the meaning of the concept of the world.

2.2 To study the status of Indias trade during the time of globalization.

Research methodology

Data collection

Secondary equipment is used for the research paper. This includes, bibliographies government reports, newspaper, and websites related primarily to the subject.

Geographical limit

In the research paper presented only the condition of Indian Economy is studied.

1) Concept of Globalization

"world with the increasing proporation of goods and services and the rapid growth of international capital flow and diversification".- IMF

2) Trade

One of the principal aims of is to expand trade in goods and service. The world Commission in this context states. This trade expansion did not occur uniformally across all countries, with the Industrialized countries and a group of 12 developing countries accounting for the lions share. In contrast the majority of the developing countries did not experience significant trade expansion. Indeed, most of the least Developed countries. (LDCs) a group that includes most of the countries in sub-saharan Africa, experienced a proportional decline in their share of world markets despite the fact that these countries had implemented trade liberalization.

The trade of some selected contries in the world is shown in the next chart.

Table No. 6.1

'Export of goods and services to selected countries in the world'

(Export US $ million)

Sr.No	Countries	1995	2014	SGR
1	India	40692	473589	1063.838
2	China	173415	2424114	1297.869
3	Brazil	59667	265269	344.5824
4	Mexico	88563	418571	372.6251
5	S korea	150452	679520	351.6524
6	WORLD	6392218	24179866	278.2704

Source Indian Economy datta and sundaram 2018 page 279

The above table shows the export of goods and services in a few selected countries of the world. Ther has also been an attempt to explain the general growth of this five countries. China shows that Indias general growth rate is more than other countries except the country. The lowest rate of growth is South korea. South Koreas general growth rate is 351.65 percent. selected out of the five countries, more than three countries are exported from India.

A Study of globalization and Indian Economy

Mr.Maruti Abhiman Londhe
Department of Economics
Tuljabhavani Mahavidyalaya Tuljapur

1) Introduction-

After 1991 ,the economic reforms started. Indian Economy has been linked to the world economy.Throghmodern information technology,communication,transport,trade,etc. all the countries of the world are coming closer together.In a country, goods produced in one country can be easily dispatched to another country.Every country in the world has been studying global developments and making the necessary changes in its own country. In India; after 1991, reforms of economic reforms was undertaken.in july 1991, new economical policy (NEP) was announced.It includes primarily globalization , privatization, liberalization, marketers. An attempt has been made to study globalization and the Indian economy in the research paper predented.

2) Objective of the study-

2.1 To understanding the concept of globalization.
2.2 To study aspect of globalization of the Indian economy.
2.3 To study the impact of globalization on the Indian economy.

3) Research methodology

3.1 Data collection

Secondary equipment is used for the research paper. This includes, bibliographies government reports, newspaper, and websites related primarily to the subject.

3.2 Time limit-

The period from 1991 to 2018-19 for the reseaech paper presented is considered.

3.3 Geographical limit –

Only Indian economy is considered for research presented.

4) Concept of Globalization

"To create a global economy, to create a single market for all the nations".

" world with the increasing proporation of goods and services and the rapid growth of international capital flow and diversification" - IMF

Some definitions of the globalizations are explained by the the above definition.

a) Canceled restriction on imports of all commodities with consumables.
b) Bringing the import to a minimum level.
c) Privatization of the public sector enterprises.

5) Aspects of globaliztionin the economy

Three aspects of globalization fall out from the definition of globalization, including place,time and volume.

5.1) Time Dimension –

as possible, it is said to be a tense approach to the use of new technology, production of commodities, and market selling at every stage as early as possible.

5.2) Place Demensin-

Globalization reduces domestic and international geographical distances.that is, it does not take much time to move things from one place to another, it is called a place approach.

5.3) Volume Dimension-

This approach is used in terms of product production. This result in a magnitude approach.

6) The impact of globalization on the Indian economy.

Globalization shows that there has been a positive and negative impact on the Indian economy.

6.1) Indias employment situation during globalization.

During globalization, Indias status showed an increase in employment. Employment status was 2.04 percent between 1983 and 1994.This decreases in 1994 to 2004 from 0.98 percent.This is because employment in the agriculture sector has decreased drastically.Agriculure sector provides employment to nearly to 65 percent of the workers. But it has decreased continuously.Thisstutus of employment can be explained more clearly from the following table.

Impact of Globalization on Social Problem

Shri. G.V. Baviskar
(Assit.Prof.& Head)
History
Tuljabhavani Mahavidyalaya,Tuljapur

A discussion on social change in the twenty-first century can take place without some reference to globalisation. It is but natural that in this book on social change and development, the terms globalisation and liberalisation have already appeared in your earlier chapters. Recall the section on globalisation, liberalisation, and rural society in chapter 4. Go back and read the section on the Indian government's policy of liberalisation and its impact on Indian industries in chapter 5. It also came up when we discussed Vision Mumbai and the new visions for global cities in chapter 3. Other than your school books, you must have come across the term globalisation in newspapers, television programmes or even in everyday conversation.

Activity 1 will help you notice the various ways the term is used. But we still need to be clear about what exactly does the term means. In this chapter we seek to understand the meaning of globalisation, its different dimensions and their social consequences. However, this does not mean that there can be only one definition of globalisation and only one way of understanding it. Indeed you will find that different subjects or academic disciplines may focus on different aspects of globalisation. Economics may be dealing more with the economic dimensions such as capital flows. Political science may focus on the changing role of governments. However, the very process of globalisation is so far-reaching that disciplines have to increasingly borrow from each other to understand both the causes and consequences of globalisation. Let us see how sociology seeks to understand globalisation. You will recall our early discussions on the scope of sociology and the distinctive character of the sociological perspective. We go back a bit in order to focus on the significance of the sociological perspective to understand globalisation.

The scope of sociological study is extremely wide. It can focus its analysis of interaction between individuals such as that of a shopkeeper with a customer, between teachers and students, between two friends or family members. It can likewise focus on national issues such as unemployment or caste conflict or the effect of state policies on forest rights of the tribal population or rural indebtedness. Or examine global social processes such as: the impact of new flexible labour regulations on the working class; or that of the electronic media on the young; or the entry of foreign universities on the education system of the country. What defines the discipline of sociology is therefore not just what it studies (i.e. family or trade unions or villages) but how it studies a chosen field. (NCERT BOOK 1, Class XI 2005) You read the above paragraph carefully. You will realise that since sociology is not defined by what it studies but how it studies, it would be not quite right to state that sociology only studies the social or cultural consequences of globalisation. What it does is use the sociological imagination to make sense of the connections between the individual and society, the micro and the macro, the local and the global. How is the peasant affected in a remote village? How is s/he connected to global changes? How has it affected the chances of employment for the middle class? How has it affected the possibilities of big Indian corporations becoming transnational corporations? What does it mean to the neighbourhood grocer if the retail sector is opened up to big transnational companies? Why are there so many shopping malls in our cities and towns today? How has it changed the way young people spend their leisure time? These are just few examples of the wide ranging and different kinds of changes that globalisation is bringing about.

You will find many more instances whereby global developments are affecting the lives of people. And thereby affecting the way sociology has to study society. With the opening up of the market and removal of restrictions to the import of many products we have many more products from different corners of the world in our neighbourhood shops. Since April 1, 2001, all types of quantitative restrictions (QR) on imports were withdrawn. It is no surprise now to find a Chinese pear, an Australian apple vying for attention in the local fruit stall. The neighbourhood store also has Australian orange juice and ready to fry chips in frozen packets. What we eat and drink at home with our family and friends slowly changes. The same set of policy changes affects consumers and producers differently. What may mean greater choices for the urban, affluent consumer may mean a crisis of livelihood for a farmer. These changes are personal because they affect individuals' lives and lifestyles. They are obviously also linked to public policies adopted by the government and its agreement with the World Trade Organisation (WTO). Likewise macro policy changes have meant that instead of one television channel we have literally scores today. The dramatic changes in the media are perhaps the most visible effect of globalisation. We will be discussing this in greater detail in the next chapter. These are just few random examples but they may help you to appreciate the close interconnection that exists between your personal lives and the apparently remote policies of globalisation. As mentioned earlier the sociological imagination enables to make this connection between the micro and the macro, between the personal and public. Sociology has been often defined as the discipline that studies 'society'. You would remember from your discussions in Book 1, Class XI that the boundaries of 'society' are not easy to draw. A study of a village not only meant study of different social groups and their 'societies' but would also have to take into account, the ways the village society was linked to the outside world. This linkage is more valid today than ever before. The sociologist or social anthropologist cannot study

The Role of Regional Political Parties in Coalition Politics. Special Reference Maharashtra State.

Prof. Satish M. Raste
Adarsh college, Umarga
Tq. Umarga, Dist. Osmanabad. (M.S)

Prof. Kakasaheb G. Pokale
Arts, Science, College, Ashti
Dist. Beed. (M.S)

India has a Multi-Party System. It is estimated that over 2100 registered Political parties have appeared in India since the Independence. Now in present era there are only six national political parties and 30 regional political parties active in both Central and State politics. Earlier the regional parties play a major role at the centre due to the dominance of congress party. The regional parties are emerging with greater political appeal to control most of the state politics. They emerged as a powerful force are played vital role in the formulation of Governments at the state level. The regional political parties operate within limited areas and pursue only limited objectives. They have played major role both in the state as well as in the central politics. Presently, there is no any single political party able to form government at the state and central level. The regional parties have made a strong impact on the nature of central-state relations in India. Those political parties have focused the attention of the people in remote areas on various political and economic as well as social issues and contributed to political awakening. The leaders of regional parties have started playing an active and even deterministic role in the organization of the state Government i.e. Shivsena, National Congress Party etc.

The new scenario in which coalition politics has come to emerge as a reality of Indian politics Since 1996, has brought home the fact that the national parties must join hands with regional parties to strengthen their role and position in the Indian political system. Now every political parties has realized and accepted the necessity of regional parites in formulation of the government.

A coalition politics means the coming together of more than one political party or group on the basis of common understanding. Coalition politics have a framework within which all the parties functions. No any major party seems to be getting and decisive vote after a general elections.

In the early years of Indian Independence, the role of regional parties in our democratic political system was just nominal. After some time the regional parites in state politics started gaining more Importance. Most regional political parties have grown in the last three decades as instruments to capture the space in their respective states. The regional parties maintain that the problems of their regions are not being attended to by the government now all the national political parites are depending on the regional parties when no all India party was in a position to secure absolute majority in Lok Sabha.

Politics of Maharashtra Concern to Coalitions:-

In Maharashtra there are the politics of the state is dominated by the numerically strong Maratha Community. There are national and regional parites in the state serving different demographics such as those based on religion, caste, urban and rural residents. Indian national congress party is the most powerful in Maharashtra since the formulation of Joint Maharashtra i.e. 1960. This party enjoyed a near unchallenged dominance of the political landscape until 1995 when the Shivsena and BJP secured and majority in the state to form a coalition government. After his second coalition parting from the congress party in 1999 sharad pawar formed the NCP but joined a congress led coalition to form the state Government. After the 1999 Assembly Elections. Prithviraj Chavan of the congress party was the last chief minister of Maharashtra under the congress-NCP alliance that ruled until 2014. In the 2014 Assembly Elections the two alliances between the NCP and Congress and between the BJP and Shivsena respectively broke down over seat allocations. In this elections the largest number of seats went to the BJP with 122 Seats. The BJP initially formed a minority Government under Fadnavis (C.M.) But Shvisena has, as of December 2014 entered the government now enjoys a comfortable majority in the Maharashtra vidhansabha. A period of coalition government began in 1995 with the victory of Shivsena and BJP. Shivsena was the larger party in the coalition form 1999 until 2014. The NCP and INC formed one coalition while Shivsena and the BJP formed another for three successive elections, which the INC-NCP alliance won other parties in the state include the MNS, CPI, PWP, AIMIM, BVA, RPI, BSP and Socialist Party etc.

References:-

1. Bidyat Chakrabarty - Coalition Politics in India.
2. M.M. Khajooria -Good Government and coalition politics.
3. Mouneshwara S. - The role of the regional political parties in Indian coalition politics. A case study of TamilNadu
4. Brahmachary K.C. - Democracy without Political Parties.

अ) अदृश्य बाजार ठिकाण :

आज इंटरनेटमुळे किंवा संगणकीय नेटवर्कींगमुळे प्रत्येक खेडे एकमेकांसी जोडले गेलेले आहेत. यामुळे व्यापारी इंटरनेटच्या मदतीने वेबसाईटवर आभासी किंवा आदृश्य बाजारपेठ तयार करु शकतो व तेथून वस्तू या सेवेची विक्री करु शकते. तेही पुर्ण जगभर.

ब) वस्तूचे डिलीटलायजेशन :

आज व्यापार करण्यासाठी प्रत्यक्ष हाताळता येण्याजोगी वस्तूची आवश्यकता नाही जसे चित्र पोस्टर, गाणी ऐकण्यासाठीची कॅसेट वा सिडी इ. आज या वस्तूचे रुपांतर डिजीटल वस्तूमध्ये झालेले आहे. आज गाणी ऐकण्यासाठी एखादी कॅसेट किंवा सिडी खरेदी करण्याची आवश्यकता नाही ती आपण इंटरनेटच्या माध्यमातून एका सेंकदात ही वस्तू खरेदी करु शकतो. आजच्या आधुनिक व्यापारामुळे वस्तूचे स्वरुपामध्ये आमुलाग्र बदल झालेले दिसून येतात.

क) पैशाची नगर देवघेव :

व्यापारामध्ये वस्तू वा सेवांची खरेदी विक्री करण्यासाठी पैशाची नगर देवघेव होणे आवश्यक आहे. परंतु आजच्या इलेक्ट्रानीक व्यापारामध्ये पैशाची नगद देवघेव करण्याची आवश्यकता नाही. आज पैशाचे रुपांतर डिजीटल पैशांमध्ये झाले आहे. जसे एटीएम कार्ड, डिबीट कार्ड, क्रिडीट कार्ड, ई-चेक, सायबर कॅश इ.

ड) ग्राहक व व्यापारी प्रत्यक्ष संदेशवहन :

ग्राहक व विक्रेता यांच्यामध्ये व्यापार होण्यासाठी त्यांच्यात समोरासमोर संदेशवहन होणे आवश्यक आहे. परंतु आजच्या आधुनिक व्यापार व्यवसायांमध्ये ग्राहक व विक्रेता यांच्यात प्रत्यक्ष संदेशवहनाची आवश्यकता नाही ते अप्रत्यक्ष म्हणजे ईमेल, वेबसाईट, टेलीफोन संदेशवहन इ.च्यामार्फत संदेशवहन करुन व्यापार व्यवसाय करु शकतात.

ऑनलाईन व्यापार :

आज भारतासारख्या देशांमध्ये ऑनलाईन व्यापाराचा विकास व विस्तार मोठया प्रमाणात होत असलेला दिसून येते. ऑनलाईन व्यापार म्हणजे वस्तू वा सेवेचे खरेदी-विक्री इंटरनेटच्या माध्यमाने करणे होय. आज अनेक व्यापारी कंपन्या ऑनलाईन व्यापार करत असलेला दिसून येतात. उदा. फ्लिपकार्ट, अमेझॉन, स्नॅपडील, क्विकर इ.

मोबाईल व्यापार :

इंटरनेटचा वापर मोबाईल साधनांमध्ये वाढल्यामुळे मोबाईल व्यापार प्रणाली विकसीत झाली आहे. एखादा व्यापारी व्यापार करण्यासाठी मोबाईल ऍप तयार करुन त्याच्या मार्फत व्यापार, व्यवसाय करत असलेले दिसुन येतात. उदा. हॉटस्टार, गेम ॲप, सेलस्टोअर ॲप इ.

१) **व्यापारास साहाय्यभूत क्रियांमधील बदलते प्रवाह :**

व्यापारास सहाय्यभूत असलेल्या क्रिया म्हणजे तसे बँकीग, विमा, बाजारपेठ, जाहिरात, उत्पादन संस्था, वितरण साखळी इत्यादी होय. यामध्ये आज अमुलाग्र बदल झालेले दिसून येतात.

अ) बँकीग क्षेत्र : व्यापारास सहाय्यभूत असलेले बँकिग क्षेत्र महत्वाचे मानले जाते. आज पारंपारिक बँकीग क्षेत्राची जागा इंटरनेट बँकीग, मोबाईल बँकिग, ऑनलाईन बँकिग प्रणालीने घेतलेली आहे. आज व्यापारासाठी पैशाची देवघेव करण्यासाठी ग्राहक, ई बॅर्कीग प्रणालीचा वापर करत असलेले दिसून येत.

ब) विमा क्षेत्र : आज विमा क्षेत्रांमध्ये आमुलाग्र बदल झालेले आहे. आज विशिष्ट वस्तूचा विमा उतरवण्यासाठी विमा कंपनीच्या दारी जाण्याची आवश्यकता नाही. इंटरनेटच्या मार्फत विमा कंपनीच्या वेबसाईटला भेट देऊन आपण विमा खरेदी करु शकतो.

क) बाजारपेठ : पारंपारिक व वाणिज्य व व्यापार-व्यवसाय करण्यासाठी प्रत्यक्ष बाजार ठिकाणाची आवश्यकता होती. परंतु आज प्रत्यक्ष बाजार पेठेची आवश्यकता नाही. कारण इंटरनेटच्या माध्यमातून ऑनलाईन बाजारपेठ सुरु करु शकतो. आज अशा ऑनलाईन बाजारपेठांचा मोठ्या प्रमाणामध्ये भारतात विकास होत असलेला दिसून येतो.

ड) जाहिरात क्षेत्र : व्यापार-व्यवसाय करण्यासाठी जाहिरात हे एक महत्वाचे माध्यम आहे. पारंपरिक वाणिज्यामध्ये जाहिरातीचे साधन म्हणून समाचार पत्रे, पोस्टर, कागदी व कपड्याचे बॅनर, टीव्ही जाहिरात, ऑडिओ जाहिरात इ. चा वापर केला जात असे व आजही केला जातो परंतु आज इंटरनेटच्या माध्यमातून ऑनलाईन जाहीरात कमी खर्चामध्ये करता येते.

ई) ईव्यवसाय : पारंपारिक व्यवसायाची जागा ई-व्यवसायाने आज घेतलेली दिसुन येतो. आज अनेक पारंपारिक व्यवसाय इलेक्ट्रानीक व्यवसाय बनत चालले आहेत. यामुळे व्यवसायाच्या खर्चामध्ये मोठया प्रमाणात बचत झालेली दिसून येते.

उ) वितरण साखळी : उत्पादन ठिकाणाहून ती वस्तू अंतिम ग्राहकांपर्यंत पोहचती करण्यासाठी वितरण साखळी महत्वाची असते. पारंपारिक वाणिज्यामध्ये वितरण साखळीत अनेक मध्यस्थांचा समावेश आहे. परंतु ई-वाणिज्यामध्ये उत्पादक संस्था प्रत्यक्ष आपल्या ग्राहकांना वस्तू वितरीत करु शकते.

व्यापार व्यवसाईकांची मते :

संबंधीत शोधनिबंधामध्ये ५० व्यापारी व ५० व्यावसाईक यांच्याकडून मुलाखतीच्या माध्यमातून माहिती गोळा केलेली आहे. जागतिकीकरणानंतर वाणिज्य क्षेत्रातील बदलते प्रवाह याबाबत मते आजमावण्यासाठी उस्मानाबाद जिल्हातील व्यापारी-व्यवसायीकांकडून माहिती संग्रहीत केली आहे. त्याची मते पुढीलप्रमाणे आहेत.

१. ६८ टक्के व्यापारी व ४५ टक्के व्यवसायिकांचे मत आहे की, जागतिकीकरणानंतर वाणिज्य क्षेत्रामध्ये आमुलाग्र बदल झालेला आहेत.

जागतीकीकरण आणि भारतीय शेती व्यवसाय

प्रा.डॉ.शिवांगी संजयराव दहिरणकर
M.Com. M.Phil G.D.C. & A. Ph.D.
तुळजाभवानी कॉलेज, तुळजापूर

प्रस्तावना:-

जागतीकीकरणाच्या प्रक्रियेने 21 व्या शतकाच्या पुर्वार्धांतच जगातील सर्व देशांना व देशातील प्रत्येक व्यवस्थेला व्यापुन सर्व देशांना व देशातील प्रत्येक व्यवस्थेला व्यापुन टाकले आहे. जगातील विकसनशील व अविकसीत राष्ट्रांनी आपल्या विकासासाठी आयात-निर्यात आणि परकीय भांडवलावर निर्बंध लादले. यातुन पर्याय म्हणून विकसीत राष्ट्रांनी भांडवलाचा मुक्त संचार आणि बाजारपेठांचा विस्तार या दोन बाबी नजरेसमोर ठेवुन जागतीकीकरणाचे धोरण पुढे आणले व या धोरणाचा भाग म्हणजे GATT (General Agreement on Trade & Teriff.) व WTO (World Trade orhganisation) हे होत. जागतीकीकरणाचे मुळ जरी आर्थीक बाबीशी संबंधीत असले तरी त्याचा परिणाम मानवी समाजाच्या सर्वच क्षेत्रांवर झालेला दिसुन येतो.

यात जागतीकीकरणाचा अर्थ थोडक्यात सांगावयाचा झाल्यास जागतीकीकरण म्हणजे ही एक अशी प्रक्रीया आहे की, जी देशाच्या अर्थव्यवस्थेचा भाग व्यापक बनवते. जसे की देशातील सर्व प्रकारचे व्यवहार (उदा. वित्तीय व्यवहार, वस्तुचे व्यवहार, सेवा व उत्पादन घटकाचे व्यवहार इ.) हे व्यापक जागतीक बाजारपेठांचा भाग बनतात आणि या बाजारपेठांच्या बाबतीत आंतरराष्ट्रीय सरहद्दी कायम राहतात. त्यांना पार करणे सोपे नसते.

जागतीकीकरणाच्या व्याख्या पुढीलप्रमणे आहेत.

1) रुसी मोदी यांच्या मते- जागतीकीकरण म्हणजे खुली स्पर्धा आणि नवे तंत्रज्ञान यातुन उत्पादकता आणि उत्पादन वाढवणे तसेच संपुर्ण जगाची एकच बाजारपेठ निर्माण करणे आणि वस्तु व सेवा यांची विक्री करणे होय.
2) जगदीश भगवती यांच्या मते जागतीकीकरण म्हणजे, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थांना जागतीक अर्थव्यवस्थेमध्ये पुढील प्रक्रियांद्वारे समाविष्ट करुन घेणे : बहुराष्ट्रीय कंपन्या, व्यापार व महामंडळे यांच्याकडून प्रत्यक्ष गुंतवणुक, अल्पकालीन भांडवल प्रवाह, कामगार व एकूण मानवाची आंतरराष्ट्रीय गतीमानता आणि तंत्रज्ञानाचा प्रवाह.
3) जागतीक बँक :- जागतीक बँकेने जागतीकीकरणाचा अर्थ पुढीलप्रमाणे लावला आहे.
   जागतीकीकरण म्हणजे.
   i) उपभोग्य वस्तुंसह सर्व वस्तुंच्या आयातीवरील निर्बंध हळुहळु कमी करणे.
   ii) आयातीचे दर कमी करणे / कर कमी करणे.
   iii) सार्वजनीक क्षेत्रातील उदयोगांचे खाजगीकरण करणे.
4) श्रावन कुमाणसिंग यांच्या मते, जगातील सर्वच राष्ट्रांची एकच बाजारपेठ निर्माण करणे व त्यात जगातील साधनसामुग्रीचे आणि भांडवलाचे सहजतेने परिचलन निर्माण करणे म्हणजेच जागतीकीकरण होय.

संशोधन पध्दती.

याअभ्यासासाठी द्वितीय संशोधन पध्दती सामुग्रीचा उपयोग केला गेला आहे. ही सामुग्री लोकसत्ता न्युजपेपर, मासीके व इंटरनेट मधुन घेतली आहे. सांख्यिकीय माहीतीच्या विष्लेशनासाठी तक्ते, आकृती, टक्केवारी, वर्गिकरण इत्यादीचा उपयोग केला गेला आहे.

संशोधनाचे उद्देश.

1) जागतीकीकरण या संकल्पनेचा शेतीवरील सविस्तर अभ्यास करणे.
2) जागतीकीकरणाचा भारतीय शेतीवरील परिणाम अभ्यासणे.

अभ्यासाचे गृहीतके.

1) जागतीकीकरण ही व्यापक प्रक्रिया असुन त्यांने भारतात अनेक क्रांतीकारी बदल घडवुन आणले.
2) जागतीकीकरणाचे भारतीय कृषी व्यवस्थेवर अनेक दुरगामी असे अनुकुल व प्रतिकुल परिणाम झाले.

जागतीकीकरण व भारतीय शेती.

जागतीकीकरणामध्ये मुक्त अर्थव्यवस्थेचा स्वीकार केला गेला. सर्वांना आयात-निर्यात व्यापार करण्याची समान संधी, मिळाली, परस्परांमध्ये कोणत्याही प्रकारचा भेदभाव केला जात नाही, विकसीत व अविकसीत देशांमध्ये ही स्पर्धा निर्माण झाली, म्हणून अविकसीत राष्ट्रांनी कृषी व कृषी व्यवसायाशी निगडीत इतर पुरक व्यवसांयामध्ये प्रगती करुन उत्पादन वाढीसाठी प्रयत्न केल्यामुळे **जागतीकीकरण** म्हणजे सर्व क्षेत्रांत असणारी तीव्र स्पर्धा होय असे म्हणता येईल.

भारत हा कृषीप्रधान देश आहे. आजही जवळजवळ 70% लोकसंख्या शेतीवर उदरनिर्वाह करते. प्राचीन काळापासुन शेती व शेतीवर अधारित उदयोग हेच भारतीय अर्थव्यवस्थेचे प्रमुख घटक राहीलेले आहेत. म्हणून भारतीय कृषी व्यवस्थेत झालेले कोणत्याही प्रकारचे अनुकुल किंवा प्रतिकुल बदल हे भारतीय अर्थव्यवस्थेवर परिणाम करत असते.

1991 मध्ये भारतीय अर्थव्यवस्थेत जागतीकीकरणाचा अंतर्भाव झाला आणि त्याचा भारतीय समाज, उदयोग-व्यापार, विज्ञान व तंत्रज्ञान, दळण-वळण व विशेषतः कृषीक्षेत्रावर विशेष प्रभाव पडला. जैवतंत्रज्ञान, वनस्पती व जीवशास्त्रात खुप मोठ्या प्रमाणावर संशोधने झाली. कृषीक्षेत्रात मोठ्या प्रमाणात उत्पादन देणाऱ्या पालेभाज्या व फळझाडांच्या वाणाची निर्मीती करण्यात आली. अधिक दुध देणाऱ्या जनावरांच्या जाती विकसीत करण्यात आल्या. त्यामुळे भारतीय कृषी व्यवस्थेच्या विकासात भर पडली.

जागतिकीकरणानंतर कृषीक्षेत्र

श्री दत्ता बलभिमराव पवार

डॉ. टी. एल. बारबोले
अर्थशास्त्र विभागप्रमुख
तुळजाभवानी महाविद्यालय
तुळजापूर जि उस्मानाबाद.

प्रस्तावना:

भारत हा कृषीप्रधान देश आहे. त्याचबरोबर येथील शेती करण्याची पारंपरिक पध्दती आहे. प्राचीन काळापासून भारतात करण्यात येणारा शेती व्यवसाय स्वातंत्र प्राप्ती पर्यंत अगदी पारंपरिक पध्दतीने केली जात होता. परंतु स्वातंत्र्यानंतर १९५१ मध्ये भारतामध्ये आर्थिक नियोजनाची सुरूवात झाली. पंचवार्षिक योजनांच्या माध्यमातून भारतीय अर्थव्यवस्था बळकट करण्याच्या दिशेने पहिले पाउल उचलले. पहिल्या पंचवार्षिक योजनेपासून कृषी विकासावर भर देण्यात आला. प्रत्येक पंचवार्षिक योजनेत शेती विकासासाठी प्रयत्न करण्यात आले. गेल्या ५० वर्षाचे कृषी क्षेत्राचे मुल्यांकन केल्यास आपल्या लक्षात येइल की, १९७० च्या दशकात झालेल्या हरितक्रांतीने तर संपुर्ण कृषी क्षेत्रच ढवळून निघाले. उत्पादनात, उत्पादन पध्दतीत व उत्पन्नात आमुलाग्र बदल झाले. संकरीत बियाणांच्या वापरास तेव्हापासून सुरूवात झाली. पारंपरिक बियाणांच्या वापरामुळे उत्पादकतेत घट होत होती. परंतु अधिकाधिक उत्पादन देणा-या बियाणांचा शोध, खते व जलसिंचनाचा नियोजित वापर यामुळे कृषी उत्पादकतेत कमालीची वाढ झाली.

आज भारतीय अर्थव्यवस्था ही जागतिक अर्थव्यवस्था होण्याच्या दिशेने झेपावत आहे. भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या कालानुरूप विकास झालेल्या बाबीवर दृष्टीक्षेप टाकल्यास असे दिसून येते की, कृषी क्षेत्राला भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा समजला जातो. भारताच्या एकूण रोजगारातही कृषीक्षेत्राचा वाटा ६० टक्के असल्याचे दिसते. त्यातुलनेने उद्योगात १७ टक्के व सेवा क्षेत्रात २३ टक्के श्रमीक कार्यरत असल्याचे दिसून येते. भारतातील जवळपास ७० टक्के लोकसंख्या ही ग्रामिण भागाशी सबंधीत आहे. व ग्रामिण भागातील लोकांचा मुख्य व्यवसाय शेती आहे.

जागतिक पातळीवर आज अमेरिका आणि चीननंतर सर्वात मोठी तिस-या क्रमांकाची अर्थव्यवस्था म्हणुन भारतीय अर्थव्यवस्थेकडे पाहिले जाते. २० व्या शतकाच्या शेवटच्या दशकात जागतिक अर्थव्यवस्थे मध्ये काही मोठे बदल घडून आले. साधारणत: १९८५ नंतर वेगाने घडून आलेल्या या बदलांना जागतिकीकरण असे नाव मिळाले व त्यामुळे बहूतेक सर्व देशांच्या अर्थव्यवस्था प्रभावीत झाल्या. सामन्य भाषेत असे म्हणता येईल की, जगातील विविध अर्थव्यवस्थांना परस्पर जोडणारी, त्यांच्यामध्ये वस्तु, सेवा, भांडवल, तंत्रज्ञान व श्रम यांचा मुक्त प्रवाह सुरू करण्याची एक रचना म्हणजेच जागतिकीकरण होय.

जागतिकीकरणाची संकल्पना:

जगातील निरनिराळे परस्पराशी आर्थिक व्यवहार होत असतात. वस्तू , सेवांचा व्यापार, भांडवलाचे आदान-प्रदान, तंत्रज्ञानाची मदत इ. घटकांचा त्यामध्ये सामावेश होतो. देशादेशांच्या भौगोलिक सीमांचा विचार न करता त्यामध्ये जसे काय सर्व जग हे एकच घटक आहे. असे मानून आर्थिक व्यवहार मुक्तपणे होणे ही जागतिकीकरणाची मुळ कल्पना आहे.

जागतिकीकरणाची व्याख्या:

१ प्रो. जगदिश भगवती यांच्या मते " जगातील राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थांना एका आंतरराष्ट्रीय अर्थरचनेत अभिन्न भाग बनविण्याचे धोरण म्हणजेच जागतिकीकरण होय."

२ प्रो.स्टिगलिटझ यांच्या मते "वस्तू व सेवा, भांडवल, ज्ञान यांच्या मुक्त संचाराला अटकाव करणारी कृत्रीम बंधने दूर होणे, तसेच वाहतुक व दळणवळणाच्या व्ययात प्रचंड घट होणे, त्यामुळे विविध देशातील लोक यांचे होत असलेले एकीकरण म्हणजे जागतिकीकरण होय."

वरील व्याख्येवरून असे म्हणता येईल की, विविध देशामध्ये वस्तू व सेवांचा जो मुक्तपणे व्यापार होतो त्यावरील बंधने काढून भांडवल या विकास घटकाचे मुक्तपणे संचरण होण्यासाठी वातावरण निर्माण करणे होय.

उदिष्टये:

१) जागतिकीकरणाच्या संकल्पनेचे विवेचन करणे.

२) जागतिकीकरणामुळे भारतीय कृषीक्षेत्रावर झालेल्या परिणामाचा थोडक्यात आढावा घेणे.

संशोधन पध्दती:

या विषयाचा अभ्यास करण्यासाठी दुय्यम साधनाचा वापर केला आहे. त्यामध्ये मासिके, वर्तमानपत्रे, संदर्भग्रंथ, वेबसाइट या सारख्या वेगवेगळया साधनाचा वापर करण्यात आला आहे.

जागतिकीकरण आणि भारत:

भारतात जागतिकीकरणाची सुरूवात १९९१ पासून झाली. त्यापुर्वी भारतात मिश्र अर्थव्यवस्था होती. पुर्वीचे भारतातील आर्थिक धोरण देशातील गरिबी, वाढती बेरोजगारी, आर्थिक विषमता आदि प्रश्न दुर करण्यात अपयशी ठरल्याने पारंपरिक मिश्रअर्थव्यवस्थेचा त्याग करून खुले आर्थिक धोरण स्विकारण्यास सुरूवात झाली. भारतीय अर्थव्यवस्था जुलै १९९१ मध्ये अत्यंत अडचणीच्या परिस्थितीत होती. देशातील गुतवणूकीत वाढ होउन औद्योगिकीकरण वाढीस लागावे आणि अर्थव्यवयस्थेत बळकटी यावी म्हणून जुलै १९९१ मध्ये

जागतिकीकरणापूर्वीचे व जागतिकीकरणानंतरचे भारतीय अर्थव्यवस्थेचे विविध विकास दर

डॉ. प्रमोद बालाजीराव बेरळीकर
सहयोगी प्राध्यापक व अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय,
उस्मानाबाद
डॉ. तुकाराम लिंबाजी बारबोले
सहयोगी प्राध्यापक व अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
तुळजाभवानी महाविद्यालय, तुळजापूर

प्रस्तावना :-

सर्वसाधारपणे १९९० च्या सुमारास भारतीय अर्थव्यवस्था अभूतपूर्व आर्थिक पेचप्रसांगतुन जात होती. भारताचा आर्थिक अभिवृद्धीचा दर लक्षणीय प्रमाणात खालावलेला होता. सन १९९१-१९९२ या काळात भारताचा अभिवृद्धीदर १.५ इतकाच हाता. उलट परिस्थिती भाववाढीच्या दराची होती भाववाढीचा दर १६.७% होता. परकीय गंगाजळीचा साठा दोन आठवडे व्यापाराला पुरेल इतका म्हणजे केवळ १ अब्ज डॉलर्स इतका होता. संपूर्ण अर्थव्यवस्था कुंठीत सापडलेली होती. तत्कालीन कालखंडात अर्थव्यवस्थेला संकटातून वाचवण्यासाठी २४ जूलै १९९१ मध्ये तत्कालीन पंतप्रधान श्री.पी.व्ही.नरसिंहराव सरकारने नवीन आर्थिक धोरण स्वीकारले या नवीन आर्थिक धोरणात खाजगीकरण, उदारीकरण (शिथलीकरण) व जागीतकीकरणाचा समावेश होतो.

जागतिकीकरण म्हणजे स्थानिक वस्तूंची किंवा घडामोडीची जागतिक स्तरावर स्थानांतरणाची प्रक्रिया ह्या संज्ञेचा उपयोग बहुथ आर्थिक जागितकीकरणाच्या संदर्भात केला जातो. यात व्यापार, विदेशी थेट गुंतवणूक, भांडवल प्रवाह, प्रवास आणि तंत्रज्ञान यांच्या प्रसाराच्या माध्यमाने राष्ट्रीय अर्थव्यस्थेला आंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्थांसाठी खुले केले जाते. सन १९९० च्या सुमारास जागतिकीकरणाला सुरुवात झाली ह्या काळात देशावरचे विदेशी कर्ज एवढे वाढले होते की जागतिक बँक, आंतरराष्ट्रीय नाणेनिधी ह्या संघटनांनी भारताला आणखी कर्ज देणे नाकारले व कर्ज मिळवण्यासाठी भारतावर काही अटी लादल्या. ह्या अटीत आर्थिक सुधारणा स्वीकारल्या जात जागतिकीकरणासोबत उदारीकरण व खाजगीकरण ह्यांचा पण समावेश होतो. याना एकत्रित रित्या खा.ऊ.जा.धोरण म्हणतात.

गृहीतके :- अभ्यास विषमाला अनुसरून काही गृहितके निश्चित केलेली आहेत.

१) जागतीकीकरणानंतर स्थुल देशी उत्पनाच्या दरात वाढ होत आहे.
२) जागतीकीकरणानंतर निव्वळ राष्ट्रीय उत्पन्नाचा दर वाढत आहे.
३) जागतीकरणानंतर निव्वळ दरडोई उत्पन्नाचा दर वाढत आहे.

संशोधन पद्धती व संशोधन साधने :-

विश्लेषनात्मक संशोधन पद्धती वापरलेली आहे. व द्वितीयक साधन सामुगीचा वापर केला आहे. संदर्भ ग्रंथ, पुस्तके भारत सरकारच्या आर्थिक सर्वेक्षण २०१७-१८ वापर लिखाणासाठी केला आहे.

तक्ता क्रमांक १

भारतीय अर्थव्यवस्थेचा स्थुल देशी उत्पन्न निव्वळ राष्ट्रीय उत्पन्न व निव्वळ दरडोई उत्पन्न वृध्दीचा दर
(स्थित किंमतीनुसार २००४-०५)

वर्ष	स्थुल देशीउत्पन्न दर	निव्वळ राष्ट्रीय उत्पन्न दर	निव्वळ दरडोई उत्पन्न दर
१९७८-७९	५.७	५.९	३.६
७९-८०	-५.१	-५.९	-८.२
८०-८१	६.८	६.९	४.५
८१-८२	५.९	५.९	३.९
८२-८३	३.२	३.०	०.६
८३-८४	७.३	७.५	५.३
८४-८५	३.७	३.४	१.१
८५-८६	५.३	५.२	२.९
८६-८७	४.७	४.६	२.४
८७-८८	३.८	३.५	१.२
८८-८९	९.४	९.८	७.५
८९-९०	५.९	५.९	३.७
सरासरी	**४.४०**	**४.६४**	**२.३७**

आधार : आर्थिक सर्वेक्षण २०१७-१८

भारतीय लोकशाही समोरील साम्प्रदायिकतेची समस्या

डॉ.बी.डब्लू. गुंड
राज्यशास्त्र विभाग
तुळजाभवानी महाविद्यालय, तुळजापूर

प्रस्तावना:-

भारतातील साम्प्रदायिकतेचा इतिहास फार जुना आहे. त्याची मुळे ही भारतातील ब्रिटीशि कालखंडामध्ये सापडतात. भारतामध्ये ब्रिटीशि काळातील एक नकरात्मक देणगी म्हणून याकडे पाहिले जाते. स्वांतत्र्यापासून भारतामध्ये साम्प्रदायिकतेची समस्या अस्तित्वात आहे. भारतासारख्या विशाल व बहुधर्मी देशामध्ये बहुसंख्याक हिंदू व अल्पसंख्यांक जसे की, मुसलमान, ख्रिश्चन,सिख,इत्यादी मध्ये धार्मीक आधारावर तनाव व मतभेद असणे स्वभावीक आहे. पंरतू साम्प्रदायिकतेची समस्या यापेक्षा भिन्न स्वरुपाची आहे. हि समस्या २१ व्या शतकातील बदलत्या परिपेक्ष्यामध्ये नवीन व गुंतागुंतीचे स्वरुप धारण करीत आहे. वर्तमान काळात आतंराष्ट्रीय दहशतवादी संघटनांची आतिसक्रियेतेच्या कारणामुळे हिंदू मुस्लीम साम्प्रदायिकतेच्या समस्येने नवीन स्वरुप धारण केले. भारतामध्ये मुस्लीम समुदाय सर्वात आधिक अल्पसंख्यांक समुदाय आहे. भारताच्या एकूण लोकसंख्येत त्यांची लोकसंख्या १२.१२ टक्के आहे. तसेच हिन्दूची लोकसंख्या ८२ टक्के आहे. ख्रिश्चन व सिख धर्माच्या अनुयायाची संख्या क्रमशा २.३४ टक्के १.९४ टकके आहे. जागतिक स्तरावर पाहिले तर तीन धर्म क्रमशा ख्रिश्चन,मुस्लीम व हिन्दू हे तीन धर्म ज्यांची लोकसंख्या हि जगाच्या लोकसंख्येच्या क्रमशा ३७ टक्के १७ टक्के, १३ टक्के इतकी आहे. वरील विवेचनावरुन हे स्पष्ट होते की, जगात व भारतता मुस्लीम समुदायाची लोकसंख्या महत्यवपुर्ण आहे. अमेरीकन विद्वान एस.पि.हटिग्टन यांनी आपले पुस्तक Clash of civilisation मध्ये धार्मीक संस्कृतीच्या संघर्षाची कल्पना केली आहे. ख्रिश्चन बहुल पाश्चात्य देश व मुस्लीम देशामध्ये सुरु असणारे वर्तमान सघर्ष हे यांची भविष्यवानीचे सदर्भ म्हणून पाहिले जावू लागले आहे.

प्रश्न हा आहे. की हा वैश्वीक संघर्ष व दहशतवाद भारतामध्ये साम्प्रदायिकतेच्या समस्येला कशाप्रकारे प्रभावित करत आहे. भारतामध्ये पहिल्यापासून चातल असलेलया हिन्दू मुस्लीम साम्प्रदयिकतेच्या प्रक्रियेमध्ये गेल्या काही वर्षामध्ये आंतरराष्ट्रीय मुस्लीम दहशतवाद देखील आता सक्रिय भूमिका बजावू लागला आहे. भारतामध्ये सक्रिय सिमी,हुजी व पाकीस्तानी पुरस्कृत दहशतवादी संघटना आपल्या कार्यवाही द्वारे भारतीय साम्प्रदयिकतेला नवीन रंग प्रदान करु लागले आहे. जम्मुकशिमरमध्ये साम्प्रदायिकता अलगाववाद व दहशतवाद एक दुस-या बरोबर अशाप्रकारे संबंधित झाले आहे. की, त्यामुळे कशमिर समस्या हि अत्यंत कठिण समस्या झाली आहे. गेल्या काही वर्षामध्ये भारताच्या विविध शहरामध्ये मुस्लीम दहशतवादाच्या ज्या घटना घडल्या आहे. त्यावरुन भारतातील साम्प्रदायिकतेची समस्या हि कशी गुंतागंतिची व गंभिर होत आहे. यांचा अंदाज येवू शकतो त्यांचाच परिणाम म्हणून व प्रतिक्रया म्हणून हिन्दू समूदायामध्ये देखिल उग्रवादी प्रवृत्ती बळावत चालली आहे. या बदलत्या परिस्थीती मध्ये भारतामध्ये साम्प्रदायिकतेच्या बदलत्या प्रवृत्तीचे विश्लेषण करणे आवश्यक आहे. त्या करिता प्रस्तुत शोध निबंधासाठी या समस्येची निवड करण्यात आली आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे:-

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी काही उदिष्टे निश्चित करण्यात आली आहे. ती खालील प्रमाणे स्पष्ट करता येतील.

१. भारतातील साम्प्रदायिकतेच्या समस्येचा आढावा घेणे.
२. या समस्येच्या कारणाचा शोध घेणे.
३. साम्प्रदायिकता व धर्मनिपेक्षता यांच्या परस्पसंबंधाचा आढावा घेणे.
४. भारतीय संविधान व पंथनिरपेक्षतेचा अभ्यास करणे.

संशोधन पध्दती:-

प्रस्तुत शाध निबंधासाठी वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक संशोधन पध्दतीचा आवलंब करण्यात आला आहे.

साम्प्रदायिकता का आहे.

धर्म अथवा धार्मीक भावना यांना गैर धार्मीक उद्देशाच्या प्राप्तीसाठी वापर करण्याच्या प्रवृत्तीला साम्प्रदायिकता असे म्हणतात हा. गैर धार्मीय उदेश राजकीय अर्थिक सामाजिक असू शकतो धर्म अथवा धार्मीक भावनाच्या धार्मीक उदेशाच्या प्राप्तीसाठी उपयोगं करणे साम्प्रदायिकता नाही.शेवटी साम्प्रदायिकतेचे मुलतत्व हे धर्माचा गैर धार्मीक उदेशासाठी प्रयोग करणे या अर्थाने साम्प्रदायिकता ब्रिटीश शासनाची देणगी आहे. वहसात वादी शासनाने आपल्या साम्राज्यवादी हिताचे संरक्षण व भारतीय व राष्ट्रीय अंदोलन कमकुवत करण्यासाठी धार्मीक आधारावर हिंदू मुस्लीमामध्ये फुट पाडण्याचा प्रयत्न केला यालाच भारतामध्ये साम्प्रदायिकतेचा प्रारंभ म्हटले जाते. स्वांतत्र्यानंतर भारतच्या राजकीय पक्षाने आपला जनाधार वाढवण्यसाठी, अल्पसंख्याकांना वोट बँकेच्या रुपामध्ये वापरकरण्यासाठी धार्मीक भावनाचा उपयोग केला. ज्यामध्ये साम्प्रदायिकतेच्या विद्यमान प्रवृत्तीला बळ मिळाले.

साम्प्रदायिकता व धर्मनिरपेक्षता:-

साम्प्रदायिकतेचा खरा अर्थ धर्मनिरपेक्षतेच्या आधारे समजून घेता येईल वास्तवामध्ये साम्प्रदायिकता व धर्मनिरपेक्षता परस्पर विरोधी संकल्पना आहे. साम्प्रदायिकता म्हणजे धार्मीक भावनांचा उपयोग गैर धार्मीक उदेदश जसे की राजकीय अर्थिक सामाजिक उद्देदशासाठी करणे त्याच बारोब धर्मनिपेक्षता धर्माला राजकी अथवा जिवनाच्या इतर क्षेत्रापासून अलग करण्यावर भर देते. धर्मनिरपेक्षतेच्या अंतर्गत धर्माला व्यक्तीगत जिवनाचे तत्त्व मानले जाते. याला राजकीय जीवनापासून अलीप्त करण्यावर भर दिला जातो. भारतीय राज्यघटनेच्या कलम २५ मध्ये सर्व नागरिकांना धार्मीक स्वांतत्र्यतेचा आधिकार देण्यात आला आहे. परंतू या कलमामध्ये

भारतीय राजकरणातील वाढती घराणेशाही

प्रा. आबासाहेब बब्रुवान गायकवाड
राजशास्त्र विभाग
तुळजाभवानी महाविद्यालय, तुळजापूर

श्री गोंविद भैरवनाथ दोरगे
संशोधक विद्यार्थी
डॉ.बा.आ.म.विद्यापीठ, औरंगाबाद

प्रस्तावना:-

15 ऑगस्ट 1947 च्या मध्यरात्री जेव्हा एका नविन युगाला सुरुवात झली होती. तेव्हा राष्ट्राच्या नेतृत्वाच्या मनात व बुध्दीत दुरदर्शीपणा मोठा प्रभाव होता. जो की आपल्यासाठी एक गौरवपुर्ण बाब होती. त्यावेळीचे नुतृत्व आपलया विविध विराधाभसाच्या विरुध्द आनुनिकातावादी राष्ट्रनिर्माता, सक्षम शिझव्यवसाय, आणि सत्तेचा अधि जनकल्याणाला प्रेरित करणारी होती. फाळणीच्या राजकीय आव्हानाचा तोंड देण्यासाठी उपयोगी पडू शकतील पढे जाऊन राष्ट्र निर्मात्याद्वारे जमीनदारी प्रथा कायद्याने समाप्त केली गेली आणि प्रगतीशील धोरणे रचीकाव्न राजे राजवाडे पध्दती नष्ट केली. हे सर्व होऊन देखील भारतीय राजकरण सरमजामशाहीची वंश परंपरा पासून अजून पर्यत मुक्त होऊ शकला नाही.

स्वातत्र्याच्या 72 वर्षानंतर राजकीय नेतृत्वाची तिसरी पीठ समोर आली आहे. परंतु संसद सदस्याच्या यादीवर एक नजर टाकली तर आपल्या हे लक्षात येईल की भरतामध्ये राजकीय परिवारासाठी राजकीय जमिन किती सुपीक स्वरुपाची आहे. जी की जगात इतर कोणत्याही देशात नाहीञ 15 व्या व 16 लोकसभा निवडणूकीत 150 सदस्य विविध पक्षाच्या नेत्याच्या परिवारातील अथवा नात्यागोतयातील लोक होत. लोकशाही प्रक्रियेच्या आडून संरमाजमशाही प्रथा अथवा घराणेशाहीला प्रोत्सहान देणे हे प्रस्थपित मुल्य झाले आहे. त्यामुळे आम्हाला आपल्या राष्ट्रव्यवस्थेच्या आणि लोकशाही संस्थावर प्रश्नचिन्ह निर्माण होते. कारण सततधा-याची पत्नी,विधवा आणि मूले मुली वारसार म्हणून पद स्वीकारत अहोत. ही वृत्ती खालीपासून वरपर्यत प्रचलित झाली आहे. राजकीय घराणे शाहीच्या वेगाने पसरत आहे. तो दिवस दूर नाही जेव्हा अशा एखादा लोख प्रतिनिधी शोधने आवघड होईल कि, ज्याचे वडील अथवा परिवाराचे व्यक्ती राजकरणात नव्हती.

भारतातील कोणतेही राज्य घराणेशाही पासून अलीप्त नाही. तरी लोक हे मनापासून या देशात नेहरु गांधी परिवार जगात सर्वात जुना राजकीय वेश आहे. स्वातंत्र्योत्तर कॉग्रेस जनतेचा सत्तेचे प्रतिक बनने आवश्यकते होते. परंतु वर्ष आणि दशकामध्ये हे घराणेशाही सत्तेचे संस्थनिक रुप सिध्द झाले आहे. आता नेहरु गांधी परिवाराची चौथी पिढी राजकारणात उतरुन सलासुख उपभोगु लागली आहेञ कश्मीर ते कन्याकुमारी पर्यत आणि पंजाब ते आसाम आणि उडिसा पर्यत प्रत्येक राज्यामध्ये राजकीय वेशबाद सत्तासुख आणि वैभव उपभोगातांना दिसून येत आहे. आता लोकशाहीची नवीन परिभाषा केली जावू लागली आहे. जे की अशा प्रकारची आहे. "परीवाराचे परीवारासाठी आणि परीवाराद्वारे संचलीत केले जाणारे शासन म्हणजे लोकशाही होय." आता सर्वजन आपल्या ग-हाणेशाहीला प्रोत्सहन देवू लागले आहे परीवार अगोदर बाकी नंतर या स्थीती मध्ये कोणत्याही एका परीवारवर वंशवादाला प्रोत्सहन देतात म्हणून आरोप लावणे चुकीचे आहे. शेवटी लोकशाही मध्ये घराणेशाही रुजण्याचे आणि सतत टिकवुन राहण्याची काय कारणे आहेत. याचा शोध घेणे गरजेचे आहे त्यासाठी प्रस्तुत शोध निबंधासाठी या विषयाची निवड करण्यात आली आहे.

शोधनिबंधाची उदिष्टये :

- भारतीय राजकारणातील घराणेशाहीवर प्रकाश टाकणे.
- भारतीय पक्षपध्दतीचा अभ्यास करणे.
- भारतीय राजकारणात घराणेशाही कशामुळे टिकून आहे याचा शोध घेणे.
- या घराणे शाहीची नेमकी कोणती आव्हाणे आहेत याचा अभ्यास करणे.

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, निरिक्षणात्कम संशोधन पध्दतीचा आवलंब करण्यात आला आहे. तसेच विविध संदर्भ ग्रंथ, अंतरराष्ट्रीय परिषदामध्ये राष्ट्रीयपरिषदामध्ये प्रसिध्द लेख, नियतकालीके, मासिके, वर्तमानपत्रे, विविध संकेस्थळे यांचा आवलंब करण्यात आला आहे.

भारतीय राजकिय पक्ष आणि घराणे शाही

आजचे राजकारण जनसामान्यापासून कोसो दुर आहे. त्यामध्ये प्रवेश करणे व त्यावर प्रभाव टाकणे ही एक अशक्य बाब झाली आहे. आणि हा खेळ अतिशय महागडा होवून बसला आहे. कोणत्याही गरिब व्यक्तीला या व्यवस्थेमध्ये सहजा सहजी प्रवेश करणे शक्य नाही. परंतू राजकिय खानदानातील व्यक्तीला पक्षामध्ये जागा आणि संसाधन सहज उपलब्ध होऊ शकतात सुरुवातीला हे वारसदार परिवाराच्या सिढीचा वापर करतात आणि राजकारणात प्रवेश करतात स्वताची ओळख निर्माण करतात हे घराणेशाहीचा परिणाम आहे. ज्या व्यक्तीना राजकरणात ओळख निर्माण करण्याठी वर्षानुवर्ष जातात त्या ठिकाणी घराणेशाही मुळे हे सहज शक्या होते. या नेत्यामध्ये राजकीय जाणीव व विचारधार यांचा आभाव असला तरी चालतो. परंतू राजकीय घराणे असणे आवश्यक असते. आता परत एकदा कुलीनतंत्र अस्तीत्वात येते की काय. याची भिती निर्माण झाली आहे. आज देशामध्ये जवळपास पन्नास साठ घराणे अशाप्रकारची आहेत. ज्यांचा राजकीय दबदबा दिल्ली पासून गल्ली पर्यंत आहे. आणि त्या परीवारातील सदस्य आपले उपनाम जोडून त्यांचा वारसदार म्हणून पुढे येत आहेत.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ) | Special Issue No. 46 | ISSN 2349-638x

जागतीकीकरणानंतर भारतातील लोकशाही वाटचालीतील आव्हाने.

प्रा. सिध्देश्वर चंद्रकांत सुरवसे
इतिहास विभाग
तुळजाभवानी महाविद्यालय,
तुळजापूर.

प्रस्तावना :

प्राचीन काळापासुन लोकशाहीची संकल्पना अस्तित्वात असलेली दिसते. प्राचीन ग्रीक नगर राज्यात लोकशाही शासन व्यवस्थेचा उल्लेख झालेला आपणास दिसतो.त्या काळात प्रत्यक्ष लोकशाही शासन प्रकार अस्तित्वात होता. परंतु कालांतराने याचे स्वरूप बदलत जावुन त्याऐवजी अप्रत्यक्ष लोकशाही निर्माण झाली. लोकशाही शासन व्यवस्थेचा उल्लेख ॲरिस्टॉटल व प्लेटो यांनी आपल्या लिखाणात केल्याचे दिसुन येते. प्रामुख्याने लोकशाहीची संकल्पना प्रथम इंग्लंडमध्ये मान्य करण्यात येवुन जगात सर्वप्रथम नागरीकांना अधिकार प्रदान करण्यात आले. याचे उत्तम उदाहरण म्हणन आपण इ.स.1215 च्या मॅग्नाकार्टाचा उल्लेख करतो. पुढे इ.स.1688 मध्ये इंग्लंड मधील रक्तहीन राज्यक्रांती या क्रांतीने इंग्लंडच्या राजाचे अमर्यादित अधिकार मर्यादित करण्याचा प्रयत्न केला व इंग्लंडची प्रजा हीच सार्वभौम असल्याचे स्पष्ट केले. म्हणुनच इंग्लंडला लोकशाहीची जननी म्हणुन ओळखले जाते. इंग्लंडकडुन प्रेरणा घेऊनच अमेरीका, फ्रान्स, भारत इत्यादी अनेक खंडातील राष्ट्रांनी स्वातंत्र्य प्राप्त केल्यानंतर लोकशाही शासन प्रकार व लोकशाही विचारांचा स्विकार केला.लोकशाहीची संकल्पना जाणुन घेण्यासाठी आपणास लोकशाहीची व्याख्या समजुन घेणे आवश्यक आहे. हिरोडोटस या विचारवंताच्या मते 'लोकशाही हा शासनाचा असा प्रकार आहे की, ज्यात राज्याची सर्वोच्च सत्ता ही जनतेच्या हाती असते'. तसेच प्रा.सीली यांनीही लोकशाहीची व्याख्या केलेली आहे त्यांच्या मते ' ज्या शासन व्यवस्थेत प्रत्येकाला भाग घेण्याची संधी मिळते ती शासन व्यवस्था म्हणे लोकशाही शासन व्यवस्था होय.' वरील व्याख्यांचे विवेचन केल्यानंतर आपणास असे दिसुन येईल की, लोकशाहीमध्ये राज्याची सर्वोच्च सत्ता ही लोकांकडे असते. तसेच या शासन व्यवस्थेत लोकांना आपले विचार प्रकट करण्याचा , शासन निवडुन देण्याचा, शासनात सहभाग नोंदविण्याचा अधिकार प्राप्त होतो. लोकांच्या संमतीला या शासन प्रकारात अनन्य साधारण महत्व असते. लोकांच्या संमतीशिवाय शासन अस्तित्वात येऊ शकत नाही.

लोकशाहीची ही एक विचार सरण असुन ती प्रामुख्याने स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, न्याय या महत्वपुर्ण मुल्यांवर किंवा तत्वांवर आधारलेला केवळ शासनाचा प्रकार म्हणुन न पाहता ती एक जीवन पध्दती म्हणुन महत्व देताना दिसतात. प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये लोकशाही शासन प्रकार व विचारधारे बद्दल आपल्या देशात बरेच विचार मंथन झाले पण आपल्या देशासमोरील लोकशाही शासन व्यवस्था व विचारधारेपुढील जी आव्हाने जागतीकीकरणानंतर उभी राहीलेली आहेत. उदा. भ्रष्टाचार, संकुचीत राष्ट्रवाद, जमातवाद, पक्षीय राजकारण, प्रादेशिकवाद, इत्यादी अनेक कारणांमुळे लोकशाहीला व देशाच्या संविधानाला त्यामुळे धक्का पोहचत असल्याचे दिसते. म्हणुन सदर शोध निबंधात या अशा आव्हानांवर प्रकाश टाकण्याचा प्रयत्न करण्यात आलेला आहे.

संशोधनाचे उद्देश :

1) जागतीकीकरणानंतर भारतातील लोकशाहीवर पडलेल्या प्रभावांचा अभ्यास करणे.
2) जागतीकीकरणानंतर भारतातील लोकशाही विचारात झालेल्या परिवर्तनाचा अभ्यास करणे.
3) भारतातील लोकशाही व जागतीकीकरण यांच्यातील सहसंबंधाचा आढावा घेणे.

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत शोधनिबंध दुय्यम साधनांवर आधारीत आहे. यामध्ये त्या विषयासंबंधीत विविध संदर्भग्रंथ, विविध नियतकालिके, वर्तमानपत्रे यांचा अवलंब करण्यात आला आहे.

जागतीकीकरणानंतर भारतातील लोकशाही वाटचालीतील आव्हाने :-

जागतीकीकरणानंतर भारतातील लोकशाही समोर विविध आव्हाने निर्माण झाली आहेत. त्यामध्ये प्रामुख्याने जमातवाद, जातीवाद, प्रादेशिकवाद, भ्रष्टाचार, संकुचित राष्ट्रवाद, घराणेशाही, गरीब व श्रीमंतामधील वाढती दरी, प्रादेशिक असमतोल, राजकीय गुन्हेगारी, दहशतवाद, संसदेच्या सार्वभौमत्वाची समस्या, राजकीय अस्थैर्य, पक्षीय राजकारण, वाढती राजकीय महत्वकांक्षा, सर्वसमावेशक नेतृत्वाचा अभाव इत्यादी आव्हाने भारतीय लोकशाही समोर निर्माण झालेली आहेत.

लोकशाही ज्या मुल्यांवर म्हणजेच स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, न्याय या तत्वावर आधारीत आहे. ही मूल्ये जर प्रत्यक्षात आणावयाची असतील तर धोरणकर्त्यांनी व राज्यकर्त्यांनी या आव्हानांकडे लक्ष देण्याची आवश्यकता आहे. लोकशाहीमध्ये लोकांचा राजकीय सहभाग महत्वाचा असतो. तसेच अल्पसंख्यांक , वंचित, उपेक्षीत, दुर्लक्षीत व महिला या घटकांना देखील राजकीय प्रक्रियेत पुरेशे प्रतिनिधीत्व मिळणे अपेक्षीत असते. परंतु या जागतीकीकरणाच्या रेट्यात या घटकांकडे मोठ्या प्रमाणात दुर्लक्ष करण्यात येत आहे.

जागतीकरणाचा, उदारीकरणाचा , खाजगीकरणाचा या तिन्ही धोरणांचा उद्देश अतिशय चांगला आहे. कारण या धोरणांमुळे जगाचे व्दार भारतीयांसाठी खुले होणार होते. त्यातुन अनेक लोकांना संधीची उपलब्धता होणार होती. लोकांच्या जीवनमानामध्ये सकारात्मक बदल करण्यासाठी या धोरणंचा अवलंब करण्यात आला होता. परंतु आज जागतीकरीकरणाच्या मुळे उद्देशाला फाटा देवुन अनेक समस्या या जागतीकरणाने निर्माण करून ठेवल्या आहेत. त्याचा उहापोह आपण वरील प्रमाणे केलेलाच आहे.

जागतीकीरणाने लोकशाही व एकंदरीतच राजकीय व्यवस्थेवरच मोठा आघात केला आहे. भारतीय राजकारणाचा एकुण पोत बदलण्याचे काम या जागतीकीकरणाच्या प्रक्रियेने केले आहे. कारण जागतीकीकरणाच्या पुर्वीचे राजकारण मुद्देआधारित [illegible]

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ) | Special Issue No. 46 | ISSN 2349-638x

जागतिकीकरणानंतर लिंगभेदाची समस्या

प्रा.बोडके शितल लहू
समाजशास्त्र विभाग
तुळजाभवानी महाविद्यालय,तुळजापुर

प्रस्तावना -

जागतिकीकारण ही एक प्रक्रिया आहे एक आर्थिक प्रक्रिया जागतिकीकरणाची जरी सुरुवात झाली असली तरी सामाजिक, राजकीय सांस्कृतिक क्षेत्रामध्ये हस्तक्षेप करणारी ही प्रक्रिया आहे असे सिध्द झाले आहे. जागतिकरणाने सर्व क्षेत्र व्यापून टाकले आहेत. जीवघेणी स्पर्धा, मुक्त बाजारपेठ, पराकोटीचा व्यक्ती स्वातंत्र्यवाद, उपभोगवादी संस्कृती, बाजार प्रेरित व्यवहार वस्तू व माहितीची देवाण-घेवाण ही जागतिकीकरणाची वैशिष्टय आहेत. 1991 पासून भारतात नवीन आर्थिक धोरण स्वीकारले वैास्तवात देशातील गरीब माणसाचा चेहरा समोर ठेऊन नवीन आर्थिक धोरणाचा स्वीकार केला आाणि हा मूलभूत पैलू म्हणजे जागतिकीकरण होय. जागतिकीकरणानंतर फक्त आर्थिक बाबीलाच धक्का बसला नाही तर भारतीय संविधान, समानरचना, सामाजिक न्याय, नियोजनबध्द विकास,मूलभूत अधिकार इ. जबर हादरे बसले आहेत.थोडक्यात जागतिकीकरणामुळे आर्थिक, राजकीय, सामाजिक,सांस्कृतिक क्षेत्रावंर तीव्र परिणाम झाले आहेत. जागतिकीकरणाद्वारा सामाजिक संस्थेवर अनेक परिणाम झाले आहेत. त्यामध्ये विशेष करुन स्त्रियांच्या जीवणावरही परिणाम झाले आहेत.

आंतरराष्ट्रीय महिला दशकामुळे 1975 ते 1985 सर्वसाधारण महिला वरील समाजशास्त्रीय साहित्याला चांगले उत्तेजन मिळाले, त्यांचे समाजातील स्थान,लिंगावर आधारित केल्या जाणा-या भेदभावामुळे निर्माण होणारे मुद्दे आणि विशेषत: म्हणजे असमानतेची वागणूक, इंडियन कौन्सिल ऑफ सोशल सायन्स रिसर्च ने लिंगावर आधारित अभ्यासांना एकूण कार्यक्रमामध्ये विशेष प्राधान्य दिले आहे.

युनिव्हर्सिटी ग्रॅंट्स कमिशन ने (छक्र) सुध्दा लिंग आधारीत अभ्यासकांना अगक्रम दिला आहे. महत्वाच्या अनेक विद्यापीठांनी स्त्रीया साठीच्या अभ्यासासाठी केंद्र चालू केली आहेत. 1980 साली सेटंर फॉर वुमेन्स डेव्हलपमेंट स्टडीज, या स्त्रियावर लक्ष केंद्रित करणा-या शोध संस्थेची आयसीएसएसआर च्या मदतीने स्थापना करण्यात एक शैक्षणिक पत्रिका सुध्दा आहे. वुमेन्स स्टडीज ऑफ वुमेन्स डेव्हलपमेंट ने या विषयावर स्त्रियासंबधीचे अभ्यास आणि स्त्रियांची प्रगती, आसीएसएसआर ने प्रायोजित केलेल्या मालविका कार्लेकर (2000) यांच्या साहित्याच्या एका सर्वेक्षणाने 1990 पर्यंतच्या अभ्यासाचा मागोवा घेतला आहे. या क्षेत्रात पुढे करता येण्याजोग्या आवश्यक त्या दृष्टीने हया सर्वेक्षणाने मोल फार आहे. आता आमच्याकडे स्टीप ग्रंथकोशासह स्त्रियांच्या अभ्यासासंबंधी काही संग्रह आहेत.

1980 ते 1990 च्या दरम्यान लिंगासंबंधीच्या विविध पैलूवर प्रकाश टाकणा-या समाजशास्त्रीय साहित्यामध्ये लक्षात घेण्या इतपत वाढ झली आहे. तरीही आज मोठया प्रमाणात भारतीय समाजात लिंगभेदाची समस्या जाणवत आहे. जागतिकीकरणानंतर आसाममध्ये समाजिक,आर्थिक : शैक्षणिक विकास साधण्याचा प्रयत्न केला गेला आहे. पण तरीही आज भारतात जगातिकीकरणात तशी लिंगभेदाची समस्या आढळून येते त्यासाठी अनेक कारणे कारणीभूत आहेत. आणि ही लिंग समस्या नष्ठ करण्यासाठी प्रयत्न चालू आहेत. तरीही समस्या जास्त आढळून येत आहे. प्रस्तूत संशोधनामध्ये जागतिकरणामुळे लिंगभेदाची समस्या कशी निर्माण झाली आहे यांचा शोध घेण्यात आला आहे.

शोध निबंधाची उद्दीष्टे -

1) लिंगभाव असमानतेचा अर्थ समजून घेणे.
2) लिंगभाव असमानतेमुळे स्त्रियांना निर्माण झालेल्या समस्या स्पष्ट करणे.

संशोधन पध्दती -

प्रस्तूत शोध निबंध लिहिताना तथ्य संकलनासाठी दुय्यम स्त्रोताचा उपयोग केला आहे. यासंबंधीत विषयावरील संदर्भ ग्रंथ, तसेच वृत्तपत्रांचा आधार घेण्यात आला आहे.

लिंगभाव असमानतेचा अर्थ-

लिंग हा जीवशास्त्रीय अर्थ व्यक्त करणारा शब्द आहे.लिंग हा नैसर्गिक गुण विशेष आहे.लिंगभाव हा सामजिक सांस्कृतिक गुणविशेष आहे. समाजशास्त्रात लिंग या संज्ञेचा सर्व प्रथम उपयोग आर्केलने 1972 मध्ये प्रकाशित झालेल्या सेक्स, जेंडर ॲण्ड सोसायटी या ग्रंथात केला आहे. स्त्री आणि पुरुष यांच्यामध्ये सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टीकोनातून ज्या भिन्नता आहेत त्या व्यक्त करण्यासाठी लिंगभाव या संकल्पानेचा उपयोग केला जातो. तसेच लिंगभाव या एकाच आधारावर स्त्री आणि पुरुष यांच्यामध्ये सामाजिक सांस्कृतिक कर्तव्ये आणि हक्काबाबत भासणारी असमानतेची स्थिती म्हणजे लिंगभाव असमानता होय.

जैविक लिंगभेदाप्रमाणे सामाजिकदृष्टया करण्याचा फरक अर्थात ,पुरुष व स्त्रिया असा फरक होय.

समाजशास्त्रीय अर्थ सामाजिकदृष्टया पुरुष व स्त्रिया असा समाजाच्या दोन प्रवर्गामध्ये केला जाणारा फरक म्हणजे लिंगभेद होय.

4) स्त्री पुरुष विषमता :-

भारतातील 2011 जनगनेनूसार एकूण लोकसंख्येमध्ये महिलांची संध्या 48.46 टक्केइतकी आहे. मात्र शतकानुशतके सामाजिक, आर्थिक व राजकीय जीवनापासून स्त्रियांना दुर ठेवण्यात आले होते. समाजातील सर्व स्तरावर त्यांना दुय्यम दर्जा देऊन प्रचंड त्रास सहन करावा लागला व स्त्री पुरुष असमानता निर्माण करण्यात आली भारतीय स्त्रियांचा निम्न दर्जा जन्मापासून मृत्यूपर्यंत असल्याचे आढळून येते. म्हणजेच जन्मपूर्व गर्भलिंगनिदान परीक्षण, स्त्रीभ्रुणहत्त्या, मुलींचा जन्म नकोसा, मुलास प्राधान्य, आरोग्य व शिक्षण याबाबत मुलगा-मुलगी अशा भेद संपत्तीवरील अधिकार नाकारणे, विवाह व घटस्फोटाबाबत बंधने विधवांची सामाजिक स्थिती, कुटूंबाबाहेर कामे करण्यास बंधने आणि राजकीय क्षेत्रात दुय्यम स्थान अशी विविध स्वरुपे आढळून येतात म्हणजेच माहिलांना घटनात्मक व कायदयाच्या दृष्टीने समान हक्क दिलेले असले तरी सामाजिक कारणामुळे या हक्कापासून महिला आजही वंचित आहेत आजही त्यांना पुरुषांपेक्षा कमी लेखले जाते.

5) बलात्कार व विणयभंग :-

भारतीय दंड विधान संहितेनुसार महिलांच्या सुरक्षेसाठी सरासरी दरवर्षी एक कायदा केला जातो.तरीसुध्दा प्रत्यक्षात स्थिती कशी आहे की दरदिवशी महिलावरील उपरोक्षीत स्वरुपाचे गुन्हे वाढतच आहेत. या पाठीमागे असणारे सर्वात महत्वाचे कारण म्हणजे पुरुषी सानसिकता व अस्तित्वात असणाऱ्या महिला सुरक्षाविषयक कायदयांचा अपूरेपणा आहे.

इ.स.	2009	2010	2011	2012
बलात्कार	1483	1599	1701	1839
विनयभंग	3116	3661	3794	3935
लैंगिक अत्याचार	1099	1180	1071	1294

महाराष्ट्रतील महिला अत्याचार गुन्हे नोंद

6) मुलीचा व्यापार व देहविक्री -

हे प्रश्न परस्पराशी निकटचे संबंधित आहेत. याचे कारण म्हणजे वेश्याव्यवसाय व देहविक्रीसाठी आलेल्या एकूण महिलापैकी 70 टक्के महिला या मुलींच्या अनैतिक व्यापारातून येतात यासाठी अनैतिक व्यापार कायदा 1956 मध्ये अस्तित्वात आला आहे. यामध्ये वेश्यागृह चालंबणे,कमाईवर जगणे व्यावसायासाठी व्यक्ति मिळवूण देणे इ. मुद्याचा समावेश आहे.नेपाळ, अफगाणिस्तान, बांगलादेश, या देशातून होणारी मुलीची तस्करी थांबवली पाहिजे यामुळे आज दिवसेंदिवस मूलीचे प्रमाण कमी होत चालले आहे. आज ही स्त्रीकडे पाहण्याचा दृष्टीकोण उपभोग्य वस्तू म्हणूनच आहे.

7) महिलांवरील हिंसाचार :-

भारतातील पुरुष प्रधाण संस्कृतीत स्त्रियांना शारिरीक अबला समजले जाते पण 1991 नंतर जागतिकीकरण झाले स्त्रियांना पुरुषाबरोबर समान हक्क कायदयाने दिला आहे. मात्र प्रत्यक्षात त्याचा वापर स्त्रियांना होत नाही. आजही भारतात स्त्रियांना पुरुषापेक्षा कमी लेखले जाते तिच्यावर हिंसाचारात्मक वर्तन केले जाते. स्त्रियांना कौटूंबिक व कुटूंबाबाहेर विविध प्रकारच्या हिंसाचाराला सामोरे जावे लागते. कडक कायदे व स्त्रियांचे आर्थिक सबलीकरण हे महिलाविरुध्द हिंसाचार कमी करण्याचे माध्यम आहे.

निष्कर्ष :-

1) भारतातील लिंगभेद समस्येला सामाजिक धार्मिकता कारणीभूत आहे.
2) समाजावर आजही रुढी परंपरा पगडा आहे.

सारांश -

जागतिकीकरणानंतर वरील या मूलभूत स्वरुपाच्या समस्या आहेत शिवाय वेगवेगळया समस्यांना महिलांना सामारे जावे लागते. समाजातील प्रत्येक व्यक्तिने हे ठरवायला हवे की कोणत्याही स्त्रीच्या असुरक्षितेचे आणि सामाजिक वंचतेचे मी कारण बनणार नाही. तरच ही भारतातील लिंगभेदाची समस्या मिटेल. नाहीतर एक दिवस ही समस्या समाजविघातक ठरेल.

संदर्भ -

1) महिला सशक्तीकरण - मानचंद खंडेला
2) महिला व विकास - यशदा
3) सामाजिक समस्या - राम आहुजा
4) स्त्रिया,समाज आणि राजकारण - डॉ.भारती पाटील आणि राजकारण

सर्वसाधारण जागतिकीकरण म्हणजे अर्थ व्यवस्थेमध्ये खुलेपणा आणणे होय. जागतिकीकरणामुळे विविध देशांची अर्थव्यवस्था परस्परांवर अवलंबून राहते. जागतिकीकरणामुळे आर्थिक विकासाला प्रेरणा मिळाली, आंतरराष्ट्रीय व्यापारात वाढ झाली, उत्पादन क्षमता वाढली असे जरी असले तरी समाज जीवनावर देखील जागतिकीकरणाचा परिणाम झाला आहे. भारतात 1991 नंतर जागतिकीकरणाची प्रक्रिया सुरु झाली. आज जवळ जवळ आर्थिकते बरोबरच मानवी जीवनाच्या प्रत्येक क्षेत्रात तिचा प्रवेश झालेला आहे. कुटूंबासारख्या पारंपारिक घटकांवर परिणाम होऊन कुटूंबात नवीन बदलाचा प्रवाह सुरु झाला आहे. तो जागतिकीकरणामुळे तो असा.

1. पितृसत्ताक अधिकाराचा ऱ्हास होत आहे.
2. कुटूंबातील सदस्य संख्या कमी झालेली आहे.
3. कुटूंबातील स्त्रीयांचा दर्जा पुरुषांच्या बरोबरीचा दिसतो.
4. आधुनिक कुटूंबात व्यक्तीवादाचा स्वीकार केला जात आहे.
5. आजच्या कुटूंबात अस्थिरतेचे प्रमाण वाढत आहे.
6. संयुक्त कुटूंबा ऐवजी प्राथमिक कुटूंबाचे महत्व वाढत आहे.
7. कुटूंब सदस्यांच्यावर कुटूंब नियंत्रणाचा प्रभाव कमी होऊन दुय्यम साधनांच्याकरवी वर्तन नियंत्रण केले जात आहे.

भारतासारख्या कृषि प्रधान देशात कुटूंबाला अनन्य साधारण महत्व होते. व्यक्तीची ओळख कुटूंबावरुनच होत होती. संयुक्त कुटूंब पद्धत ही ग्रामीण जीवनाचे वैभव होते. कमीत कमी दोन ते तीन पिढ्यांचे लोक एकत्रित राहत होते. परंतु जागतिकीकरणामुळे कुटूंब संस्थेत रचनात्मक व कार्यात्मक बदल होत आहेत.

संदर्भ सूची :

1. भारतीय समाज व्यवस्था - दा.धो.काचोळे
2. भारतीय समाजाचा परिचय - प्रा.ए.वाय.कोंडेकर
3. भारतीय समाजव्यवस्था - प्रकाश बोबडे

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR EST. June 71

2018-19



Scanned by CamScanner

आर. एन. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : नववे अंक : पहिला

जुलै-ऑगस्ट-सप्टेंबर २०१८

संपादक

डॉ. नामासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक

डॉ. अरुणा प्रभुणे

टिपेशी

श्री. संतोष कडोळे

संपादक मंडळ

डॉ. सतीश कदम

डॉ. दीपक चिद्दरवार

डॉ. विजय वारखड

डॉ. महादेव वाळुंज

प्रकाशक : श्री. रेखाताई नामासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रमणे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.

मुद्रक : कॉमपिन्ट कल्पना प्रा. लि. ४६१/४ सदाशिव पेठ, पुणे ३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नामासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रमणे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१

Email : suryavanshinamasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/- द्विवार्षिक वर्गणी : रु. १००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु. २०००/- अंकाचे मूल्य : रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR EST. 1977

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929

AKSHAR WANGMAY

Year : 9 Volume : 1

July-August-September 2018

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Well-wisher
Mr. Santosh Kadole

Editorial Board

Dr. Vijay Warkad
Dr. Satish Kadam
Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Mahadeo Walunj

Publisher : Smt. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukmi Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
Printer : Comp- Print Kalpana Private Ltd , 461/4 Sadashiv Peth, Pune - 30

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukmi Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/-
Two years : Rs. 900/-
Five Years : Rs. 2000/-
Current Volume : Rs. 125/-

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

2018-19



TULJARAM MAHAVIDYALAYA
TULJAPUR
Scanned by CamScanner

आर. एन्. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : नववे अंक : दुसरा

ऑक्टोबर-नोव्हेंबर-डिसेंबर २०१८

संपादक

डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक

डॉ. अरुण प्रभुणे

हितैशी

श्री. संतोष कडोळे

संपादक मंडळ

डॉ. सतीश कदम

डॉ. दीपक चिद्दरवार

डॉ. विजय वारकड

डॉ. महादेव वाळुंज

प्रकाशक : सौ. रेणुकाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.

मुद्रक : कॉम्पप्रिन्ट कल्पना प्रा. लि. ४६१/४ सदाशिव पेठ, पुणे ३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१

E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/-
द्विवार्षिक वर्गणी : रु. ९००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु. २०००/-
अंकाचे मूल्य : रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929

AKSHAR WANGMAY

Year : 9 Volume : 2

October-November-December 2018

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Well-wisher
Mr. Santosh Kadole

Editorial Board

Dr. Vijay Warkad
Dr. Satish Kadam
Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Mahadeo Walunj

Publisher : Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
Printer : Comp- Print Kalpana Private Ltd., 461/4 Sadashiv Peth, Pune - 30

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/- **Five Years : Rs. 2000/-**
Two years : Rs. 900/- **Current Volume : Rs. 125/-**

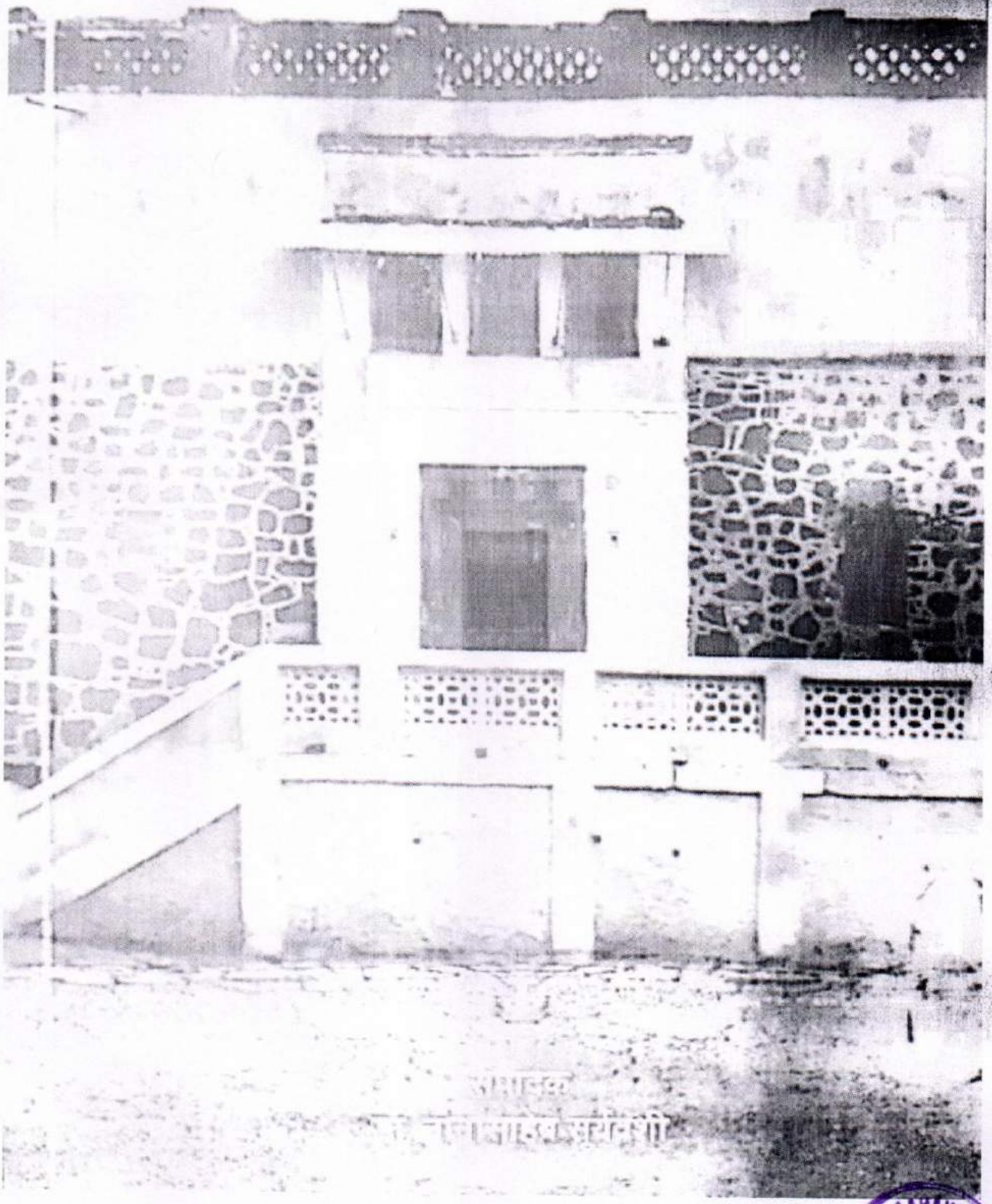
* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

2018-19

अक्षर वाङ्मय

अप्रिल - मे - जून २०१८
वर्ष : आठवे अक : चौथा



Scanned by CamScanner

आर. एन. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : आठवे अंक : चौथा

एप्रिल-मे-जून २०१८

संपादक

डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक
डॉ. अरुण प्रभुणे

हितैशी
श्री. संतोष कडोळे

संपादक मंडळ

डॉ. सतीश कदम
डॉ. विजय वारकड
डॉ. दीपक चिद्दरवार
डॉ. महादेव वाळुंज

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, धोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.

मुद्रक : कॉम्पप्रिन्ट कल्पना प्रा. लि. ४६१/४ सदाशिव पेठ, पुणे ३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, धोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/-
द्विवार्षिक वर्गणी : रु. ९००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु.२०००/-
अंकाचे मूल्य : रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929

AKSHAR WANGMAY

Year : 8 Volume : 4
April-May-June 2018

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Well-wisher
Mr. Santosh Kadole

Editorial Board

Dr. Vijay Warkad
Dr. Satish Kadam
Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Mahadeo Walunj

Publisher : Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
Printer : Comp- Print Kalpana Private Ltd., 461/4 Sadashiv Peth, Pune - 30

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi 'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

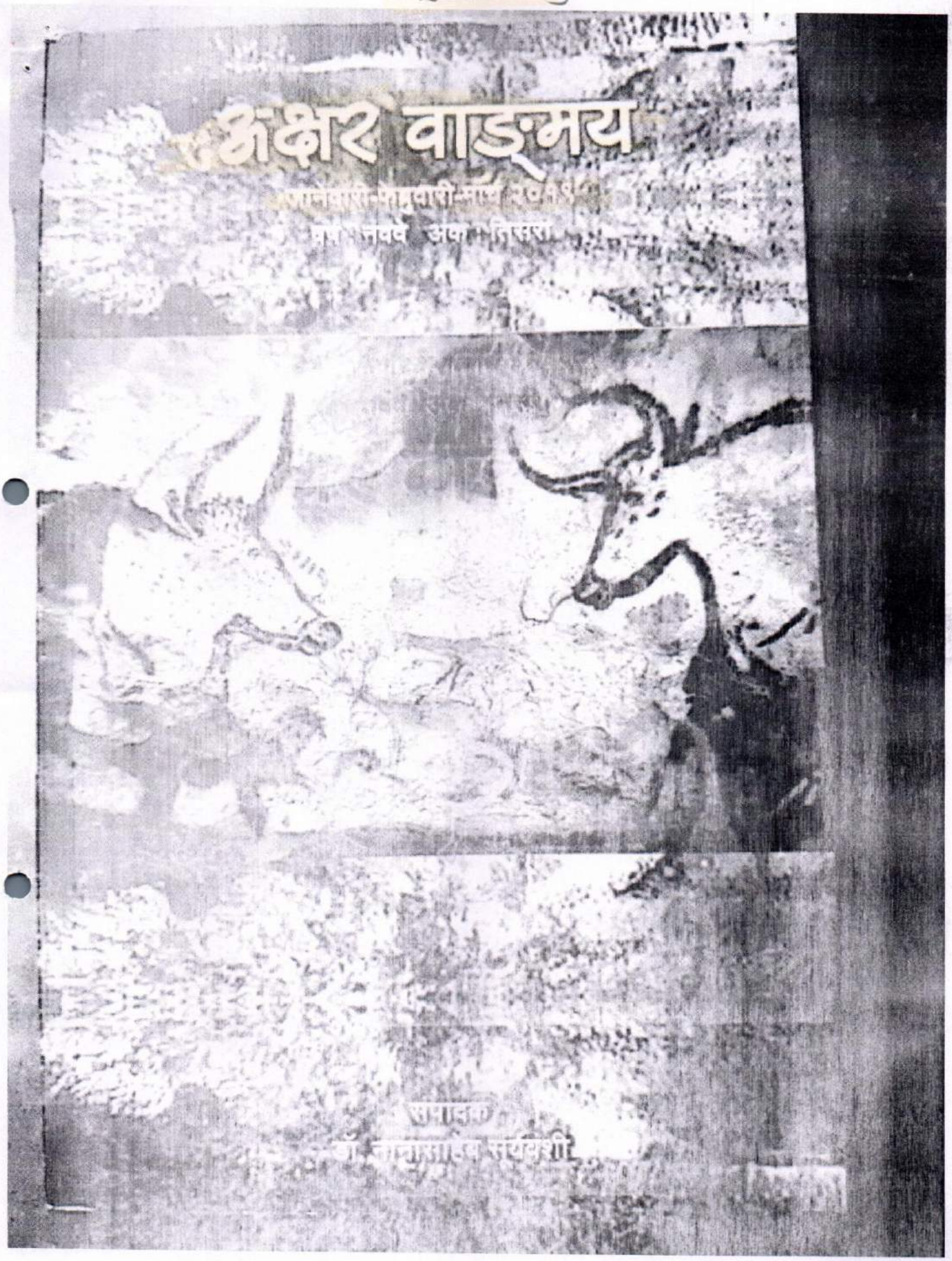
Subscription Rates Yearly : Rs. 500/- **Five Years :** Rs. 2000/-
Two years : Rs. 900/- **Current Volume :** Rs. 125/-

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles

MAHAVIDYALAYA

Scanned by CamScanner

2018-19



Scanned by CamScanner

TULJARAM MAHAVIDYALAYA

आर. एन. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : नववे अंक : तिसरा

जानेवारी-फेब्रुवारी-मार्च २०१९

संपादक

डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक

डॉ. अरुण प्रभुणे

हितैषी

श्री. संतोष कडोळे

संपादक मंडळ

डॉ. सतीश कदम

डॉ. विजय खरकड

डॉ. दीपक चिद्दरवार

डॉ. महादेव वाळुंज

प्रकाशक : सौ. शकुंतलाई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, धोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.

मुद्रक : कॉम्पप्रिन्ट कल्पना प्रा. लि. ४६१/४ सदाशिव पेठ, पुणे ३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, धोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु. २०००/-

द्विवार्षिक वर्गणी : रु. ९००/-
अंकाचे मूल्य : रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखनांचे स्वतः लेखकांचा असतो. संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. - MAHMAR-36829-2010

AKSHAR WANGMAY

Year : 9 Volume : 3
January-February-March 2019

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Well-wisher
Mr. Santosh Kadole

Editorial Board

Dr. Vijay Warkad
Dr. Satish Kadam
Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Mahadeo Walunj

Publisher : Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
Printer : Comp- Print Kalpana Private Ltd., 461/4 Sadashiv Peth, Pune - 30

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/-
Two years : Rs. 900/-
Five Years : Rs. 2000/-
Current Volume : Rs. 125/-

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

2018-19

143

ISSN 2349-638x
Impact Factor 5.707

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL

Email id : aiirjpramod@gmail.com

www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 45

MAHAVIDYALAYA TULJAPUR EST. June 71

Impact Factor-5.707

ISSN-2349-638x

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

February- 2019

Executive Editor

Dr. S. M. Maner

Principal

Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur,

Dist. Osmanabad (M. S.) India

Chief Editor

Pramod P. Tandale

Co-Editor

Prof. V. H. Chavan

Dept. of Hindi

Maj. Dr. Y. A. Doke

Head, Dept. of English



No part of this Special Issue shall be copied, reproduced or transmitted in any form or any means, such as Printed material, CD – DVD / Audio / Video Cassettes or Electronic / Mechanical, induding photo, copying, recording or by any information storage and retrieval system, at any portal, website etc; Without prior permission.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638x
Special Issue No.45

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA
TULJAPUR
EST. 71

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
Impact factor -5.707

Special Issue Editorial Board

Co-Editors

Dr. C. R. Dapke : Dept. of English, Tuljabhavani Mahavidyalaya,Tuljapur
Dr. M. R. Ade : Dept. of Hindi, Tuljabhavani Mahavidyalaya,Tuljapur
Smt. Dr. Farjana M. Tamboli : Dept. of English, Tuljabhavani Mahavidyalaya,Tuljapur

Advisory Board

Prin. Dr. A. A. Karande, Satara
Prin. Dr. Anil Patil, AKMM, Ichalkaranji
Prin. Dr. Babasaheb Dudhale, Dr. Patangrao Kadam Mahavidyalaya, Pen
Prin. Dr.Milind Hujare, Dattajirao Kadam Mahavidyalaya, Ichalkaranji
Prin. Dr.Shaikh Samad, Ex-Principal, Vasantrao Naik College, Aurangabad
Prin. Dr. S.Y. Hongekar, Vivekanand College, Kolhapur
Prin. Dr. R. R. Kumbhar, Vasantraodada Patil Mahavidyalaya, Tasgaon
Prin. Dr. S. B. Kurane, Samajbhushan Ganpatrao Kalbhore Mahavidyalaya, Lonikalbhore
Dr. Shruti Joshi, Dept. of English, Vivekanand College, Kolhapur
Dr. U. B. Ambure, Head, Department English, Dr. B. A. M. U. Aurangabad

Review Committee

Dr. T. L. Barbole. Head, Dept. of Economics.



Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ) | Special Issue No. 45 | ISSN 2349-638x

Sr.No.	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
1.	Dr. N. B. Pawar	Globalization and Indian Society	1
2.	Dr. Uttam Ambhore Ratnamala R. Pagare	Struggles of Minority: A Study of Carlos Bulosan"s America Is In The Heart: A Personal History	4
3.	Dr. Uttam Ambhore Priyanka R. Nikam	Maxine Hong. Kingston's the Woman Warrior: An Attempt of Constructing Ethnic Identity	8
4.	Dr. Umakanth S. Patil Shashikant U. Patil	Issues & Concerns of Farmers In Indian Politics	11
5.	Dr. Kalpana Girish Gangatirkar	The Reflections of Patriarchal Predomination in Shashi Deshpande"s *The Dark Holds No Terrors*	13
6.	Dr. Swaleha M. Attar	Mother-Daughter Relationship in Select Novels of Young Adult Fiction	17
7.	Dr. Anupama Prakash Pol	Effects Of Globalization On Indian Women And Indian Literature	20
8.	Dr.F.A.Siddiqui Mr. Ibrahim Abdu Mohammed Maslamani	Problem of Minority in Mulk Raj Anand`s Untouchable	22
9.	Dr. Sunil V. Pawar	The Shepherd"s Hut: A Teenager"s Tale	24
10.	Dr. Yashwant A. Doke Arun Govindrao Mitrgotri	Parent-Children Relationship in the Present Scenario	26
11.	Dr. Anita Mudkanna	Complexity of Human Relationship in Anita Desai"s Novel "Cry*the Peacock*"	28
12.	Deepak G. Todkari	A Tragic Trauma: Reflection of Womanhood as a Minority in the work of Kamala Das	30
13.	Dr. Urmila. G. Dharashive	The Frontier In American Literature And Culture	32
14.	Mr. Madhav D. Shrimangale	Chitra Banerjee Divakaruni"s Arranged Marriage: A Global Perspective	35
15.	Dr. Prashant Subhash Mothe	Communication Gap And Cultural Crash In Jhumpa Lahiri's Interpreter Of Maladies	38

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR EST. 1971

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ) | Special Issue No. 45 | ISSN 2349-638x

21.	Mr. Arvind D. Patil	Gender Discrimination in Maya Angelou"s Selected Autobiographical Work: A Feminist Persective	56
22.	Dr. Pranjali Pandurang Bharate	Meaning And Explanation of Gender Discrimination	59
23.	Dr. Manohar D. Dugaje	Oppression of Women in Vijay Tendulkar"s *Kamala* and *Kanyadaan*	61
24.	Dr. Farjana Motilal Tamboli	Parenting in Modern World	64
25.	Dr. Rameshwar Rathod	Psychological Conflict In Sadanand Deshmukh"s Baromaas	66
26.	Dr. D. S. Choudhari Ms. M. B. Ghogare	The 21st Century Relevance of the Assimilatory View in Anna Bhau Sathe"s Short Story *Sapla* or *The Trap*	68
27.	Dr. Vaibhav Popatrao Agale	Exploitation and Supression of Women In Bapsi Sidhwa"s *Ice-Candy- Man*	70
28.	Adel Saleh Naji Muthanna Maj.Dr.Yashwant A. Doke	An Analysis of Fading Parent-Child Relationship in the Essay *TV as Babysitter* by Jerzy kosinski	72
29.	Dr. Anuradha Jagdale	Commercialization of Education : Of Globalization	74
30.	Ajit S. Pachore	Depiction of Protest in Marathi Dalit Literature	76
31.	Mrs. Prof. K. L.Shinde	Emergence of Voices: A Study of Dalit Literature	78
32.	Gokul Hanumantrao Surwase	A critical discourse on Dalit Literature and Literary Theory	82
33.	Prof. Devendra Vitthal Madane	Issues and Concerns Of Farmers In Indian Politics	84
34.	Prof. Nagesh Sambhaji Gaikwad	The Impact of Globalization on Literature: A Critical Study	86
35.	Dr. Sagar Sadashiv Waghmare Dr. Ani John	Gricean Approach to Beckett"s Waiting for Godot	88
	Dhanaji Vithalrao Thore	A Study Political Mission of Dalit	91

BHIMARHAVANI MAHAVIDYALAYA TULJAPUR Est. June 71

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ) | Special Issue No. 45 | ISSN 2349-638x

Dalit Literature: The Agony of Discrimination

Dr. Chhaya R. Dapke
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur.

Abstract

The word Dalit drives from the Sanskrit language that means suppressed or crushed. The Oxford dictionary defines Dalit as a member of the caste that is considered the lowest and that has the fewest advantages. The main concern of Dalit Literature is the protest against the ageless bondage of oppression. The agony, represented by Dalit writers is not that of an individual but of the outcast society.

Keywords :- Dalit , exploitation, protest

Dalit is a term used to address a person belonging to the lowest caste according to the Indian Caste System. Caste system in India has a history of more than 3000 years. In the name of caste , purity and impurity dalits (untouchables) were denied to exercise their rights to participate in religious ceremonies. The notorious text, Manusmriti, codified the then prevailing social norms and consigned the shudras, atishudras and women to a thoroughly unequal and miserable existence. They were denied prestigious job and had to cope up with menial occupation, like leather works, butchering, and lower grade works. And they were also denied to access public amenities, like wells, rivers, and schools. They were even restricted from entering temples.

The term dalits was in use as a translation for the British Raj census classification of Depressed Classes prior to 1935. It was popularised by the economist and great thinker and reformer B. R. Ambedkar(1891–1956), who included all depressed people irrespective of their caste into the definition of dalits. Socio-religious movements in India advocated for the liberation of the Dalits from the oppressive forces. DR B.R Ambedkar also strongly stood for the eradication of exploitation and for the equal status in the society.

Dalit literature emerged in the 1960s, starting with the Marathi language, and soon appeared in Hindi, Kanada, Telugu, Bangla and Tamil languages, through narratives such as poems, short stories, and, most, autobiographies, which stood out due to their stark portrayal of reality of their lives. Dalit literature is not a mere fiction. It is part of the larger movement to bring about changes. Dalit writings are based on real life experience. It expresses anger and resentment against the social inequality. Dalit writings deal with not only social affairs but it also deals with an economic matter, this economic condition paves the way for social exploitation. Most of the Dalit autobiographies have helped to interpret socio-cultural aspects of Dalit life.

The narrative reconstruction is a creative assertion of one's identity. It is exactly the creative portrayal of bitter experiences of Dalits, hoping for a total metamorphosis in thought and minds sets of the society towards underprivileged sections of the society. "Dalit literature is one which acquaints people with the caste system and untouchability in India. It matters with a sociological point of view and is related to the principles of negativity, rebellion, and loyalty to science, thus finally ending as revolutionary". Rejection and revolt in Dalit literature have been birthed from the womb of Dalits' pain. Dalit literature is often compared with African-American Literature especially in its depiction of issues of racial segregation and injustice, as seen in slave narratives.Asserting the importance of Dalit Literature, Arundhati Roy observes that " I do believe that in India we practice a form of apartheid that goes on noticed by the rest of the world.

Conclusion

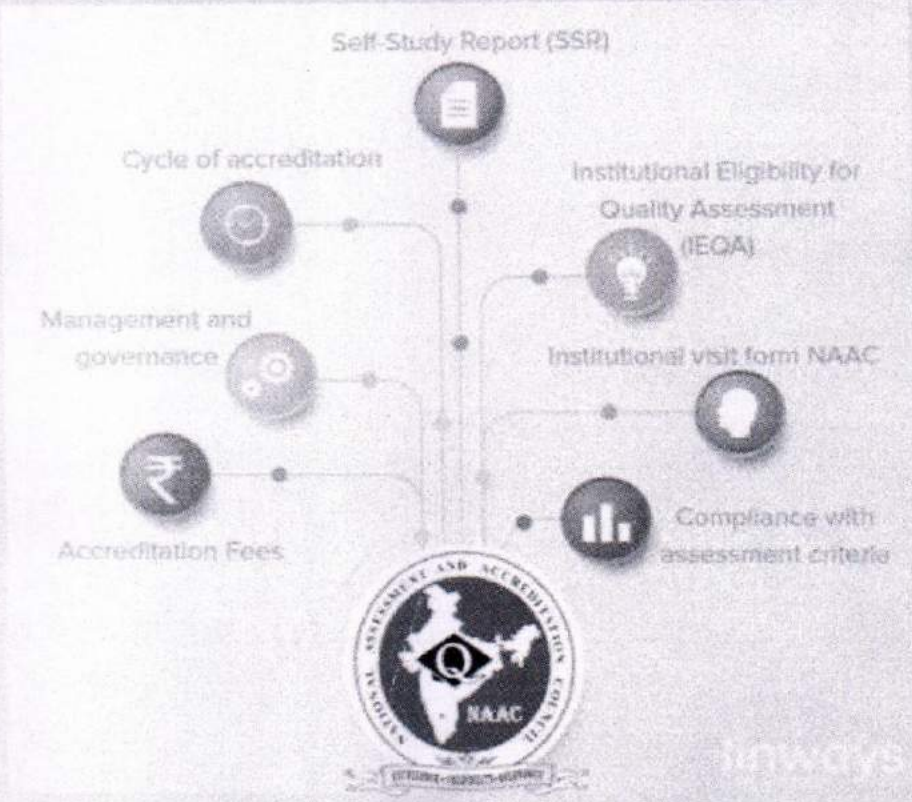
In short, Dalit literature represents the miseries and oppression, experienced by Dalit communities for centuries in India. Though there are different genres of Dalit literature, each represents bitter experience of Dalit with a mission to liberate Dalit from the yoke of oppressive forces and their exploitation. Post independent events and fundamental transformation changed the life of people. Efforts by Mahatma Gandhi and Dr. Ambedkar have brought uplift in their social status. They also encouraged education of the Dalits that ultimately [illegible]

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA

2019-20.

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION
RESEARCH JOURNEY
INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL
September - 2019 SPECIAL ISSUE -193 (B)

Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India



Guest Editor :
Dr. Sopan Nimbore
Principal,
ATSPM's Arts, Commerce & Science College, Ashti, Dist. Beed (M.S.) India

Associate Editor :
Prof. Niwrutti Nanwate
Head, Department of Economics
ATSPM's Arts, Commerce & Science College, Ashti, Dist. Beed (M.S.) India

Executive Editor :
Dr. Abhay Shinde
Co-ordinator, IQAC
ATSPM's Arts, Commerce & Science College, Ashti, Dist. Beed (M.S.) India

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Impact Factor – 6.261 **ISSN – 2348-7143**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

September-2019 Special Issue – 193 (B)

Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India

Guest Editor :
Dr. Sopan Nimbore
Principal
ATSPM's Arts, Commerce & Science College, Ashti
Dist. Beed (M.S.) India

Executive Editor -
Dr. Abhay Shinde
Coordinator, IQAC
ATSPM's Arts, Commerce & Science College, Ashti
Dist. Beed (M.S.) India

Associate Editor -
Prof. Niwrutti Nanwate
Head, Department of Economics
ATSPM's Arts, Commerce & Science College, Ashti
Dist. Beed (M.S.) India

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar **(Yeola)**

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 800/-

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	Recommendation for Improving Quality of Indian Higher Education	Dr. D. K. Khokle	05
2	Assessment and Accreditation Benefits to Higher Education Institutions	Dr.Bhimrao Mankare	08
3	Skill Based Learning: Necessity for Employability	Dr. Manisha Kotgire	11
4	ICT Based Teaching and Learning in Education	Dr. N.B. Kale	14
5	Role of NAAC in Higher Education to Enhance Quality Education	Dr. Sanjay Sawate	17
6	The Role of Governance Leadership and Management in the Process of NAAC	Prof. Sunil Mhankale	24
7	Best Practices of Library: Key to Better Performance in NAAC	Dr. Anuja Kastikar	27
8	Role of ICT Teaching in Quality Improvement	Dr. Gorakhnath Phasale	30
9	Challenges Facing NAAC in Rural Area	Prof. Rupesh Wankhade	37
10	Skill Development for Employments in India	Dr. Prakash Rodiya	40
11	Revised Process of Assessment and Accreditation of Affiliated Colleges by NAAC- A Step towards Quality Enhancement	Dr. Shivaji Pawar	44
12	Role of Students and Teachers in Teaching Learning	Niwrutti Nanwate	48
13	Institutional Best Practices Enrich Students, Community and Nation	Dr.G S Bhopalkar, Dr.B S Waghmare	52
14	Information Communication Technology in Higher Education	Dr. Madan Shelke	56
15	Operational Function of IQAC	Dr. Sakharam Wandhare	59
16	Scenario of Present Education System of India	Prof. Anant Khose	63
17	Role of ICT in Higher Education for the 21st Century	Prof. Ramesh Bharudkar	68
18	Quality Assurance in the Regualar Working Process of College	Dr. Rajaram Sontakke	71
19	Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India	Prof. Shubhangi Khude	73
20	Role of IQAC in Higher Educational Institute	Prof. Pathan Jainullakhan, Md. Hayatkhan	75
21	Role of Internal Quality Assurance Cell (IQAC)	Prin. Dr. Sharda Molawane	77
22	NAAC Assessment : A Boost for Higher Education	V. S. Suryawanshi & V. S. Shinde	80
23	Use in ICT Based Teaching and Learning	Prof. Jawahar Chaudhari	84
24	Impact of NAAC on College Library Development	S. A. Mutkule	88
25	ICT Education : Its Benefits and Difficulties	Dr. B. M. Chavan.	93
26	Strategies for Evaluating Teaching Quality	Dr. Mangesh Shirsath	98
27	Teaching and Learning with Technology : Effectiveness of ICT	Dr. S. N. Waghule	101
28	Skill India : Mission towards Employment's	Dr. S. V. Panchagalle & Dr. R. D.Gaikwad	106
29	Naac Accredatation	Mr. Pratap Ranshing	110
30	Higher Education – A Value Building!	Mr.M.B.Gaikwad	113
31	Higher Education in India : Issues and Challenges	Krushna Kamble	116

ICT Based Teaching and Learning in Education

Dr. N.B. Kale
HoD., Dept of Commerce,
Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur
Email:- kalenetaji123@gmail.com
Mob:-9730414600

Introduction:

In 21st century, uses of ICT are growing faster in every field. Educations sector are not exempted from that. We can say that, it is a new footprint of Education sector to provide knowledge, Skills and culture with Information and Communication Technology. Information and communication technology in education is the most important mode of education that used information and communication technology to expand knowledge worldwide for final users though electronic media or Internet.

Today, lots of technologies are developed in education sector for sprite the knowledge, Skills and Culture from one to another. It is includes, electronic learning technology, Mobile learning technology, Internet learning technology or online learning technology etc.

Internet technology is the one of most powerful technology and mode of information and communication technology to provide the education to last users. Whether you're five or ninety five, the internet are given a lot of offer. Particularly we can say that, the topic is education, the resources on the internet are endless. Most of the colleges and education institutes in India are providing smart classroom, Audio-Video lab, Computer Lab, teleconferencing facilities etc. it is not sufficient in today's education environment. We need to do more efforts in education sectors to becoming education environment especially in rural area. It is possible with the help of use of ICT in teaching learning process. With the help of ICT, We can make the process of teaching and learning interactive with fewer dropouts.

There are various tools or techniques, we can use with ICT i.e. Power-Point presentations, smart classroom teaching, skill based online courses, use of Internet in teaching methods, Preparing Google classroom for online tests, online notes, online teaching videos etc. there are various tools or techniques, we can use in our education institutes with ICT and it is necessary for NAAC and NBA accreditation.

Mine research paper focused only on how to use Google classroom and its benefits in NAAC.

Objectives of research paper

Following are the objectives of mine research work.

1. To know about Google Classroom
2. To know how to use Google classroom
3. To know what is benefits of Google classroom on the point of view of NAAC.

Research methodology

Concern study deals with not only secondary data but also experimental studies primary data will be used. The investigator uses the secondary data it includes Books, magazines, journals, newspaper and internet.

The experimental study was done on B.Com faculties in the academic year 2018-19 and 2019-20. The data will be analysis and interpreted through charts, graphs and descriptive manner.

What is Google Classroom?

Google Classroom is a free web service provided by Google for Colleges or education institutes. The primary aims of Google classroom are to simplify, creating, distributing and grading assignments in a paperless way. Google classroom was announced on May 6, 2014, with a preview available for some members of Google's G Suite for Education program.

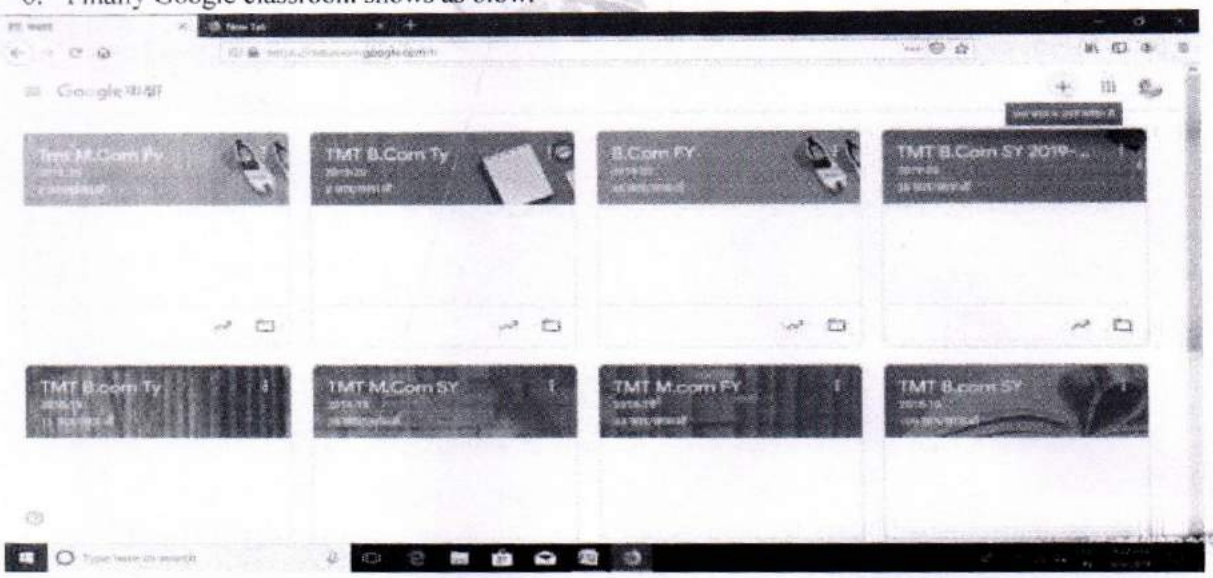
In simple words, Google Classroom is a visible classroom, which provides facilities to learner and teacher for online teaching through videos, Assignments, Notes, online test with Google Form etc on a single click.

On the point of view of NAAC and NBA accreditation, it is more helpful to simplify in teaching learning process with proper maintain records. Its includes, Online test record with analysis, feedback forms records with analysis, online video, online notes, online notices to students etc. it is much more helpful to systematic records maintaining with paperless.

How to use Google Classroom?

Lick that Whets App, face book and other social networking sides, it working as a same way. Students and teachers can link and shares any educational material or educational problems. each other to 24 hours and 365 days. Following methods you can use to create Google classroom and use.

1. Registered though departmental email. ID on Google Classroom Application.
2. Click on plus sing
3. Plus sing menu shows the create class or Join class
4. Select Create class option for creating class or Join class for students or teacher joining in class.
5. Then provide Google class information on that
6. Finally Google classroom shows as blow.



On this class you can share notes, video lectures, online test by using Google form etc.

Following features provided the Google classroom:

a) Provides for a paperless classroom

Google classroom provides paperless facility to teachers or students. Teacher can provide any information or notes to students or teachers both can intertie it.

b) Access to Google products such as Google Docs and Drive

Google classroom are working with Google products such as Google Docs, Google form, Google Drive etc. Google forms are helpful to taken online question paper exam and feedback from students with analysis.

c) Instant collaboration between teachers and students even outside the classroom
d) Simple to set up
e) Saves money
f) For teachers, being able to better track a student's progress

Benefits of Google Classroom to NAAC:

Following benefits provide the Google classroom on the point of view of NAAC.

a. Maintaining records about online test with analysis
b. Maintain records about video lectures or online notes etc.
c. Taken feedback from students online with analysis lick that NAAC.
d. Issuing notices to students about programs and other related to students.
e. Easy contact to students with email or mobile number
f. Social online survey through students with Google online form and maintain online records.
g. Online course we can start with the help of Google Classroom like swayam or other online courses.

It is a most important benefit of Google classroom.

Conclusion:

Information and communication technology in education is the most important mode of education that used information and communication technology to expand knowledge worldwide for final users though electronic media or Internet.

There are various tools or techniques, we can use with ICT i.e. Power-Point presentations, smart classroom teaching, skill based online courses, use of Internet in teaching methods, Preparing Google classroom for online tests, online notes, online teaching videos etc. there are various tools or techniques, we can use in our education institutes with ICT and it is necessary for NAAC and NBA accreditation. Google classroom application is a one of the most important ICT tools which provide much more benefits lick that, provide the facility to take online test with analysis, feedbacks, notes, online videos etc.

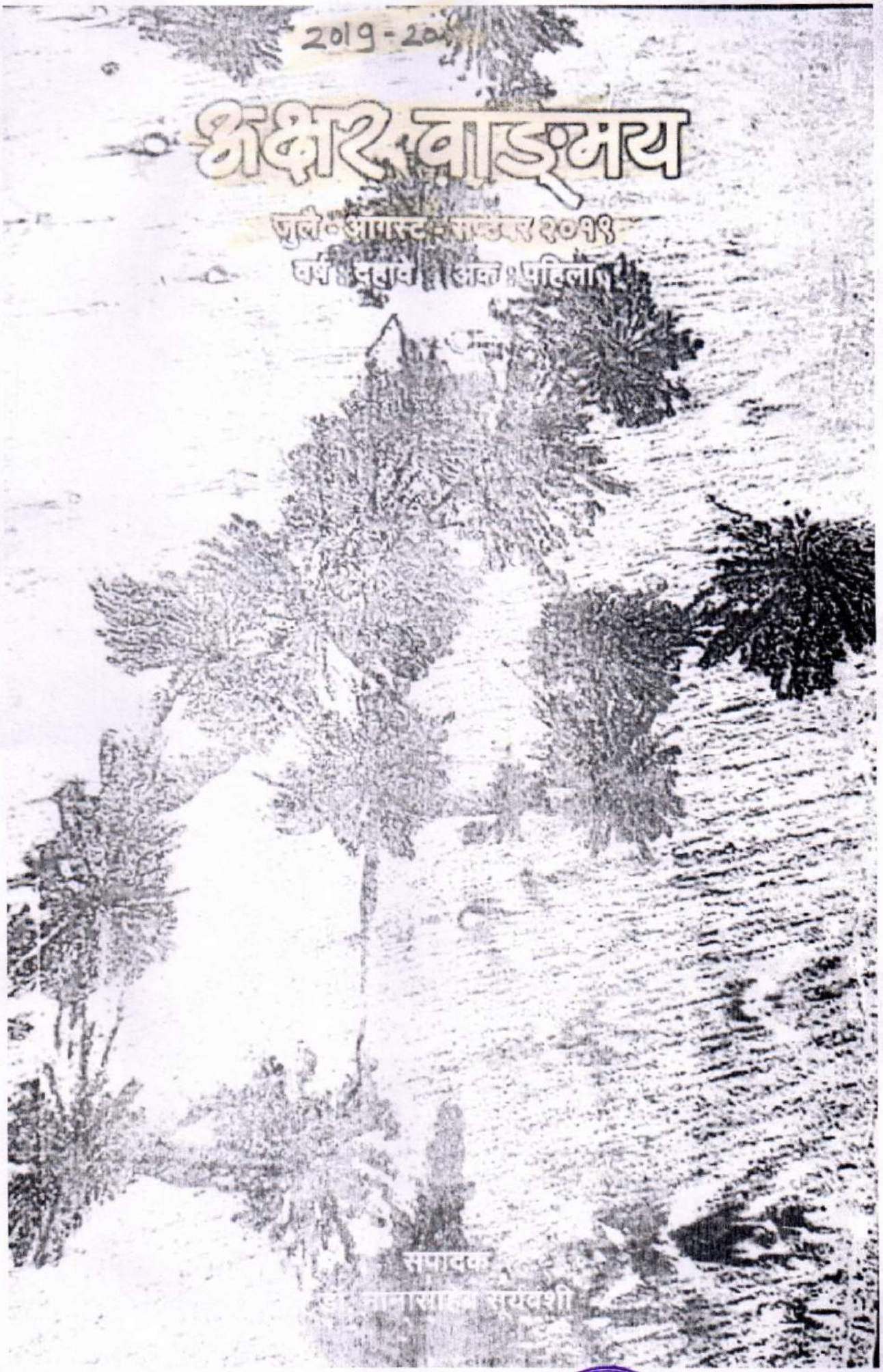
References

1. https://classroom.google.com/h
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Google_Classroom
3. https://stories.linways.in/ict-enabled-education-d190bcc91bf0
4. https://www.igi-global.com/dictionary/ict-based-learning-system/13669
5. Internet and Social networking for education

2019-20

अक्षर वाङ्मय

पुणे • आगस्ट-सप्टेंबर २०१९



Scanned by CamScanner

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA

आर. एन. आय. फॉर इंडिया की हिंदी
R. N. - MAHMAR-36829-2010
UGC Approved and Peer
Reviewed Journal

ISSN - 2229-4929

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : दहावे अंक : पहिला
जुलै-ऑगस्ट-सप्टेंबर २०१९

संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
कार्यकारी संपादक
डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक
डॉ. अरुण प्रभुणे

हितैषी
श्री. संतोष कडोळे

संपादक मंडळ

डॉ. सतीश कदम
डॉ. दीपक चिद्दरवार
डॉ. विजय सरकाळे
डॉ. महादेव वाळुंज

प्रकाशक : सौ. रंजनाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, अक्षर प्रकाशन,
'प्रणव', रमणे नगर, ओढगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.
मुद्रक : कॉम्पिप्रिन्ट कल्पना प्रा. लि. ४६१/४ सदाशिव पेठ, पुणे ३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रमणे नगर, ओढगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/- द्विवार्षिक वर्गणी : रु. ९००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु. २०००/- अंकाचे मूल्य : रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929
UGC Approved and
Peer Reviewed Journal

AKSHAR WANGMAY

Year : 10 Volume : 1
July-August-September 2019

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Well-wisher
Mr. Santosh Kadole

Editorial Board

Dr. Vijay Warkad
Dr. Satish Kadam
Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Mahadeo Walunj

Publisher : Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukmi Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
Printer : Comp- Print Kalpana Private Ltd., 461/4 Sadashiv Peth, Pune - 30

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukmi Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/-
Two years : Rs. 900/-
Five Years : Rs. 2000/-
Current Volume : Rs. 125/-

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

2019-20

हिंदी साहित्य की वर्तमान विचारधारा

: मुख्य संपादक :

प्राचार्य डॉ. किशन पवार

: सहसंपादक :

डॉ. गोविन्द पांडव

प्रा. संतोष शिंदे

प्रा. सुजाता हजारे

Mahavidyalaya

○ हिंदी साहित्य की वर्तमान विचारधारा
Hindi Sahitya ki Vartaman Vichardhara

○ प्रथमावृत्ती : ०७ फेब्रुवारी, २०२०

○ प्रकाशक
आदित्य प्रकाशन,
खर्डेकर स्टॉप, औसा रोड, लातूर-४१३५१२
☎ 02382-257126, Mob. 9405759888

○ ISBN-978-93-83109-62-3

○ मुद्रणस्थळ
आदित्य ऑफसेट, लातूर.

○ अक्षर जुळवणी
श्री. बालाजी बनसोडे

○ मुखपृष्ठ
श्री. तानाजी माने, लातूर.

○ मूल्य : २५०/-

अ.क	नाव	शीर्षक	पृ.क्र
२३	प्रो. संजय एल. मादार	कहानी में अभिव्यक्त महानगरीय आंचल	२०५
२४	खान रिजवाना अब्दुल शकुर	मुस्लीम स्त्री का सामाजिक यथार्थ	२१०
२५	डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा	राष्ट्रीयता और आधुनिक हिंदी कविता	२१६
२६	गंगाधर बालन्ना उमरवार	देवकीनंदन शुक्ल की कहानियों में यथार्थ चित्रण	२३०
२७	शिंगाडे सचिन सदाशिव	विवेकी राय के उपन्यास और ग्रामीण राजनिती का यथार्थ	२३५
२८	डॉ. अपर्णा सिंह	भक्तिकालीन साहित्य में परमानंद की खोज	२४२
२९	संतोषकुमार मंडल	भारत विभाजन बनाम देश विभाजन से आशय	२४७
३०	व्यंकट ना. धारासुरे	विमुक्त एवं घुमंतुओं के सामाजिक संगठन	२५३
३१	इन्द्रदेव शर्मा	वैश्वीकरण के दौर के हिंदी उपन्यासों में महिला किसानों का संघर्ष	२६३
३२	निशि उपाध्याय	वैश्विकरण के दौर में बदलते स्त्री मूल्य	२६९
३३	डॉ. सोनवणे राजेंद्र	एक संवेदनशील अप्रवासी कवी डॉ.विजयकुमार मेहता	२७३
३४	प्रा. सुजाता हजारे	मराठी से हिंदी में अनुदित दलित आत्मकथाओं में आंबेडकर विचारधारा का प्रभाव	२८०
३५	डॉ. सुभाष जाधव	दलित साहित्य और अवधारणा	२८८
३६	राठोड राधा	प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रुप	२९२
३७	सतीश शिंदे	हिंदी साहित्य की वर्तमान विचार धारा विमर्श संदर्भ में धर्म संस्कृती परिवर्तन	२९५
३८	शेख इमरान	विज्ञान और अनुवाद का अंत:संबंध	२९८
३९	प्रा.डॉ.चित्रा धामणे	वो और मैं : भारतीय संस्कृती की अस्मिता की पहचान	३०५
४०	डॉ. एस. ए. मंजूनाथ	हिन्दी भाषा और भूमंडलीकरण : एक समीक्षा	२११
४१	पवार ज्ञानेश्वर राधाकिशन	फाँस उपन्यास में किसान त्रासदी और प्रश्न	२२२
४२	प्रा. म्हस्के एन. आर.	हिंदी साहित्य की वर्तमान राष्ट्रीयता की विचारधारा विमर्श	२२६
४२	डॉ. मंत्री रामधन आडे	२१ वी सदी का हिन्दी गद्य साहित्य और स्त्री विमर्श	२२९

Tuljapur Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

''२१ वीं सदी का हिन्दी गदय साहित्य और स्त्री विमर्श''

डॉ. मंत्री रामधन आडे
हिन्दी विभाग
तुलजाभवानी महाविद्यालय, तुलजापूर

सामाजिक सरोकरों से लैस बुध्दिजीवियों और कार्यकर्ताओं के बीच लंबे समय से यह लगातार चर्चा और चिन्ता का विषय रहा है कि हिन्दी में स्त्री प्रश्न पर मौलिक लेखन आज भी काफी कम मात्रा में मौजूद है। स्त्री विमर्श की सैध्दांतिक अवधारणों एवं साहित्य में प्रचलित स्त्री विमर्श की प्रस्थापनाओं की भिन्नता या एकांगीपन के संदर्भ में पहला प्रश्न यह उठता है कि हिन्दी साहित्य जगत में स्त्री विमर्श के गायने क्या है? वैदिक काल में नारी की स्थिति अत्यन्त उच्च थी। वाल्मिकी रामायण में लिखा है: यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता- जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता का वास होता है। वैश्वीकरण से आए तमाम बदलावों के बाद आज भी स्त्री अंधकार युग की बर्बरता के बीच जाने को अभिशप्त है । आये दिन नारियों पर अत्याचार बढता हुआ दिखाई देता है । पुरुष जीतना हिंसक होता जा रहा है, स्त्री उतनी ही उग्रता से प्रतिरोध करने लगी है। भारतीय संस्कृति में नारी को समर्पणमयी, वात्सल्यमयी, माता और ममताप्रयीन बहन के रुप में चित्रित किया गया है। नारी त्याग की मूर्ति है। धरती माँ के रुप में, जननी-जन्मभूमी के रुप में आकाश की उँचाईयों से लेकर समुद की गहराइयों से अपार-संभावनाओं की शुभकानाएँ उसके लिए समेट कर ले आई। जहाँ नारी की पूजा होती है वही देवताओं का निवास होता है। भारतीय नारी की यह महानता रही है वह पति की उपेक्षा और प्रताडना पाकर भी उसके प्रति मन-वचन कर्म से समर्पित रहती है। कभी-कभी नारी का त्याग पती की दृष्टी को बदलने में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दुध, और आँखों में पानी'' स्त्री के मानसिक, दैहिक शोषण की भयानक स्थिति को रचनाकारोंने अभिहित किया है। आज वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने वीडिओं, इंटरनेट के जाल बिछाकर दृश्य-श्रव्य माध्यमों से हमे पूरी दुनियाँ से जोड दिया है। वही पर उपभोक्तावादी संस्कृति को भी बढावा दिया। मूल्यों और रिश्तों पर बाजार हावी हो गया। देश में जहाँ बदलाव का दौर पूरे वेग से आरंभ हो गया वही स्त्रीअस्मित और स्त्री स्वातंत्र्य को लेकर गलत फहमियाँ भी चारों ओर दिखाई देती है। मीडियाने स्त्री को मंथ देने के नाम पर स्त्री के छबिका दुरुपयोग किया है। हिन्दी पत्रकारिता एवं साहित्य में स्त्री विमर्श को लेकर खूब बहस बाजियाँ हुई। स्त्री विमर्श एक निरन्तर गतिशील परिवर्तन की प्रक्रिया के रुप में दिखाई देती है। दुर्भाग्य से बहुसंख्या स्त्री-समाज तो आज भी उससे वंचित है। आज समय की बढती गति के साथ एक ओर जहाँ तेजी आयी है, वही दुनियाँ के समिट जाने के कारण ही लगता है जैसे स्त्री विमर्श ने एक आन्दोलन का रुप ले लिया है। समाज में अनेक वर्ग और स्थितिओं के अनुसार स्त्री को प्रगति की अपनी सीढियाँ तय करे और आगे उन्नती करती रहे। ऐसी स्थिति में स्त्री विमर्श को एक विचारधारा के रुप में ही स्वीकार किया जा सकता है। भारत की सभ्यता और संस्कृति में नारी को देवी माना जाता है। वाल्मीकि ने रामायण में लिखा है। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता''[१]

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR Tuljapur

यह सच है कि स्वातंत्र्य भारत के संविधान ने कई अधिकार स्त्रीयों के आँचल में डाल दिए है। यह सच है कि वह घर, परिवार, समाज में आज भी शोषण-मुक्त नही पाई है। ज्ञान के प्रसार के कारण स्वाधिकार स्वचेतना के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी, सामाजिक शोषण के खिलाफ आवाजे उडने लगी इसी आवाजो की गुंज सुनाई पड़ने लगी। ''जगदंबा देहरी दियरा बार अइली है, जगतारण देहरी दियरा बार अइली है।''[२] पहचान पर्व के उद्घाटन पर जलाया गया दीपक एवं उसकी ज्योत नारी शक्ति उजाले-युक्त पहचान का प्रतीक है। स्त्री-विमर्श को घृहत्तर अर्थो में परिभाषित करना चाहे तो वह घर-परिवार, समाज-नीति और राष्ट्रनीति में नारी की अस्मिता, अधिकार और उन अधिकारों के लिए संघर्ष चेतना से जूडे संवाद की संकल्पना है। फेमिनिज्म का प्रभाव हमारे साहित्य के उपर पडा हुआ दिखाई देता है। विशेषकर स्त्री रचनाकारों द्वारा लिखित साहित्यपर फेमिनिज्म का प्रभाव दिखाई देता है। किन्तु यह कहना भी सही नही होगा। स्त्री जीवन की कितनी बडी विडंबना है कि स्त्री उसके अनुभवों की बजाय पुरूष के अनुभवों की अभिव्यक्ति की मांग की जाती है। आज जब स्त्री मुक्ति के प्रसंग पर बहस होती है तब परंपरा के पक्ष

हार यह कहकर भारतीय परंपरा में स्त्री स्वाधीनता और अधिकार की पक्षधरता की बाते करते है। स्त्री की यातना सिर्फ उसकी नीजि यातना नही रहती वह सर्वहारा की यातना में तब्दील हो जाती है। ''अधिकतर स्त्रियाँ अपनी अस्मिता की तलाश दुसरी स्त्री में करती है और एक स्त्री दुसरी स्त्री के प्रति लगाव का अनुभव बडी तेजी से करती है।''[३]

स्त्री शक्तिहीन कैसे हो सकती है। उसी के कोख से महात्मा गौतम बुध्द, ईसा मसीहा, पैगम्बर मोहम्मद साहब, गुरुनानक देव, महाराणा प्रताप, कार्ल मार्क्स, महात्मा गांधी, दयानंद सरस्वती, जैसे महापुरुष पैदा हुए। यह स्त्री की सहनशीलता व धैर्य की शक्ति है। स्त्री-समाज में आज दोहरी मार झेल रही है। एक ओर स्त्री होने का अभिशाप दूसरी ओर भयंकर गरीबी की मार उसका सारा संघर्ष अपने अस्तित्व के लिए है। भारत देश में फैले स्त्री समाज की जितनी परते और जितनी प्रकार है उन्हे किसी समाज में सामान्य मज में नापा जा सकता है। केवल विमर्श शब्द के प्रचलित होने के बाद स्त्री विमर्श के नाम से स्त्री की समस्याओं और उसके अधिकारों की चर्चा तो होने लगी पर इसके बावजूद स्त्रियों के सामूहिक संगठित रूप का कोई अहसास तो आज भी नही हो सका जो किसी भी आन्दोलन के लिए जरूरी है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने कहा था ''एक सावधानी बरतते हुए हम यह मान सकते है कि जो ज्ञान पुरुष स्त्रियों से उसके बारे में हासिल करते है, भले ही वह उनकी संचित संभावनाओं के बारे में न होकर, सिर्फ उनके भूत और वर्तमान के बारे में ही क्यो न हो, तब तक अधुरा और उथला रहेगा, जब तक कि स्त्रियाँ स्वयं वह सब कुछ नही बता देती जो उसके पास बताने के लिए है।''[४] किसी भी देश की जैसी अर्थव्यवस्था होती है उस देश में वर्गवत आधार का स्वरुप भी वैसा होता है स्त्रीयों के आचार विचार रहन-सहन में अन्तर है। स्त्री संघर्ष करते करते या तो समर्पण कर लेती है, या विक्षिप्त अवस्था में पहूँच जाती है या विद्रोह करके रह जाती है। स्त्री परिवार एवं समाज में आर्थिक दृष्टि से पराधीन रही है। स्त्री की आर्थिक पराधीनता उसकी यातना, उपेक्षा और विवशता का बहुत बडा कारण है। स्त्री के विविध रुपों में वर्गीकरण अके आधारों में परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण कारण है। स्त्री के व्यक्तित्व के विकास

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

आधारों में परिवर्तन जिसके पिछे-पिछे सामाजिक परिस्थितियों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। स्त्री के रूपों के विकास में बढोतरी का कारण नारी का घर से बाहर आना सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में भाग लेना तथा उसका शिक्षीत होना है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल का मत है कि ''नर और नारी देखने में दो लगते है किन्तु वे एक ही मुल तत्त्व को दो रुप है ''। स्त्रियों की सामाजिक दशा में सुधार के लिए आर्थिक स्वतंत्रता सबसे अहम भूमिका निभाती है। परिवार का धुव स्त्री है। स्त्री के रूपों की सम्बन्धों के धरातल पर ही अधिक महत्ता मिली है। साने गुरुजी स्त्रियों की महत्ता के बारे में कहते है कि ''स्त्री विश्व की महान शक्ति है। इस शक्ति से संबंध रखनेवाले पुरुष को शिव बनाना पडेगा शिव और शक्ती इनके प्रेम पर पूरे समाज की नीव खडी है।''

फ्रायड ने स्त्री और पुरुष के अन्तर्मन जीवन का जो अध्ययन किया है वह दमित भावना से सम्बन्धित नये सिध्दांत प्रतिपादित किये जिससे मनस्थितीभावना, मनो-दमित भावना, कुण्ठा आदि के उपर विशेष विचार अभिव्यक्त किया है। स्त्री के स्वभाव में अनेक तत्त्व दिखाई देते है! इसकी उन्नति उम्र वृध्दि के साथ समाज और परिस्थिति और सामाजिक चेतनाओं के द्वारा होता है। जिसके कारण स्त्री के स्वभाव में कोमलता, मृदूलता, स्नेहशीलता, ईर्ष्या, न्यायअन्याय की न्यूनता नैतिकता-अनैतिकता, अहंभाव और हिनता तथा लज्जाशिलता गर्व, परिवार वासनात्मक जीवन, उदातीकरण आदि भाव निर्माण एवं विकसित होते है। जैनेंद्र के शब्दों में ''हमारे अन्दर अनन्त अव्यक्त है। मैल उसमे है, धौल-धवलता भी उसमे है उन सबको स्वीकार करके शनैः शनै उसे बाहर निकालकर अपने को रिक्त करते जाना मेरे विचार में यह बडा काम है। इससे अलग सृजन क्या होगा यह मै जानता नही ''। स्त्री समस्या केवल पारिवारिक समस्या या केवल स्त्री की समस्या व्यक्तिगत समस्या न मानकर सामाजिक और राष्ट्रीय समस्या मानी जाए। व्यक्तिगत समस्या में विश्व के विराट बाह्य-जीवनचक्र की समस्याओं को देखने की दृष्टि आज जाती है। स्त्री स्वभाव की एक प्रमुख प्रवृत्तियाँ है कि संकट समय हो आनंद या दुःख का समय हो, एवं जीवन के महत्त्व के क्षण का वह ईश्वर से श्रध्दा भक्ति और विश्वास रखती है। स्त्री के सहनशीलता के महान गुण शक्ति में भी अधिष्ठित है।

पुरुष प्रधान समाज में उनके साथ जो युगों-युगों से अन्याय होता आया है इसके कारण असंख्या बहने काल कवलित होती रही है, परंतु जब भी बलिदान देने का अवसर आया तो वे कभी पीछे नही हटती। पतिव्रत धर्म का सारा बोध स्त्री पर ही है। त्यागपूर्ण सेवा करनेवाली स्त्री आदर्श भार्या कही जा सकती है। पत्नीव्रत का प्रचार होने तथा स्त्रियों के शिक्षित और दर्द से बाहर होने से अब स्त्री पति की जीवनसंगिनी बन गयी है। स्त्री-विमर्श घर परिवार, समाज-नीति और राष्ट्रनीति में स्त्री की अस्मिता, अधिकार और उन अधिकार के लिए संघर्ष चेतना से संवाद की संकल्पना है। भारत में साहसी आत्मचेतना स्त्रियों की कमी रही है। आज भी समाज में स्त्रीयाँ अनेक रूढी परंपरा में जखडी हुई दिखाई देती है। स्त्री-विमर्श की अवधारणा को यथार्थ का धरातल दिया। अफसोस कि आज आजादी मिलने के बाद हम नए सामंतवाद की गिरफ्त में आ गए है और स्त्री इसकी बराबर शिकार होती गई। स्वातंत्र्य भारत के संविधान ने कई अधिकार समाज में रहनेवाले लोगों को दिया है।

Tulabhavani Mahavidyalaya
FULJAPUR
ES 1971
Tuljapur

किन्तू आज भी स्त्री शोषण मुक्त दिखाई नही देती है। स्त्री-विमर्श की संकल्पना को कई पीढियों के रचनाकारोंने अनेक सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों में परखकर स्त्री की बदलती हुई छवि के नए आयाम दिया है। स्त्री के मानसिक, दैहिक शोषण की भयावह परिणतियों से चेताती विभिन्न वर्ग की स्त्रियों के अंतरंग में सेध लगाती हुई इस निष्कर्ष तक पहूँचती है। पुरुष की मानसिकता में सेध लगाकर अपनी ले-दे की नीति को अपनाने का सुझाव देती है। आज स्त्री अंधकार युग की बर्बरता के बीच जीने को

अभिशप्त है। साहित्यिकारोंने धार्मिक रुढी परंपरा से मुक्ति के लिए आवाहन किया है। स्त्री की शिक्षा उसकी आत्मनिर्भरता और स्वायत्तता से जूडी है। स्त्री की मुक्ति है उसकी शिक्षा है। देश में अधिक विविधता है स्त्री के विमर्श के बारे में सबकी अलग-अलग समस्याएँ है। गाँव में रहनेवाली स्त्री, विशिष्ट कसबो में रहनेवाली स्त्री उसकी समस्या अलग है। गाँव में रहनेवाली स्त्री को लगता है कि आज भी उनका शोषण हो रहा है। अत्याचार सहते हुए वह समाज द्वारा फैली हुई परंपरागत संस्कारों में स्त्री बंधी हुई है। और शोषण को अपना कर्तव्य मानकर स्त्री अपनी जीवन व्यतित कर रही है। गाँव एवं शहर में रहनेवाली स्त्री को समस्या एक जैसी नही हो सकती? अपनी अलग समस्याएँ है। भारत में परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी है। आजादी मिलने के उपरान्त अनेक बुराईयाँ है अनेक समस्याएँ दिखा देती है। जब स्त्री उनसे मुक्त होगी तभी पुरुष के वर्चस्व से मुक्त होगी और परिवार और समाज में उसे उचित स्थान मिलेगा। भारतीय परिपेक्ष्य में घर में स्त्रियों को महाराणी, राणी, और कई प्रिय संबंधितती किया जाता है लेकिन काम सारे नौकरानियों जैसे लिए जाते है। स्त्री का बडा असंतुलित चित्रण मिलता है। देवी की अलौकिक छवि का यथार्थ जगत में खोजे से भी शायद ही मिले। आधुनिक सभ्यता में स्त्री को केवल भोग्य बना कर रख दिया है। आज समाज में स्त्री को केवल चार दिवारों में तक समेट दिया। स्त्री की महत्त्वपूर्ण तीसरी भूमिका है ''माँ'' बनने की। नारी का रुप ही बुध्दि, भातृ, प्रकृति, सृष्टि, स्मृति, दया, क्षमा, क्रांति और लक्ष्मी रुप मे है। स्त्री को गुण संपन्न एवं सदाचार की साक्षात देवी मानकर पूजा की जाती है। किसी न किसी रुप में स्त्री को समानता के अधिकार से वंचित रखा जाता है। जो स्त्री पर अन्याय के बराबर है। यह अन्याय समाज के लिए शर्मनाक है। जब तक नारी के उत्पीडन को लेकर स्त्री जाति की समस्या मानकर हम आँख मेंद बैठे रहेंगे, तब तक पितृसत्तात्मक व्यवस्था को भी सुचारु रुप से चलाने में जन्म दायिनी व विश्वपालन स्त्री की भूमिका की सार्थकता को पहचानना कठिण ही होगा।

आज स्त्रियाँ आपसी सहयोग, सद्भाव, कर्तव्यनिष्ठ, सृजनात्मकता जैसे मानवी मूल्यों का धारण करके एक दुसरे के कंधे से कंधा मिलाकर स्त्री के नए रूप परिभाषित कर रही है। जो राष्ट्र हेतू एक सुखद संकेत है। आजादी के दौरान स्त्री चेतना का एक अलग किस्म का भव्य रुप हमारे सामने आता है। हमारे इतिहास साहसी स्त्रियों के बलिदान से भरा पडा है। स्त्री विमर्श की अवधारणा को यथार्थ के धरातल दिया पर आजादी मिलने के बाद हम नए सामंतवाद की गिरफ्त में आ गए और स्त्री बराबर इसका शिकार होती गई। आज का वैश्वीकरण की प्रक्रियों में इंटरनेट जाल बिछाकर दृश्य श्राव्य के माध्यमों से दुनियाँ से जोड दिया। देश में बदलाव का दौर आरंभ हो गया है। स्त्री विमर्श का नया स्वरुप स्त्रीयों के उपर हो रहे अत्याचार जैसे अमानवीय घटनाओं के विरोध में जन्म ले रहा है। समाज में स्त्रियों की भूमिका और उसके मूल्यांकन का विवेचन कर रही है। स्त्री विमर्श को एक निरन्तर गतिशील परिवर्तन की प्रक्रिया के रुप में दिखाई देती है। हमारे यहाँ परिवर्तन की

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

गति धीमी हो गई है। स्त्रियों का एक वर्ग प्रगति के शिखर पर पहुँच गया है। लगभग चालीस वर्षों से स्त्रीने स्वयं को मुक्त कर लिया है। रूढी संस्कारों से ग्रस्त वही सामन्ती पति विराजमान मिलेगा यदी पुरूष इन संस्कारों से मुक्त हो जाये जिसके चलते हर बात और हर क्षेत्र में
वर्चस्व उसका, अधिकार उसको तो स्त्री को तो अपने आप मुक्ति मिल जायेगी।

संदर्भः-

1) पत्रिका मासिक- आजकल- मई २००९, पृष्ट ३५

2) स्त्री सशक्तिकरण के आयाम- डॉ. देवशर्मा, पृष्ट-३३२.

3) पत्रिका मासिक- आलोचना- अक्टुबर दिसंम्बर २००९, पृष्ट- ९७

4) पत्रिका मासिक अंक- आलोचना- अक्टुबर दिसंम्बर २००९, पृष्ट-९०

5) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप डॉ. गणेश दास, पृष्ट-२५

6) आठवे दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में व्यक्त स्त्री चरित्र डॉ. सविता चोखीवा किर्त, पृष्ट-१४

7) हिन्दी उपन्यासों में नारी की मनोवैज्ञानिक विश्लेषण- डॉ. विमल सहस्त्रबुध्दे, पृष्ट-२२७ ८) वेबसाईट/इंटरनेट / पत्रिका

Tuljabhavani Mandir Trust Tuljapur Tuljapur EST 1971

2020-20

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

शंकरराव पाटील महाविद्यालय, भूम

व

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद

यांच्या संयुक्त विद्यमाने

एक दिवसीय आंतरविद्याशाखीय राष्ट्रीय परिषद

२७/०२/२०२०

राजर्षी शाहू महाराज, महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे योगदान

समन्वयक

प्रा. तानाजी बोराडे

डॉ. दयानंद शिंदे

डॉ. किशोरकुमार गव्हाणे

प्राचार्य

डॉ. श्रीकृष्ण चंदनशिव

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At Post Limbaganesh,Tq Dist Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

12) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्री-उध्दारक कार्य
प्रा. डॉ. जनार्धन परकाळे, अकलूज ||50

13) छत्रपती शाहु व डॉ. आंबेडकरांचे सामाजिक आणि राजकीय विचार
प्रा. विकास दशरथ वाघमारे, लातूर ||52

14) राजर्षी शाहू महाराजांच्या सामाजिक सुधारणा आणि वर्तमान काळातील प्रस्तुतता
डॉ. राऊत अस्मिता परसराम, औरंगाबाद ||53

15) समाज विकासातील राजर्षी शाहू महाराजांचे योगदान
रूपाली सतिश मोरे, औरंगाबाद ||57

16) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे मूकनायक अग्रलेखातील - अंतरंग
प्रो. डॉ. रामनाथ गंगाधर वाढे, बीड ||59

17) छत्रपती शाहू महाराज यांचा शैक्षणिक दृष्टिकोन व योगदान
स्वप्निल युवराज भोसले, जळगाव ||61

18) शाहु, आंबेडकर यांचे आरक्षणविषक विचार
प्रा. डॉ. अरूण बावा, उस्मानाबाद ||64

19) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार
हिवाळे एम. एल., औरंगाबाद ||65

20) राजर्षी शाहू महाराजांचे कार्य व वर्तमान स्थिती
प्रा. बी. जे कुकडे, तुळजापूर ||67

21) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्रीजीवनविषय क विचार
प्रा.डॉ. यादव सूर्यवंशी, अहमदपूर ||70

22) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार
डॉ. डी. पी. गायकवाड, खोपोली ||72

23) महात्मा जोतीराव फुले यांची कविता
डॉ. बाळासाहेब खोमणे, मुंबई ||73

24) महात्मा फुले, आंबेडकर यांचे साहित्यातील योगदान
प्रा. डॉ. बागुल एम. एम., पुणे ||76

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com



शाहू महाराजांचे व वर्तमान स्थिती

बी. जे. कुकडे
शास्त्र विभाग प्रमुख,
भवानी महाविद्यालय,
तुळजापूर



च्या अमानुष अत्याचारामुळे ग्रस्त झालेल्या र करण्यासाठी समाजिक आणि शैक्षणिक र्य करणाऱ्या अनेक नर रत्नांचा जन्म देणाऱ्या ल्या देशाला मान्य करावेच लागेल अशा या ापूरचे छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज यांचे आहे. दलितांचे हितरक्षक जातिवादाचे प्रखर निक क्रांतिचे अग्रणी राजर्षी छत्रपती शाहू ूनिक भारताचे थोर शिल्पकार होत ब्राम्हाणी खाली भरडल्या जाणाऱ्या आणि किडया- वाटयाला आलेल्या एका मोठया समाजाला मुक्ता आणि प्रतिष्ठा देण्यासाठी बंड केले.

देश :

शोधनिबधाची काही उद्देश निश्चित करण्यात आली प्रमाणे स्पष्ट करता येतील.

राजांच्या विचारांचा अभ्यास करणे.

:

शोधनिबंधासाठी वर्णनात्मक आणि विश्लेषणात्मक चा अवलंब करण्यात आला आहे. तसेच प्रस्तुत साधनावर आधारित आहे. त्याच बरोबर त्यासाठी ग्रंथ, वर्तमानपत्रातील लेख, राष्ट्रीय आतंरराष्ट्रीय प्रसिध्द लेख, विविध नियत कालिके, संकेतस्थळे, र करण्यात आली आहे.

महाराजांचे कार्य :-

महाराज हे विवेकी व धोरणी होते. त्यांच्या काळी उभ्या भारतात स्वराज्याची चळवळ बळ धरु लागली होती. भारतच्या संस्थानीकावर ब्रिटीशांची करडी नजर होती. शाहू महाराजांना देशाचे स्वातंत्र्य मान्य व अपेक्षेत होते. इंग्रजांशी विरोध करुन संस्थानाला धोका निर्माण करणे व राज्य गमावणे हा स्वातंत्र्याच्या पुरस्काराचा एक मार्ग, तर इंग्रजाशी सहकार्य करुन संस्थनातल्या बहुजन समाजाला आपल्या सत्तेचा लाभ करुन देणे व त्याची सर्वांगीण उन्नती करण्याठी झटने हा दुसरा मार्ग. महाराजांनी दुसरा मार्ग पसंत केला लोकशाही स्वराज्य तर हवेच पण त्या अधिते उपीोगण्यासाठी राबवण्यासाठी प्रथम जनतेत पात्रता आली पाहिजे असे महाराजांचे राजकीय चळवळीत बाबत धोरण होते. महात्मा फुले व आगरकर यांच्या विचाराकडेमहाराजांचा ओढा होता. शाहू महाराजांचे लक्ष स्वामी दयानंदाच्या आर्य समाजाकडेही वळले होते. आर्य समाज हा फक्त वेदावर श्रध्दा ठेवणारा व जात पात न मानणारा समाज आहे त्यामुळे महाराजांच्या विचारसरणीशी आग्र समाजाची मते जुळणारी होती. या समाजाचा प्रसार व्हावा म्हणून महाराजांनी १९१८ साली. कोल्हापूरात आर्य समाजाची स्थापना केली व तया समाजाला पुर्ण राजाश्रय दिला आग्र समाजाची अनेक गुरुकुले आहेत त्या गुरुकुलात होतकरु विद्यार्थ्यांना प्रवेश मिळतो. महाराजांनी एक गुरुकुले निर्माण केले व त्यात विद्यार्थ्यांचे राहणे, भोजनण व शिक्षण अशी सर्व सोय केली. धार्मिक व्यवहारात ब्राम्हण पुरोहितांच्या वर्चस्वाला शाहू महाराजांनी नवे क्षात्रजगद्गुरुपद निर्माण केले त्यासाठी पाटगाव येीील मौनी मठाच्या पीठावर सदाशिवराव पाटी या सुशिक्षीत ग्रहस्थाची नेमणूक केली व त्यांना क्षत्रजगद्गुरु अशी पदवी दिली. प्रस्थपित समाजव्यवस्थेतील ब्राम्हण वर्गाची मक्तेदारी संपणार नाही. ही जाणीव महाराजांच्या मनात विचारांती ठसली होती. ज्ञानाच्या योग्य पात्रता वाढवून समाजातील सर्व घटकांना समान भुमिकेवर आणता येईल अशी त्यांची श्रध्दा होती. म्हणून त्यांनी राज्यात सक्तीच्या प्राथमिक शिक्षणाचा कायदा केला. शिक्षण मोफत केले महाराजांनी कोल्हापुरात सर्व जातींची वसतीगृहे निर्माण केली त्यामुळे संस्थानात बहुजन समाजातले कित्येक विद्यार्थी सुशिक्षीत पदवीधर होवून संस्थानात उत्कर्षाला चढले.

सामाजिक ऐक्यासाठी आंतरजातीय विवाह

आंतरजातीय विवाहाच्या संदर्भात एखादी धाडसी कृती करुन समाजा समोर एक आदर्श ठेवावा असे शाहू महाराजांनी ठरविले होते. त्यानुसार त्यांनी आपल्या जनक घराण्यातील कागलकर घाटगे घरण्यातील कन्या महाराजांच्या चुलत भगीनी चंद्रभागाबाई यांचा विवाह इंदौरच्या तुकोजीराव होळकरांचे पुत्र यशवंतराव यांच्याशी निश्चीत केला. या बाबतीत तुकोजीरावांना राजीकरण्याची कामगीरी

त्यांनी आपले एक विश्वासू सेवक गुंडोपंत पिशवीकर (धर्माधिकारी) यांच्यावर सोपवली होती. व वधुपित्यांची मानसिक तयारी करण्याची जबाबदारी खुद्द महाराजांनी स्विकारली होती. त्यात यश मिळतातच कोल्हापूर व इंदौर या दोन संस्थानाच्या दरमयान एकूण १०० मराठा-धनगर, आंतरजातीय विवाह करण्याची योजना आखली गेली. त्यानुसार एकूण ६० हजार रुपये खर्च होणार होता. प्रत्येक जोडप्यास उभय संस्थानात काही जमीन जुमलाही इनाम दिला जाणार होता. शिक्षणासाठी अर्थसहाय्य आणि नोकरीही दिली जाणार होती. या योजनेप्रमाणे एकूण २५ विवाह सादरे झाले.

शाहू महाराजांनी बालविवाहास प्रतिबंध केला होता. आंतरजातीय विवाहास कायद्याने मान्यता दिली. इतकेच नव्हे तर कायद्यांना कृतीत आणण्यासाठी स्वतः पुढाकारही घेतला होता. कायदा यशस्वी होण्यासाठी त्या मागे प्रबळ इच्छा कशी असते यावर कायदयाचे भवितव्य अवलंबून असते. जातीवर आधारीत समाज व्यवस्थेला हादरे देण्यासाठी महाराजांनी वेगवेगळे मार्ग अनुसरले होती. या मार्गाला कायदयाने स्वरुप प्राप्त करुन दिले होते. जाती संपविण्यासाठी आंतर जातीय विवाह हा एक चांगला मार्ग असल्याची खात्री त्यांना होती. महाराजांनी जाती मोडण्यासाठी मराठा-धनगर विवाह मोठया प्रमाणात आणि प्रयत्न पुर्वक व जाणिव पूर्वक घडवून आणले कोणत्याही क्रांतीकारी गोष्टीचा प्रारंभ स्वतः पासून झाला की, त्यास लवकर मान्यता मिळते. आणि विचारांचा प्रसारही चांगला होतो.

राजर्षी शाहू महाराज : स्त्री जातीच्या संरक्षणाचे कायदे

मागासलेल्या समाजाचा उध्दार हे शाहू महाराजांचे जीवीत कार्यच बनून राहिले होते. तत्कालीन समाजातील अखिल स्त्री वर्ग हा ही एक प्रकारे अपेक्षीत व सर्व दृष्टया मागसलेला होता आपल्या देशाच्या कट्टर पुरुष प्रधान संस्कृति स्त्री जातीवर अनेक प्रकारचे अन्याय व अत्याचार होत होते. बाल विवाह, विधवा प्रतिबंध, शिक्षण बंदी, पडादा पध्दती इत्यादी रुढी परंपरा आणि स्त्रीचे जीवन असहाय्य व पुर्णपणे परावलंबी बनले होते. तीच्यावर होणाऱ्या अन्याय अत्याचाराला वाचा फोडण्याचे कार्य महात्मा फुल्यांपासून ते आगरकांपासूनच्या अनेक समाजसुधारकांनी केले होते. शाहू महाराजांनीही आपल्या संस्थानात स्त्री शिक्षणास प्रोत्साहन तर दिलेलच शिवाय तिच्या नैसर्गिक हककाचे संरक्षण करणारे अनेक कायदेही आमलात आणून तिची समाजाकडून आणि कुटुंबाकडून होणारी पिळवणूक थांबविण्याचा मोठा प्रयत्न केला.

विधवांचे केशवपन कायद्याने बंद

हिंदू धर्मातील काही कालबाह्य जुलमी व निष्ठुर अशा रुढी कोणतही मुलाहिजा न ठेवता महाराजांनी ब्राह्मणांच्या आपमतलबी रुढी म्हणजे स्त्रीयांना बंदी ऐकणे अगर वाचणे बंद आणि अत्यंत म्हणजे विधवा केशवपन. अगदी कुमारी झाली तर प्रथमता तिच्या सौंदर्यावर घाला मुंडण करुन विद्रुप करणे तीला बोडकी म तर तिचा सासरा, दिर, एवढेच नव्हे तर ती तीचा अंबाडा धरुण मारझोड करुन अंगावर सुतळीचा तोडाही न ठेवीता वि काय नेसणस लालभडक अलवणाचे व तिच्य हक्काच्या घरात वाळीत टाकणे वि कोणत्याही कार्यक्रमात तिला बंदी अ अपशकुन मानत तीला घरातील अनारोग्य असूनही मेल्याप्रमाणे तीचे जिणे करत घेऊन विधवा केशवपन रुढी १९१७ च्या

विधवा - पुनर्विवाह कायदा :

१९१७ च्या जुलैमध्ये शाहू महा विधवांच्या पुनर्विवाहासा कादेशीर मा केला. एखाद्या विधवेने जन्मभर वैध तिच्या आयुष्यात ओलावा येण्यासाठी तिला वाटल्यास पुनर्विवाह करत ये पुनर्विवाह कायदा करण्यात आला ह विधवांच्या पूनर्विवाहांच्या बाबतीत इत न करण्याची पध्दती असल्यामुळे ज्या होत्या त्या या कायद्यान्वे दुर करण्यात विवाहाची कायदेशीर नोंद करण्याची प विवाह विधीचा कायदेशीर पुरावा वर्गावर होणाऱ्या संभाव्य अन्यायाचा त्यांना उपलब्ध करुन दिले गेले.

आंतरजातीय विवाह कायदा :

हा कायदा १२ जुलै १९१९ रो विवाहासंबंधी कायदा या नावाने गॅझेटमध हिंदू व जैन या दोन मुख्य धर्माच्या लो सदरहू दोहोपैकी आपआपल्या कोणत्या करण्याची मुबा दिली गेली.

जाती-जातीतील उच्च नी मानवता हीच जात समजून कोणत्याही संमत करण्यात आला यासाठी महार

SHANKARRAO PATIL MAHAVIDYALAYA
BHOOM



Tq. Bhoom Dist. Osmanabad-413504 (Maharashtra)

NAAC Re-accredited with 'B' Grade

(In Collaboration with Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad)

One Day Interdisciplinary National Conference

on

" CONTRIBUTION OF SHAHU MAHARAJ, MAHATMA PHULE & DR. BABASAHEB AMBEDKAR"

(27th February, 2020)

This is to certify that Prof./Dr./Shri./Smt./ Kukade Balu Janu

Of S. P. College Bhoom has participated in One Day Interdisciplinary National Conference on "Contribution of Shahu Maharaj, Mahatma Phule & Dr. Babasaheb Ambedkar" organized by IQAC of Shankarrao Patil Mahavidyalaya, Bhoom, Dist. Osmanabad On Thursday, 27th February, 2020. He/She Participanted / Chaired a session / Presented a paper on राजर्षी शाहू महाराजांचे कार्य व वर्तमान स्थिती.

Prof. Tanaji Borade
Convener

Dr. Anuradha Jagdale
Coordinator, IQAC

Dr. Shrikrishna Chandanshiv
Principal

2019-20

12) महात्मा फूले आणि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे साहित्यविषयक विचार
प्रा.डॉ. सुर्यवंशी रामहरी मधुकर, उस्मानाबाद ||43

13) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक विचार : एक विश्लेषण
प्रा.डॉ. विवेक अ. चौधरी, अमरावती ||45

14) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे जमीन हक्कासंबंधी भूमिका व मार्गदर्शन
डॉ. वार्धमारे विष्णु बब्रुवान, सोलापूर ||48

15) शाहू महाराजांच्या सामाजीक व आर्थिक विचारातील मानव विकास संकल्पना
प्रा. यादव जे. बी., डॉ. आगळे एस. व्ही, बीड ||51

16) छत्रपती राजर्षी शाहु महाराज यांचे शैक्षणिक कार्य
प्रा.डॉ. हारणे महादेव माणिकराव, उस्मानाबाद ||54

17) महात्मा फुले यांचे स्त्रीविषयक विचार
प्रा.डॉ. पवार विद्युलता शाहूराव, कळंब ||56

18) महात्मा फुले : स्त्रियांचे आद्य उद्धारक
प्रा. सौ. बेटकर व्ही. सी., उदगीर ||58

19) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे राष्ट्रवादी विचार व कार्य
प्रा. रघुनाथ व्यंकटी घाडगे, कळंब ||60

20) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार
प्रा. तात्यासाहेब शिवाजी काटकर, सोलापूर ||62

21) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे महिला सक्षमीकरण विषयक विचार
डॉ. वासुदेव एस. वले, जळगाव ||64

22) राजर्षी शाहूंचे शैक्षणिक विचार
प्रा. कांतराव किसनराव कलाणे, बीड ||66

23) मा. जोतीबा फुले यांचे शेती व शेतकरी संदर्भात विचार आणि कार्य
प्रा. आबासाहेब गायकवाड, प्रा.डॉ. बी. डब्लू. गुंड, तुळजापूर ||69

24) राजर्षी शाहू महाराजांचे कार्य व वर्तमान स्थिती
प्रा. डॉ.अंबादास बिराजदार, तुळजापूर ||71

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

23

जोतीबा फुले यांचे शेती व शेतकरी संदर्भात विचार आणि कार्य

प्रा आबासाहेब बब्रुवान गायकवाड
राज्यशास्त्र विभाग, तुळजाभवानी माहविद्यालय, तुळजापूर

प्रा. डॉ.बी.डब्लू. गुंड
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, पदवी व पदवीत्तर विभाग,
तुळजाभवानी माहविद्यालय, तुळजापूर

प्रस्तावना :-

१९ व्या शतकात भारताच्या इतिहासात आर्थिक सामाजिक, धार्मिक राजकीय क्षेत्रात अनेक महत्वपुर्ण घडामोडी घडून आल्या. याच वेळी महाराष्ट्रातही वरील सर्व क्षेत्रात दुरगामी परिणाम करणारे बदल घडून आले. ब्रिटिशांना भारतावरील गुलामी व अनियमित शोषणाचे परिणाम म्हणून भारताची सर्वच क्षेत्रात अतिशय विकलांग अशी अवस्था झाली होती. विशेषत: अर्थ उद्योगक्षेत्रे मोडकलीस आली होती. ब्रिटिशांच्या शोषणातून शेतीही सुटू शकत नव्हती. ब्रिटीश शेती आणि शेतक-याचे अतिशय नियोजबध्द शोषण ब्रिटिशांनी सुरु केले. त्यातुन ग्रामीण भारतात शेषितांचा एक मोठा वर्ग उदयास येऊन ग्रामिण जनजीवन मोडकलीस आले. या शोषित वर्गाच्या दारिद्रयाची नोंद अद्य समाज सुधारक मा. जोतीबा फुले यांनी १२० वर्षापुर्वी घेतली शेतकरी कष्टक-यांचे दु:ख जगाच्या वेशीवरती टांगले. जोतीबाकालीन समाज अनेक प्रकारच्या प्रथा, परंपरा, रुढीनी बांधडला गेलेला होता. शेतकरी समाजातील सर्व सामन्य वर्ग भटभिक्षुकांच्या कडून नागवला जात होता. जोतीबाच्याही लक्षात आले होते. शेतक-यावर होणा-या अन्यायाला वाचा फोडण्यासाठी त्यांना प्रथम जागृत केले पाहिजे आणि अशी जागृती शिक्षणा शिवाय होऊ शकत नाही.हे जोतीरावांना अचूक जाणले होते. शिक्षण हे ब्राम्हण वर्गाची मक्तेदारी होते. शिक्षणा अभावी शुद्रातीशुद्राचे कसे नुकसान झाले आहे. व शेतकरी कसा नागवला जात आहे. हे समजण्यासाठी "जोतीरावांनी शेतक-यांचा असूड हा ग्रंथ १८८३ साली लिहीला" शेतक-यांचा असूडच्या उपोदघातात जोतिराव म्हणतात.

"विद्येविना मती गेली। मती विना निती गेली।।
निती विना गती गेली। गति विना वित्त गेले।।
वित्त विना शुद्र खचले। इतके अनर्थ एका अविद्येने केले।।"

म्हणूनच या अविद्येचा नाश करण्यासाठी जोतीरावांनी आपल्या सर्व सामाजिक कार्यात शिक्षण प्रसाराला अग्रस्थान दिले होते.

शोधनिबंधाची उदिष्टे :

प्रस्तुत शोधनिबंधाची काही उदिष्टे निश्चित करण्यात आली आहेत. ते पुढील प्रमाणे स्पष्ट करता येतिल.

- मा. फुलेच्या शेती व शेतकरी संदर्भात विचार आणि कार्यांचा आढावा घेणे.
- मा. फुले यांच्या शेती व शेतकरी संदर्भातील विचारांच्या प्रसंगीकतेचा आढावा घेणे.

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी वर्णनात्मक आणि विश्लेषणात्मक संशोधन पध्दतीचा अंवलंब करण्यात आला आहे. तसेच प्रस्तुत संशोधन दुय्यम साधनावर आधारित आहे. त्याच बरोबर त्यासाठी विविध संदर्भग्रंथ, वर्तमानपत्रातील लेख, राष्ट्रीय आतंरराष्ट्रीय परिषदामधील प्रसिध्द लेख, विविध नियत कालिके, संकेतस्थळे, इत्यादीचा व्यापर करण्यात आली आहे.

मा. फुले आणि शेती, शेतकरी व शिक्षण :-

शिक्षणाशिवाय बहूजन समाजाची ब्राम्हण वर्गाच्या गुलामगिरीतून सुटका होणार नव्हती,आणि म्हणून "सरकारने बहूजन समाजासाठी सार्वजनीक सक्तीचे व मोफत शिक्षणाची सोय करावी अशी मागणी जोतीरावांनी सरकारने नेमलेल्या हंटर आयोगा समोर केली होती. अशी सक्तीचे प्राथमीक शिक्षणाची करणारे जोतीबा हिंदूस्थानातील पाहिले सुधारक होते."

जोतीरावांनी आपली भाषणे व ग्रंथाद्वारे शेतकरी व कामगारांच्या गऱ्हाण्याकडे सरकारचे लक्ष वेधावे यासाठी प्रयत्न केला. सरकारचे निरनिराळया खात्यातून लाचलूचपतीचे व्यवहार कसे चालतात गोरगरिबांची पिळवणूक कशी होती या सर्व गोष्टीनी सतत उघडकीस आणित राहिले होते. आपले बुध्दी प्रमाण्यावादी आणि पुरोगामी विचार, आपले अनुयायी, शेतकरी आणि कामगार यांच्यात प्रसुत व्हावेत म्हणून त्यांनी त्यांची संघटना बांधण्यास प्रारंभ केला. शेतक-याचे कशी पिळवणूक होत आहे. आणि ते दारिद्राच्या चिखलात कसे अधिक अधिक रुतत चालले आहेत. हे त्यांना सरकारच्या लक्षात अणून द्याचे होते. शेतकरी, कष्टकरी शुद्रांच्या कल्याणासाठी जोतीबांनी सर्व थरातून प्रयत्न सुरु केले होते. परतू त्यांनी सुरु केलेल्या या पवित्र कार्याला उच्चभ्रू पांढरपेशा ब्राम्हणसामाजाकडून सकारात्मक प्रतिसाद मिळण्याचे चिन्ह दिसत नव्हती उलट विरोध होण्याचीच संभावना होती.आपले अधिकार अबाधित ठेवण्यासाठी उच्च वर्णीय अधीक असहिष्णू , कर्मठ होण्याची शक्यता होती. त्यामुळे कनिष्ठ वर्गांना आपले न्याय अधिकार मिळण्याची शक्यता नव्हती आणि ते अधिकार संघर्ष करुन

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

मिळण्याइतपत ताकत कनिष्ठ वर्गामध्ये नव्हती म्हणून आपल्या विचार आणि कार्याचा प्रसार आणि प्रचार करण्यासाठी २४ सप्टेंबर १८७३ साठी जोतीरावांनी सत्यशोधक समाजाची स्थापना केली.

सत्यशोधक समाज आणि शेतकरी :-

जोतीबांनी स्थापन केलेल्या सत्यशोधक समाजाची ध्येय, शेतकरी कामगार यांच्या उध्दाराचे असल्यामुळे त्याचं विचार आणि कार्य ही याच वर्गाच्या प्रशनाशी निगडीत होते. शेतकऱ्यांच्या भल्यासाठी स्थापन केलेल्या सत्यशोधक समाजाने त्या काळात एक निबंध स्पर्धा जाहिर केली त्यासाठी दोन बक्षीसे ठेवली. हिंदी शेतकऱ्याची सुधारणा कशी करता येईल ? हा निबंधाचा विषय होता. ब्रिटनमधील शेतकरी पध्दती लक्षात घेवून हा निबंध लिहायचा होता. या निबंधावरुन सत्यशोधक समाजाचे कार्य कोणत्या पध्दतीने चालले होते. आणि त्या समाजाचा नेता जोतीराव यांचा दृष्टीकोन याचा व्यापक आणि आर्थिक दृष्टया कसा महत्वाचा नि मुलोगामी होता याची कल्पना येते.

समाजात जे जे पिडीत व शोषीत होते त्या सर्वांचा कैवार जोतीरावांनी घेतलेला होता रयत अथवा शेतकरी हा समाजात बहूसंख्यने शेतकरी हा समाजात बहूसंख्ये असणारा वर्ग होता आणि तो दैन्य व दारिद्र्य यातच पिचत खचत होता. शेतकऱ्याच्या या दैन्यावस्थेला खेडयामधील भटभिक्षूक, गुजर मारवडी ब्राम्हण सावकार आणि सरकारी खात्यातील भट कामगार कसे जबाबदार आहे याचे वास्तव चित्रण जोतिरावांनी आपल्या ग्रंथातून केले आहे. आडणी, देवभोळा शेतकरी या सर्वांकडून नडला जात होता. शोषला जात होता याचे सावकराकडून कसे शोषण होत होते. हे जोतीराव सांगतात.

"हिशोबी घोळ । सर्व गोधळ । वाढीव कर्ज डोईवर ।
आतून घेई सरकार । पैसे येई घाणावर ।।
वेळ पाहून संधी साधून । मागणी नेट त्याजवर
तगादा धाडी पाटीवर ।।
दाम दुप्पट सर्व एकवर । नोंदणी घाण खात्यावर ।
दुमाला पुस्त रजिस्टर ।।"

महात्मा जोतीबा फुले यांनी शेतकऱ्याचा आसूड सारखा इतिहासाला कलाटनी देणारा प्रबोधनात्मक ग्रंथ लिहिला त्यामध्ये त्याकाळातल्या शेतकऱ्यांच्या आवनत स्थितिचे अत्यंत प्रत्ययकारी असे चित्र रेखाटले आहे. मध्यम शेतकरी, गरीब शेतकरी व शेतमजुर यांच्या दुदैन्यचे दशावतार महात्मा फुलेयांनी शेतकऱ्यांचा आसूड या ग्रंथामध्ये चित्रीत केले आहे.

महात्मा फुले व शेती सुधारणा

शेतकऱ्यांच्या दुर्दशेचे वर्णन करुनच म.फुले थांबलेले नाहीत तर त्यांनतर त्यांनी ही दुर्दशा संपवून शेतीव्यवसायात सुधारणा घडवून आणण्यासाठी इंग्रज सरकारकडे आनेक मागण्या ही केल्या.

आमच्या दयाळू सरकारणे एकंदर सर्व शेतकऱ्यांना युरोपीयन शेतकऱ्या सारखे विद्याज्ञान देऊन त्यास त्यासारखी खते शेतकामे करण्यापुर्ती समज येई तो पावेतो एकंदर सर्व गोऱ्यालोकांनी मुसलमान वगैरे लोकांनी हिंदुस्थानातील तुर्तत गाया, बैलासह त्यांचे वासरे कापुन खाण्या ऐवजी त्यांनी येथील शेळ्या,बकरी मारुन खावीत अथवा परमुलखातील गाय,बैल वगैरे खरेदी करुन खावे आणून मारुन खावे. म्हणून कायदा करुन आमलात आणला शिवाय येथील शुद्र शेतकऱ्या जवळ बैलाचा पुरवठा होऊन त्यांना आपल्या शेतीची मशागत भरपुर करता येणार नाही. व त्यांच्या जवळ शेणखताचा पुरवठा होऊन त्यांचा व सरकारचा फायदा होणार नाही. एकंदर डोंगर पर्वतावरील गवत,झांडाच्या पानफुलाचे मेलेल्या किटक मासहाडाचे कुजलेले सत्व वळवाच्या पावसाने धुवून पाण्याच्या पुरा बरोबर वाहून औडया खोडयात वाया जाऊ नये म्हणून आमच्या उदयोगी सरकारणे सोयी सोयीने काळया गोऱ्या लष्करासह पोलिस खात्यातील शिपायाकडून जागो जागी तलाव वजा बंधारे बांधावे व पाणी शेतात मुरवावे असे केल्याने शेती सूपीक होईल असे विचार फुलेंनी मांडले आहे.

समारोप

म.फुलेंनी शेतकऱ्यांच्या हितासाठी प्रसंगी भटशाही विरोधात आक्रमक भुमिका घेतली. व भट ब्रम्हणाच्या सामाजिक व मानसिक गुलामगीरीतून मुक्त करण्यासाठी शुद्र शेतकऱ्याच्या मुलांनी शिकले पाहिजे आणि सरकारने शुद्र शेतकऱ्यांच्या मुलांना शिकविण्यासाठी शेतकरी वर्गातीलच शिक्षक तयार केले पाहिजेत. अशा प्रकारची अपेक्षा जोतीराव व्यक्त करतात. भट ब्रम्हणांनी आपल्या कृत्रीम धर्माची शुद्र शेतकऱ्यावर इतकी छाप बसवीली आहे. की ब्रम्हणाच्या सांगण्यावरुन त्यांनी केलेले खून आथव गुन्हे इन्साफ होते वेळी ब्रम्हणास पुढे न करता आपल्या माथ्यावर घेवून त्याबद्दल शिक्षा भोगण्यामध्ये पुण्य मानतात.

शेतकऱ्याच्या दारिद्रयाचे जोतीबांनी प्रथम सुक्ष्म निरीक्षण केले व त्याला विषन्न अवस्थेतून बाहेर काढण्यासाठी साहित्यातून त्यांच्या दारिद्रयाचे वर्णन केले. आणि त्याधारे उपाय सुचवले प्रमाणिक प्रयत्न केले. वास्तवाच्या आधारे एखादे गृहीत उभी करण्याची शैली जोतीरावाशीवाय इतर कोणाला साधली नाही. या साठीच त्यांना देशातील शेती प्रश्नाचे पृवक्तेपण दयावे लागते.

सदर्भ :-

१. फुले जोतीराव गोविंदराव, शेतकऱ्यांचा असूड.
२. मा. फुले समग्र वाङमय, महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळ, मुबंई.
३. पवार जयसिगराव, अधूनिक हिदूस्थानचा इतिहास.
४. कीर धनजय, मा. जोतीबा फुले.
५. साळूके श्रीकांत, महाराष्ट्रतील शेतकरी चळवळ.

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR Est 1971 Tuljapur

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

2020-21

October 2021

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

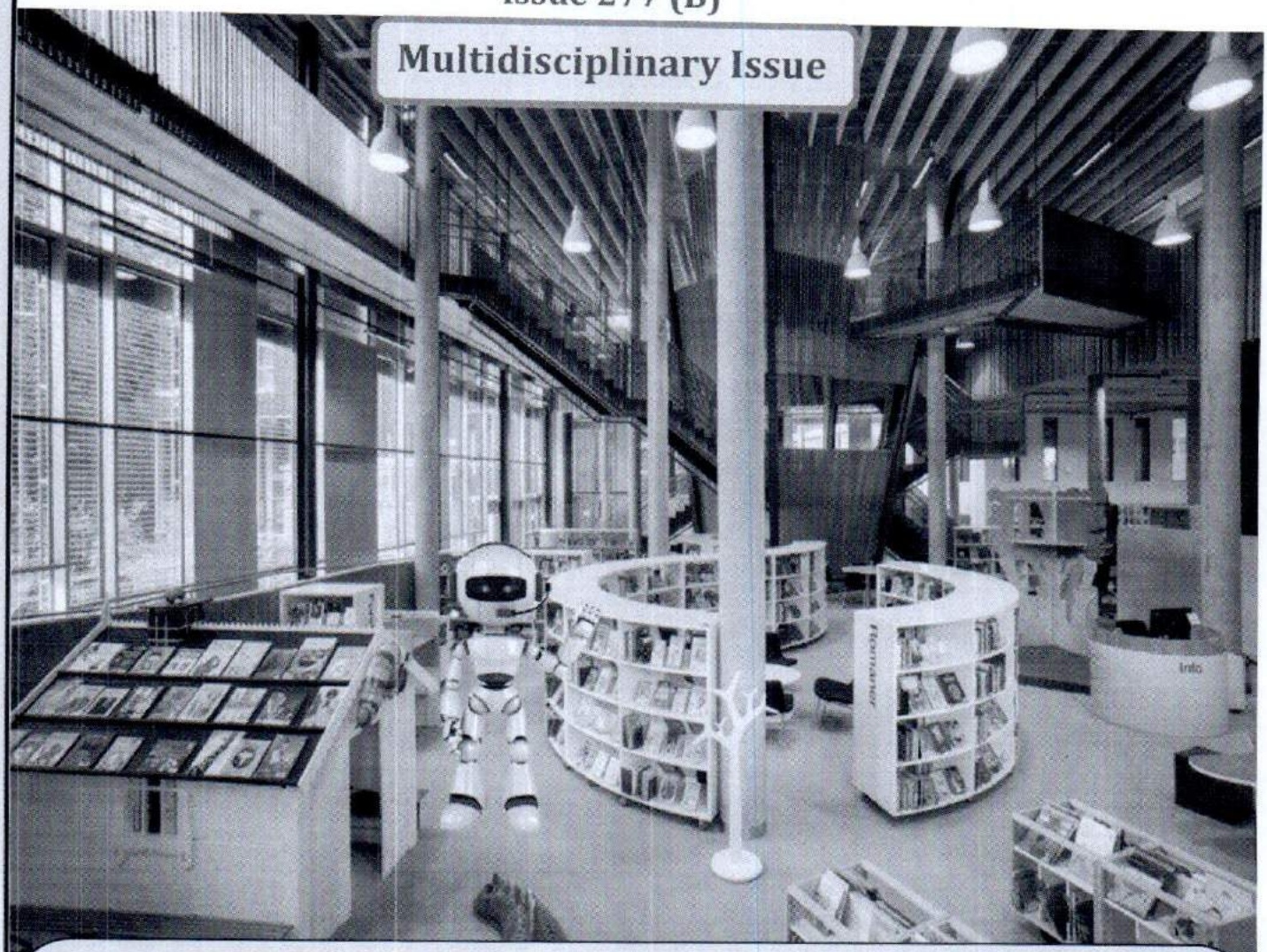
RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue 277 (B)

Multidisciplinary Issue



Guest Editor :
Dr. S.N. Kamat
I/c Principal,
Arts & Commerce College, Phondaghat
Dist. Sindhudurg [M.S.] India

Executive Editor :
Dr. S. R. Raibole,
Head, Dept. of Hindi,
Arts & Commerce College, Phondaghat
Dist. Sindhudurg [M.S.] India

Co Editors : Prof. S. M. Akhade, Prof. J. P. Rane, Dr. R. B. Patil,
Dr. B. A. Suravase, Prof. V. V. Patil

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
01	Management of Academic Library Sources and Services During COVID-19 Pandemic Situation	Mr. Milin Bhongle	05
02	Remote Learning with Google Classroom : An Overview	Suchita	11
03	Role of Artificial Intelligence in Various Managements Libraries	Prof, Rohidas Lohakare	16
04	Comparative Analysis of International Collaboration in Indian Agriculture Research	P. K. Nidhisha, Dr. R Sarangapani	21
05	Teacher : The Indispensable and Significant Part in the Process of Information Literacy Program	Sandesh Dongare	35
06	A Study on Factors Associated with Student Indiscipline at Pre-University College Level	Dr. H. P. Manjunath	38
07	Cyber-Crimes : A Growing Threat to Indian Banking Sector	Prin. Dr. A. R. Mungi	43
08	Debates and Experiments on Panchayat Raj Institutions in India	Dr. Pralhad Chengte	52
09	Role of Operation Research in loT's	Dr. Premila Kollur, Dr Anis Fatima	57
10	Servqual Analysis of Indian Stock Broking Companies – A Survey	R. Kajapriya, Dr. S. Venkateswaran	64
11	Total Quality Management in Libraries	Dr. D. T. Satpute	68
12	The Status and Trends of Virology Research : A Global Visualization and Scientometrics Analysis	Vishakha, Dr. Sarangapani R.	73
13	An Analytical Study of Environmental Awareness of Undergraduate Students of Kurukshetra District in Haryana	Dr. Aarti Trehan, Dr. Swati	84
14	Performance Analysis of Mgnrega in the Northeastern States of India Amidst Covid-19	Laishram Rebita Devi	91
15	Political Empowerment of Dalit Women: Issues and Challenges	Dr. Vyshali U	97
16	Impact of Motivation on the Goals of Success of College Students Engaged in Sports	Mr. Abinash Kar	103
17	Empowerment of Women in India : An Overview	Dr. Manjunath Deshpande	107
18	Standard Products and Consumer Protection : A Study of Awareness Levels of Undergraduates	Lt. Dr. Vijay Kumar Madugu	111
19	Content Analysis of Annals of Library and Information Studies (2018-2021)	Amey Ranade	116
20	Women Empowerment and Sensitization in India	Mrs. Gosha Liberhan	122
21	Soft Skills for Library Professionals	Mr. Adinath Darandale, Mr. Prakash Kokane	128
22	Study the Use of Information Sources of Social Networking Applications by the Librarians	Dr. Rajendra Latpate	132
23	Performance Evaluation of PMFBY in India	Dr. N. B. Kale	136
24	Digital Library Infrastructure and Services	Dr. Bhushan Ambekar	140
25	Sports Facilities and Sport Performance in the Soccer Sports between Male and Female College Players : A Comparative Study	Nandi Channabasappa, Dr. CK Kishor Kumar	144

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue – 277 (B) : Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
October- 2021

Performance Evaluation of PMFBY in India

Dr. N. B. KALE
HoD Dept. of Commerce,
Tuljabhani Mahavidylaya, Tuljapur

Introduction:

India is a second rank worldwide in agricultural output. In 2016, agriculture and allied sectors like forestry, logging and fishing represented 15.4% of the GDP. India manages 16% of the world population on 2.4% of world land area. At the time of independence, more than one-half of the national income was contributed by agricultural. At the same time, more than 70% of total population was depended on agriculture. The agriculture secures faces the lot of challenges due to uncertainties in agriculture i.e. natural and artificial hazards. Still, more people in India make money for their livelihood from this sector, than from all other economic sectors. In rural India, households that depend upon income from agriculture (either self-employed or as agricultural workforce) accounted from nearly 70% of the population. According to the World Bank collection of development indicator, employment in agriculture in India was reported 41. 49 per cent in 2020. All this facts & figures show that, the need for the development of agricultural sector in India.

India has reached the stage of self-sufficiency but it is still cursed by nature. This poses a great risk to Indian farmers in agricultural production and on their way. It has been observed that fluctuations in crop production in the Indian subcontinent are mainly due to natural uncertainties such as droughts, floods, cyclones, storms, landslides, earthquakes etc. The government of India was introduced crop Insurance scheme to face these challenges.

Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana (PMFBY) is the one of the largest crop insurance scheme, which was introduced in Feb. 2016. In this study, main focused on performance of PMFBY & RWBCIS in India from last three years.

Objectives of the study :

The objectives of concern study are as follows.

1. To study about crop insurance schemes in India
2. To measure the performance of crop insurance scheme in India
3. To analyzed the farmers participation, area insured and gross premium of crop insurance scheme
4. To suggest to upgrade the performance of crop insurance scheme in India

Research Methodology :

Data Collection: This is an analytical study; hence, Secondary data is an impetrate and powerful tool for the research. Researcher as complete research work is carried out on the basis of secondary data. The secondary data is collected through newspapers, magazine, government reports and internet. For accomplishing the objectives of the study, three years data is collected and analyzed it.

Research Area: The present study deals with the Performance evaluation of PMFBY. For justify the subject & detailed study proposes, PMFBY are selected in India.

Limitations of the study: In this study, only PMFBY was selected and only three years performance was measured of the agriculture insurance scheme. Other crop insurance schemes are not taken into account.

- **Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana (PMFBY)**

Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana (PMFBY) is one of the world's largest and important crop insurance programs. It's aimed to providing risk cover to Indian farmers. It was launched in early 2016 with the key feature being a highly subsidized and affordable premium to farmers. Under the scheme, only 2% premium of maximum to pay farmers during Kharif sowing, 1.5% during Rabi sowing for food and oilseed crops, whereas for annual commercial crops they have to pay a maximum of 5%. As a same, the Government of India and state government shared equally pay the subsidy on farmer's premium of actuarial premium rate. The National Agricultural Insurance Scheme (NAIS) as well as the modified NAIS has combined into PMFBY.

- **Performance evaluation of PMFBY in India**

The performance of crop insurance scheme especially PMFBY measured with the help of indicates. From last three years, performance was evaluated from 2018 to 2020. It includes farmer's participation, Lonee and Non-Lonee farmers, area insured, premium paid by farmers as well as government subsidy.

Farmer's participation:

From Kharif 2018 to Rabi 2020, total of 92.84 crore farmer applications have been approved under the scheme of PMFBY. In the Kharif Season 2018 to 2020, total of 58.5 crore and in Rabi season 34.34 crore farmers were participated from last three years. During 2018 to 2020, the participation of farmers was decline by -14.05 per cent. As a compare 2019 to 2018, farmer's participation was decline by -18.26 per cent and in the year 2019 to 2020, farmer's participation was decline by -9.84 per cent. The number of insured farmers has declined in a last three years regularly. Table no 01 shows the detailed performance in farmer's participation under PMFBY from 2018 to 2020.

Table No 01: Performance indicators in Farmers participation in PMFBY from 2018 to 2020

Year	Farmers coved in Kharif Season	Farmers coved in Rabi Season	Total	% Increase/ decries
2018	21663395	14685273	36348668	
2019	20051390	9660447	29711837	-18.26
2020	16794094	9995144	26789238	-9.84
Total	58508879	34340864	92849743	-14.05

Source: PMFBY Report 2018 to 2020

Area covered:

The total area insured in kharif and Rabi taken together has 133001.8 thousand hectors from 2018 to 2020. The area under PMFBY has decline by -3.21 per cent from 2018 to 2020. slightly by 6.5 percent (from 53.7 million ha in 2015-16 to 57.2 million ha in 2016-17). The area under the scheme has decreased from 45585.66 thousand hectare in 2018 to 44724.18 thousand hectare (PMFBY) in 2019, a decline of -1.89 per cent. Also, in next year, 2020 it has decline by -4.53 per cent.

As a compared to Kharif season 2018 to 2020, the area covered under PMFBY has increased from 27788.52 Thousand hector to 29303.25 thousand hectors in 2019. Apart from that, area

insured has decline in Rabi season from 2018 to 2020. Following table 02 indicates the performance in Area Covered in PMFBY from 2018 to 2020.

Table No 02: Performance indicators in Area covered in PMFBY from 2018 to 2020

Year	Area covered in Kharif Season (Thousand Hect.)	Area covered in Rabi Season (Thousand Hect.)	Total	% Increase/ decries
2018	27788.52	17797.14	45585.66	
2019	29303.25	15420.93	44724.18	-1.89
2020	26979.53	15712.41	42691.94	-4.53
Total	84071.3	48930.48	133001.8	-3.21

Source: PMFBY Report 2018 to 2020

Premium and Government Subsidy:

The premium paid by the farmers from 2018 to 2020 had 437708 lakh and state and central government had paid 7090269 lakh in that period. The gross premium has increased from year to year. During 2018 to 2020, it had increased from 2276445 lakh to 2504422 lakh and 2504422 lakh to 2747110 lakh.

During 2018 to 2020, the state and central government commonly paid the subsidy under these schemes. The subsidy paid by the state and central government on PMFBY had 92.89 per cent, 94.66 per cent and 94.83 per cent in the year 2018 to 2020 respectively. The following table 03 shows the performance in Premium and Govt. subsidy in PMFBY from 2018 to 2020.

Table No 03: Performance indicators in Premium and Govt. subsidy in PMFBY from 2018 to 2020

Year	Total State/Central Govt. Subsidy	Farmers Premium (in Lac.	Gross Premium (In Lac.)	Subsidy Paid In percent by Govt.
2018	2114482	161963	2276445	92.89
2019	2370777	133645	2504422	94.66
2020	2605010	142100	2747110	94.83
Total	**7090269**	**437708**	**7527977**	**94.13**

Source: PMFBY Report 2018 to 2020

Sum Insured:

As compared to 2018, the total sum insured all over the India has decline from Rs 21655889 lakh to Rs 20611720 lakh in 2019, a decline of about -4.82 per cent. Similarly, it has decline from Rs. 20611720 lakh to Rs. 19395291 lakh i.e. -5.9 per cent during 2019 to 2020. The total value of sum insured under PMFBY was Rs. 61662900 lakh, a decline average rate has -5.36 per cent in 2018 to 2020.

Table No 03: Performance indicators in Sum Insured in PMFBY from 2018 to 2020

Year	Sum Insured in Kharif Season (In Lac.)	Sum Insured in Rabi Season (In Lac.)	Total (In Lac.)	% Increase/ decries
2018	12394048	9261841	21655889	
2019	13425099	7186621	20611720	-4.82
2020	10953115	8442176	19395291	-5.9
Total	36772262	24890638	61662900	-5.36

Source: PMFBY Report 2018 to 2020

Conclusion:

As per the performance evaluate of PMFBY during 2018 to 2020, it is clearly indicates that, the number of farmers participation, area covered under PMFBY and sum insured had decline from last three year apart from Premium and government subsidy had increased. There is need to motivate the farmers towards crop insurance scheme. It is possible when the ground level motivation camp will be organized to door to door in every village.

Bibliography :

- Ashok Gulati, (Feb. 2018), Crop Insurance in India: Key Issues and Way Forward, Working paper NO. 352
- Singh, G. (2010), "Crop Insurance in India", IIM Ahmedabad, Working Paper. No. 2010-06- 01
- Ministry of Agriculture & farmers welfare Govt. of India; PMFBY Progress and achievement 2016 to 2021 report
- https://pmfby.gov.in/adminStatistics/dashboard
- https://pmfby.gov.in/pdf/New%20Schemes-english_.pdf
- https://pmfby.gov.in/ext/rpt/ssfr_17
- Hazell, P., Pomareda, C., and Valdes, A. (1986), "Crop Insurance for Agricultural Development", John Hopkins University Press, Baltimore, USA Harms, S.C, "History of Crop Insurance in the United States", Retrieved from

RESEARCHJOURNEY

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

2020-21

CONFERENCE PROCEEDINGS (ICCMEEHASS) (Edition I) OCTOBER, 2021



CONFERENCE PROCEEDINGS

ISBN : 978-93-91932-14-5

INTERNATIONAL CONFERENCE ON INNOVATIONS & CHALLENGES IN COMMERCE, MANAGEMENT ECONOMICS, EDUCATION, HUMANITIES, APPLIED & SOCIAL SCIENCES

(Edition I)

Editors:
Dr. Ashok Kumar
Dr. Ravi Kant Modi
Dr. Neeraj Basotia
Apoorv Jain

INSPIRA
JAIPUR - INDIA

YESHWANTRAO CHAVAN ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE

entry and exit of programs with the benefit of credit transfers. More emphasis is provided to technological application in teaching, learning, assessment and research. Further, the NEP 2020 announced the setting up of HECI & NRF. The Higher Education Commission of India will be for entire higher education segment and will replace the various existing regulatory bodies. Also, the Formation of National Research Foundation for funding & managing of research proposals in colleges & universities in India.

GLOBAL E-COMMERCE AND INDIAN RANKING

Dr. Kale Netaji Balaji

Assistant Professor, Department of Commerce, Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur

E-commerce or online commerce are the growing faster and given significant contribution to the worldwide economy. All over the world, e-commerce plays the most important role in development of country. Global ecommerce is the selling goods or services across geopolitical borders from one country to another. The total number of e-commerce companies in India is 21697 in 2019. It shows that, most of the traditional retail companies are converted his business into e-commerce. Amazon is the largest company in the world, near about 3, 34,555 employees has working under this company and his revenue is $3393 million in 2019. The e-commerce retail sales were growing rapidly in worldwide. As compared to the retail e-commerce sales worldwide in 2014 to 2015, it was growing $1336 billion to $1548 billion, by incising 15.87 per cent. The e-commerce sales by top 10 counties in 2021, it is show that in the bar, India is the 8th place in e-commerce seals in 2021. The e-commerce sales were increased from $32 billion to $67.53 billion from 2019 to 2021.

GROWTH OF E-COMMERCE IN INDIA WITH SPECIFIC REFERENCE TO CONSUMER PROTECTION

Ms. Nishtha Acharya

Assistant Professor, School of Law, Manipal University Jaipur

The utilisation of internet has also led to a nascent growth in e-commerce activities. E-commerce is a platform which imbibes the use of network for exchanging goods and services for some consideration. The newly developed digital market which has expanded with the spread of globalisation have majorly impacted economy internationally. Resultantly, the national market in the country have been affected due to international economic environment. E- commerce platforms have allowed tremendous growth of online retail industry while giving new experience to consumers. The increase in the number of internet users and more inclination towards online shopping have also given an entry several misleading activities affecting the rights of consumers. Looking onto the unprecedented growth of E-commerce around the world, there was an indispensable need to draft laws governing transactions of E-commerce with an intention to protect the rights of the consumers viz-a-vis concluding the electronic transactions through secure systems. The indiscriminate increased number of unethical practices which are concluded through e-commerce makes it quintessential to stress upon the laws formed for regulation of e-commerce business in India and to analyseits effects towards protection of consumer interest by bringing a change in the field of information technology.

EFFECT OF CADMIUM CHLORIDE ON HAEMATOPOIETIC ORGAN: THYMUS

Dr. Jaishree Daverey

Assistant Professor, Department of Zoology, J.D.B. Government Girls College, Kota, Rajasthan

Since there is a constant release of trace elements in unnaturally higher concentrations and often in unusual physio-chemical state, the fear of them being hazardous to human health is now an indisputable truth. Once perpetuated in the environment, metals are not readily detoxified by metabolic activity. As a result, they get accumulated contributing to potential environmental hazard. In the present study, the effect of cadmium chloride on thymus of mice has been in investigated. For the experiment, adult healthy male

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

2020-21

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 29 , Vol. 1	Peer Reviewed	ISSN : 2319 - 8648
November 2020	SJIF	Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2348-7143

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

November 2020 **Special Issue- 29 Vol. I**

Human Rights

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal Dr. Kishan Pawar

Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

Shaurya Publication, Latur

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 29 , Vol. 1	Peer Reviewed	ISSN : 2319 - 8648
November 2020	SJIF	Impact Factor : 7.139

मणि मधुकर के कहानी में किन्नर विमर्श

डॉ. मंत्री आर. आडे
हिन्दी विभाग, तुळजाभवानी महाविद्यालय, तुळजापूर

आज विश्व धरातल पर मानव अधिकारों की चर्चा ने आंदोलन का रुप लिया है। हाशिए के समाज को मुख्य धारा में लाने की कोशिश हो रही है। साहित्यिक दृष्टिकोण से आज अनेक विमर्शो की चर्चा की जा रही है। जैसे – स्त्री – विमर्श, दलित –विमर्श, अल्पसंख्यक – विमर्श, आदिवासी–विमर्श आदि। जिसके अर्न्तगत समाज के अनेक उपेक्षित वर्गो पर साहित्य मे चिंतन हो रहा है; किन्तु समाज के अनेक उपेक्षित वर्गो पर साहित्य में चिंतन हो रहा है, किन्तु समाज बहिष्कृत, लिंग निरपेक्ष 'किन्नर' समुदाय के विषय में कोई बडी चर्चा नही दिखाई नही दे रही है। समाज मे एक वर्ग उपस्थित है। यह लौगिक विकलांग। जिसे उभयलिंगी, तृतीय लिंग, हिजडा खुसरा, किन्नर मौसी नामों से जाना जाता है। इस वर्ग को हमेशा ही समाज द्वपारा घृणित दृष्टि से देखा जाता है। आज भी यह वर्ग अपने आस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। किन्नर हिमालय में के क्षेत्रों में बसनेवाली एक मनुष्य जाती का नाम है। जिनकी भाषा कन्नौरी, गलचा, लाहौली बोलिके परिवार है। पुराणों और महाभारत की कथाओं अख्यानों में उनकी चर्चाऐं प्राप्त होती है। किन्नरों के मानवाधिकारों के लिए वैश्विक धरातल पर प्रयास हो रहा है। किन्नर के लिए तिसरे लिंग के रुप मे इनके अधिकारों को मान्यता दी गई है। आज भी उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार हो रहा है। प्राचीन ग्रंथों में किन्नर शब्द का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी, उर्दू में हिजडा, मराठी में छक्का–हिजडा गुजराथी में पावैया, पंजाबी में जनखा, तेलुगु में कोज्जा मादा और नपुसंकुडू शब्दो का प्रयोग मिलता है। इस वर्ग को समाजने आपने से अलग कर शापित जीवन जीने के लिए विवश कर रखा है। किन्नर समुदाय रक्कद को मंगलमुख मानते हे इसलिए ही ये लोग शादी जन्म समारोह जैसे मांगलिक कामों में ही भाग लेते है। मरने के बाद यो लोग मातंग नही मनाते अपने आराध्य देव अरावना से साल में एक बार विवाह करते है। ऐसा माना जाता है कि ब्रम्हा जी की छाया से किन्नरो की उत्पती हुई है। महाभारत में अज्ञातवास के दौरान, अर्जून ने विहन्ना नाम के एक हिजडे का रुप धारण किया था।

समाज में जो कुछ घटित होता है, साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति होती है। समाज में जो कुछ भी व्याप्त है, वह साहित्यकार की संवेदना चिंता और चितन का विषय होता है। जिसकी अभिव्यक्ति के द्वारा समाज मे अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। साहित्य के माध्यम से ही साहित्यकार समाज से संवाद स्थापित करता है और समाज की चिंताओं को साहित्य के पटक पर उभारता है। साहित्य के क्षेत्र में वर्तमान समय में लिंग निरपेक्ष समाज बहिष्कृत किन्नर पर चिंतन और चर्चा तेज हुई है। हिन्दी में आरंभ से यह विमर्श दिखाई देता है। चित्रा मुदुल – पोप्ट बाक्स नं. 203 नालासोपारा, महेन्द भीष्म– किन्नर कथा; प्रदिप सौरभ – तीसरी ताली, के साथ बीच के लोग नेग जासदी आदि य काव्य में किन्नर व्यथा का यथार्थ चित्रण किया गया है। हिन्दी कथा साहित्य में अभी उतनी मात्रा में किन्नरों को लेकर अधिक मात्रा मे कहानियों नही लिखी गई है। किन्तु हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श पर चर्चाए हो रही है उसी के परिणाम स्वरुप हिन्दी कथा साहित्य मे किन्नर विमर्श की कहानियों लिखी पढी जा रही है।

किन्नर विमर्श की कहानियों की बात करे तो मणि मधुकर की श्रेष्ठ कहानी एकवचन–बहुवचन एक महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी में किन्नरों की समस्याऐं और उसका यथार्थ चित्रण किया है। साठोत्तरी पीढी के प्रदेश के सबसे समर्थ रचनाकार है। कथानक लोक जीवन से ग्रहण करते है। अंचल में व्याप्त विषाद की छाया को पकडने का प्रयास अपने साहित्य के माध्यम से किया है। प्रेमचन्द की तरह मणि मधुकर ने किसानों के आर्थिक, सांस्कृतिक शोषण को उजागर किया है। उनकी अनेक कहानियों इन्सान को साहसी बनाती है। मौलिक प्रतीभा के बल पर कहानी में (मैं)शैली का प्रयोग किया है। उनकी 'एकवचन–बहुवचन' कहानी में टूटते हुए सपने, मोहभंग की पीडा, राजनीतिक स्तर पर पनपती हुई विशाल धोखेबाजी, भ्रष्टाचार, स्वार्थ लोलूपता को फन्तासी के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। मैं को एक आकाशवाणी अन्धेरे जंगल में तुफानी हवा और रेत सुनाई सुनाई देती है। महाराज के मरजाने के बाद उनका उत्तराधिकारी के लिए अगले ही दिन एक कबूतर को छोडा गया और डोडी पिटवाई कि जिसके कन्धे पर कबुतर बैठेगा पही इस देश का शासक होगा। अलीबख्श एक हिजडा है। यह 'मैं' को इन सरदारो से बचाने के लिए कहता है। सरदार मानने के लिए तैयार नही होता यह कहता है – "कबुतर इसके कंधे पर बैठा है। अब ये हमारे महाराजा है।" बडे आदर के साथ रथ पर बिठाकर अलीबख्श की जयजयकार होती है। 'मैं' जनता को कहता है यह हिजडा है। तब लोगो को लगता है को यह हामे बहका रहा है। लोक 'मैं' को मारने के लिए दौडते है। अपनी जान बचाने के लिए वहाँ से जंगल मे पहुँच जाता है। मैं एकवचन है। जंगल में पेड पर बैठे चकवे–चकवी 'मैं' को जानते है। चकवी कहती है चकवे से 'मैं' यदी वायू प्रदेश की रहनेवाली मर्द सून्दरी के पास चला जाता है तो इसका दुःख दूर हो सकता है। चकवी–चकवे के दिए गए तीन दाने हथेली में लेकर वायू–प्रदेश की रहनेवाली मर्द सून्दरी के पास चला जाता है तो इसका दूख दूर हो सकता है। चकवी–चकवे के दिए गए तीन दाने हथेली में लेकर वायू–प्रदेश की मर्द सून्दरी की ओर निकल पडता है। एक दाना खाने पर 'मैं' का स्वस्थ ठिक हो जायेगा। दुसरा दाना खाने पर मर्द सून्दरी के मुल्क पहूँच जायेगा। और तीसरा दाना खाने के बाद 'मैं' मनचाहा रुफप धारण कर सकता है। 'मैं' या बाते सूनकर वायू–प्रदेशर के एक फूटपाथ पर आ जाता है। वहाँ 'मैं' को एक झाडूवाली नारी मिजती है। वह उसे मर्द सून्दरी के पास ले जाने का वादा करती है। इसके बदले मे वह 'मैं' को चुमने के लिए कहती है

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

निष्कर्ष रुप से कह सकते है एक किन्नर विमर्श अभी अपरिपक्व अवस्था मे है। समाज मे की वैचारिकी अभी इसे स्वीकार करने मे हिचक रही है। मानवीय सर्वोच्च न्यायालय ने एक सकारात्मक और सार्थक पहल की है। जहा 15 अप्रैल 2014 मे आलोच्य समाज को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1) के तहत निजता और वैयक्तिक स्वतत्र्य पहचान मिलेने के कारण उनमे चेतना निर्माण हो रही है। आज हिन्दी कथा साहित्य मे किन्नर विमर्श की पहल अब तज होती हुई दिखाई देती है। आज साहित्य मे किन्नरों को लेकर कहानियाँ स्वत. साहित्यकार अब किन्नरों की वेदना मजबूरियां ,व्यथाओं, शोष्ण, पीडा और भेदभाव को अभिहित किया है। किन्नर भी इन्सान ही है। प्रकृती और समाज द्ववारा सताने पर भी मानवीयता उनमे अब भी बाकी है।सामाजीक व्यवस्था के कारण वे अदर से टूट रहे। ऐसे मे उन्हे समाज की मुख्य धारा में लाना और उनके प्रकृति समाज में सदभावना लाना जरूरी है। मणि मधुकर के साथ अनेक साहित्यकारो ने किन्नरो की मानवीयता का यथार्थ मिश्रण अपने कथा साहित्य में अभिहीत किया है। हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श अभी अपरिपक्व अवस्था में है। समाज की वैचारिकी इन्हे स्वीकारने में हिचक रही है। आशा है कि किन्नर भी समाज मे सामान्य लोगों की भान्ति मानवाधिकोरों के साथ जीवन यापित कर पायेगें।

संदर्भ ग्रंथ

1 एकवचन – बहुवचन – मणि मधुकर, पृष्ठ–129.
2 एकवचन – बहुवचन – मणि मधुकर, पृष्ठ–133.
3 एकवचन – बहुवचन – मणि मधुकर, पृष्ठ–134.
4 पत्रिका–समीक्षा अक्तूबर–दिसम्बर 1980, पृष्ठ–69.
5 मेरी दष्टि तो मेरी है–असंल कुसूम, पृष्ठ–106.
6 पन्ना बा–गरिमा संजय दुबे त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका–संपा. एम फिरोज अहमद, जनवरी–मार्च–2017पृष्ठ–120.
7 हिजडा – श्रीकृष्ण सैनी त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका, संपा. एम. फिरोज अहमद, जनवरी–मार्च–2017,पृष्ठ– 124.
8 वेबसाइट । इन्टरनेट

VOLUME - IX, ISSUE - III - JULY - SEPTEMBER - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	कमलेश्वर के 'उपन्यास कितने पाकिस्तान' में वर्णित विभिन्न समस्याएँ **डॉ. रावसाहेब आर. जाधव** **डॉ. मंत्री आर. आडे**	१-५
२	हिंदी गजल साहित्य का स्वरूप एक अध्ययन **नम्रता विश्वांभरराव वावळे**	६-१२
३	उत्तर भारत की संत परम्परा : सवाल, संघर्ष, प्रतिरोध की आवाजें एवं सामाजिक परिवर्तन **अर्चना कुमारी**	१३-१७
४	वेश्यावृत्ति : नैतिकता तथा वैद्यता **डॉ. यामिनी पड़ियार**	१८-२२
५	मीडिया के बदलते परिमान : सामाजिक सरोकार **सहा. प्रो. शीतल श्रीनिवासन बियाणी**	२३-२५
६	राष्ट्रीय विकास में संगीत शिक्षा की भूमिका **डॉ. राजीव बोरकर**	२६-२८
७	आँचलिक उपन्यासकार रांगेय राघव **प्रा. डॉ. गिरि डी. व्ही.**	२९-३२
८	मासिक धर्म : एक चुनौती (विशेष संदर्भ : जनजातीय महिलाएं) **डॉ. पिंकी शर्मा** **प्रो. पूरण मल यादव**	३३-३९
९	भारत में मानवाधिकार और महिलाएँ : एक चिंतन **प्रा. डॉ. आर. जी. बांबोळे**	४०-४५
१०	समकालीन हिन्दी कहानियों में उपेक्षित वृद्ध **ललिता कंशवाहा**	४६-५०
११	भारतीय शिक्षा का उद्देश्य **डॉ. अजीत कुमार**	५१-५५

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

VOLUME - IX, ISSUE - III – JULY – SEPTEMBER - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

ही श्रेष्ठ है और दूसरे धर्मो को वह हेय दृष्टी से देखते है। धार्मिक कट्टरता के कारण मानव की विचारधारा सही है। कमलेश्वर ने उपने उपन्यास में इस समस्या को प्रमुखता से उठाया है। उदाहरण देखिए–

जमा मस्जिद के अब्दुल्ला बुखारी ने दस्तक दी और बोले–"अगर बाबरी मस्जिद ढहाई जायेगी तो खून की नदियाँ बहा दी जायेंगी। इस शाही इमाम का यह एलान है।"

३) सत्ता की राजनीति

इतिहास गवाह है मनुष्य ने सदा से धर्म को राजनीति का मोहरा बनाकर सत्ता प्राप्ति के लिए एक हथियार के रुप मे इस्तेमाल किया है, चाहे मुगल शासक हो या फिर अंग्रेज। हमेशा सत्ता प्राप्ति के लिए घृणित चालें चलते रहे, जो आज की लोकतान्त्रिक व्यवस्था में देश स्वतन्त्र हो जाने के बाद भी जारी है।

लोगों की धार्मिक भावनाओं को भडकाकर सत्ता के उच्च पायदान तक पहुँचने के अनेक उदाहरण कमलेश्वर ने अपने उपन्यास में दिए है। औरंगजेब ने अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के लिए सत्ता के उत्तराधिकार युध्द को अपनी कुटिल चालो द्वारा किस प्रकार धार्मिक रुप दे दिया। उसने अपने बडे भाई दाराशिकोह, जो शाहजहाँ का उत्तराधिकारी था और कुछ मुलायम तबीयत का आदमी था, उसके खिलाफ काफिर और अनेकेश्वरवादी होने का आरोप लगाकर उलेमाओं से उसके लिए मौत का फतवा जारी करवा कर अपने मौत के घाट उतरवा दिया। मुगलिया सल्तनत का ताज हासिल करने की इस हवस को धर्माज्ञा का आवरण पहना दिया गया है।

४) जातीयता

भारत में जातिवाद का इतिहास बहुत पुराना है। मनु द्वारा लिखित मनुस्मृति को इसका आधार माना गया है। भारत मे जाति को धर्म से भी उँचा स्थान दिया गया है। अपनी इसी कमजोरी के कारण भारत को बार–बार बाह्य आक्रमणों का शिकार होना पडा तथा उसे गुलामी की त्रासदी भी झेलनी पडी।

दिनकर के शब्दों में –'धार्मिक विश्वासों की विकृति के साथ हिन्दुओं की दूसरी कमजोरी उनकी जातपात में बँटा रहना था। विपत्ति में यदि वैश हे तो गतपूत उसकी मदत नही करेंगे और विपतिमें यदि एक गोत्र का ब्राम्हण है तो दूसरे गोत्र वाला ब्राम्हण, राजपूत, कायस्थ, कुर्मी या कहार समझा जाता हो, जिस देश के लोग अपनी भक्ति और प्रेम पर पहला अधिकार अपनी जातिवालों का समझाते हों, जिस देश की एक जाति के लोग दूसरी जाति, के विव्दान को मूर्ख, दानी को कृपण, बली को दुर्बल, सच्चरित्र को दुश्चरित्र और अपनी जाति के मूर्ख को विव्दान और पापी पुण्यात्मा समझाते हो, जहाँ आदमी की जाति बात–बात में चली जाती हो।' आलोच्य उपन्यास में कमलेश्वर ने जातीयता की इस समस्या को प्रमुखता से उठाया है।

५) आतंकवाद

वर्तमान युग की सबसे बडी समस्या है आतंकवाद, जो बीसवीं शताब्दी की देन है, जिसने विश्व के अधिकांश देशों को भीतर तक खोंखला कर दिया है। भारत ने पिछले दो दशकों में आतंकवाद के कारण जितनी हानि उठायी है, शायद ही विश्व के किसी अन्य देश ने झेली हो। लाखों, हजारो अनाथ बच्चे, अरबों की सम्पति, लोगों में समायी दहशत, बेशकीमती विश्वास कभी को आतंकवाद निगल गया है।

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

VOLUME - IX, ISSUE - III – JULY – SEPTEMBER - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

८) उदात्त मानव मूल्यों का हास

मानव मूल्यों केहास के कारण १९४७ में भारतीय उपमहाव्दीप को भारत–पाक विभाजन की त्रासदी झेलनी पडी, यह बँटवारा केवल गज नीतिक या भौगोलिक नहीं था, अपितु इसने लोगों के दिलों को भी बाँटकर रख दिया था। सीमाओं के दायरे सीमित होते ही प्रिय लोग अपरिचित हो गये थे। विभाजन से पहले विभाजन के समय व विभाजन के बाद जो हिन्दु, मुस्लिम, साम्प्रदायिक दंगे हुए, उसमें लूटमार, आगजनी, बलात्कार हत्याएँ आदि रोंगटे खडे कर देने वाले कृत्य किए गये थे। उन चोटों के निशान आज भी दिल से मिटे नही है।

इस सम्बन्ध मे नरेन्द्र मोहन का कहना है–'एक ही संस्कृति में पले, बढे, समान भाषाएँ बोलने वाले एक से भावों से बँधी जातियों का देशान्तरण हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खो का साम्प्रदायिक आग की लपटों में झुलसते हुए स्वदेश त्याग विश्व इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना है। इस तरह की ट्रेजडी इतनी बडे पैमाने पर मे पहले कभी घटित नहीं हुई।

९) अलगाव की समस्या

अलगाववाद आज न सिर्फ भारत बल्कि समूचे विश्व की समस्या है। धीरे–धीरे, छोटी–छोटी समस्याओं का बीज रुप ही एक दिन अलगाववाद का विशाल वृक्ष बनता है। इसका प्रमुख कारण है, आज मानव का हृदय ही खण्डित हो चुका है। प्रत्येक मानव स्वयं को श्रेष्ठ तथा दूसरे को हीन समझने लगा है। भारत में नागा, मिजो तथा अन्य उत्तरी–पूर्वी सीमा क्षेत्रों में पृथकतावादी आंदोलन चल रहे है। इसके अतिरिक्त कश्मीर, गोरखालैण्ड, बोडोलैण्ड आदि के रुप में खूनी आन्दोलन चल रहे है। दक्षिण मे तेलंगाना आदि क्षेत्रों में नक्सलवादियों व्दारा भी यही किया जा रहा है। विश्व में दृष्टि डाले तो यूगोस्लाविया, श्रीलंका, बोस्निया, सोमालिया, फिलिस्तीन इसराईल आदि अनेक उदाहरण भरे पडे है।

१०) बढते कंक्रीट के जंगल की समस्या

वर्तमान युग जनसंख्या विस्फोट का युग है, विशेष तौर पर भारत में म ृत्यु दर घटी और जन्म–दर बढी है। आज भारत जनसंख्या की दृष्टी से विश्व में दूसरे स्थान पर है। इस बढती जनसंख्या की सुविधाओं के लिए सरकार जितने संसाधन जुटाती है, यह उन संसाधनों के मुकाबले तेजी से बढ जाते है, इस जंगलो का कटान निरन्तर जारी है, जिसका प्रभाव प्रकृति के साथ–साथ मनुष्य के जीवन पर भी पड रहा है। महानगरों में तो स्थिति और भी ज्यादा भयावह हो गई है। दूर–दूर तक नजर दौडने पर इमारतें ही दिखाई देती है। हरियाली दिन–प्रतिदिन कम होती जा रही है। मनुष्य आज अपने जीवित रहने के लिए आवश्यक स्वच्छ वायु के लिए भी तरस रहा है।

११) परमाणु परिक्षणों का धरती पर प्रभाव

विश्व के सभी राष्ट्रों मे स्वयं को शक्तिशाली सिध्द करने की होड लगी हुई है। एक देश यदि विनाश की ओर एक कदम रखता है तो दूसरा दो कदम, तब पहला तीन कदम आगे बढने का प्रयास करता है। इसी प्रतिव्दन्व्दिता के कारण आज मानव के अस्तित्व को बचाने के स्थान पर उसे उजाडने के प्रयास

Tuljabhavani Mahavidyalaya TULJAPUR ES 1971 Tuljapur

Kisan Shikshan Prasarak Mandal,
Borgoan (Kale) Tq. & Dist. Latur's

NAAC Accredited 'B' Grade



Vasantrao Kale Mahavidyalaya,
Dhoki. Tq & Dist - Osmanabad.

&

Akhil Maharashtra Itihas Parishad, Pune

Jointly Organize

One Day International Conference on

"The History of Pandemic like Covid-19 & Its Impat on Socio-Economic & Political Sectors in the World"

Tuesday, 20th October 2020

ISSN No. : 2278-9308
Impact Factor : 7.675

Editor	Chief Editor	Executive Editor
Dr. N. P. Manale	Dr. Satish Kadam	Dr. Haridas Fere
(Convenor)	(President, AMIP)	(Principal)

Organized by

Department of History

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgoan (Kale) Tq. & Dist. Latur's

VASANTRAO KALE MAHAVIDYALAYA, DHOKI

Tq & Dist.- Osmanabad - 413508

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	History of Pandemic Diseases in Changing India — **Prof. Madhukar Tukaram Kshirsagar**	1
2	Global Warming Impact and Care — **Dr. Mahebubpasha Babumiya Shirmale**	6
3	Covid-19 outbreak: impactson education sector in india and plan of action — **Dr. Archana m. Falke**	9
4	COVID-19 Pandemic To Haunt Economy And Unemployment In India — **Dr. Chandrajit Bhalchandra Jadhav**	14
5	Impact Of Covid-19 On English Literature: A Historical Perspecive — **Mr. Shrimangale Madhav Dattarao**	19
6	The Impact Of Covid-19 On Education — **Sanjay .B.Salunke**	22
7	The Issue of COVID-19 & Its Impact on Service Sector of India — **Dr. Gopal Ghumatkar / Prof. Pratiksha Tikar**	25
8	Impact of COVID-19 on Science and Technology — **A A Bharose1 and V D Surve**	28
9	Caste and Covid -19 Pandemic — **Mr. M. B. Gaikwad**	30
10	Historic Survey of Pandemic in India — **Mr. Dinkar M. Randive**	32
11	History of Pandemics & Covid-19 — **Dr.Devaki Nilesh Rathod**	35
12	COVID-19 Crisis and Instability of Indian Rupee with US Dollar — **Dr. Gopal Ghumatkar / Dr. G. B. Gawande**	39
13	Role of knowledge management model for qualitative teaching at secondary school level — **Dr. Mahadeo Sadashiv Disale**	45
14	COVID – 19 Pandemic: Wake – up Call of Digital Transformation for Education System — **Pallavi B. Nalle, Sangita Shinde, Mangesh Manke, S. S. Kale**	47
15	Impact of COVID-19 on the Teaching and Learning of Science in Higher Education — **Sangita Shinde, Pallavi Nalle, Qudari F. B.**	52
16	Impact Of COVID-19 On Education System In India & Students Personality Development — **Umakant Bhimrao Kidile**	56
17	World economy: opportunities and challenges after covid-19 pandemic — **Prin.Dr.G.D.Birajdar**	62
18	Horrors of Pandemic in Albert Camus's The Plague — **Dr. Manoj Limbraj Somwanshi**	66
19	History of Pandemic and Covid-19 — **Dr.Baviskar G.V.**	69

History of Pandemic and Covid-19

Shri.Baviskar G.V.
(Assit.Prof.& Head) History Tuljabhavani Mahavidyalaya,Tuljapur

Abstract- The COVID-19 pandemic,also known as the coronavirus pandemic, is an ongoing pandemic of coronavirus disease 2019 (COVID-19) caused by severe acute respiratory syndrome coronavirus 2 (SARS-CoV-2). The disease was first identified in December 2019 in Wuhan, China, became a Public Health Emergency of International Concern in January 2020, and subsequently recognised as a pandemic in March 2020. As of 2 October 2020, more than 34.2 million cases have been reported worldwide, although the true number of cases are likely to be more higher. A more reliable indicator for case spread is the more than 1.02 million deaths attributed to COVID-19.

Introduction-The disease spreads between people most often when they are physically close. It spreads very easily and sustainably through the air, primarily via small droplets or particles such as aerosols, produced after an infected person breathes, coughs, sneezes, talks or sings. It may also be transmitted via contaminated surfaces, although this has not been conclusively demonstrated. It can spread for up to two days prior to symptom onset and from people who are asymptomatic. People remain infectious for 7–12 days in moderate cases and up to two weeks in severe cases.

Common symptoms include fever, cough, fatigue, shortness of breath or breathing difficulties,and lossofsmell. Complications may include pneumonia and acute respiratory distress syndrome. The incubation period is typically around five days but may range from one to 14 days. There are several vaccine candidates in development, although none have completed clinical trials to prove their safety and efficacy. There is no known specific antiviral medication, so primary treatment is currently symptomatic.

ObjectivesOf Research Area-

1.To focus on History of Pandemic and Covid-19
2.To analysis between Pandemic and Covid-19
3.To aware about Pandemic and Covid-19

Area Of Research-

1)Recommended preventive measures-

Include hand washing, covering mouth when sneezing or coughing, social distancing, wearing a face mask in public, disinfecting surfaces, ventilating and air-filtering, and monitoring and self-isolation for people who suspect they may be infected. Authorities worldwide have responded by implementing travel restrictions, lockdowns, workplace hazard controls, and facility closures to slow the spread of the disease. Many places have also worked to increase testing capacity and trace contacts of the infected.

The pandemic has caused global social and economic disruption, including the largest global recession since the Great Depression. According to estimations, up to 100 million people have fallen into extreme poverty and global famines are affecting 130 million people. It has led to thepostponementorcancellation of sporting, religious, political,and cultural events, widespread supply shortages exacerbated by panic buying, and decreased emissions of pollutants and greenhouse gases. Educational institutions have been partially or fully closed, with many switching to online schooling. Misinformation about the virus has circulated through social media and mass media. There have been many incidents of xenophobia and racism against Chinese people and against those perceived as being Chinese or as being from areas with high infection rates.

2) World Health Organization-

(WHO) received reports of a cluster of viral pneumonia cases of an unknown cause in Wuhan, Hubei, and an investigation was launched at the start of January 2020. On 30 January, with 7,818 confirmed cases across 19 countries, the WHO declared the outbreak a Public Health Emergency of International Concern (PHEIC).

Several early infected people had visited Huanan Seafood Wholesale Market; the virus is therefore thought to be of zoonotic origin.[1] The virus that caused the outbreak is known as SARS-CoV-2,a newly discovered virus closely related to bat coronaviruses, pangolin coronaviruses, and SARS-CoV. The scientific consensus is that COVID-19 has a natural origin. The probable bat-to-human infection may have been among people processing bat carcasses and guano in the production of traditional Chinese medicines.

The earliest known person with symptoms was later discovered to have fallen ill on 1 December 2019, and that person did not have visible connections with the later wet market cluster. Of the early cluster of cases reported that month, two-thirds were found to have a link with the market. On 13 March 2020, an unverified report from the *South China Morning Post* suggested a case traced back to 17 November 2019 (a 55-year-old from Hubei) may have been the first person infected. Phylogenic estimates in genetic studies conducted in early 2020 indicate that the SARS-CoV-2 virus likely jumped into the human population sometime between 6 October 2019 and 11 December 2019.

3)Average Number of Death-

While the numbers vary significantly by age and location, more than 95% of the people who contract COVID-19 worldwide recover. For those who do not, the time between the onset of symptoms and death usually ranges from 6 to 41 days, typically about 14 days. As of 2 October 2020, approximately 1.02 million deaths had been attributed to COVID-19. In China, as of 14 June, about 80 percent of deaths were recorded in those aged over 60, and 75 percent had pre-existing health conditions including cardiovascular diseases and diabetes. Individuals of any age with COPD, obesity, type 2 diabetes mellitus and other underlying health conditions are at increased risk of severe illness from COVID-19.

On 24 March 2020, the U.S. Centers for Disease Control and Prevention changed criteria for attributing deaths to COVID-19 to include those marked "probable" or "likely" COVID–19 on death certificates. The CDC noted that "It Is not likely that [the CDC's National Center for Health Statistics] will follow up on these cases" and also that while the "underlying cause depends upon what and where conditions are reported on the death certificate, ... the rules for coding and selection of the underlying cause of death are expected to result in COVID–19 being the underlying cause more often than not."

In August 2020, the CDC reported that in the United States 94 percent of COVID-19 death certificates listed at least one comorbidity. The reported comorbidities include symptoms caused by COVID-19 infection which contributed to the fatality in addition to pre-existing health conditions. On 92% of American death certificates listing COVID-19 as a cause of death, COVID-19 was listed as "the condition that began the chain of events that ultimately led to the person's death".

The first confirmed death was in Wuhan on 9 January 2020. The first reported death outside of China occurred on 1 February in the Philippines, and the first reported death outside Asia was in France on 14 February. Post-mortem analysis of tissue samples has identified earlier deaths due to COVID-19 which went undetected at the time, including a California woman who died on 6 February.

Official deaths from COVID-19 generally refer to people who died after testing positive according to protocols. This may ignore deaths of people who die without having been tested. Conversely, deaths of people who had underlying conditions may lead to over-

counting. Comparison of statistics for deaths for all causes versus the seasonal average indicates excess mortality in many countries. In the worst affected areas, mortality has been several times higher than average. In New York City, deaths have been four times higher than average, in Paris twice as high, and in many European countries, deaths have been on average 20 to 30 percent higher than normal. This excess mortality may include deaths due to strained healthcare systems and bans on elective surgery.

4)Transmission of Covid-19:-

COVID-19 is a new disease, and how it spreads remains under investigation. It spreads from person to person, most often when they are physically close, but sometimes over longer distances, especially indoors. When an infected person breathes, coughs, sneezes, talks or sings, they produce contaminated droplets and particles such as aerosols. These travel through the air, usually over short distances, but some can remain suspended in the air, to infect other people who inhale them. The closer people interact, and the longer they interact, the more likely the virus is to transmit.

It transmits very easily and sustainably, however the number of people generally infected by one infected person varies. It is more infectious than influenza, but less so than measles. It can transmit when people are symptomatic, for up to two days prior to developing symptoms, and even if a person never shows symptoms (asymptomatic transmission - it is unclear how often this happens). A July 2020 systematic review found that the proportion of asymptomatic cases ranges from 6% to 41%.[1] People remain infectious in moderate cases for 7–12 days, and up to two weeks in severe cases.

There is a major role in epidemics of COVID-19 of "super-spreading events", where many people are infected by one person. These generally occur usually indoors, where groups of people remain in poor ventilation for longer periods. Another important site for transmission is between members of the same household.

Airborne transmission occurs particularly in crowded and less ventilated indoor spaces, which are particularly effective for transmitting the virus, such as restaurants, nightclubs, public transport and gatherings such as funerals.

It may be possible that people may be infected if they touch contaminated surfaces and then their eyes, nose or mouth with unwashed hands (fomite transmission), but this has not been conclusively demonstrated. Surfaces are easily decontaminated with household disinfectants which destroy the virus outside the human body or on the hands. Disinfectants or bleach are not a medical treatment for COVID-19, and cause health problems when not used properly, such as when used inside the human body.

Sputum and saliva carry large amounts of virus. Although COVID-19 is not a sexually transmitted infection, being physically close during sexual contact may transmit the virus. The virus may occur in breast milk, but transmission this way has not been shown, and mother-to-child transmission rarely occurs.

Estimates of the number of people infected by one person with COVID-19, the R0, have varied. The WHO's initial estimates of R0 were 1.4–2.5 (average 1.95); however, a review in early April 2020 found the *basic* R0 (without control measures) to be higher at 3.28 and the median R0 to be 2.79.

5) Signs and Symptoms-

Symptoms of COVID-19 can be relatively non-specific; the two most common symptoms are fever (88 percent) and dry cough (68 percent). Less common symptoms include fatigue, respiratory sputum production (phlegm), loss of the sense of smell, loss of taste, shortness of breath, muscle and joint pain, sore throat, headache, chills, vomiting, coughing out blood, diarrhea, and rash.

Among those who develop symptoms, approximately one in five may become more seriously ill and have difficulty breathing. Emergency symptoms include difficulty breathing, persistent chest pain or pressure, sudden confusion, difficulty waking, and bluish face or lips; immediate medical

attention is advised if these symptoms are present. Further development of the disease can lead to complications including pneumonia, acute respiratory distress syndrome, sepsis, septic shock, and kidney failure.

6)Diagnosis-

COVID-19 can provisionally be diagnosed on the basis of symptoms and confirmed using reverse transcription polymerase chain reaction (RT-PCR) testing of infected secretions or CT imaging of the chest.

On 29 September, a letter in Lancet highlighted the increasing likelihood of overestimating of COVID-19 incidence as more asymptomatic people are included in RT-PCR testing with consequent "misdirection of policies regarding lockdowns and school closures," noting that the false-positive rate in the UK is currently unknown, with "preliminary estimates ... somewhere between 0·8% and 4·0%". The letter called for "stricter standards ... in laboratory testing, ... and pretest probability assessments ... [including] symptoms, previous medical history of COVID-19 or presence of antibodies, any potential exposure to COVID-19, and likelihood of an alternative diagnosis."

Conclusion-

1. Economic shutdowns/lockdowns lead to unemployment, joblessness, worries over livelihoods, severe economic damage (Argentina, Bulgaria, Chile, India, Lebanon, Malawi, Nigeria, Pakistan, Philippines, Poland, Spain, USA) or financial damage (New Zealand).
2. Lockdowns or other measures violate constitutional rights including the freedom of political protest demonstrations or religious gatherings (Germany, Italy, Thailand, USA) or cause segregation, territorial discrimination (Mexico, Spain) or the concentration of all power in the hands of the President (Serbia) or make society evolve into a police state or surveillance state or slavery (Germany, New Zealand, Russia, UK).
3. Defiance of social-distancing rules because: "my body, my choice" (Australia, United Kingdom) or protests against harsh isolation imposed on prisoners (Canada).
4. Lockdowns cause mental strains or social or emotional damage, for example for poorer families living in narrow housings (France, New Zealand, USA).
5. Lockdowns cause hunger, lack of food, or lack of social services, especially for poor people (Chile, Malawi, Philippines).
6. Measures lead to overpriced food (China) or forced quarantines with forced payment to the government for the costs of it (Kenya).

Bibliography-

1. WHO Report (30 January 2020). *"Novel Coronavirus(2019-nCoV): Situation Report-10" (PDF). World Health Organization(WHO). 30 January 2020. Retrieved 30 January 2020.*
2. Jump up to:[abc] *"Statement on the second meeting of the International Health Regulations (2005) Emergency Committee regarding the outbreak of novel coronavirus (2019-nCoV)". World Health Organization (WHO).*
3. *Sun J, He W, Wang L, Lai A, Ji X, Zhai X, et al. (2020). "COVID-19: Epidemiology, Evolution, and Cross-Disciplinary Perspectives". Trends in Molecular Medicine.*
4. Jump up to:[a b] *Novel Coronavirus Pneumonia Emergency Response Epidemiology Team (February 2020). "[The epidemiological characteristics of an outbreak of 2019 novel coronavirus diseases (COVID-19) in China.*
5. Jump up to:[a b] *Perlman S (February 2020). "Another Decade, Another Coronavirus".*
6. *Cyranoski D (March 2020). "Mystery deepens over animal source of coronavirus". Nature. 579 (7797):1819.*

7. *Zhang T, Wu Q, Zhang Z (April 2020). "Probable Pangolin Origin of SARS-CoV-2 Associated with the COVID-19 Outbreak". Current Biology. 30 (7).*
8. Jump up to:[a] [b] *"Outbreak of severe acute respiratory syndrome coronavirus 2 (SARS-CoV-2): increased transmission beyond China – fourth update" (PDF). European Centre for Disease Prevention and Control. 14 February 2020. Retrieved 8 March 2020.*
9. *"The COVID-19 coronavirus epidemic has a natural origin, scientists say – Scripps Research's analysis of public genome sequence data from SARS-CoV-2 and related viruses found no evidence that the virus was made in a laboratory or otherwise engineered". EurekAlert!.*

Philosophy of Action and Self Actualization in Bhagavadgita and Shakespeare's Hamlet

2020-4
ISSN: 2349-5162

Thore Dhanaji Vithalrao
Shri Chhatrapati Shivaji College, Omerga

Dr Yashwant A. Doke
Tuljabhavani Mahavidyalaya, Tuljapur

Abstract: Literature cannot be bound in the region, space or border. The philosophy of each nation is universal. This paper is an attempt to focus on the philosophy of karma as described in The 'Bhagavad Gita' which found afterwards in Shakespeare's tragedy 'Hamlet'. The reasons may not be clear for whether the comparative study is essential but I found the close relationship between these two works. It is not mere a consequence but connectivity between two different cultures. Both Hamlet and Arjuna are princes, Hamlet is the son of the King of Denmark and Arjuna is the son of Indra, king of the gods. Even these two characters reflect the society of their genre it's a need to consider them to symbolize not just one character instead their entire society. Both characters find themselves in situations which require them to kill family members; they are faced with a difficult internal dilemma either in the form of revenge of the concept of dharma. They are portrayed as the representatives of something larger than one person so that the necessity of murdering a relative seems to be an interesting aspect. The supporters of these characters are of course contrary as a ghost of Hamlet's father for hamlet and Lord Krishna, an *avtar* for Arjuna. I think both of these supernatural powers motivated the characters to kill their relatives. It happened as they expected also not in the very blind manner but by the self actualization.

Keywords: Philosophy, Bhagvadgita, Soul, Salvation, Karma yoga.

Some thinkers consider salvation as a state of permanent bliss. They believe that salvation once attained by soul, lasts perpetually. According to Vedic religion, soul leaves its original body at the time of death and enters new one quite far from the previous place. The salvation depends upon the action somebody has done throughout his life.

Indian spiritualism has undoubtedly a universal appeal; it can be read by different perspectives. There is, in relation to Western thought, a striking difference in the manner in which Indian philosophical thinking is presented as well as in the mode in which it historically developed. Though the objective and the subjective, the universe and the individual, came to be identified according to their true essences. Literary symbolism reflects various ideas to be presented before the society in the form of idealism as Bhagvadgita reflects the message of *karma* of human life. The role of the sacred texts in the growth of Indian philosophy is different in each of the different systems. In those systems that may be called *adhyatma vidya*, or sciences of spirituality, the sacred texts play a much greater role than they do in the logical systems.

The great epic 'Mahabharata' represents the attempt of Vedic Brahmanism to adjust itself to the new circumstances reflected in the process of the ancient Indian beliefs. Many diverse trends of religious and

philosophical thought have thus been synthesized in this work. In the Shanti Parvan ("Book of Consolation," 12th book) of the Mahabharata, there is also a notable account of the origin of kingship and of *rajadharma*, or the *dharma* (law) of the king as king. The Bhagavadgita forms a part of Mahabharata and deserves separate consideration by virtue of its great importance in the religious life and thought of the Hindus.

As for poetical works many poets of transcendental vision have picked up historical incidents and used them for depicting imperishable visions of the soul of man struggling with grim fact of life. Arjuna insists Lord Krishna to teach him the *dharma* so that he can be able to understand the dilemma of life. He says:

> "My heart is overcome by the weakness of pity, and my mind is confused about Dharma. I request You to tell me, decisively, what is better for me. I am Your disciple. Teach me who has taken refuge in You. (2.07)

The master painter of human passions, Shakespeare portrayed the same in his dramas. We see in his dramas men and women through into situations as profoundly tragic as that in which we find Arjuna in the first discourse of the Gita.

As Bhagavadgita is not limited to the Hindu mythology, William Shakespeare's Hamlet also has reached its sublime peak. Hamlet and Bhagavadgita are the essence works exploring the nature of crisis as experienced within their respective cultures. Through character interaction crisis is portrayed, dissected, and thoroughly resolved in a manner displaying the radical orientation of the culture generating the text. Both Prince Hamlet and Arjuna, the prince whose dialogue with Krishna structures the Gita, suffer from indecisiveness in the midst of a call to action. These characters in the form of human values have within them the best and worst of their cultures. They are noble and flawed but only Arjuna has access to the original vision from which culture itself is generated, and is thus able to extricate himself fully from his dilemma.

The dramatic grip that Hamlet has on western audiences has remained tense through the centuries since Elizabethan England. With countless staging and a swamp of critical literature, few really seem able to, in his own words,

> "you would play upon me, you would seem to know my stops, you would pluck out the heart of my mystery." (Act III, ii, 355-356)

This mystery is born of the very nature of man in crisis. It is a question of what makes people do what they do. Nature itself plays a vital role to build the role of human beings in the society. If the voice of Hamlet's father in the form of a supernatural power, he acknowledges the duty as a son. I do not compare the power of lord Krishna to the power of Hamlet's father but I dare to compare their message regarding the princes have to fulfill their duties; as the ghost talks, "revenge his foul and most unnatural murder." (Act I, v, 25)

Hamlet and Arjuna's crises are strikingly similar, given the thousands of years and miles separating their inceptions. Both are princes who find themselves trapped in horrible circumstance whose only resolution demands the shedding of family blood. The Sanskrit word best describing the situation is *dharma*. *Dharmic* action is thus that which sustains the culture. This is not the culture of ephemeral trappings, but the groundwork

through which man lives in the world. Both the princes express their dilemma the only difference is Arjuna has a moral supporter in the form of Krishna but Hamlet puts it in soliloquy:

"To be or not to be? That is the question—
Whether 'tis nobler in the mind to suffer
The slings and arrows of outrageous fortune,
Or to take arms against a sea of troubles
And by opposing end them. (Act III, I, 56-60)

Arjuna sees no such golden opportunity before him. Instead, he has particularized his vision into a perspective pitting him against "fathers and grandfathers, teachers, uncles, brothers, sons, grandsons, companions, fathers-in-law and friends" (Bg-26). He is especially grieved to see his beloved teachers, Drona and Bhisma, armed against him. Pain causes his vision to narrow. Whereas he should see himself as part of a karmically determined circumstance that he is responsible for and must act within, he experiences a subject/object dualism placing him wholly within a body that must war against teachers and cousins whom he has known since birth. They exist in separate bodies "out there."

Arjuna takes this dualistic vision to heart, and he coalesces into a body that cannot act. He becomes so rigid, his body quivers with indecision. He says,

"My dear Krishna, seeing my friends and relatives present before me in such a fighting spirit, I feel the limbs of my body quivering and my mouth drying up". (Bg I, 29-30).

Circumstance arises through activity and demands response within it. This inability for Arjuna to do so literally shakes him to the core. It is the task of Krishna, who is the embodiment of cultural consciousness--culture and history incarnate, organizing and giving rise to the manifest world in the present--to move Arjuna's body out of one frozen as crisis, into a fluid one concordant with an ontological, hypostatic vision. The whole of the Bhagavadgita is an enactment of this process, moving from a stuck perspective to the ability to discriminate many perspectives; from disseminative knowledge to a direct experience of the radical grounding vision; and finally into an ability to live through this vision.

Unfortunately for Hamlet, he has no access to a Krishna to lead him out of crisis. He lives in a society fraught with dead beliefs. The Christian churches may hold political sway, but excepting the rare mystic who would usually be regarded as a heretic, these institutions had long been divorced from the original living vision from which they arose. Hamlet is educated at the University of Wittenberg, a center of philosophic learning. He is a man of intellectual speculation, so much so that he cannot act in the face of a gut-wrenching situation. The play is protracted by his intellectualizations, while the crisis worsens and brutal consequences multiply.

Hamlet creates himself through his own language. He talks himself into frequent vacillations--between resounding affirmation of his duty and elaborate game playing in avoidance of it, between a fiery temper and cold dispassionateness, between madness and clairvoyance. He quickly talks himself into and out of various enterprises during the play. He pretends to don an antic disposition to deflect

attention from his "real" purpose--that of killing the king--but his scenes with Ophelia show him to be more than a little affected. She describes a telling encounter to her father:

"My lord, as I was sewing in my closet,
Lord Hamlet, with his doublet all unbrac'd,
No hat upon his head, his stockings foul'd,
Ungarter'd and down-gyved to his ankle,
Pale as his shirt, his knees knocking each other,.." (Act II, i, 77-81)

Arjuna is the greatest archer alive; when his bow slips he is completely severed from the task he must perform. This is no mere play-acting. Interior and exterior usually reflect each other in Shakespeare. This is where Krishna serves his great purpose. He must do for Arjuna what Hamlet cries out for when he says, "O that this too too solid flesh would melt, Thaw and resolve itself into dew!" (Act I, ii, 130). His task, as is that of any teacher, is to free Arjuna from this limiting perspective, this view which breeds crisis and immobility. Krishna realizes that a man cannot be wrenched from that which he clings to without severe damage; gradual steps and stages are necessary. First Arjuna must realize how he has come to be immobilized.

Here Krishna schematizes the process by which one enters crisis. Anyone who has become angered due to conflicting desires and subsequently "lost control" of him or herself, or of the situation, will recognize this progression. Krishna wants Arjuna to watch this process, to discriminate between an "I" attached to sense objects and that which generates both of these: the eternal, bringing the moment into being.

Once on the battlefield Arjuna dwells on those with whom he must fight; instantaneously an "I" arises, attached to them by opposition in circumstance. The desire takes form as either attraction or aversion to the sense objects; in this case, Arjuna wishes to avoid fighting against people he is attached to. But he forgets how he is attached to them in the first place, how all things are unified through a common ground, and is thus unable to discriminate between correct and incorrect action, between *dharma* and *adharma*. A human immobilized by crisis resides in hell.

When a man dwells upon objects of sense,
Attachment to them is born.
From attachment, desire is born,
And from such desire anger arises.
From anger arises delusion, and from delusion loss of memory.
From loss of memory the destruction of intelligence,
And from this destruction, he perishes. (Bg II, 62-63)

Like Arjuna, Hamlet suffers from immobility; he cannot kill his uncle though he must. Unlike Arjuna, however, his personal crisis is never .resolved and reoccurs throughout the play. He thinks himself into and out of acting, and amazingly, sees the process as it happens. He tries to motivate himself through language:

"O, from this time forth, my thoughts be bloody, or be nothing worth!"(Act IV, iv, 65).

He berates himself for this process, over which he has no control. Arjuna, wants to know what "is that by which a man who performs evil, is bidden, even against his will, impelled so-to-speak by force?" Krishna is unconcerned with doctrinal ethics when mentioning "evil" or "sin." That which is "evil" takes one further from liberation, and the "good" brings one closer to it or sustains it. Arjuna cannot fathom the restraint necessary to overcome compulsive desire. The mind "is turbulent, strong and hard. Its restraint, I think would be as difficult to accomplish as controlling the wind." Krishna happily repeats throughout the Gita what is required for liberation. In order to help Arjuna recover his warrior's body, Krishna describes:

"Let him not set his thoughts on anything else.
Having restrained the mind, restless, unsteady,
From whatever it goes out to,
Let him bring it into the control of the self alone." (VI, 24-6)

Hamlet on the same context describes his actualization at the end of his life saying that all of those who made him the murder are only silent spectators. He expects to have a true account of his actions and his motives. He says,

"Heaven make thee free of it. I follow thee....
Thou livest, report me and my cause aright
To the unsatisfied." (Act V, ii, 342)

Even noble Horatio falls prey to passion in the final scene as he attempts to follow Hamlet in death. Though Hamlet seems to comprehend how to be in the world, he has no access to the means of embodying this knowledge.

The Gita seems to be saying that this is not possible without a teacher, without someone who embodies a living tradition of knowledge. Krishna spends chapters II through explaining various aspects, or paths of liberation. Meditation, knowledge, renunciation of actions, wisdom and understanding-- these are but worldly facets of an unexplainable, eternal, imperishable vision. Krishna loosens Arjuna's attachment to sense objects, and exhausts his desire for detailed knowledge. With the words "I give you a divine eye" Arjuna's vision begins, a terrifying experience of the world of experience collapsing as his body. "The worlds tremble, and so do I." Arjuna can only wonder at this vision of the world's manifestation. He experiences Krishna as *purushotam*, the generator and organizer of manifest experience without which nothing of the world can be held together. Arjuna is thus led to the shattering realization that he is merely the occasion for the manifestation of the world, and that the ever-vacillating "I" is a referential construction.

Arjuna cannot last long in this vision of limitless possibility. It will be impossible to move unless he experiences a body in the world. He has seen how the world comes into being and is held together; the difficulty will now be incorporating this vision into the activity of living. During the rest of the Gita Krishna provides Arjuna with a new model for the world so that this is possible. Arjuna gains a new body, one that is fluid in circumstance, one that is fluid circumstance.

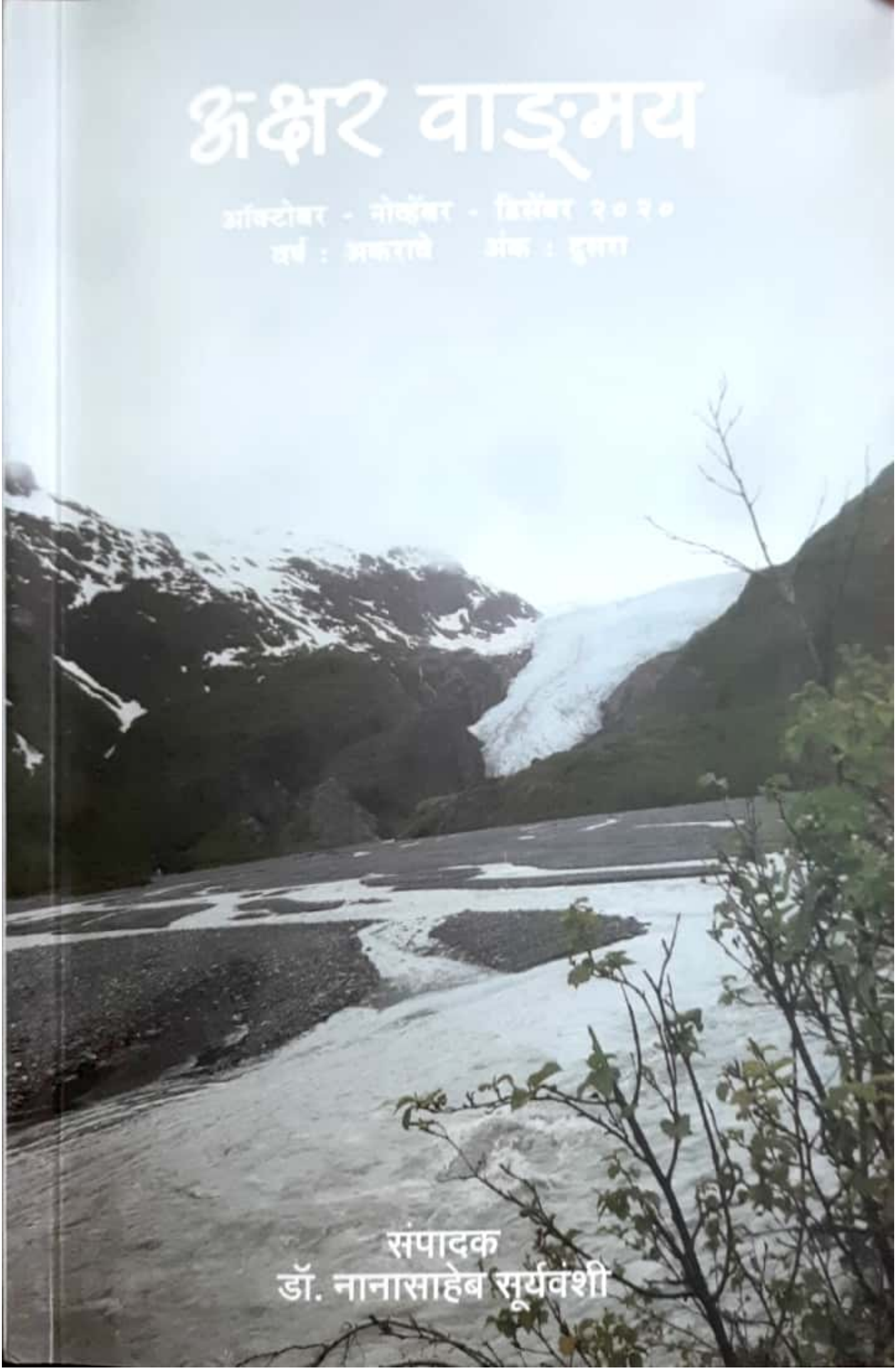
References:

1. Talreja, K. M. *Philosophy of Vedas*. Talreja Publication, Bombay, 1982.
2. Desai, Mahadev. *THE GITA ACCORDING TO GANDHI.* Navajivan Publication House, Ahmedabad, 2007.
3. http://www.krishna.com/"Bhagavad-gita As It Is" by His Divine Grace A.C. Bhaktivedanta Swami Prabhupada
4. http://www.shakespeare-online.com/plays/hamletscenes.html
5. Dharma, Bariya. *Mahabharata*. Manoj Publication, New Delhi, 2013.



अक्षर वाङ्मय

ऑक्टोबर - नोव्हेंबर - डिसेंबर २०२०
वर्ष : अकरावे अंक : दुसरा



संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

Scanned by CamScanner

आर. एन्. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929
UGC Approved and Peer Reviewed Journal

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : अकरावे अंक : दुसरा
ऑक्टोबर-नोव्हेंबर-डिसेंबर २०२०

संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
कार्यकारी संपादक
डॉ. शिवाजीराव देशमुख
मार्गदर्शक
डॉ. अरुण प्रभुणे
संपादक मंडळ

डॉ. बाळासाहेब लबडे
डॉ. दीपक चिद्दरवार
डॉ. रत्नाकर बेडगे
डॉ. संदीप सांगळे

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/-
द्विवार्षिक वर्गणी : रु. ९००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु.२०००/-
अंकाचे मूल्य : रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929
UGC Approved and
Peer Reviewed Journal

AKSHAR WANGMAY

Year : 11 Volume : 2

October-November-December 2020

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Editorial Board

Dr. Balasaheb Labde
Dr. Ratnakar Bedge
Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Sandeep Sangle

Publisher : Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan,
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/-
Two years : Rs. 900/-
Five Years : Rs. 2000/-
Current Volume : Rs. 125/-

---

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

अक्षर वाङ्मय

जुलै - ऑगस्ट - सप्टेंबर २०२०
वर्ष : अकरावे अंक : पहिला



संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

Scanned by CamScanner

आर. एन्. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929
UGC Approved and Peer Reviewed Journal

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : अकरावे अंक : पहिला
जुलै-ऑगस्ट-सप्टेंबर २०२०

संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक
डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक
डॉ. अरुण प्रभुणे

संपादक मंडळ

डॉ. बाळासाहेब लबडे — **डॉ. दीपक चिद्दरवार**
डॉ. रत्नाकर बेडगे — **डॉ. संदीप सांगळे**

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन, 'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.
मुद्रक : कॉम्पप्रिन्ट कल्पना प्रा. लि. ४६१/४ सदाशिव पेठ, पुणे ३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/- **द्विवार्षिक वर्गणी :** रु. ९००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु.२०००/- **अंकाचे मूल्य :** रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929
UGC Approved and
Peer Reviewed Journal

AKSHAR WANGMAY

Year : 11 Volume : 1

July-August-September 2020

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Editorial Board

Dr. Balasaheb Labde
Dr. Ratnakar Bedge
Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Sandeep Sangle

Publisher : Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
Printer : Comp- Print Kalpana Private Ltd., 461/4 Sadashiv Peth, Pune - 30

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

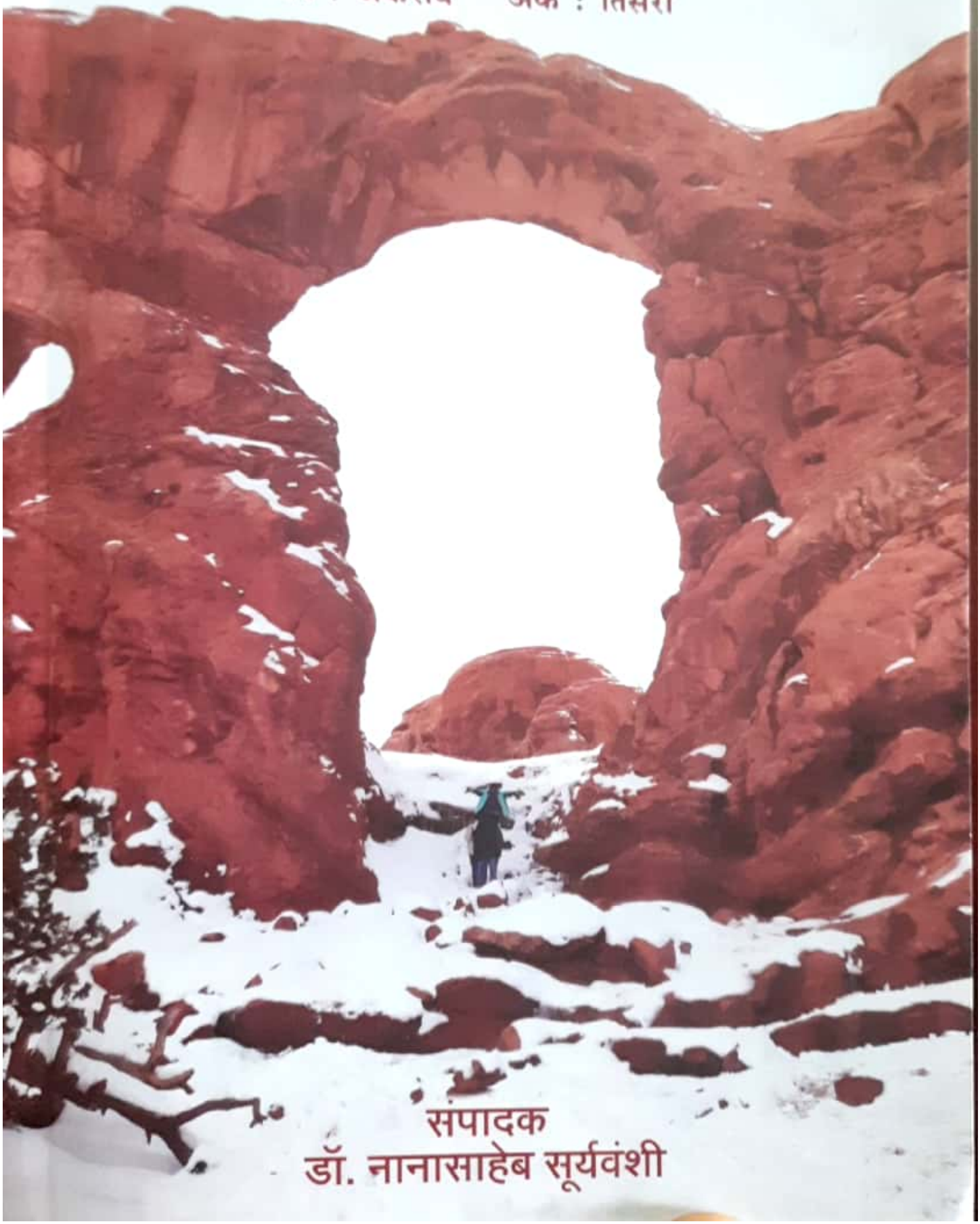
Subscription Rates Yearly : Rs. 500/- **Five Years :** Rs. 2000/-
Two years : Rs. 900/- **Current Volume :** Rs. 125/-

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

अक्षर वाङ्मय

जानेवारी - फेब्रुवारी - मार्च २०२१
वर्ष : अकरावे अंक : तिसरा



संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

Scanned by CamScanner

आर. एन्. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929
UGC Approved and Peer Reviewed Journal

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : अकरावे अंक : तिसरा
जानेवारी-फेब्रुवारी-मार्च २०२१

संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक
डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक
डॉ. अरुण प्रभुणे

संपादक मंडळ

डॉ. बाळासाहेब लबडे
डॉ. दीपक चिद्दरवार
डॉ. रत्नाकर बेडगे
डॉ. संदीप सांगळे

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.
मुद्रक : प्रिंटसेल्फ, १५४३ 'ओंकार कॉर्नर', नवी पेठ, पुणे ४११ ०३०

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/-
द्विवार्षिक वर्गणी : रु. ९००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु.२०००/-
अंकाचे मूल्य : रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही..

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929
UGC Approved and
Peer Reviewed Journal

AKSHAR WANGMAY

Year : 11 Volume : 3
January-Fabruary-March 2021

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Editorial Board

Dr. Balasaheb Labde — **Dr. Deepak Chiddarwar**
Dr. Ratnakar Bedge — **Dr. Sandeep Sangle**

Publisher : Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
Printer : Printself, 1543, 'Omkar Corner' Navi Peth, Pune 411 030

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

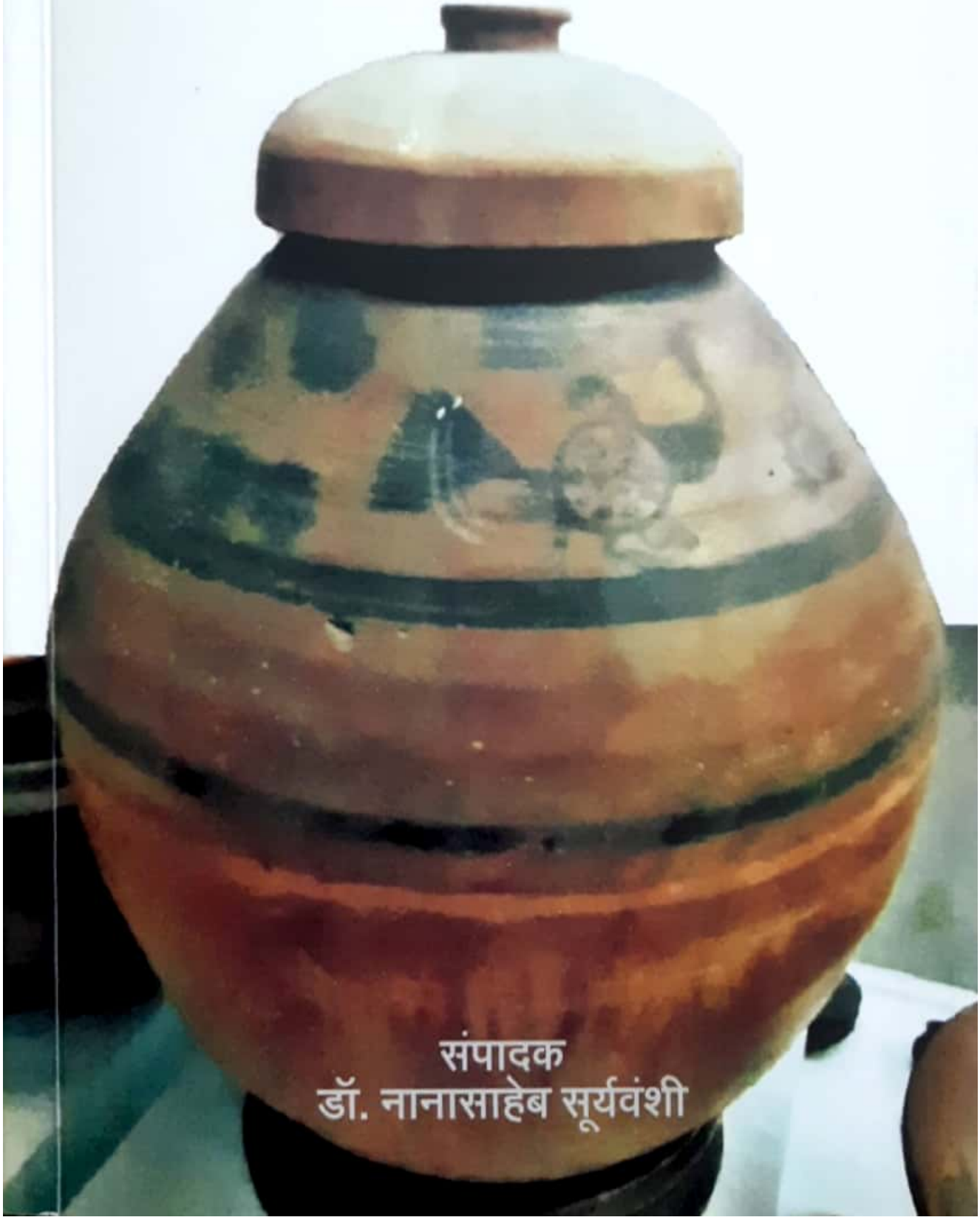
Subscription Rates Yearly : Rs. 500/- **Five Years :** Rs. 2000/-
Two years : Rs. 900/- **Current Volume :** Rs. 125/-

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

अक्षर वाङ्मय

एप्रिल - मे - जून २०२१
वर्ष : अकरावे अंक : चौथा



संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

Scanned by CamScanner

आर. एन्. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929
UGC Approved and Peer Reviewed Journal

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : अकरावे अंक : चौथा

एप्रिल-मे-जून २०२१

संपादक

डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक

डॉ. अरुण प्रभुणे

संपादक मंडळ

डॉ. बाळासाहेब लबडे
डॉ. दीपक चिद्दरवार
डॉ. रत्नाकर बेडगे
डॉ. संदीप सांगळे

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.

मुद्रक : प्रिंटसेल्फ, १५४३ 'ओंकार कॉर्नर', नवी पेठ, पुणे ४११ ०३०

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/-
द्विवार्षिक वर्गणी : रु. ९००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु.२०००/-
अंकाचे मूल्य : रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929
UGC Approved and
Peer Reviewed Journal

AKSHAR WANGMAY

Year : 11 Volume : 4
April-May-June 2021

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Editorial Board

Dr. Balasaheb Labde
Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Ratnakar Bedge
Dr. Sandeep Sangle

Publisher : Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515

Printer : Printself, 1543, 'Omkar Corner' Navi Peth, Pune 411 030

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/- **Five Years :** Rs. 2000/-
Two years : Rs. 900/- **Current Volume :** Rs. 125/-

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

अक्षर वाङ्मय

जुलै-ऑगस्ट-सप्टेंबर २०२१
वर्ष : बारावे अंक : पहिला



संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

Scanned by CamScanner

आर. एन्. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN - 2229-4929
UGC Approved and Peer Reviewed Journal

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : बारावे अंक : पहिला
जुलै-ऑगस्ट-सप्टेंबर २०२१

संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
कार्यकारी संपादक
डॉ. शिवाजीराव देशमुख
मार्गदर्शक
डॉ. अरुण प्रभुणे
संपादक मंडळ

डॉ. बाळासाहेब लबडे
डॉ. रत्नाकर बेडगे
डॉ. दीपक चिद्दरवार
डॉ. संदीप सांगळे
समन्वयक
रमेश देशपांडे, अमेरिका
समन्वयक
सोनाली जांभेकर, अमेरिका

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.
मुद्रक : प्रिंटसेल्फ, १५४३ 'ओंकार कॉर्नर', नवी पेठ, पुणे-४११ ०३०
साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/- **द्विवार्षिक वर्गणी :** रु. ९००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु.२०००/- **अंकाचे मूल्य :** रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929
UGC Approved and
Peer Reviewed Journal

AKSHAR WANGMAY

Year : 12 Volume : 1
July-August-September 2021

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Editorial Board

Dr. Balasaheb Labde
Dr. Ratnakar Bedge
Coordinator
Mr. Ramesh Deshpande (USA)

Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Sandeep Sangle
Coordinator
Sonali Jambhekar (USA)

Publisher : Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515

Printer : Printself, 1543, 'Omkar Corner' Navi Peth, Pune 411 030

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/- **Five Years :** Rs. 2000/-
Two years : Rs. 900/- **Current Volume :** Rs. 125/-

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner

अक्षर वाङ्मय

ऑक्टोबर-नोव्हेंबर-डिसेंबर २०२१
वर्ष : बारावे अंक : दुसरा



संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

Scanned by CamScanner

आर. एन्. आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र. नं. - MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929
UGC Approved and
Peer Reviewed Journal

अक्षर वाङ्मय

वर्ष : बारावे अंक : दुसरा
ऑक्टोबर–नोव्हेंबर–डिसेंबर २०२१

संपादक
डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

कार्यकारी संपादक
डॉ. शिवाजीराव देशमुख

मार्गदर्शक
डॉ. अरुण प्रभुणे

संपादक मंडळ

डॉ. बाळासाहेब लबडे
डॉ. रत्नाकर बेडगे
डॉ. दीपक चिद्दरवार
डॉ. संदीप सांगळे

समन्वयक
रमेश देशपांडे, अमेरिका

समन्वयक
सोनाली जांभेकर, अमेरिका

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर ४१३५१५.
मुद्रक : प्रिंटसेल्फ, १५४३ 'ओंकार कॉर्नर', नवी पेठ, पुणे-४११ ०३०
साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, ता. अहमदपूर
जि. लातूर ४१३५१५. भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com.

वार्षिक वर्गणी : रु. ५००/- **द्विवार्षिक वर्गणी :** रु. ९००/-
पंचवार्षिक वर्गणी : रु.२०००/- **अंकाचे मूल्य :** रु. १२५/-

* महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकाच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले असले तरी या नियतकालिकातील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.
* या अंकातील लेखांतून व्यक्त झालेल्या लेखकांच्या मतांशी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक व मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned by CamScanner

R. N. I. FOR INDIA New Delhi
R. No. – MAHMAR-36829-2010

ISSN – 2229-4929
UGC Approved and
Peer Reviewed Journal

AKSHAR WANGMAY

Year : 12 Volume : 2
October-November-December 2021

Editor-in-Chief
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor
Dr. Shivajirao Deshmukh

Advisor
Dr. Arun Prabhune

Editorial Board

Dr. Balasaheb Labde
Dr. Ratnakar Bedge
Coordinator
Mr. Ramesh Deshpande (USA)

Dr. Deepak Chiddarwar
Dr. Sandeep Sangle
Coordinator
Sonali Jambhekar (USA)

Publisher : Sou. Rekhatai Nanasaheb Suryawanshi, Pratik Prakashan, 'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515

Printer : Printself, 1543, 'Omkar Corner' Navi Peth, Pune 411 030

Address for sending articles and fees : Dr. Nanasaheb Suryawanshi
'Pranav', Rukme Nagar, Thodga Road, Ahmedpur 413515
District : Latur
Mobile phone : 9423655841
E-mail : suryawanshinanasaheb67@gmail.com

Subscription Rates Yearly : Rs. 500/- **Five Years :** Rs. 2000/-
Two years : Rs. 900/- **Current Volume :** Rs. 125/-

* Maharashtra State Literary and Cultural Board has granted funds for the Publication of this Journal. But Maharashtra State Literary and Cultural Board has not been responsible for writers opinion in this Journal.
* The content and opinions expressed in the articles are the views of the authors and do not necessarily reflect the views and opinions of the periodical's Editorial Board, publisher or the advisor. The authors are solely responsible for the facts and accuracy of the content of the articles.

Scanned by CamScanner